“અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્” ગ્રંથ જીર્ણોધ્ધાર ૧૪૭

જૈન સિદ્ધાંતકૌમુદી (અર્ધમાગધી વ્યાકરણ)

: દ્રવ્ય સહાયક :

આગમોદ્ધારક પૂજ્ય સાગરજી સમુદાયના
પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી નિત્યાનંદશ્રીજી મ.સા.ની શિષ્યાઓ
સાધ્વીજી શ્રી કલ્પલતાશ્રીજી, સાધ્વીજી શ્રી નયજ્ઞાશ્રીજી,
સાધ્વીજી શ્રી સમયજ્ઞાશ્રીજી, સાધ્વીજી શ્રી સંસયમિતાશ્રીજી,
સાધ્વીજી શ્રી વિરાગદર્શિતાશ્રીજીના સંયમ પર્યાયની
અનુમોદનાર્થે તેઓની પ્રેરણાથી
શ્રી મઢી જૈન સંઘ, મઢી (ગુજરાત)
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-380005
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૮ ઈ.સ. ૨૦૧૨

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – શાહ બાબુલાલ સરેમલ
શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.
(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૫ (ઈ. ૨૦૦૯) – સેટ નં-૧

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

*આ પુસ્તકો **www.jainelibrary.org** વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454

026	**तत्त्वोपप्लवसिंहः**	**श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य**	**188**
027	**शक्तिवादादर्शः**	**श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री**	**214**
028	**क्षीरार्णव**	**श्री प्रभाशंकर ओघडभाई**	**414**
029	**वेधवास्तु प्रभाकर**	**श्री प्रभाशंकर ओघडभाई**	**192**
030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-3	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – શાહ બાબુલાલ સરેમલ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.jainelibrary.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્ત્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**374**
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**238**
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	**194**
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	**192**
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	**254**
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**238**
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-3	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	**260**
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	**114**
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	**910**
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	**436**
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**336**
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	**230**
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	**322**
089	ઐન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	**114**
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	**560**

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.jainelibrary.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.jainelibrary.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाश	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भास्वति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

सेठियाजैनग्रन्थमाला पुष्प ५१

श्री गुलाब-वीर-ग्रन्थमाला-रत्नं तृतीयम्

जैनसिद्धान्तकौमुदी

(अर्द्धमागधी व्याकरणम्)

शतावधानिपण्डितमुनिश्रीरत्नचन्द्रस्वामिविरचिता

सेयं-

विक्रमपुरवास्तव्याभ्यां भैरवदानज्येष्ठमल्लाभ्यां

स्वमुद्रणालये मुद्रयित्वा

प्राकाश्यं नीता

वीरनि० सं० २४५२ विक्रम सं १९८२ ई० स १९२६

प्रथमावृत्तिः १०००   मूल्यं सार्द्धरूप्यकम् रु० १ [illegible]

Aho ! Shrutgyanam

Printed At The Sethia Jain Printing Press
BIKANER . Rajputana.B.S.Ry.

Aho ! Shrutgyanam

श्री विजय लावण्य सूरीश्वर ... नं.

उपोद्घातः ॥

नयप्रमाणाङ्कितगूढतत्त्वसन्दर्भगर्भितजैनप्रवचनप्रतिपादितार्थजिज्ञासावतां तज्ज्ञानसंपादनाय प्रवचनभाषाज्ञानसम्पादनमावश्यकम् । तज्ज्ञानं च तद्भाषाया व्याकरणं विना यथावदशक्यम् । यद्यपि जनतोपकाराय पूर्वाचार्यैः प्रवचनप्रचारार्थं प्राकृतसंस्कृतगुर्जरभाषासु भाष्यनिर्युक्त्यवचूरिटीकाबालावबोधा निर्मिताः । तानि च साधनानि प्रबोधयन्ति प्रवचनानि प्राकृतजनांस्तथापि यद्भाषायां वस्तुस्वरूपं प्रतिपादितं तत्स्वरूपं तद्भाषायां यथा ज्ञायते न तथा भाषान्तरेषु । ततः प्रवचनभाषाया व्याकरणस्यावश्यकता प्रतीयते ।

ननु सन्ति बहून्येव व्याकरणानि-तथाहि-(१)चण्डस्य प्राकृतलक्षणं(२)वररुचेः प्राकृतप्रकाशः(३)हेमचन्द्रस्य सिद्धहैमसत्काष्टमाध्यायः (४) हृषीकेशनिर्मितप्राकृतव्याकरणं (५) त्रिविक्रमलक्ष्मीधरसिंहराजैर्विरचितानि वाल्मीकिसूत्रवृत्तिरूपाणि त्रविक्रमषड्भाषाचन्द्रिकाप्राकृतरूपावताराभिधव्याकरणानि (६) वसन्तराजस्य प्राकृतसञ्जीवनी(७)मार्कण्डेयस्य प्राकृतसर्वस्वं (८) भामहस्य षड्भाषाचन्द्रिका(९)दुर्गणाचार्यस्य षड्भाषारूपमालिका (१०) षड्भाषामञ्जरी (११) षड्भाषासुबन्तादर्शः (१२) षड्भाषाविचारः(१३)शेषकृष्णस्य प्राकृतचन्द्रिका (१४)अप्पयदीक्षितस्य प्राकृतमणिदीपः(१५) पाणिनिकृतप्राकृतलक्षणं(१६)प्राकृतमञ्जरी पद्यमयी । एतेषु कानिचिन्मुद्रितानि, कानिचिदमुद्रितानि, कानिचिदेव अधा-

Aho ! Shrutgyanam

लक्षणप्रतिपादकानि, कानिचिदनेकभाषालक्षणनिरूपकाणि, सर्वेष्वपि मुख्यतया प्राकृतभाषालक्षणनिरूपणमस्ति । तथा चैतेषु व्याकरणेषु सत्सु किमर्थं नव्यव्याकरणरचनाप्रयासः? इति चेदुच्यते – एतानि प्राकृतव्याकरणानि प्रायो महाराष्ट्रीप्राकृतभाषाया एव लक्षणानि निरूपयन्ति न तु जैनप्रवचनभाषायाः । प्राकृतलक्षणकारं चण्डं विहायान्येषां व्याकरणकाराणां समये महाराष्ट्रीप्राकृतभाषाया एव प्राधान्येन स्वीकृतत्वाद्यदुक्तं दण्डिना काव्यादर्शे(१-३५-)" महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः" तस्मा च प्रायः सर्वैरपि महाराष्ट्रीप्राकृतभाषाया मुख्यत्वमङ्गीकृत्य व्याकरणरचना कृता । केवलं चण्डकृतप्राकृतलक्षणे काचित्प्राचीनता विशेषश्च प्रतीयते । तद्व्याकरणमन्यापेक्षयाऽधिकतरं प्रवचनभाषामनुसरति, तथापि तदतीव न्यूनं, विभक्तिविधानस्वरविधानव्यञ्जनविधाननामकप्रकरणत्रयमात्रप्रदर्शितनवनवतिसूत्रैरेव समाप्तिं गतं कारकसमासतद्धितधात्वादीनां तु तत्र किञ्चिदपि विधानं नास्ति । हेमचन्द्रसूरिणा यद्यपि वररुचिनिर्मितप्राकृतप्रकाशगतमहाराष्ट्र्यपेक्षयाऽऽद्यनकारस्य विकल्पेन नकारावस्थानविधानेनाकारात्परस्योद्वृत्ताकारस्य यश्रुतिविधानेन च प्रवचनभाषानुसारी कश्चिद्विशेषो निवेशितः । विशेषमेनमनुलक्ष्यैव केचित्पाश्चात्त्या विद्वांस एनां जैनमहाराष्ट्रीं कथयन्ति तथापि सा प्रवचनभाषात्वं नापन्ना प्रवचनप्रयोगाणां केषाञ्चित्तत्र निदर्शनेऽपि आर्षप्रयोगा अनियन्त्रिता इति मत्वा सूरीश्वरेण तेषामुपेक्षा कृता न तेषां सर्वेषां लक्षणानि विरचितानि । बौद्धसाहित्यं मूलमपि पालीभाषायां तट्टीकाऽपि बुद्धघोषादिभिः पालीभाषाया-

Aho ! Shrutgyanam

मेव विरचिता न तथा जैनसाहित्ये मूलटीकयोरेकभाषात्त्व यद्यपि भाष्यनिर्युक्तिनिर्माणसमयपर्यन्तं बौद्धवज्जैनसाहित्यमपि समानभाषानिबद्धमासीत्परन्तु तत्पश्चाज्जैनाचार्याणां मनसि संस्कृतयुगस्य प्रभावः समुद्भूतस्तत एव सम्मतितर्कसिद्धहैमप्रभृतिन्यायव्याकरणाद्यनेकसंस्कृतग्रंथानां निर्माणेपि प्राकृतभाषाग्रन्थनिर्माणमार्गे न तावदुत्साहः प्रतीतिपथमायाति, तत एव हेमचन्द्रसूरेरपि सर्वानार्षप्रयोगान् संगृह्य तद्व्याकरणनिर्माण उपेक्षा जाता प्रतीयते । ननु प्रवचनानामपि प्राकृतभाषैव श्रूयते यदुक्तम्—

"बालस्त्रीमन्दमूर्खाणां, नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम् ।
तेषां सुखावबोधाय, सिद्धान्ताः प्राकृते कृताः" ॥१॥

आगमटीकानामप्यनेकस्थलेषु "प्राकृतशैल्या चतुर्थ्यर्थे षष्ठी प्राकृतत्वाद्रेफागमः" इत्यादिवचनैः सिद्धान्तभाषायाः प्राकृतत्वमेव सिद्ध्यति तद्व्याकरणानि च सन्तीति चेच्छ्रूयतां संस्कृतातिरिक्तानां सर्वासां भाषाणां प्राकृतेति सामान्यं नाम. यदुक्तं स्थानाङ्गसूत्रस्य सप्तमस्थाने—"संखया पागया चेव पसत्था इसीभासिया" पागय (प्राकृत) शब्देन प्राकृतत्वेनाभिमतानां सर्वासां भाषाणां संग्रहः शौरसेनीमागधीपैशाचीचूलपैशाचिकापभ्रंशादयः सर्वा अपि सामान्यरूपेण प्राकृतमुच्यन्ते विशेषापेक्षायां तु प्रत्येकं पृथक् पृथङ्नाम्ना व्यवह्रियते यथा ब्राह्मणक्षत्रियादीनां सामान्यमनुष्यशब्दवाच्यत्वेऽपि ब्राह्मणादयः शब्दाः पृथक्पृथग्जातिवाचकास्तथाऽत्रापि ज्ञेयम्.

कस्तर्हि प्रवचनभाषाया नामधेयविशेषः? अर्द्धमागधी, आर्षप्राकृतं वा. यदुक्तं समवायाङ्गके—

Aho ! Shrutgyanam

"भयवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ"

सम० ३४,

श्रीमदभयदेवसूरिस्तद्व्याख्यायामित्थं तदर्थं करोति— "अर्द्धमागहीयत्ति—प्राकृतादीनां षण्णां भाषाविशेषाणां मध्ये या मागधी नाम भाषा रसो लशौ मागध्यामित्यादिलक्षणवती साऽसमाश्रितस्वकीयसमग्रलक्षणाऽर्द्धमागधीत्युच्यते" व्याख्याकर्त्तुः सूरेरयमभिप्रायः— अत्रार्द्धशब्दोऽसमग्रत्वलक्षकः, यस्यां भाषायां मागधीभाषायाः समग्रलक्षणानि न सन्ति किन्तु कतिचिल्लक्षणानि मागधीभाषायाः कतिचिल्लक्षणान्यन्यभाषाणां सा भाषाऽर्द्धमागधीत्युच्यते।

भगवतीसूत्रवृत्तावपि तमेवार्थं व्यक्तीकरोति श्रीमदभयदेवसूरिः "अद्धमागही भासा भासिज्जमाणा विसिज्जइ" भग० ५, ४; मागधभाषालक्षणं किञ्चित्किञ्चिच्च प्राकृतभाषालक्षणं यस्यामस्ति साऽर्द्धं मागध्या इति व्युत्पत्त्याऽर्द्धमागधी. एवमेवौपपातिकसूत्रे "अद्धमागहाए भासाए भासति अरिहा धम्मं" औप० ३४; अर्द्धमागहाए भासाएत्ति रसोर्लशौ मागध्यामित्यादि यन्मागधभाषालक्षणं तेनापरिपूर्णा प्राकृतभाषालक्षणबहुला अर्द्धमागधीत्युच्यते" एभ्यस्त्रिभ्योऽवतरणेभ्य इदमेव फलति यद्यत्र किञ्चिन्मागधभाषालक्षणं बहुलं च प्राकृतभाषालक्षणमस्ति साऽर्द्धमागधीभाषा ज्ञेया.

नन्दीसूत्रवृत्तौ श्रीमन्मलयगिरिस्ततोपि स्पष्टं वक्ति-अतः "सो पुंसी" ति मागधिकभाषालक्षणात् सर्वमपि हि प्रवचनमर्द्धमागधिकभाषात्मकं अर्द्धमागधिकभाषया तीर्थकृतां देशनाप्रवृत्तेः, ततः प्रायः सर्वत्रापि मागधिकभाषालक्षणमनुसरणीयम्।

Aho ! Shrutgyanam

सिद्धहैमाष्टमाध्याये श्रीमद्धेमचन्द्रसूरिरपितदेव वक्ति-
"पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं"

सूत्राणि ह्यर्थरूपेण तीर्थकरोपदिष्टानि सूत्ररूपेण च गणधरग्रथितानि यदुक्तं-"अत्थं भासइ अरहा सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं" तीर्थकरस्योपदेशोऽर्द्धमागधीभाषायामिति स्पष्टं तथा गणधराणां सूत्ररचनाऽपि तस्यामेवार्द्धमागधीभाषायां भवति। यत्तु तीर्थकरगणधराभ्यां सूत्रेष्वर्द्धमागधीभाषायां रचितेष्वपि सूत्रलेखनकालपर्यन्तं तानि सूत्राणि न तदवस्थानि किन्तु तत्परिवर्त्तनं सम्पन्नं तथा च तद्भाषापि परिवृत्तेति वदन्ति केचित्तत्तु न सम्यक् साभिप्रायमेकाक्षरपरिवर्त्तनेऽपि जैनाचार्या महत्पापं स्वीकुर्वन्ति "हीणक्खरं अच्चक्खरं पयहीण"मित्यादिना हीनाक्षरादिपाठे ज्ञानातिचारा दर्शिताः, ज्ञानातिचाराश्च ज्ञानावरणीयादिकर्मबन्धहेतव इत्यक्षरपरिवर्त्तनेऽप्येतावान् दोषस्तदा भावपरिवर्त्तने भाषापरिवर्त्तने तु महान् दोषः परमेष्ठिमंत्रमात्रस्य भाषापरिवर्त्तने सिद्धसेनदिवाकरस्य गुरुभिर्महत्प्रायश्चित्तं दत्तमिति वार्ताऽऽबालं प्रसिद्धा, तत्तत्कालीनाचार्यपरम्परायाः स्खलनयोच्चारणापाटवेन च तत्परिवर्त्तनं जातमित्यपि वक्तुं न शक्यते पूर्वधारिणामाचार्याणामस्मदाद्यपेक्षयाधिकबुद्धिपाटवात्। प्रमादे न कस्यचित् स्खलनासम्भवे न सर्वेषां स्खलना तादृशा स्वल्पस्खलनया पाठान्तरसम्भवेऽपि सर्वथा भाषायाः परिवर्त्तनमशक्यं, भाषापरिवर्त्तनं तु तदैव स्याद्यदि सूत्राणां भाषान्तरमनुवादो वा कृतः स्यात्तथा सति तेषां ग्रंथान्तरत्वे सम्पन्ने सूत्रत्वमपगतं स्यात्। न चेष्टापत्तिः प्रामाण्यभङ्गादतिशयज्ञानिनां वचनानामेव प्रामाण्यस्वीकारात्। न चार्षभाषायां

Aho ! Shrutgyanam

मागध्याः समद्वितीयांशाभावान्मागध्या अर्द्धमिति व्युत्पत्त्याश्रितः समासो न स्यात् " अर्द्धं नपुंसकम् " २।२।२। इति पाणिनीयसूत्रेण "समेंशेऽर्द्धं न वेति" ३।१।५४। इति सिद्धहैमसूत्रेण च समांशवाचकार्द्धशब्दस्यैव नपुंसकत्वपूर्वनिपातनयोश्च विहितत्वादिति वाच्यम् । आर्षभाषायां प्रायो मागधीभाषायाः समद्वितीयांशत्वमस्त्येव तन्निर्णयो निम्नदर्शितरीत्या शास्त्रालापकप्रयोगानुसारेण कर्त्तव्यस्तथाहि–"एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्मसमारंभा जाणियव्वा भवंति" आचा० प्र० श्रु० १, १, १२; अत्र 'एयावंति सव्वावंति लोगंसि' एते त्रयः शब्दा मागधीभाषालक्षणाश्रिताः पश्चिमास्त्रयः शब्दा महाराष्ट्रीप्राकृतलक्षणाश्रिताः । से कीडं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिपीलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि वा उरंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा पडिग्गहंसि वा कंबलंसि वा पायपुच्छणंसि वा रयहरणंसि वा गुच्छगंसि वा दंडगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा तहप्पगारे उवगरणजायंसि वा" दस० ४; अत्र सप्तम्यन्ताः सर्वेपि शब्दा मागधीभाषाश्रिताः, महाराष्ट्रीप्राकृताश्रितास्तु पंचषा एव ।

"अकुमारभूए १ जे २ केई ३ कुमारभूए ४ त्ति हं वए ।
इत्थीहिं गिद्धे ५ वसए महामोहं पकुव्वइ । सम० ३० ।

अस्मिन्पद्ये-एकारान्ताः प्रथमैकवचनान्ताः पञ्च शब्दा मागधीभाषालक्षणाश्रिताः शेषा महाराष्ट्रीसाधारणाः । इदं तु चिन्त्यमत्र मागधीशब्दः प्राचीनमागधीभाषावाचको ज्ञेयः, हेमचन्द्रसूरिणा प्राकृतव्याकरणे मागधीप्रकरणे या मागधी भाषा दर्शिता सा तु नाटकादिषु प्रयुक्ताऽर्वाचीनमागधी ज्ञातव्या

Aho ! Shrutgyanam

वस्तुतस्तु अर्द्धमागधीशब्दो न भाषाश्रितः किन्तु देशाश्रितः, तथाहि– मगधदेशस्यार्द्धमर्द्धमगधः, अर्द्धमगधस्य भाषा अर्द्धमागधी शूरसेनमगधदेशयोरन्तरालप्रदेशे या भाषा भाष्यमाणाऽऽसीत्साऽर्द्धमागधी। यदुक्तं निशीथचूर्णौ श्रीजिनदासमहत्तरेण "मगहद्धविसयभासानिबद्धं अद्धमागहं" श्रीमार्कण्डेयमहर्षिणा प्राकृतसर्वस्वे तदेवोक्तं-"शौरसेन्या अदूरत्वादियमेवार्द्धमागधी" अर्थात् शूरसेनदेशस्य भाषा शौरसेनी, मगधदेशस्य भाषा मागधी,मगधशूरसेनमध्यभागस्य भाषाऽर्द्धमागधी। पालीभाषावत् स्वतन्त्रेयं भाषा। बहुलांशेन पालीसदृशा स्वल्पांशेन भिन्ना। पालीभाषायां यथा बौद्धसाहित्यं तथाऽर्द्धमागधीभाषायां जैनधर्मस्य पुरातनसाहित्यं। पालीभाषानिबद्धं बौद्धसाहित्यं यथाऽद्यावधि पालीभाषायामेवावतिष्ठते तथाऽर्द्धमागधीनिबद्धं जैनसाहित्यमद्यपर्यन्तं तस्यामेव भाषायामवतिष्ठते। भेदस्त्वयं यद्बौद्धसूत्राणां टीका अपि पालीभाषायामेवासन् तेन तस्या अद्यावधि तथैव प्रचारोऽनेकानि च व्याकरणानि विद्यन्ते ऽर्द्धमागधीभाषायां जैनसूत्राणां टीका न निर्मिता जैनाचार्यैस्तेन तस्याः प्रचारो न तथा नापि तस्या एकमपि व्याकरणं विद्यते।

यत्तु भरतेनोक्तं 'राक्षसीश्रेष्ठिचेटानुकर्यादेरर्द्धमागधी' यथा 'अज्जवि सोशामिणीए हिलिम्बादेवीए पुश्नघडुक्क अशोए ण उवशमदि' इयं नाटकादिषु प्रयुक्तार्द्धमागधी जैनसाहित्यनिबद्धार्द्धमागधीतोऽतीव भिन्नाऽर्वाचीना च स्पष्टतया प्रतीयते। तथा च मागधीवदर्द्धमागध्यपि प्राचीनाऽर्वाचीनेति भेदद्वयमापन्ना।

Aho ! Shrutgyanam

अर्द्धमागधीमहाराष्ट्रीप्राकृतयोर्भेदः

अधुना महाराष्ट्रीतोऽर्द्धमागधी भाषा कियतांशेन क्व क्व भिन्नेति प्रदर्श्यते.

१ महाराष्ट्र्यां नकारस्य सर्वदा णकारो जायतेऽर्द्धमागध्यां तु नकारणकारौ द्वावपि. यथा—

नाईयमट्ठं न य आगमिस्सं अट्ठं नियच्छन्ति तहागया उ। आचा० १-२-३-११७;

"खणं खणं परिण्णाय लोगसन्नं च सव्वसो"

आचा० १-२-३-१०३;

२ महाराष्ट्रीप्राकृते व्यञ्जनलोपे सत्युद्वृत्तस्याकारस्याकार एव श्रूयतेऽर्द्धमागध्यां तु यकारश्रुतिः, यथा—

सं०	अ०	म० प्रा०
अवतरणं	अवयरणं	अवअरणं
इंद्रजालं	इंदयालं	इंदआलं

३ म० प्राकृते क ग च ज त द प य वेत्यक्षराणामसंयुक्तानामादिभूतानां लोपो भवति, अर्द्धमागध्यां तु ककारस्य गकारयकारौ ग च ज त दानां यकारोऽपि पकारस्यातपादिगणपठितेष्वेव वकारः, यथा—

सं०	अ० मा०	म० प्रा०
अधिकरणं	अहिगरणं	अहिअरणं
व्याकरणं	वागरणं	वाअरणं
जगत्	जगं, जयं	जअं
शौचं	सोचं, सोयं	सोअं
आतपः	आतवो आयवो	आअओ

Aho ! Shrutgyanam

अर्द्धमागधीजैनमहाराष्ट्रीप्राकृतयोर्भेदः

अकारान्तपुँल्लिङ्गविषये-

१ अर्द्धमागध्यां प्रथमैकवचनेऽकारान्तनाम्नो रूपद्वयं भवति. प्राकृते रूपमेकमेव भवति, यथा-

अ० मा०	प्रा०
जिणे जिणो.	जिणो. १-१

२ द्वितीयाबहुवचनेऽर्द्धमागध्यामेकारान्तमेकमेव रूपं भवति, प्राकृते तु रूपद्वयं यथा-

अ० मा०	प्रा०
जिणे	जिणा जिणे २-३

३ तृतीयाबहुवचनेऽर्द्धमागध्यां रूपद्वयं प्राकृते तु सानुनासिकाधिक्येन रूपत्रयं भवति. यथा-

अ० मा०	प्रा०
जिणेहि जिणेहिं,	जिणेहि जिणेहिं जिणेहिँ ३-३

४ पञ्चम्येकवचनेऽर्द्धमागध्यां रूपद्वयं बाहुल्येन, क्वचिच्च रूपत्रयं भवति, प्राकृते तु रूपषट्कं यथा-

अ० मा०	प्रा०
जिणाओ जिणा क्वचित् जिणाहि	जिणत्तो जिणाओ जिणाउ जिणाहि जिणा जिणाहिंतो. ५-१

५ पञ्चमीबहुवचनेऽर्द्धमागध्यां रूपमेकमेव भवति, प्राकृते तु रूपनवकं भवति यथा-

अ० मा०	प्रा०
जिणेहिंतो-	जिणत्तो जिणाओ जिणाउ जिणाहि जिणेहि जिणाहिंतो जिणेहिंतो जिणासुंतो जिणेसुंतो ५-३

Aho ! Shrutgyanam

६ सप्तम्येकवचनेऽर्द्धमागध्यां रूपत्रयं प्राकृते च रूपद्वयं भवति यथा—

अ० मा०	प्रा०
जिणंसि जिणम्मि	जिणम्मि जिणे
जिणे,	७-१

७ न्तमन्तप्रत्ययान्तशब्दानां प्रथमा द्वितीयातृतीयाषष्ठी विभक्तिषु किंचिद्विशिष्टरूपाणि भवन्ति, तथाहि—

	ए० व०	ब० व०
प्र०	भगवं, भगवंतो मतिमं, मतिमंतो	भगवंतो मतिमंतो
द्वि०		भगवंतो मतिमंतो
तृ०	भगवता, भगवया मतिमता	
ष०	भगवतो, भगवओ	

प्राकृते त्वयं विशेषो न दृश्यते

८ अर्द्धमागध्यां जसादिशब्दानां तृतीयाषष्ठीसप्तमीषु विशिष्टरूपाणि भवन्ति; तथाहि—

	ए० व०
तृ०	जससा, मणसा, वयसा, कायसा, तेयसा, चक्खुसा, जोगसा, पन्नसा, बलसा,
ष०	जससो, मणसो,
स०	मणसि इत्यादि, प्राकृते त्वेतानि रूपाणि न दृश्यन्ते

९ कम्मधम्मशब्दयोस्तृतीयैकवचने कम्मुणा धम्मुणा

Aho ! Shrutgyanam

इतिरूपे अर्द्धमागध्यां भवतः, प्राकृते तु न दृश्येते

१० रायशब्दस्य संबोधनैकवचने हे रायमिति रूप-मर्द्धमागध्यां दृश्यते न तु प्राकृते ।

इकारान्तपुँल्लिङ्ग

११ प्रथमाबहुवचनेऽर्द्धमागध्यां रूपद्वयं भवति प्राकृते तु रूपचतुष्टयं, तथाहि–

अ॰मा॰	प्रा॰
इसिणो इसी	इसिणो, इसी, इसओ, इसउ-

१–३

१२ पञ्चम्येकवचनेऽर्द्धमागध्यां रूपद्वयं प्राकृते तु रूपपञ्चकम्-

अ॰मा॰	प्रा॰
इसिणो, इसीओ	इसिणो, इसित्तो, इसीओ, इसीउ, इसीहिंतो

१३ पञ्चमीबहुवचनेऽपि प्राकृते रूपाधिक्यम्–

अ॰मा॰	प्रा॰
इसीहिन्तो,	इसित्तो, इसीओ, इसीउ, इसीहिन्तो, इसीसुन्तो

१४ सप्तम्येकवचनेऽर्द्धमागधीसत्कं 'इसिंसि' रूपं प्राकृते नास्ति ।

उकारान्तपुँल्लिङ्गे

१५ प्रथमाबहुवचने पञ्चम्येकवचनबहुवचनयोः सप्तम्येकवचने चेकारान्तवत्तारतम्यम्,

१६ बहुशब्दस्य प्रथमाबहुवचनेऽर्द्धमागध्यां जायमानं बहवे इतिरूपं प्राकृते नास्ति,

Aho ! Shrutgyanam

सर्व्वनामशब्देषु

१७ सप्तम्येकवचनेऽर्द्धमागध्यामिमकशब्दाभ्यामेव 'स्सि' प्रत्ययः प्राकृते तु सर्वेषु सर्वनामशब्देषु 'स्सि' प्रत्ययः,

१८ कजतइमशब्दानां तृतीयैकवचने प्राकृते किणा जिणा तिणा इमिणा इतिरूपाणि दृश्यन्तेऽर्द्धमागध्यां तु तन्नास्ति.

१९ तेषामेव षष्ठ्येकवचनबहुवचनयोः प्राकृते कास, जास, तास इति रूपाणि दृश्यन्तेऽर्द्धमागध्यां तानि न सन्ति।

२० कशब्दस्य पञ्चम्येकवचने 'किणा' इतिरूपं प्राकृते विद्यतेऽर्द्धमागध्यां नास्ति.

२१ षष्ठ्येकवचने से इतिरूपं तशब्दस्यैवार्द्धमागध्यां दृश्यते प्राकृते त्विमैतशब्दयोरपि.

२२ अमुशब्दस्य सप्तम्येकवचने अयम्मि इयम्मि इति रूपद्वयं प्राकृते दृश्यतेऽर्द्धमागध्यां तु न।

अम्हतुम्हशब्दयोः

२३ अनयोः शब्दयो रूपेषु महान् भेदोऽस्ति,तुलनार्थं तयो रूपाणि प्रदर्श्यन्ते—

	अ० मा०	प्रा०
प्र० ए०	हं अहं,	म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहयं,
प्र० ब०	अम्हे, वयं,	अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे,
द्वि०ए०	मे, मं, मम, ममं।	णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, ममं, मिमं, अहं।

द्वि०ब० णो, अम्हे — अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे.

तृ०ए० मया, मए. — मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मयाइ, णे.

तृ०ब० अम्हेहिं — अम्हेहि, अम्हाहि (हिं) अम्ह, अम्हे, णे.

पं०ए० ममाओ, ममाहिंतो। मइणो, मइत्तो, ममत्तो, महत्तो, मज्झत्तो, मईओ, ममाओ, महाओ मज्झाओ, मईउ, ममाउ, महाउ, मज्झाउ, ममाहि, महाहि, मज्झाहि, मईहिंतो, ममाहिंतो महाहिंतो, मज्झाहिंतो, मई, ममा, महा, मज्झा.

पं०ब० अम्हेहिंतो-। ममत्तो, अम्हत्तो, ममाओ, अम्हाओ ममाउ, अम्हाउ, ममाहि, अम्हाहि, ममेहि अम्हेहि, ममाहिंतो, ममेहिंतो, अम्हाहिंतो अम्हेहिंतो, ममासुंतो, ममेसुंतो, अम्हासुंतो, अम्हेसुंतो.

ष०ए० मम, ममं, मज्झ, मज्झं, महं, मे, — मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं

ष०ब० अम्हं, णे, अस्माकं अम्हाणं — णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण-णं, ममाण-णं, महाण-णं, मज्झाण-णं

Aho ! Shrutgyanam

स० ए० ममंसि, मम्हि । मइ, मि, ममाइ, मए, मे, अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्झम्मि, अम्हंसि, ममंसि, महंसि, मज्झंसि, इत्यादि ।

स० ब० अम्हेसु । अम्हसु (सुं) अम्हेसु (सुं) ममसु (सुं) ममेसु (सुं) महसु (सुं) महेसु (सुं) मज्झसु (सुं) मज्झेसु (सुं)

२६ एतावानेव भेदस्तुम्हशब्दरूपेष्वपि विस्तरभयान्नेह रूपाणि लिख्यन्ते तुलनां चिकीर्षुभिस्तत्तद्व्याकरणे निरीक्षणीयम् ॥

स्त्रीलिङ्गविषये

२७ स्त्रीलिङ्गे प्रथमाद्वितीयाबहुवचने प्राकृते रूपत्रयमर्द्धमागध्यां रूपद्वयं भवति तथाहि—

अ० मा०	प्रा०
मालाओ, माला	मालाओ, मालाउ, माला
बुद्धीओ, बुद्धी	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी
धेणूओ, धेणू	धेणूओ, धेणूउ, धेणू
णईओ, णई	णईओ, णईउ, णई (णईआ)
वहूओ, वहू	वहूओ, वहूउ, वहू,

२८ तृतीयाषष्ठीसप्तम्येकवचनेऽर्द्धमागध्यामेकैकमेव रूपं भवति प्राकृते तु रूपचतुष्टयं भवति तथाहि—

Aho ! Shrutgyanam

अ० मा०	प्रा०
तृ० ष० स० मालाए	मालाअ, मालाआ, मालाइ, मालाए
,, ,, ,, बुद्धीए	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए
,, ,, ,, धेणूए	धेणूअ, धेणूआ, धेणूइ, धेणूए
गाईए	गाईअ, गाईआ, गाईइ, गाईए
बहूए	बहूअ, बहूआ, बहूइ, बहूए

२९ पञ्चम्या एकवचनबहुवचनयोः प्राकृते रूपाणामाधिक्यं पुँल्लिङ्गवदेव प्रत्ययानामाधिक्यादर्द्धमागध्यां तु रूपमेकैकमेव ।

३० कजतशब्दातिरिक्तसर्वनामशब्देषु स्त्रीलिंगे प्राकृते कश्चिद्विशेषो नास्ति, अर्द्धमागध्यां तु षष्ठीबहुवचने 'सव्वासिं' इति विशेषरूपं विद्यते.

३१ कजतशब्दानां स्त्रीलिङ्गे षष्ठ्येकवचने प्राकृते किस्सा, कास, जिस्सा, जास, तिस्सा, तास, इति रूपाणि दृश्यन्तेऽर्द्धमागध्यां तु तानि रूपाणि न सन्ति

३२ इमशब्दस्य षष्ठ्येकवचने 'इमीसे,' सप्तम्येकवचने 'इमीसाए, रूपमर्द्धमागध्यां दृश्येते प्राकृते तु न विद्येते ।

नपुंसकलिङ्गे—

३३ प्रथमाद्वितीयैकवचन इकारान्तोकारान्तयोरर्द्धमागध्यां रूपमेकमेव दृश्यते प्राकृते तु द्वे—

अ० मा०	प्रा०
दहिं	दहि, दहिं.
महुं	महु, महुं

३४ प्रथमाद्वितीयाबहुवचनेऽर्द्धमागध्या तृतीयं रूपं

Aho ! Shrutgyanam

निरनुनासिकं प्राकृते तु सानुनासिकमस्ति तथाहि–

अ० मा०	पा०
वणाणि वणाइं वणाइ	वणाणि, वणाइं, वणाइँ,
दहीणि दहीइं दहीइ	दहीणि, दहीइं, दहीइँ
महूणि, महूइं, महूइ	महूणि महूइं महूइँ

कारकविषये–

३५ प्राकृते सप्तम्याः स्थाने द्वितीयाविधानं कृतमार्षे तु तृतीयापि दृश्यते, यथा "तेणं कालेणं तेणं समएणं" "जेणामेव सेणिए राया तेणामेवोवागच्छइ"

३६ अर्द्धमागध्यां क्वचित्कर्त्रर्थे चतुर्थी दृश्यते यथा– के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए. (गमनकर्तेत्यर्थः) प्राकृते तादृशः प्रयोगो न दृश्यते.

३७ मज्झंमज्झेण शब्दयोगे द्वितीया षष्ठी सप्तमी चा-र्द्धमागध्यां दृश्यते यथा 'नयरस्स मज्झंमज्झेण' 'नय-रं मज्झंमज्झेण' 'नयरे मज्झंमज्झेण' प्राकृते तथा नास्ति

समासविषये

३८ तमुक्काए णं भंते केमहालए........एमहालए णं गोयमा! तमुक्काए पण्णत्ते इत्यादि प्रयोगेषु केमहाल-ए एमहालए इति समासः प्राकृतव्याकरणेन न सि-द्ध्यति ।

३९ अजहण्णमणुक्कोसो, अवुक्खमसुहा, अंगमंगा-इं, सामाइयमाइयाइं, खंधारो, पाओवगमणं पुव्विंपि, पुव्वंपि, आगन्तगारं आगन्तारं, अयं संधी अयमेयारू-वे, इमेयारूवे, जसोकामी, जसोचंदो, अयोकवलं अयो-

Aho ! Shrutgyanam

कुंभी, तवोकम्मं, आणापाणू, इत्यादयोऽर्द्धमागधीप्रयोगाः प्राकृतव्याकरणेन न सिद्ध्यन्ति।

तद्धिते

४० बहुतराए, अप्पतराए, पुरच्छिमं, पुरत्थिमं पच्चच्छिमं, पच्चत्थिमं, परज्झो (पराधीन इत्यर्थः) वण्णवं, वण्णवंतो, भगवं, भगवंतो, आउसो, आउसंतो, गोमी, गोमिणी, सड्ढइ, वुसिमन्तो, दोसिणो, किमिणो, रइला (रजस्वला) ओयंसी, ओयस्सी, वच्चंसी, वच्चस्सी, कोलुण्णं (कारुण्यमित्यर्थे) पारेवच्चं, आहेवच्चं, कीसो, केसो, कीरिसो, (कीदृश इत्यर्थे) दोच्चं, तच्चं, जाए, पगामाए, केवच्चिरं, केवचिरं, जामेव, तामेव, जेणामेव, तेणामेव, इत्यादयः शब्दा अर्द्धमागध्यां प्रसिद्धास्तद्धितसिद्धाः प्राकृते तु न दृश्यन्ते ।

धातुप्रत्ययविषये.

१ अर्द्धमागध्यां गणत्रयविभागप्रदर्शनेन द्वितीयगणपठितानामेकारविकरणप्रत्ययः तृतीयगणपठितानां तु विकल्पेनैकारविकरणः प्राकृते तु सर्वेषामकारान्तधातूनामेकारविकरणः तेन गच्छेइ गच्छेसि इत्यादिरूपाणि प्राकृते भवन्ति नत्वर्द्धमागध्याम् ।

२ वर्त्तमानकालेऽर्द्धमागध्यां त्रिष्वपि पुरुषेषु एकैकं रूपं प्राकृते रूपाणामाधिक्यं तथाहि—

	अ०मा०	प्रा०
प्र०ए०	गच्छइ	गच्छइ गच्छए
प्र०ब०	गच्छन्ति	गच्छन्ति, गच्छन्ते, गच्छिरे
म०ए	गच्छसि	गच्छसि, गच्छसे.

Aho ! Shrutgyanam

म० ब	गच्छह	गच्छह, गच्छित्था
उ० ए	गच्छामि	गच्छामि, गच्छमि.
उ० ब०	गच्छामो	गच्छामो, गच्छिमो, गच्छमो
		गच्छामु, गच्छिमु, गच्छमु
		गच्छाम गच्छिम, गच्छम,

३ आज्ञार्थेऽर्द्धमागध्यां मध्यमपुरुषैकवचने गच्छा-हि गच्छ इति रूपद्वयं भवति, प्राकृते तु गच्छसु, गच्छहि गच्छ इति रूपत्रयं भवति। उत्तमपुरुषैकवचनबहुवचनयोः प्राकृते वर्तमानकालवद्बाहुल्यम्.

४ भूतकालेऽर्द्धमागध्यां त्रिष्वपि पुरुषेषु वचनयोरेक एवेंसुप्रत्ययो भवति यथा 'गच्छिंसु' प्राकृते तु स्वरान्तधातोः सीहीहीअप्रत्ययाः व्यञ्जनान्तधातोरीअप्रत्ययो, यथा—हासी, होही, होहीअ, गच्छीअ.

५ भविष्यदर्थेऽर्द्धमागध्यां त्रिष्वपि पुरुषेषु स्सहिप्रत्ययौ त्यादिपरौ भवतः, प्राकृते तु प्रथममध्यमपुरुषयोर्हिप्रत्यय एव त्यादिपरो न तु स्सप्रत्ययः।

६ वर्तमानोत्तमपुरुषैकवचनबहुवचनयोरर्द्धमागध्यामसधातोः असि, मि, मो इति रूपाणि भवन्ति. प्राकृते तु-म्हि, म्हो, म्ह इति रूपाणि भवन्ति.

७ भूतकालेऽसधातोरर्द्धमागध्यां आसी, आसिमो इत्यादि रूपाणि भवन्ति प्राकृते तु-आसि, अहेसित्ति रूपाणि

८ अकासि, अकारिस्सं, अकरिंसु, अभविंसु अतरिंसु भुविं, भुवी, लहित्थ, अणुसासिमि, होत्था, हुत्था, आहंसु, अब्बवी, आघं, घेच्छिइ, देच्छी, समुच्छिहिन्ति, संधयाति, पीडाइ, इत्यादयः प्रयोगा अर्द्धमागध्यां

Aho ! Shrutgyanam

प्रसिद्धाः प्राकृते न दृश्यन्ते.

९ भावकर्मणोरर्द्धमागध्यां सामान्यत इज्जप्रत्ययो भवति, प्राकृते त्विज्जे अप्रत्ययौ भवतः

अ०मा०	प्रा०
पढिज्जइ	पढीअइ, पढिज्जइ,

१० करधातोरर्द्धमागध्यां भावकर्मणोः कज्जइ कीरइ इत्यादिरूपाणि दृश्यन्ते प्राकृते तु न.

११ संबंधार्थकृदन्ते प्राकृते 'तुआण' प्रत्ययो भवति सोऽर्द्धमागध्यां न दृश्यते. प्राकृत इअ प्रत्ययो भवति तत्स्थानेऽर्द्धमागध्यामियाप्रत्ययोपि भवति. क्वचित् त्तु प्रत्ययो भवति यथा चइत्तु, सरित्तु इत्यादि प्राकृते तु तादृशरूपाणि न सन्ति.

१२ मोच्चा, पेच्चा, लद्धुं, लद्धूण, दिस्सा,इत्यादीनि संबंधार्थकृदन्तरूपाणि प्राकृते न दृश्यन्ते.

१३ अर्द्धमागध्यां हेत्वर्थकृदन्ते 'त्तए' प्रत्ययो भवति यथा 'करित्तए वागरित्तए, स प्राकृते न दृश्यते.

१४ अर्द्धमागध्यां भूतार्थे "पल्हत्थे वोचत्थो कडो (कृतः) अणुडागयं, छड्डियं (छिन्नं) परिवुडो, संवुडो, ऊसढो ऊसडो" इत्यादयः शब्दाः सिद्धास्ते प्राकृते न सिद्ध्यन्ति

१५ सिद्धहैमाष्टमाध्यायचतुर्थपादस्य द्वितीयसूत्रादारभ्य षट्पञ्चाशत्तमसूत्रपर्यन्तं ये धात्वादेशा दर्शिताः प्राकृतभाषायां तेषु स्वल्पा एवादेशा आर्षे प्रयुक्ता, बहुलास्तु न सन्त्येव तथाहि कथधातोर्दशादेशा विहितास्तेषु नवादेशानामेकोपि प्रयोगोऽर्द्धमागध्यां नास्ति । एवं धात्वन्तरेष्वपि ज्ञेयमतिविस्तरभयान्नेह प्रपञ्च्यते. इत्थं

Aho ! Shrutgyanam

महाराष्ट्रीजैनमहाराष्ट्रीप्राकृतभाषातोऽर्द्धमागध्या भेदः स्पष्टः प्रतीयते तथा च तद्भाषायाः स्वतन्त्रव्याकरणेना-वश्यं भवितव्यमिति मनोरथो मनसि कियता कालेना-सीदर्द्धमागधीकोषनिर्माणानन्तरं स दृढतरोऽभवत्तावतो-दारचित्ताग्रणीश्रीमदगरचंदभैरौदानश्रेष्ठिवराणां राज-स्थानान्तर्गतविक्रमपुर (बीकानेर) निवासिनां तस्मिन् कार्ये प्रेरणा जाता तदुत्साहितो मैथिलपण्डितश्रीयदुनाथ-मिश्रस्य साहाय्येन गहनमप्येतत्कार्यं मासनवकेन पा-रयितुं समर्थोऽभवम् ।

इयं भाषा संस्कृतमूला वा स्वतन्त्रेति विमर्शस्तु नेह क्रियते प्राकृतपाठमालाया उपोद्धाते विस्तरेण तच्चिन्तनात्त-त्रैव प्रेक्षावद्भिर्निरीक्षणीयम् ।

संस्कृतसिद्धान्तकौमुद्यनुसारिशैलीविशिष्टत्वाज्जैनागम भाषालक्षणप्रदर्शनद्वाराजैनसिद्धान्तानां कौमुदीवत्प्रकाशक-त्वाच्चास्य व्याकरणस्य जैनसिद्धान्तकौमुदीति नामधेयमुचि-तमेव प्रतिभाति.

प्राय आगमोदयसमितिमुद्रितजैनसूत्राणामर्द्धमागधी-कोषस्य चाधारेणास्य रचना समजनि । यद्यप्यन्यापेक्षया स-मितिमुद्रणं संशुद्धं विद्यते परन्तु कालप्रवाहेण लेखकानां स्खलनया सूत्रेष्वनेकानि पाठान्तराणि जातानि— त्थकारच्छ-कारयोः सादृश्येन क्वचित् पुरत्थिमः, क्वचित्पुरच्छिमः, क्व-चिद्दत्थिवेयणा, क्वचिदच्छिवेयणा, ग्गगाक्षरयोः सादृश्येन पडिग्गहेइ पडिगाहेइ इत्याद्यनेकानि संदेहस्थानानि सन्ति तादृशस्थलेषु क्वचिद्यथामति निर्णयः कृतः क्वचिदुभयपाठः समादृतः ।

Aho ! Shrutgyanam

अल्पश्रमेण विद्यार्थिनां बोधो यथा स्यात्तथाविधशैली समादरेणात्र प्रकृतिप्रत्ययादिविभागः स्वीकृतः ।

सूत्रेषु शब्दानां धातूनां च प्रयोगा यथा यथा दृष्टास्तथा तथा ते साधिताः । गवादिशब्दानां सर्वविभक्तिरूपाणि सूत्रे नोपलभ्यन्ते तेन यावन्ति रूपाणि लब्धानि तावन्त्येव साधितानि केषांचिदनुपलब्धान्यपि रूपाणि व्याकरणान्तरानुसारेण साधितानि ।

यद्यप्येतद्व्याकरणरचनायाः प्राथम्यान्नव्यत्वात्संभवोऽस्ति स्खलनायाः तथापि सहृदया विद्वरा हितबुद्ध्या सूचयिष्यन्ति मां चेत्तत्स्खलनां तदा द्वितीयावृत्तौ तत्संशोधनं भविष्यति सुज्ञेषु किं बहुना !

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

स्थल—मोरबी. वि०स० १९८२ }
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी } मुनिरत्नचन्द्रः

शुद्धिपत्रम्

पृ०	पं०	अशुद्धिः	शुद्धिः
३०		इम्हस सोतोऽयम् २।१।४७	इम्हरा सोतोऽयम् २।१।४७
३०		कादिहितोरितो डओः २।१।४५	कादिहितोरितो डओ
१७७		डस्येऽकंख हांर्थश्च वा ३।३।२८	हस्येडकंख ह ईश्च वा
१८२		वरस्य वारुस्ते तो ३।३।५२	वरसस्य वासस्ते तो ३।३।५२
६२	१८	भोजिण	भोजिणा
३५	१०	आदीते हस्योमि	आदीदूतां हस्वोमि
३५	११	०आकारेकारयोः	आकारेकारोकाराणाम्
३६	४	मेरादीद्भ्य म्	मेरादीदूद्भ्यः
३६	५	०दीकार।ब	०दीकारादूकार।ब
३८	५	परस्यादितोडें	परयोरदितोडें
१९५		सू० ४।४।११६	सू० ४।४।११५
२२		सू० ४।४।११४	सू० ४।४।११३
१८९		सू० ४।४।११५	सू० ४।४।११४
२२१		सू० ४।४।११८	सू० ४।४।११७
१२३	वा०	(आगमनमाभ्यामित्ये-कारविकल्पे)	आगमनमाभ्यामित्येकारविकल्पे
१२३		खाद्यानां तौ ४।४।२६	खादीनां तौ ४।४।२६
१७७		तुं तूणतव्येषु घेत् ॥३।३।३१॥ गिण्हधातोस्तुंतूण०	तुंतूणतव्येषु घेत्।३।३।३१ गिण्हधातोस्तुंतूण०

Aho ! Shrutgyanam

* ॐ नमो वीतरागाय *

शतावधानिपण्डितप्रवरमुनिश्रीरत्नचन्द्रस्वामिविरचिता

जैनसिद्धान्तकौमुदी

[अर्द्धमागध्याकरणम्]

पूर्वार्द्धम्

प्रणम्य श्रीमहावीरं मोक्षमार्गप्रकाशकम् ।
क्रियते तत्त्वबोधाय जैनसिद्धान्तकौमुदी ॥१॥

अथ संज्ञाप्रकरणम्

अ आ इ ई उ ऊ ए ओ स्वराः ॥ १।१।१॥

एते स्वरसंज्ञाः स्युः ॥

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व स हा
व्यञ्जनानि ॥ १।१।२॥

इमे वर्णा व्यञ्जनसंज्ञकाः । तत्र कादिङान्ताः कवर्गः । चादिञान्ता श्चवर्गः । टादिणान्ता ष्टवर्गः । तादिनान्तास्तवर्गः । पादिमान्ताः पवर्गः ।

अ इ उ ह्रस्वाः ॥१।१।३॥

एते त्रयो ह्रस्वसंज्ञा भवन्ति ॥

Aho ! Shrutgyanam

आ ई ऊ दीर्घाः[1] ॥१।१।४॥

एते त्रयो दीर्घसंज्ञकाः ॥

वर्णोपरि बिन्दुरनुस्वारः ॥१।१।५॥

वर्णोपरि विद्यमानो बिन्दुरनुस्वारसंज्ञको भवति ॥

स्वराणामन्त्याष्टिः ॥१।१।६॥

स्वराणां मध्ये योऽन्त्यः स टिसंज्ञः स्यात् ॥

अन्त्यात्पूर्व उपधा ॥१।१।७॥

अन्त्यवर्णात्पूर्वो वर्ण उपधासंज्ञः स्यात् ॥

अप्रयुज्यमानः सफल इत् ॥ १।१।८॥

प्रयोगेष्वप्रयुक्तः किञ्चित्कार्यं विधातुमुपात्तो वर्ण इत्संज्ञः स्यात् ॥

डः प्रत्ययादिः ॥१।१।९॥

प्रत्ययस्यादिर्डकार इत्संज्ञः स्यात् ॥

इतो लोपः ॥४।४।६०॥

इत्संज्ञकस्य लोपः स्यात् ॥

डिति टेः ॥४।४।६१॥

डिति परे टेर्लोपः स्यात् ॥

स्वरानन्तराणि व्यञ्जनानि संयुक्तम् ॥१।१।१०॥

बहुवचनमनेकार्थम् । स्वराव्यवहितयोर्व्यञ्जनयोर्व्यञ्जनानां वा संयुक्तसंज्ञा स्यात् ॥

॥ इति संज्ञाप्रकरणम् ॥

१ ए ओ इत्येतयोर्दीर्घत्वेऽपि फलाभावाद्दीर्घसंज्ञा न कृता ग्रन्थकर्त्रा ।

Aho ! Shrutgyanam

अथ परिभाषाप्रकरणम् ॥

आदेदोतामादिदुतो ह्रस्वाः ॥१।१।३५॥

तकार उच्चारणार्थः। ह्रस्वादेशो विधीयमान आकारस्याकार एकारस्येकार ओकारस्योकारो बोध्यः ॥

अदिदुतामादेदोतो वृद्धिः ॥१।१।३६॥

अकारेकारोकाराणां वृद्ध्यादेशो विधीयमानः क्रमादाकारैकारौकारा ज्ञेयाः ॥

अदाताविदीतावुदूतौ सवर्णौ ॥१।१।३७॥

सवर्णादेशो विधीयमानः क्रमेणोक्तयोरेकस्यापरो बोध्यः॥

व्यञ्जनेषु प्रथमद्वितीययोस्तृतीयचतुर्थयोश्च प्रथमतृतीयौ ॥१।१।३८॥

व्यञ्जनवर्णेषु कचटतपवर्गाणां कखयोर्गघयोश्च कगौ, चछयोर्जझयोश्च चजौ, टठयोर्डढयोश्च टडौ, तथयोर्दधयोश्च तदौ, पफयोर्बभयोश्च पबौ, सवर्णौ ज्ञेयौ ॥

समानयोर्विरोधे परम् ॥१।१।३९॥

तुल्यबलकविरुद्धकार्यद्वयप्रसङ्गे परं कार्यं स्यात् ॥

षष्ठ्या अन्त्यस्य ॥१।१।४०॥

षष्ठीनिर्देशेन क्रियमाणं कार्यमन्त्यस्य बोध्यम् ॥

विशेषणं तदन्तस्य ॥१।१।४१॥

विशेषणीभूतं तदन्तस्य संज्ञा स्यात् ॥

Aho ! Shrutgyanam

अनेकवर्णसित्सर्वस्य ॥१।१।४२॥

अनेकवर्णकादेशः सकारेत्संज्ञकादेशश्चसर्वस्य स्थाने भवतः ॥

टकितावाद्यन्तयोः ॥१।१।४३॥

टित्कित्कार्यं यस्य विहितं क्रमात्तस्याद्यन्तयोः स्यात् ॥

॥ इति परिभाषाप्रकरणम् ॥

अथ स्वरसन्धिप्रकरणम् ।

एकः पूर्वपरयोः ॥१।२।४॥

अधिकारोऽयम् ॥

बहुलम् ॥१।२।१॥

अधिकारोऽयम् ॥

क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव ।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति ॥१॥

स्वरयोरव्यवधाने प्रकृतिभावो लोपो वैकस्य ॥१।२।२॥

स्वरयोरव्यवधानेन समभिव्याहारे प्रकृतिभावः पूर्वपरयोरन्यतरस्य लोपो वा स्याद्यथाप्रयोगम् । बे+इंदिया=बेइन्दिया[1] । ते+इंदिया=तेइंदिया[2] । पंजलि+उडा=पंजलिउडा[3] । इक्क+असीई=इक्कसीई[4] । तहा+इत्ति=तहत्ति[5] । ते+असी=तेसी[6] ॥

१ द्वीन्द्रियाः। २ त्रीन्द्रियाः। ३ प्राञ्जलिपुटाः। ४ एकाशीतिः। ५ तथेति। ६ त्र्यशीतिः।

तदभावे सन्धिः ॥१।२।३॥

तथाभूतयोः स्वरयोः प्रकृतिभावलोपाभावपक्षे वक्ष्यमाणाः सन्धयः स्युः ॥

वृद्धिरतः स्वरे परस्य ॥१।२।६॥

अकारात्स्वरे परे पूर्वपरयोः परसवर्णा वृद्धिरेकादेशः स्यात् । जिण+ईसरो=जिणेसरो[1] । चाउल+उदगं=चाउलोदगं[2] । समण+उवासगो=समणोवासगो[3] ॥

सवर्णे दीर्घः ॥१।२।७॥

स्वरात्सवर्णे स्वरे परे पूर्वपरयोर्दीर्घ एकादेशः स्यात् । पास+अवचिज्जो=पासावचिज्जो[4] । गमण+आगमणे=गमणागमणे[5] । अइ+इति=अईति[6] । भाणु+उदओ=भाणूदओ[7] ॥

इदीदुदूतामसवर्णे पूर्वः ॥१।२।९॥

इकारेकारयोरुकारोकारयोश्चासवर्णे स्वरे परे पूर्ववर्णवृत्त्यानुपूर्वीमद्वर्णादेशः स्यात् । पलि+अंको=पल्लंको[8] । समनु+इतो=समन्नितो[9] ।

समानयोः पूर्वस्य सवर्णः ॥१।२।५॥

एकानुपूर्वीकवर्णद्वयस्याव्यवधाने पूर्वस्य स्वसवर्ण आदेशः स्यात् । अभि+उट्ठेमि=अब्भुट्ठेमि[10] ।

---

१ जिनेश्वरः । २ तन्दुलोदकम् । ३ श्रमणोपासकः । ४ पार्श्वापत्यीयः । ५ गमनागमने । ६ अतीति । ७ भानूदयः । ८ पल्यङ्कः । ९ समन्वितः । १० अभ्युत्तिष्ठामि ।

Aho ! Shrutgyanam

तरहेभ्यश्चजझाः ॥१।२।१०॥

तकाररेफहकारेभ्यः परेषां तेषां क्रमेण च ज झ इत्येते आदेशाः स्युरसवर्णे स्वरे । पति+अप्पिणइ=पच्चप्पिणइ[1] । "रेफस्य परसवर्णे" परि+उवासणा=पज्जुवासणा[2] । अहिइ +आवणा इति स्थिते, सवर्णदीर्घे ईकारस्य झकारो हकारस्य परसवर्णेन जकारः" अज्झावणा[3]। अहि+अयणं=अज्झयणं[4] ॥

स्वराददातोर्यद् ॥४।४।१॥

स्वरात्परयोरकाराकारयोः क्वचिद् यडागमः स्यात विपरि+आसो=विपरियासो[5] । पलि+अंको=पलियंको[6] ।

स्वराद्यस्य ॥४।४।६२॥

स्वरात्परस्य यकारस्य बहुलं लोपः स्यात्स्वरे परे । जिय+ इंदिए=जिइंदिए[7] । गय+इंदो=गइंदो[8] ॥

संयुक्ते ह्रस्वः १।२।१२

संयुक्ते परे पूर्वस्य बहुलं ह्रस्वः स्यात् । आ+क्कोसइ= अक्कोसइ[9] । की+ण्णो=किण्णो[10] । गच्छ+इज्जा=गच्छिज्जा[11], गच्छेज्जा । हो+ज्जा=हुज्जा[12], होज्जा ।

उद्‌निर्वीनां संयुक्ते ॥१।२।११॥

एषां स्वरस्य संयुक्ते परे दीर्घो बहुलं स्यात् ।

---

१ प्रत्यर्पयति । २ पर्युपासना । ३ अध्यापना । ४ अध्ययनम । ५ विपर्यासः । ६ पल्यङ्कः । ७ जितेन्द्रियः । ८ गजेन्द्रः ९ आक्रोशति । १० कीर्णः । ११ गच्छेत् । १२ भवेत् ।

Aho ! Shrutgyanam

उपसर्गस्य दीर्घात् ॥१।२।२४॥

उपसर्गसम्बन्धिदीर्घात्परस्य संयुक्तस्यादेर्लोपः स्यात् । उद्+स्ससन्ति=ऊससन्ति[1]। दुर्+सहो=दूसहो[2], दुस्सहो। निर्+णेइ=णीणेइ[3] । वि+स्समइ=वीसमइ[4] । आ+स्सासि=आसासि[5]।

पत्तादिषु नित्यम् ॥१।२।१३॥

एषु संयुक्ते परे पूर्वस्य ह्रस्वो नित्यम् । पा+त्तं=पत्तं[6] । संपत्तं[7] । भारिया+त्ता=भारियत्ता[8]

॥ इति स्वरसन्धिप्रकरणम् ॥

अथ व्यञ्जनसन्धिः ॥

अहे व्यञ्जनस्य परसवर्णः ॥१।२।२०॥

हभिन्ने व्यञ्जने परे पूर्वव्यञ्जनस्य परसवर्ण आदेशः स्यात्। सत्+कारो=सक्कारो[9] । उत्+कसो=उक्कसो[10] । निर्+चरइ=निच्चरइ[11] । इध्+ढी=इड्ढी[12] ॥

त्रयाणामव्यवधाने पूर्वस्य लोपः ॥१।२।२१॥

व्यञ्जनत्रयस्याव्यवधाने सति पूर्वस्य लोपः स्यात्। निर्+च्छुभइ=निच्छुभइ[13] । पुच्छ्+ठो=पुट्ठो[14] ॥

---

१ उच्छ्वसन्ति । २ दुःसहः । ३ निर्णयति । ४ विश्राम्यति । ५ आश्वसिषि ६ प्राप्तम् । ७ संप्राप्तम् । ८ भार्याता । ९ सत्कारः । १० उत्कर्षः । ११ निश्चरति । १२ ऋद्धिः । १३ निक्षिपति । १४ पृष्टः ।

Aho ! Shrutgyanam

अपूर्वस्य संयुक्तस्य १।२।२३॥

संयुक्ते पूर्वस्य लोपः स्यात्संयुक्तमपूर्वं चेत् । कमइ[1] । किणेइ[2] । अपूर्वेति किम् । विक्कमइ[3] । विक्केइ[4] ॥

समश्च ॥१।२।२२॥

समः परस्य संयुक्तस्यादे र्लोपः स्यात् । सम्+क्कमइ=संकमइ[5] । सम्+क्कमणे=संकमणे[6] ॥

निरः क्कमस्य ॥१।२।२५॥

निरः परस्य क्कमधातोरादेर्लोपः स्यात् ।

कमचिणतरपज्जानां द्वितीयः ॥१।२।२७॥

निरः परेषामेषामादेर्द्वितीयवर्ण आदेशः स्यात् । निर्+क्कमइ=निक्खमइ[7] । निर्+क्कमणं=निक्खमणं[8] । निर्+चओ निच्छओ[9] । निर्+तरइ=नित्थरइ[10] । णिर्+पज्जइ=णिप्फज्जइ[11] "बाहुलकात्" णिप्पज्जइ ।

दो हो धः ॥१।४।१॥

दकारात्परस्य हकारस्य धकारः स्यात् । उद्+हरो=उद्धरो[12] ॥

---

१ क्रामति । २ क्रीणाति । ३ विक्रमते । ४ विक्रीणीध्वे । ५ संक्रामति । ६ संक्रमणे । । ७ निष्क्रामति । ८ निष्क्रमणाम् ९ निश्चयः १० निस्तरति । ११ निष्पद्यते । १२ उद्धरः ।

Aho ! Shrutgyanam

उदः स्थः छः ॥१।४।५॥

उदः परस्य सकारस्य छकारो वा स्यात् । उद्+साहो=उच्छाहो[1] । उद्+सयो=उच्छयो[2] । पक्षे परसवर्णे उस्साहो, उस्सओ ॥

मोऽनुस्वारोऽवसानव्यञ्जनयोः ॥१।४।२॥

अवसाने व्यञ्जने च परे मकारस्यानुस्वारः स्यात् । निओइउं । सम्+सरइ=संसरइ[3] ॥

स्वरे वा ॥१।४।३॥

मकारस्य स्वरे परेऽनुस्वारो वा स्यात् ।

"उसभमजिअं च वन्दे"[4] "कुंथुं अरं च मल्लिं"

तस्य सवर्गीयपञ्चमः स्पर्शेषु ॥१।४।४॥

कादिमान्ताः स्पर्शास्तेषु परेष्वनुस्वारस्य परवर्णवर्गस्थितः पञ्चमो वर्ण आदेशो वा स्यात् । सम्+चरइ=सञ्चरइ[5], संचरइ । सम्+पावेइ=सम्पावेइ[6], संपावेइ ॥

णम्यनुस्वारस्य ॥४।४।८६॥

णमि परेऽनुस्वारस्य लोपो वा स्यात् । अहं+णं=अह णं । पक्षे परसवर्णे अहण्णं । तेसिं+णं=तेसि णं[7], तेसिण्णं ॥

॥ इति व्यञ्जनसन्धिप्रकरणम् ॥

---

१ उत्साहः । २ उद्+शयः । ३ संसरति । ४ "ऋषभमजितञ्च वन्दे" ५ सञ्चरति । ६ संप्राप्नोति । ७ तेषां,णमिति वाक्यालङ्कारे ।

Aho ! Shrutgyanam

अथ स्वरविकारप्रकरणम् ॥

इः क्विणभुजङ्गयोः ॥१।३।२॥

अनयोरुपधायाः पूर्वस्वरस्येकारो वा स्यात्। किविणो[1], क्विणो। भुइंगो[2], भुअंगो ॥

खुड्डस्य के दीर्घः ॥१।३।१॥

खुड्डशब्दस्य कप्रत्यये परे दीर्घोऽन्तादेशो वा स्यात्। खुड्डायं[3], खुड्डागं, खुड्डगं, खुड्डयं, खुड्डकं ॥

चरमे रस्य ॥१।३।३॥

चरमशब्दे रेफस्येकारोऽन्तादेशो वा स्यात्। चरिमं चरमं ॥

सुरभिदुरभ्यो रस्य ॥४।४।६३॥

एतयोरकारस्य लोपो वा स्यात् ॥ सुब्भि, सुरभि। दुब्भि, दुरभि ॥

नग्नस्यादेः स्वरस्य ॥१।३।४॥

नगिणशब्दस्य पूर्वस्वरस्येकारादेशो वा स्यात्। निगिणं नगिणं[4]।

उपधायाः ॥१।३।६॥

अधिकारोऽयम् ॥

अश्विक्खिल्लादीनाम् ॥१।३।७॥

---

१ कृपणः। २ भुजङ्गः ३ क्षुद्रकः ४ नग्नम्।

Aho ! Shrutgyanam

एषामुपधायाः पूर्वस्वरस्याकारादेशो वा स्यात् । चिक्खि[1]-ल्लं, चिक्खल्लं । गरुयं, गुरुयं । अगरु, अगुरु ॥

उर्मत्थुलिङ्गस्य ॥१।३।८॥

अस्येकारस्योकारो वा स्यात् । मत्थुलुंगं[2], मत्थुलिंगं ॥

विच्छिये चोऽनुस्वारः ॥१।३।१६॥

विच्छियशब्दे चकारस्यानुस्वारादेशो वा स्यात् । विंछिए[3]। पक्षे ।

उसियस्य ॥१।३।१७॥

विच्छियशब्दे इयस्योसादेशो वा स्यात् । विच्छू, विच्छिए ॥

वईत ऊदोतौ ॥१।३।१५॥

वईशब्दस्योकारौकारावन्तादेशौ वा स्तः ॥ [4]वऊ, वओ वई ॥

उदूतोरोदुतौ लस्य द्विः कुतूहले ॥१।३।१४॥

कुतूहलशब्दे उकारस्यौकार ऊकारस्य ह्रस्वो लकारस्य द्वित्वं च वा स्युः । कोउहल्लं, कोउहलं, कोऊहल्लं, कोऊहलं, कुऊहलं, कुतूहलं ॥

पुरुसे द्वितीयस्योत इः ॥१।३।६॥

पुरुसशब्दे द्वितीयोकारस्येकारो वा स्यात् । पुरिसो पुरुसो ॥

---

१ प्रबलकर्दमः । २ मातुलिङ्गम् । ३ वृश्चिकः । ४ वाक्

Aho ! Shrutgyanam

ओस्तंबूलस्य ॥१।३।८॥

तंबूलशब्दस्योपधायाः पूर्वस्वरस्यौकारो वा स्यात्। तंबोलं तंबूलं ॥

दुकूलस्य द्विर्ह्रस्वश्च ॥१।३।११॥

अस्योपधाया द्वित्वं तत्पूर्वस्य स्वरस्य ह्रस्वश्च वा स्तः। दुगुल्लं, दुगूलं, दुकूलं ॥

अस्सादिषु* संयुक्तस्यादिपूर्वयोर्लोपदीर्घौ ॥१।४।८॥

अस्सादिगणपठितेषु संयुक्तस्यादेर्लोपः पूर्वस्य दीर्घश्च बहुलं स्यात्। आसो, अस्सो। आसत्थो, अस्सत्थो। आभक्खाणं, अब्भक्खाणं ॥

एतः कारेल्लस्येयः ॥ १।४।६॥

कारेल्लस्यैकारस्येयादेशो वा स्यात्। कारियल्लं, कारेल्लं, कारिल्लं ॥

वेंटालिसिंदयोरत् ॥१।३।१०॥

अनयोरुपधायाः पूर्वस्वरस्याकारो वा स्यात्। वंटं, वेंटं। आलिसंदो, आलिसिंदो ॥

उउंबरस्योतो लोपः ॥१।३।५१॥

उउंबरशब्दस्योकारस्य लोपो वा स्यात् ॥ उंबरो, उउंबरो ॥

इति स्वरविकारप्रकरणम् ॥

---

* अस्स, अस्सत्थ, जिब्भा, मणुस्स, तुस्स, सिस्स, अमावस्स, अब्भक्खाण, आकृतिगणोऽयम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ व्यञ्जनविकारप्रकरण

अनादेरसंयुक्तस्य को गयौ ॥ १। ४ ॥ १०

अनादिभूतस्यासंयुक्तस्य ककारस्य गकारयकारौ पर्यायेण वा स्तः। अहि+करणं=अहिगरणं[1]। अव+कारो=अवयारो[2]। वि+कसन्तो=विअसन्तो[3]॥

नेः कसस्यादेर्घः ॥१।४।१०२॥

नेरुपसर्गात्परस्य कसस्यादेर्घकारो वा स्यात्। नि+कसो=निघसो[4], निकसो ॥

खेत्तस्य छः १।४।१०३॥

अस्यादेश्छकारादेशो वा स्यात्। छेत्तं[5], खेत्तं॥

गिम्हस्य घिंसुः ॥१।४।१०४॥

अस्य घिंसु इत्यादेशो वा स्यात्। घिंसू[6], गिम्हो ॥

गचजतदां यः ॥१।४।२०॥

अनादिभूतानामसंयुक्तानामेषां यकारः स्याद्बहुलम्। जयं[7], जगं। भइणी[8], भगिनी। भाइल्लगो[9], भागिल्लगो। आउत्तं[10], आगुत्तं। सोयं[11], सोअं, सोचं। अइणं, अजिणं। गओ,

---

१ अधिकरणम्। २ अपकारः। ३ विकसन्। ४ निकषः। ५ क्षेत्रं। ६ ग्रीष्मः। ७ जगत्। ८ भगिनी। ९ भागिकः(अंशग्राही)। १० आगुप्तम्। ११ शौचम्।

Aho ! Shrutgyanam

गजो । अवतरणं, अवयरणं । वियरइ, वितरति । आगई, आगती । उयरं, उदरं । पयाहिणा[1], पदाहिणा । कयत्थो[2], कदत्थो । आयं[3], आजं । इंदयालं, इंदजालं ।

वा० (उडजे वस्य चोपसंख्यानम्) । उडवं[4], उडयं उडजं ॥

णिच्चे चयोस्तियः ॥१।४।१०५॥

णिच्चशब्दे चकारयोस्तियादेशो वा स्यात् । णितियं[5], णिइयं, णिच्चं ॥

णिहस्य गहघरहराः॥१।४।१०६॥

गिहशब्दस्य गहघरहरा आदेशाः पर्यायेण वा स्युः । गहं, घरं, हरं, गिहं ॥

मिलेच्छेच्छस्य क्खुः ॥१।४।१५॥

मिलेच्छशब्दे च्छस्य क्खु इत्यादेशो वा स्यात् ।

एतोऽदुताविलयोर्लोपः ॥१।४।१६॥

मिलेच्छशब्दे एकारस्याकारोकारौ इकारलकारयोश्च लोपः पर्यायेण स्युः । मिलेक्खू[6], मिलक्खू, मिलुक्खू मिलेच्छो, मिलिच्छो, मिच्छो, मेच्छो ॥

पज्जाये ज्जायस्य रियागः ॥१।४।१७॥

पज्जायशब्दे ज्जायभागस्य रियागादेशो वा स्यात् । परियाँगो[7], परिआगो, पज्जायो ॥

---

१ प्रदक्षिणा। २ कृतार्थः । ३ आज्यम ४ उटजम् । ५ नित्यम् । ६ म्लेच्छः । ७ पर्यायः ।

Aho ! Shrutgyanam

भेसजस्य हः ॥१।४।१०७॥

अस्योपधाया जकारस्य हकारो वा स्यात् । भेसहं[1] भेसजं ॥

परिवाट्यो डः ॥१।४।१०८॥

परिवाटीशब्दस्योपधायाष्टकारस्य डकारो वा स्यात् । परिवाडी[2] परिवाटी ॥

मत्तिये तयोष्टौ ॥१।४।१८॥

मत्तियाशब्दे तकारयोष्टकारौ वा स्तः । मट्टिया[3], मत्तिया ॥

अहेरत्तस्य ठथौ ॥१।४।१०९॥

अहेरुपसर्गात्परस्यात्तशब्दस्योपधायाष्टकारथकारावादेशौ पर्यायेण वा स्याताम् । अज्झट्ठं[4], अज्झत्थं ॥

तत्थस्य तहः ॥१।४।१९॥

तत्थशब्दस्य तहादेशो वा स्यात् । तहं[5], तत्थं ॥

बीभत्थस्य छश्च ॥१।४।११०॥

बीभत्थशब्दस्योपधायाश्छकारादेशो ह्रस्वश्च वा स्यात् । बीभच्छो[6], बिभच्छो, बीभत्थो ॥

बुधादीनां धस्य हः ॥१।४।२१॥

बुधादिगणपठितानां धकारस्य हकारो वा स्यात् । बुहो,

---

१ भेषजम् । २ परिपाटी ३ मृत्तिका । ४ अध्यात्मम् । ५ तथ्यम् । ६ बीभत्सम् ।

Aho ! Shrutgyanam

बुधो । रुहिरं, रुधिरं । एहन्तो[1], एधन्तो । खुहा, खुधा । इत्यादि ॥

वज्जादीनां वस्योस् ॥१।४।१२॥

वज्रादिशब्दानां वस्योसादेशो वा स्यात् । आउज्जो[2], आवज्जो । आउज्जणं[3] आवज्जणं ॥

धणोर्हक्क्खकौ ॥४।४।२॥

धणुशब्दस्य हक् क्खक् इत्येतावागमौ वा स्तः । धणुहं[4] धणुक्खं, धणुं ॥

नो णः सर्वत्र॥१।४।२२॥

धातौ नाम्नि प्रत्यये चादावनादौ च नकारस्य विकल्पेन णकारो णकारस्य नकारश्च विकल्पेन भवतः । णमंसइ[5] नमंसइ । णिच्चरइ[6], निच्चरइ । आकण्णइ[7], आकन्नइ । किरणं[8] । किन्नं ॥

परिहे परयोः फलौ ॥१।४।२३॥

परिहाशब्दे पकाररेफयोः फकारलकारौ वा स्तः । फरिहा[9], फलिहा, पलिहा, परिहा ॥

आतपादीनां पस्य वः ॥१।४।२४॥

आतपादिगणपठितानां पकारस्य वकारो वा स्यात् । आतवो, आतपो । कपोतो, कवोतो । वाहणा[10], पाहणा । जूवो, जूपो । दुरूवं, दुरूपं । अणुवालयं, अणुपालयं । विवरीयं,

---

१ एधमानः । २ आवर्जः, (आतोद्यम्) । ३ आवर्जनम् ४ धनुः । ५ नमस्यति । ६ दुःखं कथयति । ७ आकर्णयति ८ कीर्णम् । ९ परिखा । १० उपानद् ।

विपरीतं। वत्तियं[1] पत्तियं। इत्यादि॥

पिपीलिकाया अनादेः ॥१।४।२५॥

पिपीलिकाशब्दे द्वितीयपकारस्य वकारो वा स्यात्। पिवीलिका पिपीलिका॥

पुडपुरयोरुत्तरपदयोरादेः ॥१।४।२६॥

उत्तरपदभूतयोरेतयोरादेः पकारस्य लोपो वा स्यात्। तालउडं, तालपुडं। गोउरं, गोपुरं॥

पउमस्य पोम्मः ॥१।४।२७॥

अस्य पोम्मादेशो वा स्यात्। पोम्मं[2], पउमं॥

यजोर्जः ॥१।४।२८॥

यजुशब्दस्यादेर्जकारो वा स्यात्। जजुव्वेदो[3]। यजुवेओ॥

डरयोर्लो लस्य रः ॥१।४।१११॥

डकाररेफयोर्लकारो लकारस्य च रेफो बहुलं स्यात्। कोडंबो, कोलंबो। पोक्खरं[4] पोक्खलं। पालयामि[5]। परिपिल्लइ[6]। वियारेइ[7]॥

रिओरुडः ॥१।४।२९॥

रिउशब्दस्य उउ इत्यादेशो वा स्यात्। उऊ[8], रिऊ॥

उओर्डट्टदटौ यश्च॥४।४।३॥

---

१ प्रीतिकम्, प्रतीतम्, पत्रितम्। २ पद्मम्। ३ यजुर्वेदः। ४ पुष्करम्। ५ पारयामि। ६ परिप्रेरयति। ७ विदारयति। ८ ऋतुः।

Aho ! Shrutgyanam

उउशब्दान्त्यस्य डद्दावागमौ यादेशश्च पर्यायेण स्युः। उड्डू, उद्दू, उओ ॥

जुहिट्ठिले च ॥१।४।३०॥

जुहिट्ठिलशब्देऽपि लस्य द्वित्वं वा स्यात्। जुहिट्ठिल्लो[1], जुहिट्ठिलो ॥

अलाबुरिव्वोर्लोपः ॥१।४।११२॥

एतयोरुपधाया लोपो वा स्यात्। रिवू[2], रिऊ। अलाबू, अलाऊ ॥

लुक्खादीनां हः ॥१।४।११३॥

लुक्खादिगणपठितानामुपधाया हकारो वा स्यात्। "अस्सादित्वात्" लूहं[3], लुक्खं। जीहा[4], जिब्भा। रिसहो[5], रिसभो। ककुहं, ककुदं। गाहा, गाथा ॥

आविले वस्य ॥१।४।३१॥

आविलशब्दे वकारस्य लोपो वा स्यात्। आइलं, आवि-लं ॥

जुवललावन्नयोर्वस्य ॥१।४।३२॥

अनयोर्वकारस्य यकारो वा स्यात्। जुयलं[6], जुवलं। लायन्नं[7], लावन्नं ॥

उर्व्वसभस्य सातः ॥१।४।३३॥

१ युधिष्ठिरः। २ रिपुः। ३ रूक्षम्। ४ जिह्वा। ५ ऋषभः। ६ जुगलम्। ७ लावण्यम्।

वसभशब्दस्यादेर्वकारस्याकारसहितस्योकारादेशो वा स्यात्। उसहो, वसहो, उसभो, वसभो ॥

परिवारे वरयोर्यलौ ॥१।४।३४॥

परिवारशब्दे वकाररेफयोर्यकारलकारौ वा स्तः। परियालो, परिवारो ॥

दिवसे वसयोर्यहौ ॥१।४।३५॥

दिवसशब्दे वकारसकारयोर्यकारहकारौ वा स्तः। दियहं, दियसं, दिवहं, दिवसं ॥

उसिणपसिणयोः सिणस्य ण्हः ॥१।४।३६॥

अनयोः सिणस्य ण्हादेशो वा स्यात्। उण्हं[1]। पण्हो[2]। उसिणं। पसिणो ॥

असिलेसे सस्य द्विरश्चेतः ॥१।४।३७॥

असिलेसाशब्दे सकारस्य द्वित्वमिकारस्याकारश्च वा भवतः ॥

इलोर्लोपश्च ॥१।४।३८॥

असिलेसाशब्दे इकारलकारयोर्लोपो वा स्यात्। असिलेसा[3], अस्सलेसा, असिलेसा, असलेसा, अस्सेसा ॥

महरट्ठे हरयोर्व्यत्ययः ॥१।४।३९॥

अस्मिन् हकाररेफयोर्व्यत्ययो वा स्यात्। मरहट्ठं, महरट्ठं ॥

---

१ उष्णम्। २ प्रश्नः। ३ अश्लेषा।

सणियमश्चरस्य च्छरो यमो लोपः ॥१।४।४०॥

सणियंशब्दात्परस्य चरशब्दस्य च्छर इत्यादेशो यमो लोपश्च वा स्यात् । सणिच्छरो ॥ पक्षे .

यस्य चरे ॥१।४।४१॥

सणियंशब्दस्य यस्य लोपः स्याच्चरे परे । सणिंचरो, सणिंचारी ॥

इति व्यञ्जनविकारप्रकरणम् ॥

॥ अथ विभक्तिप्रकरणम् ॥

॥ तत्र पुल्लिँङ्गशब्दाः ॥

अधातुप्रत्ययोऽर्थवन्नाम ॥१।१।११॥

धातुभिन्नं प्रत्ययभिन्नं चार्थवच्छब्दरूपं नामसंज्ञं स्यात् ॥

कृत्तद्धितौ च ॥१।१।१२॥

कृत्प्रत्ययान्तं तद्धितप्रत्ययान्तं च शब्दस्वरूपं नामसंज्ञं स्यात् ॥

उदन्सिदिणेह्यएदत्तोदिहिंतोस्साणम्मीसत्वः सुप् ॥१।१।१३॥

उत् अत्, म् इत्, इण इहि, अएत्, अतोत् इहिंतो, स्स अणम्, मि इसु, एते सुप्संज्ञाः स्युः । "तकार उच्चारणार्थः" तत्र-उत् अत् प्रथमा । म् इत् द्वितीया । इण इहि तृतीया । अएत् चतुर्थी । अतोत् इहिंतो पञ्चमी । स्स अणम् षष्ठी । मि इसु सप्तमी ॥

Aho ! Shrutgyanam

सुपश्च ॥१।१।१८॥

सुपः प्रथमादिक्रमेण द्वौ द्वावेकवचनबहुवचनसंज्ञौ स्याताम् ॥

एकस्मिन्नेकवचनम् ॥१।१।४४॥

एकत्वविवक्षायामेकवचनं स्यात् ॥

तदन्यस्मिन् बहुवचनम् ॥१।१।४५॥

एकत्वसंख्याभिन्नसंख्याविवक्षायां बहुवचनं स्यात् ॥ "अत्र द्विवचनं नास्त्येव" ॥

चतुर्थ्यां न बहुवचनम् ॥१।१।४६॥

चतुर्थ्यां[1] बहुवचनं नास्ति ॥

नाम्नः सुपः ॥२।१।१॥

नामसंज्ञकाच्छब्दस्वरूपात्सुप्प्रत्ययाः स्युः ॥ अकारान्तः पुल्लिँङ्गो जिणशब्दः ॥

इदुतः पुंस्यतः ॥२।१।२॥

अकारान्तपुल्लिँङ्गनाम्नः प्रथमैकवचनस्योकारस्यैकारो वा स्यात् । जिण+उ=जिणो, जिणे । जिण+अ=जिणा ॥ जिण+म्=जिणं । जिण+इ=जिणे ॥

इणेह्योरनुस्वारो वा ॥४।४।४॥

इणइहिप्रत्यययोरनुस्वारान्तागमो वा स्यात् । जिण+इण=जिणेणं, जिणेण । जिण+इहि=जिणेहिं, जिणेहि ॥ जिण+अए=जिणाए ॥

---

१ तादर्थ्ये चतुर्थ्येकवचनं क्वचिद्भवति तदन्यत्र तु चतुर्थीस्थाने षष्ठ्येव प्रयुज्यते ।

Aho ! Shrutgyanam

अतोत्यन्त्यस्य ॥३।१।५॥

अकारान्तान्नाम्नः परस्मिन् पञ्चम्येकवचनेऽन्त्यस्वरस्य लोपो वा स्यात् । जिण+अतो=जिणाओ, जिणा ॥

अतोऽस्त्रियां हिस्तोतः क्वचित् ॥१।२।१८॥

अकारान्तान्नाम्नः परस्यातोत्प्रत्ययस्य तोतः स्थाने हिस्तादेशः स्यात् क्वचित्पुंसि क्लीबे च। जिणाहि । जिण+इहिंतो =जिणेहिंतो ॥ जिण+स्स=जिणस्स, जिण+अणम् =जिणाणं ॥

मेरादेः सलोपौ॥४।४।११४॥

सप्तम्येकवचनस्य मेरादिवर्णस्य पर्यायेण सकारादेशो लोपश्च वा स्यात् ॥

मौ व्यञ्जनादौ पूर्वस्य॥४।४।५॥

व्यञ्जनादौ सप्तम्येकवचने परे पूर्वस्यानुस्वारान्तागमः स्यात् । जिण+मि=जिणंसि, जिणंमि, जिणे । जिणेसु ॥

आमन्त्रणोतो लोपः क्लीबे नित्यं पुंसि वा लोपोऽतो दीर्घः ॥३।१।३॥

अकारान्तान्नाम्न आमन्त्रणार्थकप्रथमैकवचनस्य क्लीबे नित्यं लोपः पुंसि वा लोपः स्यात् तस्मिन्सत्यकारस्य दीर्घश्च । भो जिणा, भो जिणो, भो जिणे, भो जिण । एवं गोयमदेवमणुस्सप्रभृतयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

न्तमन्तयोरीदुतोर्न्तस्य ॥२।१।९॥

न्तमन्तयोर्न्तस्य लोपो वा स्यादीप्रत्यये उत्प्रत्यये परे ॥

लोपेऽनुस्वार उतः ॥२।१।७॥

न्तस्य लोपे सति प्रथमैकवचनस्यानुस्वारादेशः स्यात् । भगवन्त + उ = भगवं, भगवन्तो । मतिमं, मतिमन्तो । कारयं, कारयन्तो ॥

न्तमन्ताभ्यामुः ॥२।१।१३॥

एतदन्ताभ्यां परयोः प्रथमाद्वितीयाबहुवचनयोरुकारादेशः स्यात् । भगवन्तो । मतिमन्तो । कारयन्तो ॥

इणस्सयोर्डाम्डोसौ नलोपश्च ॥२।१।१४॥

न्तमन्तान्तशब्दात्परयोरिणस्सयोर्डासूडोसू इत्येतौ क्रमेणादेशौ स्तां नकारस्य लोपश्च । भगवया, भगवता । भगवओ, भगवतो ॥ शेषं जिणशब्दवत् ॥

सेदणमो भवन्तस्य भे ॥२।१।१५॥

इदु अणंप्रत्ययसहितस्य भवन्तशब्दस्य भे इत्यादेशो वा स्यात् । भे, भवन्ते, भवन्ताणं ॥

तारादोः ॥२।१।१६॥

तारप्रत्ययान्तात्परयोः प्रथमाद्वितीयाबहुवचनयोरोकारादेशः स्यात् । पसत्थारे । पसत्थारो ॥ कत्तारे । कत्तारो ॥ भत्तारे । भत्तारो ॥

Aho ! Shrutgyanam

तारस्य त्तुस्तृतीयादौ वा ॥२।१।७॥

तारप्रत्ययस्य त्तु इत्यादेशो वा स्यात्तृतीयादिषु परेषु। पसत्थुणा। कत्तुणा। भत्तुणा। पक्षे-पसत्थारेणं। कत्तारेणं। भत्तारेणं॥

ताराह्रा डो लोपश्चारस्य ॥१।२।३२॥

तारप्रत्ययान्तात्परस्यामन्त्रणोतो डादेश आरस्य लोपश्च वा। हे कत्त। हे भत्त। हे दाय। पक्षे जिणवत्॥

रायादिभ्य आत् ॥२।१।८॥

एभ्यः परस्य प्रथमाया एकवचनस्याकारादेशः स्यात्। राया। वा० (आमन्त्रणे डम्वक्तव्यः) हे रायं॥

मोऽणड् वा ॥२।१।९॥

एभ्यः परस्य मप्रत्ययस्याणडागमो वा स्यात्। रायाणं, रायं॥

अदितोरणोः ॥२।१।१०॥

रायादिभ्यः परयोः प्रथमाद्वितीययोर्बहुवचनयोरणो इत्यादेशः स्यात्। रायाणो॥

राये सेणस्य यस्य न्ना ॥२।१।११॥

रायशब्दस्येणप्रत्ययसहितस्य यस्य न्ना इत्यादेशः स्यात्। रन्ना॥

---

१ इदुद्भ्यामिणस्य णा ॥ २ । १ । १६ ॥ इति इणस्य णादेशः।

सस्सस्य ञो ॥२।१।१२॥

रायशब्दस्य स्सप्रत्ययसहितस्य यस्य ञो इत्यादेशः स्यात्। रञो ॥

रायस्याणमिह्योरिर्यस्य ॥२।१।१८॥

रायशब्दस्य यस्येकारादेशः स्यादणमिह्प्रित्ययोः। राईहिं। राईणं॥ शेषं जिणवत्॥ अत्त+उ अत्ता। अप्पा। अरहा। अत्ताणं। अप्पाणं। मुद्धाणं॥

अत्ताप्पाभ्यां च ॥२।१।२०॥

आभ्यां परस्येणप्रत्ययस्य णा इत्यादेशः स्यात्।अत्तणा। अप्पणा॥

स्सस्य णोः ॥२।१।२१॥

आभ्यां परस्य स्सप्रत्ययस्य णो इत्यादेशः स्यात्। अत्तणो। अप्पणो॥ शेषं जिणवत्॥

सुट् चेणस्य ॥२।१।२३॥

जसादिभ्यः परस्येणप्रत्ययस्य णासादेशः सुडागमश्च स्यात्। जस+इण=जससा। मणसा। वयसा। कायसा। तेयसा। चक्खुसा। जोगसा॥

जसादिभ्यः सोः ॥२।१।२२॥

जसादिभ्यः परस्य स्सप्रत्ययस्य सो इत्यादेशो वा स्यात्। जससो, जसस्स। मणसो, मणस्स॥

Aho ! Shrutgyanam

मणस्य वा ॥४।४।६॥

व्यञ्जनादौ सप्तम्येकवचने परे मणशब्दस्यानुस्वारान्तागमो वा स्यात् । मणसि, मणंसि, मणंमि ॥ शेषं जिणवत् ॥

कम्मधम्मयोरुरिणे ॥२।१।२४॥

कम्मधम्मशब्दयोरुकारान्तादेशः स्यादिणप्रत्यये परे । कम्म+इण=कम्मुणा । धम्म+इण=धम्मुणा । शेषं जिणवत् ॥

॥ इकारान्तः पुल्लिँङ्गो मुणिशब्दः ॥

आदिदुद्भ्यः स्वरे सुपि पूर्वसवर्णः ॥१।२।१४॥

आकारादिकारादुकाराच्च स्वरादौ सुपि परे पूर्वपरयोः पूर्वसवर्णदीर्घ एकादेशः स्यात् । मुणि+उ=मुणी ।

अदितोर्णो वा ॥२।१।२५॥

इदुद्भ्यां परयोः प्रथमाद्वितीयाबहुवचनयोर्णो इत्यादेशो वा स्यात् पुंसि । मुणि+अ=मुणिणो, मुणी ॥ मुणि+म्= मुणिं । मुणि+इ=मुणिणो, मुणी ॥

इदुद्भ्यामिणस्य णा ॥ २।१।१९॥

इदुद्भ्यां परस्येणप्रत्ययस्य णा इत्यादेशः स्यादस्त्रियाम् । मुणि +इण=मुणिणा । मुणि+इहि=मुणीहिं, मुणीहि ॥

अएतः स्सणावावस्त्रियाम् ॥२।१।२६॥

इदुद्भ्यां परस्याएतः स्स णो इत्यादेशौ पर्यायेण स्तोऽ-स्त्रियाम् । मुणि+अए=मुणिणो, मुणिस्स ।

Aho ! Shrutgyanam

क्वचिद्दास्स्सः ॥२।१।२८॥

अकारात्परस्याप्यएलः स्स इत्यादेशः स्यात् क्वचित्। "जस्सट्ठाए[1]" (यस्मै अर्थायेत्यर्थः)॥

अतोस्सयोर्णो ॥२।१।२७॥

इदुद्भ्यां परयोः पञ्चमीषष्ठ्येकवचनयोर्णो इत्यादेशो वा स्यात्। मुणि+अतो=मुणिणो, मुणीओ। मुणि+हिन्तो =मुणीहिन्तो॥ मुणि+स्स=मुणिणो, मुणिस्स, मुणि+अणं =मुणीणं॥ मुणि+म्मि=मुणिम्सि,मुणिम्मि,मुणी। मुणीसु॥

युभ्यां च ॥२।१।४॥

इकारोकाराभ्यां परस्यामन्त्रणैकवचनस्य लोपो वा स्यात्। भो मुणि! मुणी! भो मुणी! [illegible]॥ "भो सक्का देविंदा देवराया दाहिणड्ढलोगा[illegible]हिप्रभृ-तयः॥

॥ उकारान्तः पुल्लिङ्गः साहुशब्दः ॥

साहु+उ=साहू।

अतोऽवोडुतः ॥२।१।२६॥

उदन्तात्परस्य प्रथमाबहुवचनस्यातोऽवोडादेशो वा स्यात्। "डित्वाट्टिलोपः" साहु+अ = साहवो, साहुणो,

---

[1] भग० ६-३३।२ भोः शक्र! देवेन्द्र! देवराज! दक्षिणार्धाधिपते! भग० ३-१॥

Aho ! Shrutgyanam

साहू ॥ साहुं । साहुणो, साहू ॥ साहुणा । साहूहिं, साहूहि ॥ साहुणो, साहुस्स ॥ साहूओ, साहुणो । साहूहिंतो ॥ साहुणो, साहुस्स । साहूणं ॥ साहुंसि, साहुंमि, साहू । साहूसु ॥ भो साहू! साहवो! साहुणो! साहू! ॥ एवं सव्वन्नु-भाणु-प्रभृतयः ॥

बहोरवेरतः ॥२।१।३०॥

बहुशब्दस्यावन्तादेशः प्रथमाबहुवचनस्यैकारादेशश्च । बहू । बहवे ॥

पितुप्रभृतीनामोरुत्यात् ॥१।२।१५॥

पितुप्रभृतिशब्दसम्बन्धिन उकारादुप्रत्यये पूर्वपरयोराकार एकादेशः स्यात् । पिता, पिया ॥

अत्यरोः ॥१।२।१६॥

उक्तोकारादप्रत्यये परे पूर्वपरयोररो इत्यादेशः स्यात् । पितरो, पियरो ॥

अरोऽमि ॥१।२।१७॥

उक्तोकारस्यार इत्यादेशः स्यान्मप्रत्यये । पितरं, पियरं ।

ङसस्य वा ॥१।२।१६॥

उक्तोकारात्परस्य ङसप्रत्ययस्यैसादेशो वा स्यात् । पिउए, पिउस्स, पिउणो । शेषं साहुवत् ॥ एवं भातु-नत्तु-जामा-त्वादयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

उतः पितुप्रभृतिभ्यो डडरमावामन्त्रणे ॥१।२।३१॥

पितुप्रभृतिशब्दात्परस्यामन्त्रणोतो ड डरम् इत्येतावादेशौ पर्यायेण स्तः । हे पिय ! हे पियरम् ! ॥

डावोरतः ॥२।१।६४॥

गोशब्दात्परस्य प्रथमाबहुवचनस्य डावो इत्यादेशः स्यात् । वा० (डावोर्वस्य लोपो वा वक्तव्यः) गाओ, गावो । गोहिं ॥

गोर्डवम् ॥२।१।६३॥

गोशब्दात्परस्याणंप्रत्ययस्य डवमित्यादेशः स्यात् । गवं ॥

सव्वादयः सव्वणामाः ॥२।१।३७॥

सव्वादयः शब्दाः सव्वणामसंज्ञाः स्युः । सव्व + उ = सव्वे, सव्वो ॥

सव्वणामादत्ये ः ॥२।१।३८॥

अकारान्तसव्वणामशब्दात्प्रथमाबहुवचनेऽति प्रत्यये परे पूर्वपरयोरेकार एकादेशः स्यात् । सव्व + अ = सव्वे ॥ सव्वं । सव्वे ॥ सव्वेणं, सव्वेण, सव्वेहिं, सव्वेहि ॥ सव्वाए ॥ सव्वाओ, सव्वा । सव्वेहिंतो ॥ सव्वस्स ।

इसिमणमः ॥२।१।४०॥

अकारान्तसव्वणामशब्दात्परस्याणम्प्रत्ययस्येसिमित्यादेशः स्यात् । सव्व + अणम् = सव्वेसिं ॥ सव्वंसि, सव्वंमि, सव्वे । सव्वेसु ॥

Aho ! Shrutgyanam

कजतेभ्योऽतोतो म्हा ॥२।१।४१॥

एभ्यः परस्य पञ्चम्येकवचनस्यातोतो म्हादेशो वा स्यात्। जम्हा। शेषं सव्वशब्दवत् ॥

उत्येततयोरक्लीबे सः ॥२।१।४२॥

एततशब्दयोरुपधायाः प्रथमैकवचने परे स इत्यादेशः स्यादक्लीबे ॥

तस्य लोपो वा ॥२।१।४३॥

एततशब्दसम्बन्धिनः प्रथमैकवचनस्य लोपो वा स्यात्। से, सो, स। ते॥ तम्हा॥

तस्य ससस्य सेर्वा ॥२।१।४४॥

तशब्दस्य ससहितस्य से इत्यादेशो वा स्यात्। से तस्येत्यर्थः॥ के, को। के॥ कं। के॥ केणं, केण। केहिं, केहि॥ काए॥ कम्हा, काओ।

कादिहिंतो रितो डओः ॥२।१।४५॥

कशब्दात्परस्य हिंतोप्रत्ययस्यादेरिकारस्य डओ इत्यादेशः स्यात्। कओहिंतो॥ कस्स। केसिं॥

इमकाभ्यां सेः स्सिं वा ॥२।१।४६॥

आभ्यां परस्य सप्तम्येकवचनस्य सेः स्सिं इत्यादेशो वा स्यात्। कस्सिं, कंसि, कंमि, के। केसु॥

इमसस सोतोऽयम् ॥२।१।४७॥

इमशब्दस्योप्रत्ययसहितस्यायमित्यादेशो वा स्यात्। इम + उ = अयं, इमे,

Aho ! Shrutgyanam

मोणड् वा ॥२।१।५१॥

इमसम्बन्धिनो मो इत्यस्य णडागमो वा स्यात्। इणमो, इमो। " जंबू[1] इणमो अण्हयसंवरविणिच्छयं पवयणस्स निस्संदं " इमे ॥

मस्य णोऽमि ॥२।१।५२॥

इमसम्बन्धिनो मकारस्य णकारादेशो वा स्यात्। इणं, इमं। " इणमक्खेवं[2] पुच्छे " ॥ इमे ॥

इणेऽणः ॥२।१।५३॥

इमशब्दस्याण इत्यादेशो वा स्यात् इणप्रत्यये। अणेण, इमेणं, इमेण। इमेहिं, इमेहि ॥ इमाए ॥ इमाओ, इमा। इमेहिंतो ॥

स्सिंस्सयो रो वा ॥२।१।५४॥

इमशब्दस्याकारादेशो वा स्यात् स्सिंस्सयोः परयोः। अस्स, इमस्स। इमेसिं॥ अस्सिं, इमंसि, इमंमि। इमेसु॥ एसो, एसे, एस। एए॥ एयं। एए॥ एएणं, एएण। एएहिं, एएहि ॥ एयाए॥ एयाओ, एया, एएहिंतो॥ एएसिं। एएसु ॥

अनुस्वारस्येसिमः ॥२।१।३६॥

सव्वणामशब्दात्परस्येसिंप्रत्ययस्यानुस्वारस्य लोपो वा स्यात्। एएसि। जेसि। तेसि। एवमन्नकयरेयरादयः ॥

---

१ जम्बू ! इदमास्रव (श्रव) संवरविनिश्चयं प्रवचनस्य निस्स्यन्दम्। पराह ० १-१। २ इममाक्षेपं पृष्टवान्। भग० २-१।

Aho ! Shrutgyanam

अम्हस्य हमहमौ सोतः ॥२।१।७५॥

उत्प्रत्ययसहितस्याम्हशब्दस्य हं अहमिति च पर्यायेण निपात्येते । हं, अहं ।

सातो वयम् ॥२।१।७६॥

अप्रत्ययसहितस्याम्हशब्दस्य वयमित्यादेशो वा स्यात् । अम्हे, वयं ।

समो मेमंममममः ॥२।१।७७॥

मप्रत्ययसहितस्याम्हशब्दस्य मे, मं, मम, ममं, इति च पर्यायेण निपात्यन्ते । मे, मं, मम, ममं ।

सेतो णोः ॥२।१।७८॥

अम्हशब्दस्य द्वितीयाबहुवचनान्तस्य णो इत्यादेशो वा स्यात् । णो, अम्हे ॥

सेणस्य मएमयौ ॥२।१।७९॥

इणप्रत्ययसहितस्याम्हशब्दस्य मए मया इति च पर्यायेण निपात्येते । मया, मए । अम्हेहिं ॥

सातोतो ममाओममाहिंतावौ ॥२।१।८०॥

पञ्चम्येकवचनसहितस्याम्हशब्दस्य ममाओ ममाहिंतो इति च निपात्येते । ममाओ, ममाहिंतो । अम्हेहिंतो ॥

Aho ! Shrutgyanam

सस्सस्य ममममज्झंमज्झाश्च ॥२।१।८१॥

स्सप्रत्ययसहितस्याम्हशब्दस्य मम मज्झं मज्झाश्च-कारान्मे ममं इति पर्यायेण निपात्यन्ते । मम, ममं, मज्झ, मज्झं, महं, मे ।

मौ ममं ॥२।१।८२॥

मिप्रत्यये परे अम्हशब्दस्य ममंमित्यादेशः स्यात् । ममंसि ।

अणमोऽणो लोपः ॥२।१।८३॥

अम्हशब्दात्परस्याणंप्रत्ययस्याणो लोपो वा स्यात् । अम्हं,

साणमोणेऽस्साकमौ ॥२।१।८४॥

षष्ठीबहुवचनसहितस्याम्हशब्दस्य णे अस्साकमिति च वा निपात्येते । णे, अस्साकं, अम्हाणं ॥ "एयं[1] णे पेच्चभवे"

मम्हिं वा ससेः ॥२।१।८५॥

सिप्रत्ययसहितस्याम्हशब्दस्य मम्हिं इति वा निपात्यते । मम्हिं[2], अम्हेसु ॥

१ एतदस्माकं प्रेत्यभवे ॥ ओव० २७ ॥ २ "तं भद्दं णं भवतु देवाणुप्पियाणं मम्हिं जस्स अणुप्पभावेणं अकिलिट्ठे जाव विहरामि" भग० ॥३-१॥

(तद्भद्रं भवतु देवानुप्रियाणां मयि यस्यानुप्रभावेणाक्लिष्टो यावद्विहरामि)

तुम्हशब्दः ॥

सोतस्तुम्हस्य तंतुमेतुममः ॥२।१।८६॥

उप्रत्ययसहितस्य तुम्हशब्दस्य तं तुमे तुममिति च पर्यायेण निपात्यन्ते । तं, तुमं, तुमे ॥

बहुवचनेषु तुब्भतुज्झौ ॥२।१।८७॥

तुम्हशब्दस्य बहुवचनेषु परेषु तुब्भ तुज्झ इत्येतावादेशौ पर्यायेण वा स्तः । तुब्भे, तुज्झे, तुम्हे ॥

मिमौ च हो लोपः ॥२।१।८८॥

मिप्रत्यये मप्रत्यये च परे तुम्हशब्दस्य हकारस्य लोपः स्यात् । तुमं, तुब्भे ॥

सेणस्य तुमे ॥२।१।८९॥

इणप्रत्ययसहितस्य तुम्हशब्दस्य तुमे इति निपात्यते । तुमे । तुब्भेहिं, तुज्झेहिं, तुम्हेहिं ॥

सातोतस्तुमाहिंतो ॥२।१।९०॥

अतोत्प्रत्ययसहितस्य तुम्हशब्दस्य तुमाहिंतो इति निपात्यते । तुमाहिंतो । तुब्भेहिंतो ॥

सस्ससस्य तेतवतुज्झंतुमंतुहंतुज्झाः ॥२।१।९१॥

स्सप्रत्ययसहितस्य तुम्हशब्दस्यैते पर्यायेण निपात्यन्ते । ते, तव, तुज्झं, तुमं, तुहं, तुज्झ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अणमोऽमः ॥२।१।९२॥

तुम्हशब्दसम्बन्धिनो मकाररहितस्याणंप्रत्ययस्य लोपो वा स्यात् । तुब्भं, तुम्हं, तुम्हाणं ॥ तुमंसि । तुब्भेसु, तुम्हेसु ॥

॥ इति स्वरान्ताः पुल्लिङ्गाः ॥

अथ स्वरान्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

तत्राकारान्तः स्त्रीलिङ्गो मालाशब्दः ॥ माला+उ=माला

आतश्चादितोरोक् ॥२।१।३२॥

आदिदुद्वयः[1] परयोः प्रथमाद्वितीयाबहुवचनयोरोगागमो वा स्यात् स्त्रियाम् । मालाओ, माला ॥

[illegible]दूतां ह्रस्वो मि ॥२।१।३३॥

मि परे आकारेकारोकाराणां ह्रस्वः स्यात् । माला+म्=मालं । मालाओ, माला ॥

णस्य स्त्रियामेः ॥२।१।३१॥

इणप्रत्ययसम्बन्धिनो णकारस्य स्त्रियामेकारादेशः स्यात् । मालाए । मालाहिं ॥ मालाए ॥ मालाओ । मालाहिन्तो ॥

[1] " आदिदुद्वयः " इत्यादिना पूर्वपरयोः पूर्वसवर्णादीर्घैकादेशः ।

टसस्याए ॥२।१।३४॥

टसप्रत्ययस्य स्त्रियामए इत्यादेशः स्यात् । मालाए । मालाणं ॥

ङेरादीदूद्भ्यः ॥२।१।३५॥

आकारादीकारादूकाराच्च परस्य सप्तम्या एकवचनस्याप्यए इत्यादेशः स्यात् । मालाए । मालासु ॥

आतो ङे रीदूद्भ्यां ङिडू वाऽऽमन्त्रणे ॥२।१।३६॥

आमन्त्रणैकवचनस्याकारात्परस्य ङे ईकारादूकाराच्च परस्य क्रमेण ङि डु इत्येतावादेशौ वा स्तः । भो माले! माला! भो नइ! भो वहु! ॥

इकारान्तः स्त्रीलिङ्गो दिट्ठिशब्दः ॥

दिट्ठी । दिट्ठीओ, दिट्ठी ॥ दिट्ठिं । दिट्ठीओ, दिट्ठी ॥ दिट्ठीए । दिट्ठीहिं ॥ दिट्ठीए ॥ दिट्ठीओ । दिट्ठीहिन्तो ॥ दिट्ठीए । दिट्ठीणं ॥ दिट्ठिंसि । दिट्ठीसु ॥ भो दिट्ठी! । दिट्ठीओ! ॥

ईकारान्तः स्त्रीलिङ्गः समणीशब्दः ॥

समणी । समणीओ, समणी ॥ समणिं । समणीओ, समणी ॥ समणीए । समणीहिं ॥ समणीए ॥ समणीओ । समणीहिंतो ॥ समणीए । समणीणं ॥ समणीए । समणीसु ॥ भो समणि! । समणीओ! ॥

उकारान्तः स्त्रीलिङ्गो धेणुशब्दः ॥

धेणू । धेणूओ, धेणू ॥ धेणुं । धेणूओ, धेणू ॥ धेणूए ।

Aho ! Shrutgyanam

घेणूहिं ॥ घेणूए ॥ घेणूओ । घेणूहिन्तो ॥ घेणूए । घेणूणं ॥ घेणूए । घेणूसु ॥ भो घेणू! । घेणूओ! ॥

ऊकारान्तः स्त्रीलिङ्गो वहूशब्दः ॥

वहू । वहूओ, वहू ॥ वहुं । वहूओ , वहू ॥ वहूए । वहूहिं ॥ वहूए ॥ वहूओ । वहूहिन्तो ॥ वहूए । वहूणं ॥ वहूए । वहूसु ॥ भो वहु! । वहूओ! ॥

सव्वशब्दस्य स्त्रीत्वे वाच्ये–सव्वा । सव्वाओ, सव्वा ॥ सव्वं । सव्वाओ, सव्वा ॥ सव्वाए । सव्वाहिं ॥ सव्वाए ॥ सव्वाओ । सव्वाहिन्तो ॥ सव्वाए।

आतास्सिम् सव्वणामात् ॥२।१।५५॥

आकारान्तात्सव्वणामशब्दात्परस्याणमः सिमादेशः स्यात् । सव्वा+अणम्=सव्वासिं॥ सव्वाए। सव्वासु ॥ जा । जाओ ॥ जं । जाओ ॥

जातयोरीर्वेणे ॥२।१।५६॥

अनयोराकारादिणसम्बन्धिनीकारे परे पूर्वपरयोरीकार एकादेशो वा स्यात् । जीए, जाए । जाहिं ॥

अएस्ससीनामिमाकाजाताभ्यो डीसे ॥२।१।५७॥

इमाकाजाताशब्देभ्यः परेषां षष्ठीचतुर्थीसप्तम्येकवचनानां डीसे इत्यादेशो वा स्यात् ॥ जीसे जाए ॥ जीसे, जाए । जासिं ॥ जीसे, जाए । जासु ॥ एवं कालाशब्दो ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्त्रियामियम् २।१।४८॥

इमशब्दस्योत्प्रत्ययसहितस्य स्त्रियामियमिति वा निपात्यते । इयं, इमा ॥

ङेश्चेमाददितोः ॥२।१।५८॥

स्त्रियामिमशब्दात[redacted] आदेशः स्याच्चकारादोगागमो वा स्यात् । इमे, इमाओ, इमा ॥

स्सस्य डीए ॥२।१।५६॥

स्त्रियामिमशब्दात्परस्य स्सप्रत्ययस्य डीए इत्यादेशो वा स्यात् । इमीसे, इमीए, इमाए । इमासिं ॥ वा० (इमात्सेर्डीसाए: क्वचिद्वक्तव्यः) इमीसाए । शेषं जाशब्दवत् ॥ एताशब्दस्योपधायाः सकारादेशो, एसा, एयाओ, एया ॥ शेषं सव्वावत् ॥

॥ इति स्वरान्ताः स्त्रीलिङ्गाः ॥

अथ स्वरान्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

उतः क्लीबान्मः ॥२।१।६०॥

नपुंसकात्परस्य प्रथमाया एकवचनस्य मादेशः स्यात् । वण+उ=वणं ॥ दहि+उ=दहिं ॥ महु+उ=महुं ॥

अदितोरकैकस्य णिती दीर्घश्च प्रकृतेः ॥२।१।६१॥

क्लीबात्परयोः प्रथमाद्वितीयाबहुवचनयोः प्रत्येकं णि ति इत्येतावादेशौ पर्यायेण स्तः प्रकृतेर्दीर्घान्तादेशश्च ॥

Aho ! Shrutgyanam

तेरनुस्वारो वा ॥२।१।६२॥

आदेशभूतस्य तेरनुस्वारान्तागमो वा स्यात्। वण+अ =वणाणि, वणाइं, वणाइ ॥ दहि+अ=दहीणि, दहीइं, दही-इ ॥ महु+अ=महूणि, महूइं, महूइ ॥ द्वितीयायामपि तथा। सम्बोधने हेवण!। हे दहि!। हे महु!। हे वणाणि!। इत्यादि ॥ शेषं पुंवत् ॥ सव्वं। सव्वाणि, सव्वाइं, सव्वाइ ॥ जं। जाणि, जाइं, जाइ ॥ तं। ताणि, ताइं, ताइ ॥ कं। काणि, काइं, काइ ॥ इमं। इमाणि, इमाइं, इमाइ ॥ एयं। एयाणि, एयाइं, एयाइ ॥ शेषं पुंवत् ॥

॥ इति स्वरान्ता नपुंसकलिङ्गाः ॥

अथ संख्यावाचकास्त्रिलिङ्गाः ॥

दोरदितोर्डोः ॥२।१।६३॥

दुशब्दात्परयोरदित्प्रत्यययोर्डो इत्यादेशः स्यात्। दु+अ =दो। दु+इ=दो ॥

दुवे दोण्णी क्वचित् ॥२।१।६४॥

दुशब्दात्परयोरदितोः क्वचित् प्रत्येकं दुवे दोण्णि इत्ये-तावादेशौ स्तः। दुवे। दोण्णि ॥

इस्विहींहिंतवां दुप्रभृतिभ्यः ॥१।३।१८॥

दुप्रभृतिभ्यः संख्यावाचकेभ्यः परेषामेषामादिस्वरस्य लोपः स्यात्।

Aho ! Shrutgyanam

इहीहिंतोऽणामिसुष्वोत् ॥२।१।६५॥

दुशब्दस्यौकारादेशः स्यादिहि-इहिंतो-अणम्-इसु-प्रत्ययेषु । दोहिं । दोहिंतो ॥

संख्यावाचकादणमो ण्हम् ॥२।१।७२॥

संख्यार्थकशब्दात्परस्याणम्प्रत्ययस्य ण्हमित्यादेशः स्यात् । दोण्हं । दोसु ॥

तेर्डओः ॥२।१।६६॥

तिशब्दात्परयोरदितोर्डओ इत्यादेशः स्यात् । ति+अ =तओ । ति+इ=तओ ॥

ण्णिश्च ॥२।१।६७॥

तिशब्दात्परयोरदितोर्ण्णि इत्यादेशः स्यात् क्वचित् । तिण्णि । तिहिं । तिहिंतो । तिण्हं । तिसु ॥

सादितश्चत्तारि चतुरः ॥२।१।६८॥

अदित्प्रत्ययसहितस्य चउशब्दस्य चत्तारि इति निपात्यते । चउ+अ=चत्तारि । चउ+इ=चत्तारि । चउहिं । चउहिंतो । चउण्हं । चउसु ॥

रोश्च ओः ॥२।१।६९॥

चतुशब्दात्परयोरदितो रो इत्यादेशः क्वचित् । चउरो ॥

पञ्चादिभ्यो लोपः ॥२।१।७०॥

पञ्चादिसंख्यावाचकेभ्यः परयोरदितोर्लोपः स्यात् । पंच ।

Aho ! Shrutgyanam

पंचहिं, पंचहिंतो । पंचण्हं । पंचसु ॥ एवं छशब्दादारभ्याष्टा-रसपर्य्यन्तं बोध्यम् ॥

संख्यायां तेः ॥२।१।७१॥

संख्यार्थकतिप्रत्ययान्तात्परयोरदितोर्लोपः स्यात् । कति । जति । तति । वीसाद्या नउइपर्यन्ताः शब्दाः संख्यासंख्येयोभयवाचकाः, तत्र संख्येयवाचकत्वे नित्यैकवचनान्ताः संख्यावाचकत्वे वचनद्वयान्ताः ॥

वीसादीनामानउईनां क्लीबत्वं प्रथमाद्वितीययोः ॥२।१।७३॥

नउइशब्दपर्यन्तानां वीसादिशब्दानां प्रथमायां द्वितीयायां च नपुंसकवद्रूपं स्यात् ॥

नाम्नो नपुंसके ह्रस्वः ॥२।१।७४॥

नाम्नो ह्रस्वान्तादेशः स्यान्नपुंसके । एगूणवीसं । एगूणवीसा । चत्तालीसं । चत्तालीसा । एगूणतीसाइं वाससहस्साइं । अडयालीसाए संवच्छरेहिं ॥

॥ इति संख्यावाचकास्त्रिलिङ्गाः ॥

॥ इति विभक्तिप्रकरणम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

॥ अथाऽव्ययप्रकरणम् ॥

अव्ययम् ॥१।१।१६॥

अधिकारोऽयम् ॥

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु, सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु, यन्न व्येति तदव्ययम् ॥ १ ॥

अहादयः ॥१।१।२०॥

अहादिगणपठिताः शब्दा अव्ययसञ्ज्ञाः स्युः ॥ अ अण निषेधे । अह आनन्तर्यादौ । अइरा तत्काले । अइव अईव अधिके । अंग आमन्त्रणे । अन्तर् अन्तरेण अभाववति । अंते अंतो मध्यदेशे । अकम्हा दैवादित्यर्थे । अचिरं शीघ्रतायाम् । अजस्सं निरन्तरे । अज्ज अस्मिन्नहनि । अज्जयाए अद्यप्रभृत्यर्थे । अज्जसुए अद्यश्व इत्यर्थे । अणिसं सतते । अति अतिशये । अत्थि अस्तीतितिङन्तप्रतिरूपकमव्ययम् । अदु अदुत्तरं आनन्तर्यादौ । अदुवा पक्षान्तरे । अधो नीचैरित्यर्थे । अभि आभिमुख्ये । अभिक्खणं अभिक्खं पौनःपुन्ये । अलं पर्याप्त्यादौ । अलमंथु अलमस्त्वित्यर्थे । अवि समुच्चयादौ । अविअ पक्षान्तरे । अवियाइं सम्भावनायाम् । असइं असतिं पौनःपुन्ये । अहवणं अथवाऽर्थे । अहावरं

Aho ! Shrutgyanam

अहे ततःपरमित्यर्थे। अहो नीचदेशे। आ मर्यादाभिविध्यादौ। आइं वाक्यालङ्कारे आउ पक्षान्तरे। आरा समीपे। इ प्राकट्ये। इइ इति इत्ति इय प्रकारे, समाप्तौ च। इव सादृश्ये। ईसं ईसिं ईसिं अल्पत्वे। उण उणो पुनरित्यर्थे। उदाहु उद्दाइं पक्षान्तरे। उपरि उप्पिं उवरि उपर्यर्थे। उस्सण्णं उस्सन्नं प्रायोऽर्थे। उपरि पूर्वप्रकारे। ए सम्बोधने एतत्प्रकारे। एम एमाइ इत्यादौ। एमेव एतत्प्रकारे। एव अवधारणे। एवं पूर्वोक्तरीतौ। एवण्हं वाक्यालङ्कारे। किं जिज्ञासायाम्। किंच पक्षान्तरे। किणाइ किञ्चिन्मात्रमित्यर्थे। किण्णं जिज्ञासायाम्। किर किल निश्चये। कीस कस्मादित्यर्थे। कद् कु कुत्सायाम्। खलु निश्चये वाक्यालङ्कारे च। खिप्पं शीघ्रतायाम्। च च्च समुच्चयादौ। चिट्ठं चे भृशमित्यर्थे। जइ जति जदि यद्यर्थे। जाउ कदाचिदित्यर्थे। जाव ताव यावत्तावदित्यर्थे। जुगवं एकस्मिन् काले। झत्ति शीघ्रतायाम्। ण निषेधे। णं वाक्यालङ्कारे। णवरं णवरि कैवल्यार्थे। णहु निषेधे। णाइ निषेधे। णाणा अनेकस्मिन्। णिहो नीचदेशे। णु प्रश्ने। णूणं निश्चये। णो निषेधे। ण्णं ण्हं वाक्यालङ्कारे। तं तत्रत्यार्थे। ति त्ति पूर्वोक्तप्रकारे समाप्तौ च। तु समुच्चये। थ वाक्या-

Aho ! Shrutgyanam

लङ्कारे। दिया दिवसे। दूरा दूरदेशे। धणियं अति-
शये। धिद्धि धिर धिसि धिक्कारार्थे। न निषेधे।
नणु शङ्कायाम्। नमो नमस्कारे। नवरं नवरि कैव-
ल्यार्थे। नहु निषेधे। नाणा अनेकस्मिन्। नूणं निश्च-
ये। नो नोणं निषेधे। दुट्ठु दुष्टे। पए पगे प्रभाते।
पच्छा उत्तरत्र। पभिइ पभित्ति प्रारभ्येत्यर्थे। परेव्वं
परदिने। पसढं प्रसह्येत्यर्थे। पाए प्रायोऽर्थे। पाओ
पातो प्रभाते। पायं प्रायोऽर्थे प्रभाते च। पि अप्यर्थे।
पिव इवार्थे। पिहं पिहु पिहो पुढो पृथगर्थे। पुण
पुणो पुनरित्यर्थे। पुरा पूर्वकाले अग्रे च। पुरत्था पुर-
च्छा पुरे अग्रे इत्यर्थे। पुला पूर्वकाले। बहिं बाह्ये।
भंते पूज्यसम्बोधने। भिसं अतिशये। भुज्जो
भूज्जो बाहुल्ये। भे भो सम्बोधने। मज्झो मध्ये।
मणयं मणा अल्पे। माहं निषेधे। मिव इवार्थे।
मिहो परस्परस्मिन्। मुसा असत्ये। मुहा निष्प्रयोजने।
मुहु पौनःपुन्ये। य चार्थे। युगवं एककाले। रह रहो
एकान्ते। राओ रात्राविल्यर्थे। रिते विनाऽर्थे। वि अ-
प्यर्थे। विव इवार्थे। विसं वीसु पृथक्त्वे। व्व इवार्थे।
सइं सकृदर्थे सदार्थे च। संपइ संपयं एतत्काले। स-
पाओ प्रभाते। सक्खं प्रत्यक्षज्ञाने। समंतं समंता

Aho ! Shrutgyanam

सर्वप्रकारेणेत्यर्थे। सणिअं शनैरित्यर्थे। सद्धिं समं सहार्थे। सयं सकृदित्यर्थे स्वयमित्यर्थे वा। सययं सतते। सयराहं सत्वरमित्यर्थे। सायं सूर्यास्तमनसमये। सुइरं दीर्घकाले। सुए अनागतदिने। सुट्ठु सौष्ठवे। सुतरं सहजत इत्यर्थे। सेवं तदेवमित्यर्थे। हंता स्वीकारे। हंद आश्चर्यार्थे। हंदि हंभो आमन्त्रणे, क्रुद्धसंबोधने, विकल्पविषादपश्चात्तापनिश्चयेषु च। हउं हा इत्यर्थे। हणिहणि प्रतिदिनम्। हद्धी खेदे। हव्वं शीघ्रतायाम्। हिज्जो अतीतदिवसे। ही आश्चर्ये। हुरत्था बहिर्देशे। हुलियं शीघ्रतायाम्। हे सम्बोधने। हेट्ठ हेट्ठा हेट्ठि हेट्ठिल्ला नीचदेशे। हे हो आमन्त्रणे।

अत्यादयश्च ॥१।१।२१॥

अत्यादिगणपठिताः शब्दा अव्ययसंज्ञाः स्युः। अइ अति अतिशये उत्कर्षे च। अणु अनु पश्चात्सादृश्यलक्षणादिषु। अधि अहि सत्त्वेऽधिकारे च। अभि आभिमुख्यादौ। अव उव ओ निश्चयानादरालम्बनादिषु। आ सीमादौ। आविर् व्यक्ते। उ उद् ऊर्ध्वादौ। उ उप उव ओ ओव समीपादौ। णि नि निषेधादौ। णिर् निर् वियोगे निश्चितादौ च। तु पृथग्भावादौ। दु दुर् पीडादौ।

Aho ! Shrutgyanam

प पप प्रकर्षादौ। पडि पति व्याप्तिलक्षणप्रातिकूल्यादौ। परा प्राधान्यादौ। परि पलि सर्वत्रेत्यर्थे। पाउ पाउर् प्राकाश्ये। वि नियोगादौ। सद् श्रद्धायाम्। सम् समुच्चयादौ।

अमादितद्धितान्ताः ॥१।१।२२॥

अम् आ आवन्ति इइ इण इण्ण इह ई ए क्खुत्तो चणं चि चिय ण्हं ण्हिं ण्हु ता ति तो त्थ त्थं दा दाणि धा या सि सो स्स स्सिं हं ह हा हिं हियं हुणा इत्येतत्तद्धित-प्रत्ययान्ताः शब्दा अव्ययसंज्ञाः स्युः। जं यस्मादित्यर्थः। तं तस्मादित्यर्थः। ता तत इत्यर्थः। सव्वावन्ति सर्वमित्यर्थः। केइ कश्चित् केचिदित्यर्थः। केणइ केनचिदित्यर्थः। कोइ कश्चिदित्यर्थः। जेणं जेण यत्रेत्यर्थः। तेणं तेण तत्रे-त्यर्थः। किण्णा कथमित्यर्थः। इह अस्मिन्नित्यर्थः। किह कुत्रेत्यर्थः। कयाइं कयाई कदाचिदित्यर्थः। कस्सई कस्यचिदित्यर्थः। जाए यत इत्यर्थः। ताए तत इत्यर्थः। पगामाए प्रकामत इत्यर्थः। दुक्खुत्तो द्विःकृत्व इत्यर्थः। तिक्खुत्तो त्रिःकृत्व इत्यर्थः। इमंचणं इमंचनेत्यर्थः। एकंचणं एकंचनेत्यर्थः। जावंचणं जावचणं यावचनेत्यर्थः। तावंचणं तावचनेत्यर्थः। कहिंचि कुत्रचिदित्यर्थः। कुहिं-चिय कुत्रचिदित्यर्थः। जण्हं यस्मादित्यर्थः। इण्हिं इयण्हिं

Aho ! Shrutgyanam

इदानीमित्यर्थः । कण्हु कुत्रेत्यर्थः । कता कदेत्यर्थः । सता सर्वदेत्यर्थः । जओ जतो यत इत्यर्थः । एत्थ इत्थ अत्रेत्यर्थः । कत्थ कुत्थ कुत्रेत्यर्थः । जत्थ यत्रेत्यर्थः । तत्थ तत्रेत्यर्थः । इत्थं अमुना प्रकारेणेत्यर्थः । तदा तदेत्यर्थः । सदा सर्वदेत्यर्थः । इदाणिं इयाणिं इदानीमित्यर्थः । तथा तथेत्यर्थः । सया सव्वया सर्वदेत्यर्थः । एकसि एकश इत्यर्थः । कमसो क्रमश इत्यर्थः । पायसो प्रायश इत्यर्थः । बहुसो बहुश इत्यर्थः । दवदवस्स द्रुतंद्रुतमित्यर्थः । एकस्सिं एकदेत्यर्थः । इह इहं अस्मिन्नित्यर्थः । तहा तथेत्यर्थः । कहिं कुहिं कुत्रेत्यर्थः । जहिं यत्रेत्यर्थः । तहिं तत्रेत्यर्थः । कहियं कुत्रेत्यर्थः । जहियं यत्रेत्यर्थः । तहियं तत्रेत्यर्थः । अहुणा अधुनेत्यर्थः ।

हेतुसम्बन्धकृदन्ताश्च ॥१।१।२३॥

हेत्वर्थकत्तएप्रभृतिसम्बन्धार्थकत्तादिप्रत्ययान्ताश्चाव्ययसंज्ञाः स्युः । गच्छित्तए । गच्छित्ता । अभिगन्तु । गणिउं । वेत्तुं । गहिउं । पगहित्तु । नेऊणं । भंजिऊणं । गमेऊणं । पडिविस्सज्जिय । उस्सक्किया । किच्च । किच्चा । कट्टु । उवागम्म । पकत्थ ॥

समासेऽमन्ताः ॥१।१।२४॥

समासेऽम्प्रत्ययान्ता अव्ययसंज्ञाः स्युः । अहोनिसं ॥

इकारान्ता दिस्यादयः ॥१।१।२५॥

इकारान्ता दिस्यादिशब्दाश्च समासेऽव्ययसंज्ञाः स्युः । अहोनिसि । दिसोदिसिं । गुम्मागुम्मि ॥

अव्ययाच्च ॥४।४।६६॥

अव्ययात्परस्य बहुलं सुपो लोपः स्यात् ।

॥ इत्यव्ययप्रकरणम् ॥

॥ अथ स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम् ॥

अतः स्त्रियां डाः ॥२।२।१॥

अकारान्तान्नाम्नः स्त्रीत्वे द्योत्ये डाप्रत्ययः स्यात् । अम्मा । अविला । अवोगडा ॥

अधिगरणादिभ्यो[१] डीः ॥२।२।२॥

अधिगरणादिगणपठितेभ्योऽकारान्तेभ्योऽपि स्त्रियां डीप्रत्ययः स्यात् । अधिगरणी । अभियोगी । अवचुल्ली ॥ वा० (गोर्गावो डीति वक्तव्यः) गावी ॥

---

१ अहिगरण, अभियोग, अवचुल्ल, आराहण, कप्पण, कमढ, करह, काग, गाहावइ, गुरु, गो, चउद्दस, नत्तु, न्तमन्तप्रत्ययान्ता जातिमन्तवर्ज्जाः , पन्नरस, मउ,मह, मासवाचकाः , वातोल, वीअण, वेताल, वेदब्भ, संथार, संवेगण, साहु, सिस्स, सीस, एतेऽहिगरणादयः ।

Aho ! Shrutgyanam

के पूर्वस्य ह्रस्वोऽत इर्वा ॥२।२।१॥

स्वार्थविहितकप्रत्यये परे पूर्वस्य ह्रस्वः स्यादकारश्चेत्पूर्वस्त-स्येकारो वा स्यात् । मामिया । महल्लिया । महालिया । महा-लया । अम्मया ॥

अणश्च ॥२।२।३॥

अणप्रत्ययान्ताङ्डीप्रत्ययः स्यात् । आरबी ॥

इतोऽभावे णीः ॥२।२।४॥

भावभिन्नार्थकेप्रत्ययान्ताण्णीप्रत्ययः स्यात् । आसाविणी ॥

इन्दादाणीः पुंयोगे ॥२।२।६॥

इन्दशब्दात्पुंयोगे स्त्रियामाणीप्रत्ययः स्यात् । इन्दाणी ॥

दिसाड्डिश्च ॥२।२।७॥

दिसशब्दाड्डिप्रत्ययश्चकाराड्डाप्रत्ययः पर्यायेण स्तः स्त्रि-याम् । दिसा । दिसि ॥

उतो डीति प्रकृत्या ॥२।२।११॥

उकारान्ताः शब्दा डीप्रत्यये परे प्रकृत्या स्युः । नउई । नउई ॥

महात्तीः ॥२।२।८॥

महशब्दात् स्त्रियां त्तीप्रत्ययः स्यात् । महत्ती ॥

Aho ! Shrutgyanam

भिक्खुप्रभृतिभ्यश्च ॥२।२।५॥

एभ्यः स्त्रियां णीप्रत्ययः स्यात्। भिक्खुणी। साहुणी। गाहावइणी, गाहावतिणी। गहवइणी॥

सिस्समासयोर्णीति सलोपे ॥२।२।१०॥

अनयोरकारस्येकारः स्याण्णिप्रत्यये सलोपे सति। सीसिणी। पुराणामासिणी। सलोपे किम्। सिस्सणी॥

इति स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम्॥

अथ कारकप्रकरणम्॥

करणप्रयोजकः कर्त्ता ॥१।१।२६॥

करणनिष्ठव्यापारजनकः कर्त्तृसंज्ञः स्यात्॥

कर्त्तरि प्रथमा ॥२।२।१२॥

कर्त्तरि वाच्ये नाम्नः प्रथमा विभक्तिः स्यात्। "अज्ज[2] जंबू......अप्पाणं भावेमाणे विहरति"॥

आमन्त्रणे च ॥२।२।१३॥

आमन्त्रणेऽर्थे प्रथमा स्यात्। भो जिण! भो जिणे! अज्जो! आउसं! रायं!॥

क्रियया कर्त्तुरिष्टं कर्म ॥१।१।२७॥

क्रियाजन्यफलवत्त्वेन कर्त्तुरिच्छाविषयः कर्मसंज्ञः स्यात्।

---

१ भिक्खु, गहवइ, गारत्थ, गाहावइ, गुव्व, घर, नत्तु, साहु, सिस्स, सीस, एते भिक्खुप्रभृतयः॥

२ आर्यजम्बूः........आत्मानं भावयन् विहरति। नाया० १—५॥

Aho ! Shrutgyanam

अनुक्ते ॥२।२।१४॥

इत ऊर्ध्वमधिकारोऽयम् ॥

कर्मणि द्वितीया ॥२।२।१५॥

अनुक्ते कर्मवाचकतिङ्कृदादिसमभिव्याहृते कर्मणि द्वितीया स्यात्। "अप्पाणं भावेमाणे विहरति" "सेणिए राया ......कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति"। अनुक्ते किम्। "मए... पाउससिरी विउव्विया"[2]॥

अभेदान्वयि च ॥१।१।२८॥

क्रियया सह तादात्म्यसम्बन्धवच्च कर्मसंज्ञं वा स्यात्। "अभिमुहं पंजलिउडे"[3]। "ससद्दं गच्छइ" "ससद्दं चिट्ठइ"

समयमार्गयोरभिव्याप्तौ ॥२।२।१६॥

समयवाचकान्मार्गवाचकाच्च नाम्नो निरन्तरसम्बन्धे वाच्ये द्वितीया स्यात्। "संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ"। "एगं-दिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए"। "तंते णं से वनदवे अड्ढाइज्जाइं रातिंदियाइं तं वणं झामेइ"॥

१ आत्मानं भावयन् विहरति, श्रेणिको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दायते। नाया० १–१५॥ २ मया प्रावृट्श्रीर्विकुर्विता। नाया० १–१५। ३ अभिमुखं कृतप्राञ्जलिः। नाया० १–५॥ ४ सशब्दं गच्छति, सशब्दं तिष्ठति। नाया० १–३०॥ ५ संख्येयानि योजनानि दण्डं निः-सरति (निःसारयति)। नाया० १–१४॥ ६ एकदिवसमपि ते राजश्रियं द्रष्टुम्। नाया० १–२४॥ ७ ततः स वनदवस्त्र्यर्द्धानि रात्रिदिवानि तद्वनं ध्मापयति। नाया० १–२७॥

Aho ! Shrutgyanam

कर्मयुगविवक्षितं चापादानादिभिः॥१।१।२९॥

अपादानादिविशेषैरविवक्षितं कर्मणा सह संबद्धमपि कर्मसंज्ञं स्यात्। "जयं चिट्ठेति" "जयं आसयति"। "जामेव दिसिं पाउब्भूता"। "जं समयं सीयपरिसहं वेदेति नो तं समयं उसिणपरिसहं वेदेइ"। "सुमिणपाढए विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयति"। "जं रयणिं च णं पउमावती दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिलावि......दारियं पयाया"॥

व्यापारवत्करणम्॥१।१।३०॥

धात्वर्थव्यापारस्य जनकत्वे सति तज्जन्यफलजनकं करणसंज्ञं स्यात्॥

कर्तृकरणयोस्तृतीया॥२।२।१७॥

अनुक्ते कर्तरि करणे वा वाच्ये तृतीया स्यात्। "भगवया महावीरेणं अयमट्ठे पन्नत्ते" "विणएणं पज्जुवासमाणे"।

---

१ यतं तिष्ठति, यतमास्ते आश्रयति वा। नाया० १-१७॥ २ यस्यामेव दिशि प्रादुर्भूता। नाया० १-३७॥ ३ यस्मिन् समये शीतपरिषहं वेदयति नो तस्मिन् समये उष्णपरिषहं वेदयति। भग० ८-८॥ ४ स्वप्नपाठकाय विपुलं जीवितार्हं प्रीतिदानं ददाति। नाया० १-१३॥ ५ यस्यां रजन्यां च पद्मावती दारकं प्रजाता तस्यां रजन्यां च पोट्टिलाऽपि ....दारिकां प्रजाता। नाया० १४-९४। ६ भगवता महावीरेणायमर्थः प्रज्ञप्तः, विनयेन पर्युपास्यमानः। नाया० १-५॥

Aho ! Shrutgyanam

"रायहंससरिसीए गतीए...उवागच्छइ" "तुमे देवाणुप्पिए सुमिणे दिट्ठे"। गिरिं नहेहिं खणह, अयं दन्तेहिं खायह, जायतेयं पाएहिं हणह, जे भिक्खुं अवमन्नह"। "महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा"। "तं भवियव्वं णं एत्थ कारणेणं"।

हेत्वर्थयोगे सर्वाः प्रायेण ॥२।२।४०॥

हेतुवाचकैः शब्दैर्योगे सर्वा एव विभक्तयो बाहुल्येन प्रयुज्यन्ते। गम्यमानाऽपि क्रिया कारकविभक्तीनां निमित्तम्। "धणेण किं धम्मधुराहिगारे"। किं प्रयोजनमिति शेषः। "अलं बालस्स संगेणं"।

सहार्थयोगे गुणीभूते ॥२।२।१८॥

सहशब्दार्थकशब्दयोगेऽप्रधाने तृतीया स्यात्। भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं"। "धणं पभूयं सह इत्थियाहिं"।

---

१ राजहंससदृश्या गत्या....उपागच्छति, त्वया देवानुप्रिये स्वप्नो दृष्टः। नाया० १—१० ॥ २ गिरिं नखैः खनथ, अयो दन्तैः खादथ, जाततेजसं पादैर्हथ, ये (यूयं) भिक्षुमवमन्यध्वम्।। उत्त० १२—२६ ॥ ३ महता महता शब्देनोद्घोषयन्तः। नाया० २—३६। ४ तद्भवितव्यमत्र कारणेन। नाया० १—१५ ॥ ५ धनेन किं धर्मधुराधिकारे। उत्त० १४—१७ ॥ ६ अलं बालस्य संगेन। आया० १—१—५—६५ ॥ ७ भुक्त्वा भोगान् सह स्त्रीभिः। उत्त० १४—६ ॥ ८ धनं प्रभूतं सह स्त्रीभिः। उत्त० १४—१६ ॥

Aho ! Shrutgyanam

“जस्सत्थि[1] मच्चुणा सक्खं” । सहेति शेषः । “सेणिएणं[2] रन्ना सद्धिं” । “रायवरकण्णाहिं[3] सद्धिं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु” ॥

आधारेऽपि ॥२।२।१९॥

क्वचिदधिकरणेऽपि वाच्ये तृतीया स्यात् । “तेणं[4] कालेणं तेणं समएणं” । “जेणामेव[5] सेणिए राया तेणामेव” यस्मिन्नेव तस्मिन्नेवेत्यर्थः “मज्झे [6]णयगंभीरे” । “रायवरकण्णाहिं सद्धिं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु” ॥

गोत्तादिभ्योऽभेदे ॥२।२।२०॥

गोत्तादिशब्देभ्यस्तादात्म्ये वाच्ये तृतीया स्यात् । “कस्सवं[7]गोत्तेणं अज्जजंबू” । “उट्ठाए[8] उट्ठेति” । “नामेणं[9] मेहकुमारे” ॥

विनादियोगे ॥२।२।२१॥

विनादिशब्दयोगे तृतीया स्यात् । “नाणेणं[10] विणा न हुन्ति चरणगुणा” ॥

---

१ यस्यास्ति मृत्युना (सह) सख्यम् । उत्त० १४–२७॥ २ श्रेणिकेन राज्ञा सार्द्धम् । नाया० १–१३ ॥ ३ राजवरकन्याभिः सार्द्धमेकदिवसे पाणिमग्राहयताम् । नाया० १–२० ॥ ४ तस्मिन् काले तस्मिन् समये । नाया० १–४ ॥ ५ यस्मिन्नेव श्रेणिको राजा तस्मिन्नेव । नाया० १-९ ॥ ६ मध्ये नतगम्भीरे (मध्येन च गम्भीरे) । नाया० १-९॥ ७ काश्यपगोत्रेणार्यजम्बूः । नाया० १–५ ॥ ८ उत्थायोत्तिष्ठति ॥ नाया० १-५ ॥ ९ नाम्ना मेघकुमारः । नाया० १--१७॥ १० ज्ञानेन विना न भवन्ति चरणगुणाः । उत्त० २८--३०॥

Aho ! Shrutgyanam

प्रकारमुपेताल्लक्षणे ॥२।२।२२॥

कंचित्पदार्थं प्रति विशेषणत्वं प्राप्तान्नाम्नो व्याप्यर्थेऽर्थे तृतीया स्यात्। "देवत्ताए उववराणो"[1]। "सीसित्तिए द-लयति"[2]॥

कर्मान्वयेनेष्टं सम्प्रदानम् ॥१।१।३१॥

क्रियायाः कर्मसम्बन्धवत्त्वेन कर्तुरिच्छाविषयीभूतं स-म्प्रदानसंज्ञं स्यात्॥

सम्प्रदाने चतुर्थी ॥२।२।२३॥

अनुक्ते सम्प्रदाने वाच्ये चतुर्थी स्यात्। "[3]एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयति"॥

तुमर्थेणाद्यन्तेभ्यः ॥२।२।२४॥

भावार्थकणादिप्रत्ययान्तेभ्यस्तुमर्थे वाच्ये चतुर्थी स्यात्। "दुल्लहे सवणयाए" दुर्लभः श्रोतुम्। "पासणयाए" द्रष्टुम्। "अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणयाए"[4] श्रोतुम्। "पाय वन्दए पहारेत्थ गमणाए"[5] गन्तुम्॥

---

१ देवतयोपपन्नः। नाया० १--३१॥ २शिष्यात्वेन ददाति। भग० ६--३३॥ ३एकैकस्यै भार्यायै एकैकां हिरण्यकोटिं ददाति। नाया० १-२० ४ अहमेतस्यार्थस्यानर्हः श्रोतुम्। ५पादौ वन्दितुं प्रधारितवान् (विकल्पितवान्--विचारितवान्)॥

तादर्थ्ये षष्ठी च ॥२।२।२६॥

तादर्थ्ये वाच्ये षष्ठी स्याच्चाचतुर्थी । "वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स य पासवणस्स य अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य"[1] । "एसं[2] मे णित्थारिए समाणे पच्छा पुरा हियाए सुहाए खेमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति" ॥

कर्त्तरि च ॥२।२।२५॥

क्वचित्कर्त्रर्थेऽपि चतुर्थी दृश्यते । "से[3] के णं जाणति अम्मयाओ के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए" गमनकर्त्ता ॥

विभागेऽवधिरपादानम् ॥१।१।३२॥

विभागे योऽवधिः स्थिरः सोऽपादानसंज्ञः स्यात् ।

---

१ वाचनायै पृच्छनायै परिवर्त्तनायै धर्मानुयोगचिन्तायै चोच्चाराय च प्रस्रवणाय चातिगच्छन्तश्च निर्गच्छन्तश्च । नाया० १—१६ ॥ २ एषो (अर्थः) मे निस्तारितः सन् पश्चात् पुरा हिताय सुखाय क्षेमाय निःश्रेयसायानुगामिकतायै भविष्यति ॥ नाया० १—२६ ॥ ३ अथ को जानात्यम्बतात ! कः पूर्वं गमनाय (गमकः) कः पश्चाद्गमनाय (गमकः) । नाया० १—२३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अपादाने पञ्चमी ॥२।२।२७॥

अनुक्तेऽपादाने वाच्ये पञ्चमी स्यात् । "सयणिज्जाओ उट्ठेति [1] त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति" । "गिहेहिन्तो [2] पडिनिक्खमति" । "हत्थाओ हत्थं संहरिज्जमाणे" [3] "अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे" ॥

मर्यादायामाङि ॥२।२।२८॥

सीमार्थकाकारयोगे पञ्चमी स्यात् । "आसत्तमाओ कुल-[4] वंसाओ" ॥

हेतौ ॥२।२।२९॥

हेतौ वाच्ये पञ्चमी स्यात् । "नोइन्दियगेज्झ अमुत्त-[5] भावा" "अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो" ॥

प्रभृत्यर्थयोगे ॥२।२।३०॥

आरभ्येत्याद्यर्थकशब्दयोगे पञ्चमी स्यात् । "इओ तच्चे [6] अईए भवग्गहणे" ॥

---

१ शयनीयत उत्तिष्ठति, उत्थाय पादपीठात्प्रत्यवरोहति । नाया० १–६ ॥ २ गृहेभ्यः प्रतिनिष्क्रामति । नाया० १–१२ ॥ ३ हस्ताद्धस्तं संह्रियमाणो-ऽङ्कादङ्कं परिभोज्यमानः । नाया० १–१७ ॥ ४ आसप्तमात्कुलवंश्यात् । नाया० १–२३ ॥ ५ नोइन्द्रियग्राह्योऽमूर्त्तभावात्, अमूर्त्तभावादपि च भवति नित्यः ॥ उत्त० १४–१९ ॥ ६ इतस्तृतीयेऽतीते भवग्रहणे । नाया० १–२७ ॥

शेषे षष्ठी ॥२।२।३१॥

कर्मादिभिन्ने सम्बन्धसामान्ये वाच्ये षष्ठी स्यात्। "अं-तो[1] णं भंते माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स"। "तस्स[2] णं सेणियस्स रण्णो धारणी नामं देवी होत्था"। "तस्स[3] कारणस्स अंतगमणं"। "जस्स[4]......सक्खं"॥

समुदायादेकस्य पृथक्करणे सप्तमी च ॥२।२।३२॥

जातिगुणक्रियाभिः समुदायादेकस्य पृथक्करणं यतस्तस्मात्सप्तमी चात्षष्ठी स्यात्। "दाणाण[5] सेट्ठं अभयप्पदाणं सच्चेसु वा अणवज्जं वयन्ति"। "एएसिं[6] तीसाए महासुमिणाणं इमे चोद्दस" अत्र तीसादिशब्दानां नित्यैकवचनान्ततया बहुवचनान्तविशेषणमपि, तीसाए इति पदमेकवचनान्तम्॥

अन्तरायोगे च ॥२।२।३३॥

अन्तराशब्दयोगेऽपि षष्ठी स्यात्। "भासमाणस्स[7] वा णो अंतरा भासं भासिज्जा"॥

दूरान्तिकाद्यर्थैर्द्वितीयासप्तम्यौ च ॥२।२।३४॥

दूरार्थकसमीपाद्यर्थकशब्दयोगे द्वितीयासप्तम्यौ भवत-

---

१ अन्तो भगवन्! मानुषोत्तरस्य पर्वतस्य। भग० ८-८॥ २ तस्य श्रेणिकस्य राज्ञी धारणी नाम देवी अभूत्। नाया० १—६॥ ३ तस्य कारणस्यान्तगमनम्। नाया० १—१५॥ ४ यस्य....सख्यम्। नाया० १—१६॥ ५ दानानां श्रेष्ठमभयप्रदानं सत्येषु वाऽनवद्यं वदन्ति। सूय० १—६—२३॥ ६ एतेषां त्रिंशतो महास्वप्नानामिमे चतुर्दश। ७ भाषमाणं वा नो अन्तरा भाषां भाषेत॥

Aho ! Shrutgyanam

श्चात्षष्ठी। "भगवतो महावीरस्स अंतिए"[1]। "तस्सेव मंडलस्स अदूरसामन्ते"[2]। "सेणियस्स रन्नो अन्तियाओ"[3]। सेणियस्स रन्नो पुरओ"[4]। "नगरस्स मज्झंमज्झेण"[5]। "नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति"[6]। "नगरे मज्झंमज्झेण"[7]॥

दिगर्थैः पञ्चमी च ॥२।२।३५॥

दिग्वाचकशब्दैर्योगे पञ्चमी चात्षष्ठी स्यात्। "मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणेणं"[8]। "गंगाए महानदीए दाहिणिल्ले कूले"[9]॥

कर्त्रादौ कृति कर्मणि ॥२।२।३६॥

कर्तृकर्माद्यर्थककृद्योगे कर्मणि वाच्ये षष्ठी स्यात्। "कायराणं......दुरणुचरे"[10] "ववसियस्स एत्थं किं दुक्करं करणयाए। "अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे"[11]॥ "सेणियस्स रण्णो इट्ठा"[12]। कर्मादिवाचकेभ्योऽपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां कृद्योगविरहेऽपि षष्ठी।

१ भगवतो महावीरस्यान्तिके। नाया० १--२३। २ तस्यैव मण्डलस्यादूरसामन्ते। नाया० १--२७॥ ३ श्रेणिकस्य राज्ञोऽन्तिकात्। नाया० १--१६॥ ४ श्रेणिकस्य राज्ञः पुरतः। नाया० १--१३॥ ५ नगरस्य मध्ये भूत्वा। नाया० १--१२॥ ६ नगरस्य मध्ये भूत्वा निर्गच्छति। नाया० २--३६॥ ७ नगरस्य मध्ये भूत्वा। नाया० २--४०॥ ८ मेघस्य कुमारस्य पूर्वदक्षिणस्याम्। नाया० १--२४॥ ९ गङ्गाया महानद्या दक्षिणे कूले। नाया० १--२७॥ १० कातराणां........दुरनुचरम्, व्यवसितस्यात्र किं दुष्करं करणतायाम्। नाया० १--२३॥ ११ अहमेतस्यार्थस्याऽनर्हः। नाया० १--१५॥ १२ श्रेणिकस्य राज्ञ इष्टा। नाया० १--८॥

Aho ! Shrutgyanam

"भीए[1] जम्मणजरमरणाणं"। "अम्हे[2] णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो"। "अवसेसे[3] काए समणाणं णिग्गंथाणं निसट्ठे"। "तर्या[4] णं मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि"॥

णमोयोगे ॥२।२।३७॥

णमोशब्दयोगे षष्ठी स्यात्। "णमोऽत्थु[5] णं अरिहंताणं भगवंताणं" "नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स"॥

आश्रयोऽधिकरणम् ॥१।१।३३॥

कर्तृकर्मद्वारा क्रियाया आधारोऽधिकरणसंज्ञः स्यात्॥

सप्तम्यधिकरणे ॥२।२।३८॥

अनुक्तेऽधिकरणे वाच्ये सप्तमी स्यात्। "भद्दासणंसि[6] निसीयइ"॥

क्रियालक्षकक्रियायाम् ॥२।२।३९॥

अन्यस्याः क्रियाया लक्षणं यया क्रियया भवति तत्क्रियाश्रयवाचकात्सप्तमी स्यात्। "उट्ठियम्मि[7] सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयणिज्जाओ उट्ठेति"। आश्रयस्यो-

---

१ भीतो जन्मजरामरणेभ्यः। नाया० १–२५॥ २ वयं देवानुप्रियेभ्यः शिष्यभिक्षां दद्महे। नाया० १–२५॥ ३ अवशेषः कायः श्रमणेभ्यो निर्ग्रन्थेभ्यो निसृष्टः। नाया० १–२८॥ ४ तदा ममैतमर्थं निवेदयेः। ओव० १२॥ ५ नमोऽस्तु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यः, नमोऽस्तु श्रमणाय भगवते महावीराय। नाया० १–३०॥ ६ भद्रासने निषीदति॥ ७ उत्थिते सूर्ये सहस्ररश्मौ दिनकरे तेजसा ज्वलति (सति) शयनीयादुत्तिष्ठति। नाया० १–१२॥

Aho ! Shrutgyanam

पम्ह्लेषिकादिरूपस्य सर्वस्य विवक्षणात् । "मत्थेए अंजलिं कट्टु" मस्तकसमीप इत्यर्थः ॥

इति कारकप्रकरणम् ॥

अथाऽव्ययीभावसमासप्रकरणम् ॥

अनेकन्नामैकार्थे समासः ॥१।१।३४॥

विशिष्टैकार्थवाचकमनेकं प्रातिपदिकं समाससंज्ञं स्यात्॥

पदसामर्थ्ये समासतद्धितौ ॥२।३।१॥

पदयोः पदानां वैकार्थीभावे समासतद्धितप्रत्ययौ भवतः। क्वचिदसामर्थ्येऽपि समासः । "गंगापुलिणवालुआसालिसए" ॥

सुप् सुपा वा ॥२।३।३॥

सुबन्तं सुबन्तेन वा समस्यते ॥

अव्ययीभावः ॥२।३।४॥

अधिकारोऽयम् ॥

विभक्त्यर्थादिष्वव्ययम्॥२।३।६॥

विभक्त्यर्थादिवाचकमव्ययं सुबन्तेन समस्यते सोऽव्ययीभावः ॥

समासे प्रथमानिर्दिष्टं पूर्वम् ॥२।३।२॥

समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टं पूर्वं प्रयोज्यम् ।

---

१ मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ॥ २ गङ्गापुलिनवालुकासदृशके । कप्प० २—३ ॥

Aho ! Shrutgyanam

अज्झप्पं[1] । अच्चत्थं[2] । बहिट्ठाणं[3] । पाउप्पभाया रयणी[4] ॥

अतिरतिक्रान्ते द्वितीयया ॥२।३।७॥

अतिक्रान्तेऽर्थेऽतिर्द्वितीयान्तेन समस्यते ॥

सुपः समासतद्धितयोः ॥४।४।६५॥

समासतद्धितावयवस्य सुपो लोपः स्यात् ॥

स नपुंसकमेकं च ॥२।३।५॥

अव्ययीभावसमाससंज्ञकं प्रायेण नपुंसकमेकवचनान्तं च प्रयोज्यम् ॥

अनुपडी वीप्सादिषु ॥२।३।८॥

वीप्सादिष्वर्थेषु अनुपडी द्वितीयान्तेन समस्येते । समयं समयं त्ति=अणुसमयं[5] । अणुगामं[6] । अणुणइया[7] । दुवारं दुवारं त्ति=पडिदुवारं[8], पडिदारं । पडिसोयं[9] ॥

असादृश्ये यथार्थकानि ॥२।३।९॥

सादृश्यभिन्नेऽर्थे यथार्थका अहादिशब्दा द्वितीयान्तेन समस्यन्ते । अहप्पहाणं[10] । अहाकप्पं[11] । अहातच्चं[12] । अहासंथणं[13] । जहत्थं[14] । जहिच्छं[15] । जहिच्छा ॥

---

१ अध्यात्मम् । २ अत्यर्थम् । ३ बहिःस्थानम् । ४ प्रादुष्प्रभाता रजनी । ५ अनुसमयम् । ६ अनुग्रामम् । ७ अनुनदिकम् । ८ प्रतिद्वारम् । ९ प्रतिस्रोतः । १० यथाप्रधानम् । ११ यथाकल्पम् । १२ यथातथ्यम् । १३ यथासंस्तनम् । १४ यथार्थम् । १५ यथेच्छम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

चचेन जादयः समुच्चये ॥२।३।१०॥

जादिशब्दाश्चशब्देन समुच्चयेऽर्थे समस्यन्ते। जंच्चेव[1]। तच्चेव[2]। जीवच्चेव[3]। अजीवच्चेव[4] ॥

आयावदर्थका मर्यादादौ ॥२।३।११॥

मर्यादाद्यर्थे आशब्दो यावदर्थकाश्च शब्दा द्वितीयान्तेन समस्यन्ते। आयाहिणपयाहिणं[5]। जावंतिमं[6]। जावदव्वं[7]। आवकहियं[8]। आवकहा[9] ॥

आभिमुख्यादावभिः ॥२।३।१२॥

आभिमुख्यादिष्वर्थेषु अभिर्द्वितीयान्तेन समस्यते। अभिन्तरं[10], अब्भंतरं ॥

पडेरेक्केन समासे दीर्घः ॥१।३।१६॥

पडिशब्दस्यैक्कशब्देन समासे पूर्वस्वरस्य दीर्घः स्यात् ॥

एर्यः कात्पूर्वः परो वा ॥१।३।२०॥

पडेः परस्यैक्कशब्दस्यैकारस्य यकारो वा स्यात्, स च कात्पूर्वं परो वा प्रयोज्यः। एक्कमेक्कं पडित्ति=पाडियेक्कं[11], पाडिक्कयं, पाडिएक्कं ॥

प्रभृतिना पञ्चमी ॥२।३।१३॥

पञ्चम्यन्तं प्रभृतिशब्देन सह समस्यते ॥

---

१ यश्चैव। २ सचैव। ३ जीवश्चैव। ४ अजीवश्चैव। ५ आदक्षिणप्रदक्षिणम्। ६ यावदिदम्। ७ यावद्द्रव्यम्। ८ यावत्कथिकम्। ९ यावत्कथम्। १० आभ्यन्तरम्। ११ प्रत्येकम् ॥

जादयो[*] व्यञ्जनान्ताः ॥१।३।२२॥

समासे उत्तरपदे परे जप्रभृतिशब्दा व्यञ्जनान्ताः प्रयोज्याः । जप्पभिई[1] । तप्पभिई[2] । आउक्कालो[3] । आउक्करणं[4]। चउक्कसाया[5]। चउद्दिसिं[6] । छज्जीवणिया[7] । छद्दंतो[8]। तमुक्काए[9], तमुकाए । पुढविक्काइया[10] । वाउक्काइया[11] । खुप्पिवासा[12] ॥

उवः सामीप्ये षष्ठ्या ॥२।३।१४॥

सामीप्यार्थक उवशब्दः षष्ठ्यन्तेन समस्यते । अंगस्स समीपं=उवंगं[13] ॥

कुत्सादुष्टादौ कुदू प्रथमया ॥२।३।१५॥

कुत्साद्यर्थकः कुशब्दो दुष्टाद्यर्थको दुशब्दश्च प्रथमान्तेन सह समस्यते । जादिगणपठितत्वेन व्यञ्जनान्तत्वात्, दुद्दंसणं[14] । दुद्दिनं[15] ॥

कोरादोतौ ॥१।३।२३॥

कुशब्दस्याकार ओकारश्चान्तादेशो वा स्यादुत्तरपदे ।

---

*जद्, तद्, महद्, आउस्,चउर्, खुह्, छस्, विहस्, वग्गस्, वायुक्, पुढविक्, तमस्, दुर्, निर्, पुनर्, धनुस्, जावत्, तावत्, इत्यादिराकृतिगणोऽयम्॥

---

१ यतः प्रभृतिः । २ ततः प्रभृतिः । ३ आयुष्कालः । ४ आयुष्करणम् । ५ चतुष्कषायाः । ६ चतुर्दिक् । ७ षट्जीवनिका। ८ षट्दन्तः । ९ तमस्कायः । १० पृथिवीकायिकाः । ११ वायुकायिकाः । १२ क्षुत्पिपासे । १३ उपाङ्गम् । १४ दुर्दर्शनम् । १५ दुर्दिनम्॥

Aho ! Shrutgyanam

कापुरिसो, कोपुरिसो, कुपुरिसो । कादंडिमो, कोदंडिमो, कुदंडिमो ॥

निष्क्रान्तादौ पञ्चम्या निः ॥२।३।१६॥

निष्क्रान्ताद्यर्थको निःशब्दः पञ्चम्यन्तेन समस्यते । णीसंको ॥

निरोऽभ्यवानूदराणाम् ॥१।३।२८॥

निरः परेषामभि-अव-अनु-उदर-शब्दानामादेर्वृद्धिः स्यात् । निराभिरामो । निरावकंखो । णिरानुकंपो । णिरोदरो ॥

इत्यव्ययीभावसमासप्रकरणम् ॥

अथ तत्पुरुषसमासप्रकरणम् ॥

तत्पुरुषः ॥२।३।१७॥

अधिकारोऽयम् ॥

भेदकं भेद्येन कर्मधारयः ॥२।३।१८॥

विशेषणं विशेष्येण समानवचनेन समस्यते स समासः कर्मधारयः । तदुभयं । तद्दिवसो । तब्भवो ॥

तत्र पूर्वं पुंवत् ॥२।३।१९॥

कर्मधारयसमासे पूर्वपदस्य पुंवद्भावः स्यात् । वुड्ढकुमारी ।

---

१ कापुरुषः । २ कुदण्डिमः । ३ निःशङ्कः । ४ निरभिरामः । ५ निरवकाङ्क्षी । ६ निरनुकम्पः । ७ निरुदरः । ८ तद्दिवसः । ९ तद्भवः । १० वृद्धकुमारी ॥

Aho ! Shrutgyanam

एतकाभ्यां वतियस्योत्तरपदे ॥४।४।७०॥

आभ्यां परस्य वतियस्य लोपः स्यादुत्तरपदे परे । "तमुक्काए[1] णं भंते! के महालए ············?, एमहालये णं गोयमा ! तमुक्काये पन्नत्ते" । 'कचित्तियस्य लोपः' केवंच्चिरं[2] केवचिरं ॥

पत्तामोडादिषु परम् ॥२।३।२० ॥

एषु पूर्वप्रयोगार्हं परं स्यात् । आमोडाणि पत्ताणि = पत्तामोडाणि[3] । अंजलिउडे[4] । अनासाच्छिन्नं[5] । आईण्णजणमणुस्सा[6] । अद्धभरहो[7] ॥

द्वितीया पत्तादिभिः ॥२।३।२१ ॥

पत्तादिप्रकृतिकैः प्रथमान्तैः सह द्वितीयान्तं समस्यते स तत्पुरुषः ॥

दयादीनां पत्तादौ ॥२।३।२२॥

दयादिशब्दानां पत्तादिशब्दे परे ह्रस्वान्तादेशो बहुलं स्यात् । दयपत्तो[8] ॥

आसो रुट्ठस्य तः ॥१।४।११४॥

आसुशब्दात्परस्य रुट्ठशब्दस्योपधायास्तकारादेशः स्यात् । आसुरुत्तो[9] ॥

---

१ तमस्कायो भगवन्! कियन्महान् ···?, एतावन्महान् गौतम ! तमस्कायः प्रज्ञप्तः । भग० ६—५॥ २ कियच्चिरम् । ३ आमोडितपत्राणि । ४ कृताञ्जलिः । ५ अच्छिन्ननासिकम् । ६ आकीर्णजनमनुष्या । (जनमनुष्याकीर्णा) । ७ भरतार्द्धम् । ८ दयाप्राप्तः । ९ आशुरुष्टः ॥

तृतीयापञ्चमीसप्तम्यश्च ॥२।३।२३॥

तृतीयाद्यन्तं प्रथमान्तेन समस्यते स तत्पुरुषः। विउप्पगडा[1]। तिण्णाणोवगए[2]। उदउल्लं[3]॥

खंडादीनामुत्तरपदे* ॥१।३।२१॥

खण्डादिशब्दानामुत्तरपदे परे दीर्घोऽन्तादेशो बहुलं स्यात्। खंडाभेदो[4]। अट्ठादंडो[5]। अप्पाबहुगं[6]। अप्पाबहुत्तं[7]। आणापाणं[8]। पासामिओ[9]। अंधारूवं[10]। आवीकम्मं[11]॥

दकस्य दः ॥१।४।४२॥

दकशब्दस्य द इत्यादेशः स्यादुत्तरपदे। दाकलसो[12]। दाकुम्भो[13]।

एत्पोरस्य कच्चे ॥१।३।२९॥

पोरशब्दस्यैकारान्तादेशः स्यात् कच्चशब्दे परे। पोरेकच्चं[14]॥

---

१ विद्वत्प्रकटाः (प्रकृताः) २ त्रिज्ञानोपगतः। ३ उदकार्द्रम्। ४ खंडभेदः। ५ अर्थदण्डः। ६ अल्पबहुकम्। ७ अल्पबहुत्वम्। ८ आनपानः। ९ पाशमृगः, पार्श्वमितः, पार्श्वमृगः। १० अन्धरूपम्। ११ आविष्कर्म। १२ दककलशः। १३ दककुम्भः। १४ पौरस्कृत्यम्॥

---

*खण्ड, अट्ठ, अप्प, आण, पास, अंध, आविर्, एक्क, सच्च, उच्च, सम्म, दक, मह, इति खण्डादिराकृतिगणः॥

Aho ! Shrutgyanam

मणादावस्य मः ॥१।४।११५॥

मणशब्दात्परस्योत्तरपदस्यावशब्दस्योपधाया मकारादेशः स्यात्। आविज्जइ त्ति=आवो, मणसा आवो=मणामो[1] ॥

पितुप्रभृतीनामिः ॥१।३।४०॥

एषामुत्तरपदे परे इकारोऽन्तादेशो वा स्यात्। अम्मापि[2]इसमाणे। माउपिउसुजाते[3]। भाइसमाणे[4]। भाउसयं[5] ॥

सहस्तृतीयया ॥२।३।२४॥

सहशब्दस्तृतीयान्तेन सह समस्यते ॥

सहसमानयोः सः ॥१।४।४३॥

अनयोः सकारादेशो बहुलं स्यादुत्तरपदे परे। साहिक[6]रणं। सअंडं[7]। सअंते[8]। सअट्ठो[9]। सहपुत्तो[10]। सहसंबुद्धो[11] ॥

णखपदस्य णप्फयः सात् ॥१।४।४४॥

सात्परस्य णखपदशब्दस्य णप्फय इत्यादेशः स्यात्। सणप्फए[12] ॥

सात्पक्खस्य ॥१।३।४१॥

सात्परस्य पक्खशब्दस्यैकारान्तादेशः स्यात्। सपक्खिं[13] ॥

---

१ मन आपः, मनोऽमः। २ अम्बापितृसमानः। ३ मातापितृसुजातः। ४ भ्रातृसमानः। ५ भ्रातृशतम्। ६ समानाधिकरणम्। ७ साण्डम्। ८ सान्तः। ९ सार्थः। १० सपुत्रः। ११ ससम्बुद्धः। १२ सनखपदः। १३ सपक्षः ॥

Aho ! Shrutgyanam

चतुर्थी तादर्थ्ये ॥२।३।२५॥

तादर्थ्ये विहिता या चतुर्थी तदन्तं प्रथमान्तेन समस्यते अट्ठादंडो[1] ॥

षष्ठी च शेषे ॥२।३।२६ ॥

कर्मादिकारकभिन्ने सम्बन्धसामान्ये विहिता या षष्ठी तदन्तं प्रथमान्तेन समस्यते । तदाहारो[2] । तदुप्पाओ[3] ॥

कारादिभिश्च ॥२।३।२७॥

कारादिशब्दप्रकृतिकैः सुबन्तैः सह षष्ठ्यन्तं समस्यते । अंधगारो[4] । मणिआरो[5] । सुवण्णआरो[6] ॥

पुव्वादयोऽह्नेन षष्ठ्या ॥२।३।२८॥

पुव्वादिशब्दाः प्रथमान्ताः षष्ठ्यन्तेनाह्नशब्देन समस्यन्ते ॥

अहस्याण्हः ॥१।४।४५ ॥

समासे उत्तरपदभूतस्याहशब्दस्याण्ह इत्यादेशः स्यात् । पुव्वण्हं[7] । मज्झण्हं[8] ॥

सप्तम्या अलोपः ॥२।३।२९ ॥

समासावयवभूतायाः सप्तम्याः क्वचिल्लोपो न भवति । अन्तेवासी । उदएचरो[9] । कण्ठेगुणो[10] । कण्ठेमालो[11]को ॥

संख्यार्थकास्समानाधिकरणैः समाहारे ॥२।३।३२॥

संख्यावाचकाः शब्दाः समानाधिकरणैः सुबन्तैः सह समाहारेऽर्थे समस्यन्ते ॥

---

१ अर्थदण्डः । २ तदाहारः । ३ तदुत्पादः । ४ अन्धकारः । ५ मणिकारः । ६ सुवर्णकारः । ७ पूर्वाह्णम् । ८ मध्याह्नम् । ९ उदकेचरः । १० कण्ठेगुणः । ११ कण्ठेमालकः ।

तिपदे दस्य तलोपौ ॥१।४।४६॥

तिपदशब्दे दकारस्य तकारलोपौ पर्यायेण भवतः। पस्य वकारे, तिवैई[1], तिवती, तिवदी। निषेधार्थकैः अ-अण-ण-शब्दैः समासे, अथिरं[2]। अबहुस्सुए[3]। अणट्ठादण्डो[4]। अणेक्कावाई[5]। णण्णत्थ[6]। णण्णहा[7]॥

रात्तेरुत्तरपदस्यात् ॥१।४।८०॥

उत्तरपदभूतस्य रात्तिशब्दस्याकारान्तादेशः स्यात्। चउरायं[8]। चरमवरिसारत्तम्[9]॥

जहण्णादीनामणुक्कोसादिषु मक् ॥४।४।७॥

जहण्णादिशब्दानामणुक्कोसादिषु परेषु मगागमः स्यात्समासे। "अजहण्णमणुक्कोसो[10]" "अदुक्खमसुहा" "अंगमंगाइं" "सामाइयमादियाइं"। गब्भमुद्देसो[11]। अणंतभागमब्भहियं[12]। जावंताव[13]॥

खंधादावारस्यावस्य लोपः ॥१।४।४७॥

खंधशब्दात्परस्यावारस्यावस्य लोपो वा स्यात्। खंधारो[14]। खंधावारो॥

पायवस्योवगमणे यस्य वस्य यवयोश्च ॥१।४।४८॥

पायवशब्दस्योवगमणे परे यस्य वस्य च यवद्वयस्य पर्या-

---

१ त्रिपदी। २ अस्थिरम्। ३ अबहुश्रुतः। ४ अनर्थदण्डः। ५ अनेकवादी। ६ नान्यत्र। ७ नान्यथा। ८ चतूरात्रम्। ९ चरमवर्षारात्रम्। १० अजघन्यानुत्कर्षः, अदुःखासुखा, अङ्गाङ्गानि, सामायिकादीनि। निर० ३-४॥ ११ गर्भोद्देशः। १२ अनन्तभागाभ्यधिकम्। १३ यावत्तावत्। १४ स्कन्धावारः॥

Aho ! Shrutgyanam

येण लोपः स्यात्। पावोवगमणं[1], पाओवगमणं, पाउवगमणं ॥

अधोरवधेर्वस्य ॥१।४।४६॥

अधोशब्दात्परस्यावधेर्वस्य लोपः स्यात्। अधोऽधी[2]। अधोऽही ॥

जत्तद्भ्यामनन्तरस्य ॥१।३।४३॥

आभ्यां परस्यानन्तरशब्दस्यादेर्दीर्घः स्यात्। दस्य यकारे, जयाणन्तरं[3]। तयाणन्तरं[4] ॥

पुव्वस्य पौ ॥१।३।४२॥

पुव्वशब्दस्येकारोऽन्तादेशो वा स्यात्पिशब्दे परे समासे। जहण्णादित्वात्, पुव्विंपि[5], पुव्वंपि ॥

आगंतारस्यागार आरस्य ॥१।४।५०॥

आगन्तारशब्दस्यागारशब्दे परे आरस्य लोपो वा स्यात्। आगन्तगारं[6] ॥

द्वयोरगंतारः ॥१।४।५१॥

आगंतारागारशब्दयोरगंतार इत्यादेशः स्यात्। अगंतारं ॥

इज्जाया एसस्येसः ॥१।४।५२॥

इज्जाशब्दात्परस्यैसस्येसादेशः स्यात्। पूर्वस्वरस्य लोपे, इँज्जिसो[7] ॥

---

१ पादपोपगमनम्। २ अधोऽवधिः। ३ यदनन्तरम्। ४ तदनन्तरम्। ५ पूर्वमपि। ६ आगन्त्रागारः। ७ इज्यैषः ॥

Aho ! Shrutgyanam

इमात्सन्धौ प्रथमायाः ॥२।३।३०॥

इमशब्दात्सन्धिशब्दे परे प्रथमाया अलोपः स्यात्। अयं[1]संधी ॥

एयारूवे वा ॥२।३।३१॥

इमशब्दादेयारूवशब्दे परे प्रथमाया अलोपो वा स्यात्। अयमेयारूवे[2], इमेयारूवे ॥

बिहवणाभ्यां पतेः फसौ ॥१।४।५३॥

आभ्यामुत्तरस्य पतिशब्दस्यादेः फ स इत्येतावादेशौ पर्यायेण भवतः। वणप्फई[3]। वणस्सई। बिहप्पती[4], बिहप्फती, बिहस्सती ॥

ओर्जसादीनामुत्तरपदे ॥१।३।४४॥

जसादिशब्दानामुत्तरपदे परे ओकारान्तादेशो बहुलं स्यात्। जसोकित्ती[5], जसकित्ती। जसोकामी[6]। जसोजीवियं[7], जसजीवियं। जसोवन्तो[8], जसवन्तो। जसोमन्तो, जसमन्तो। जसोचंदे[9]। जसकरो[10]। अहोणिसि[11]। अयोकवलं[12]। अयोकुंभी[13]। अयोगोलो[14]। अयोघणो[15]। अयोमयं[16]। अन्नोन्नं[17]। मणोन्नं[18]। मणोरमो[19]। मणोसिला[20]। मणोहरो[21]। मणकरणं[22]। मणजोगो[23]।

---

१ इदंसन्धिः। २ अयमेतद्रूपः। ३ वनस्पतिः। ४ बृहस्पतिः। ५ यशःकीर्तिः। ६ यशःकामी। ७ यशोजीवितम्। ८ यशस्वान्। ९ यशश्चन्द्रः। १० यशस्करः। ११ अहर्निशम्। १२ अयःकवलम्। १३ अयस्कुम्भी। १४ अयोगोलः। १५ अयोघनः। १६ अयोमयम्। १७ अन्योऽन्यम्। १८ मनोज्ञम्। १९ मनोरमः। २० मनःशिला। २१ मनोहरः। २२ मनःकरणम्। २३ मनोयोगः ॥

Aho ! Shrutgyanam

[1]मणादंडो । [2]मणपओगो । [3]तमोकसियं । [4]दोग्गती । [5]तवोकम्मं [6]तवोमयं । बाहुलकात्क्वचिन्नित्यम् । [7]मणोरहो । [8]सोग्गई ॥

उत्ते यस्य ॥१।४।५४॥

तेयशब्दस्योत्तरपदे परे यकारस्योकारो वा स्यात् । [9]तेउकाए । [10]तेउप्पभो । तेउलेसा[11], तेयलेसा । [12]तेयल्लेस्सो ॥

चरेऽहेरा: ॥१।३।४५॥

अहेशब्दस्य चरशब्दे परे आकारोऽन्तादेश: स्यात् । [13]अहाचरो ॥

पायस्य मूले यस्य ॥१।४।५५॥

पायशब्दस्य यस्य लोपो वा स्यान्मूलशब्दे परे । पा[14]मूलं, पायमूलं । (गरुडासणादीनां सिद्धये मध्यपदस्य नित्यं वक्तव्य:) गरुडसरिसमासणं=[15]गरुडासणं । उदअपुण्णमुदरं=[16]उदओदरं । पुव्वमारब्भ पच्छिमो=[17]पुव्वपच्छिमो ॥

॥ इति तत्पुरुषसमासप्रकरणम् ॥

अथ द्वन्द्वसमासप्रकरणम् ॥

अनेकं समूहे ॥२।३।३३॥

समुदायेऽर्थे वर्त्तमानमनेकं प्रथमान्तं प्रथमान्तेन सह वा

---

१ मनोदण्ड: । २ मन:प्रयोग: । ३ तम:काषिक: । ४ दुर्गति: । ५ तप:कर्म । ६ तपोमयम् । ७ मनोरथ: । ८ सद्गति: । ९ तेजस्काय: । १० तेज:प्रभ: । ११ तेजोलेश्या । १२ तेजोलेश्य: । १३ अधश्चर: । १४ पादमूलम् । १५ गरुडासनम् । १६ उदकोदरम् । १७ पूर्वपश्चिम: ॥

Aho ! Shrutgyanam

समस्यते। पिज्जो य दोसो य=पिज्जदोसा[1]। पण्हवागरणं[2]। सीउ-ण्हं, सीउसिणं[3] ॥

दियानिस्योरम्वोत्तरपद्योः ॥१।३।४६॥

द्वन्द्वे उत्तरपदभूतयोर्दियानिसिशब्दयोरमन्तादेशो वा स्यात्। राइंदियं[4]। अहोनिसं। अहोनिसि[5] ॥

आणात्पाणस्योत् ॥।१।३।४७॥

आणशब्दात्परस्य पाणशब्दस्योकारान्तादेशो वा स्यात्। आणापाणू[6], आणापाणो ॥

॥ इति द्वन्द्वसमासप्रकरणम् ॥

अथ बहुव्रीहिसमासप्रकरणम् ॥

अप्रथमाऽन्यपदार्थे प्रथमा ॥२।३।३४ ॥

प्रथमाभिन्नान्यपदार्थे वर्त्तमानं प्रथमान्तं समानाधिकरणेन स-मस्यते। उदिण्णाणि बलवाहणाणि जस्स स उदिण्णबलवाहणे[7] ॥

अत्र लिङ्गमन्यपदार्थस्य ॥२।३।३५॥

अस्मिन् समासेऽन्यपदार्थस्येव लिङ्गं स्यात्। एगाऽऽहच्चा जत्थ एगाहच्चं[8] ॥

१ प्रेमद्वेषौ। २ प्रश्नव्याकरणम्। ३ शीतोष्णम्। ४ रात्रिदिवम्। ५ अहर्निशम्। ६ आनपानः। ७ उदीर्णबलवाहनः। उत्त० १८-१॥ ८ एकाऽऽहत्यम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्वचिद्व्यधिकरणेनापि ॥२।३।३६ ॥

उक्तसमासः क्वचिद्व्यधिकरणेनापि भवति। तंसि अप्पियं करणं जेणं तदप्पियकरणे[1]। कण्ठेकालो[2]। कण्ठेमालो[3]॥

अस्मात्को वा ॥२।३।३७

उक्तसमासात्परः कप्रत्ययो वा स्यात्॥

इत्के पूर्वस्य ॥२।३।३८॥

कप्रत्यये परे पूर्वस्वरस्येकारो वा स्यात्। "सँत्तसत्तमियं[4] भिक्खुपडिमं" ॥

निषेधार्थकेभ्योऽस्त्यर्थस्य लोपः ॥२।३।३९॥

निषेधवाचकेभ्यः अ-अण-ण-शब्देभ्यः परस्य वर्त्तमानार्थकशब्दस्य लोपः स्यादुक्तसमासे। ण विज्जमाणो उऊ जीसे सा अँणोउया[5]॥

दिग्वाचका मध्ये ॥२।३।४०॥

दिगर्थकाः शब्दा मध्ये वाच्ये समस्यन्ते। उत्तराए पुरत्थिमाए य अन्तरालं जा दिसा सा उँत्तरपुरत्थिमा[6]॥

ओद्णादारस्य ॥१।३।४८॥

अणशब्दात्परस्यारशब्दस्यादेरोकारः स्यात्। णत्थि आरं पारं जस्स स अणोरपारे[7]॥

अवद्ग्गस्य वा ॥१।३।४९॥

अणशब्दात्परस्यावद्ग्गशब्दस्यादेरोकारो वा स्यात्।

---

१ तदर्पितकरणः। २ कण्ठेकालः। ३ कण्ठेमालः। ४ सप्तसप्तमिकां भिक्षुप्रतिमाम्। ओव० १५। ५ अनृतुका। ६ उत्तरपूर्वा। ७ अनारपारः॥

णत्थि अवदग्गमन्तं जस्स सो अणोवदग्गे[1], अणवदग्गे ॥

आमोसादोसहेरोसस्य ॥१।३।७९॥

आमोसशब्दात्परस्यौसहिशब्दस्यौसस्य लोपः स्यात् । आमोसही[2] ॥

ईरुद्धस्य मुहे ॥१।३।५२॥

उद्धशब्दस्य मुहशब्दे परे ईकारान्तादेशः स्यात् । उद्धी-मुहो[3] ॥

त्तुमुमोः काममणयोः ॥४।४।६९॥

त्तुम्-उं-प्रत्यययोरन्त्यस्य लोपो वा स्यात् । काममणश-ब्दयोः परयोः । काउकामो[4] । गंतुमणो[5] । संपाविउकामो[6], संपाविउंकामो ॥

सरिसस्य तयावययोः ॥४।४।६७॥

सरिसशब्दस्य तयावयशब्दयोः परयोरन्त्यस्य लोपः स्यात् ॥

तये सस्य तः ॥४।४।६८॥

सरिसशब्दस्य सकारस्य तकारः स्यात्तयाशब्दे परे । सरि-त्तया । सरिव्वया । "दो[7] भंते !...सरित्तया सरिव्वया" ॥

१ अनवदग्रः । २ आमर्षौषधिः । ३ ऊर्ध्वमुखः । ४ कर्त्तुकामः । ५ गन्तु-मनाः । ६ सम्पादितुकामः । ७ द्वौ भगवन् !...सदृक्त्वचौ सदृग्वयसौ भग० १—८ ॥

अच्छेः ॥१।३।५३॥

उत्तरपदस्याच्छिशब्दस्याकारान्तादेशः स्यात् । "हरिमेलामउलमल्लियच्छाणं"[1] ॥

दिवड्ढाड्ढाइज्जाद्धुट्ठाः सार्द्धैकद्वयत्रयेषु॥१।४।५६॥

दिवड्ढ-अड्ढाइज्ज-अद्धुट्ठ-शब्दाः क्रमेण सार्द्धैकसार्द्धद्वयसार्द्धत्रयेष्वर्थेषु निपात्यन्ते। दिवड्ढं[2]। अड्ढाइज्जं[3]। अद्धुट्ठं[4] ॥

असौ पस्य फः ॥१।४।५७॥

पोपसर्गस्य फादेशः स्यादसुशब्दे परे। पगया असू जत्थ तं फासुयं[5] ॥

एक्कादयः संख्यायां दसादिभिरधिकान्ताः॥२।३।४१॥

संख्यावाचका अधिकशब्दान्ता एकादयः शब्दा दसादिशब्दैः संख्यावाचकैः सह समस्यन्ते ॥

एकार्थकानां दसपण्णणउइषु दीर्घः॥१।३।५४॥

एकत्वसंख्यावाचकानामेक-एक्क-एग-इक्क-इग-शब्दानां दीर्घोऽन्त्यादेशः स्याद्दस-पएण-णउइ-शब्देषु परेषु। एकारस[6]। एक्कारस। एकाणउई[7]। एकावएणं[8] ॥

इगेगस्य ॥१।४।५८॥

इगशब्दस्य सस्वरगकारस्य लोपो वा यालशब्दे परे।

---

१ हरिमेलामुकुलमल्लिकाक्षाणाम् । ओव० ३१ । २ द्व्यर्द्धम् । ३ अर्द्धतृतीयम् । ४ अर्द्धचतुष्कम् । ५ प्रासुकम् । ६ एकादश । ७ एकनवतिः । ८ एकपञ्चाशत् ॥

Aho ! Shrutgyanam

चत्तालीसस्य यालतालीसौ ॥१।४।५९॥

उत्तरपदस्य चत्तालीसशब्दस्यैतावादेशौ पर्यायेण वा स्तः। इयालं[1], इगयालं, एगतालीसं।

दोर्बेबी ॥१।४।६०॥

दुशब्दस्य बे बि इत्यादेशौ पर्यायेण भवतः। बेइन्दिया[2]। बिदलं[3]। बिसरीरं[4] ॥

वा संख्यार्थके ॥१।४।६१॥

दुशब्दस्य बाऽऽदेशः स्यात्संख्यावाचकशब्दे परे। बारस[5]। बावन्नं[6]। बाणउई[7]। बायालं[8] ॥

दुवा दसे ॥१।४।६२॥

समासे दसशब्दे परे दुशब्दस्य दुवा इत्यादेशः स्यात्। दुवालस[9] ॥

तेरेः ॥१।३।५६॥

संख्यावाचकस्य तिशब्दस्यैकारान्तादेशः समासे उत्तरपदे परे। तेरस[10]। तेवीसं[11]। तेतीसं[12], तेत्तीसा। तेयालं[13], तेयाली। तेवण्णं[14]। तेवग्गं[15]। तेइंदिया[16] ॥

चतोरतःपूर्वस्य ॥१।३।५७॥

समासे पूर्वपदस्य चतुशब्दस्याकारस्य दीर्घः स्यात्। चाउ[17]-

---

१ एकचत्वारिंशत्। २ द्वीन्द्रियाः। ३ द्विदलम्। ४ द्विशरीरम्। ५ द्वादश। ६ द्विपञ्चाशत्। ७ द्विनवतिः। ८ द्विचत्वारिंशत्। ९ द्वादश। १० त्रयोदश। ११ त्रयोविंशतिः। १२ त्रयस्त्रिंशत्। १३ त्रिचत्वारिंशत्। १४ त्रिपञ्चाशत्। १५ त्रिवर्गः। १६ त्रीन्द्रियाः। १७ चतुष्कोणम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

कोणं। चाउद्दसी ॥

चोः सङ्ख्यावाचके ॥१।३।५८॥

चतुशब्दस्य चो इत्यादेशः स्यात्संख्यावाचके परे। चोद्दस[2]। चोवीसं[3]। चोतीसं[4], चोत्तीसं। चोयालं[5], चोयालीसं। चोसट्ठिं[6],चउसट्ठिं ॥

त्तरेर्हश्च ॥१।४।६५॥

उत्तरपदस्य सत्तरिशब्दस्यादेर्हकारश्चकाराद्वकारो वा स्यात्। चोहत्तरिं[7], चोवत्तरिं ॥

चतुरचुलावसीतौ ॥१।४।६६॥

चतुशब्दस्य चतुर चुल इत्यादेशो वा स्तोऽसीतिशब्दे परे। चउरासीइं[8], चुलसीइं ॥

पणस्य छिः ॥१।४।११६॥

पणशब्दस्योपधाया छित्वं वा स्यात्समासे। पण्णरस[9], पनरस। पण्णहत्तरं[10], पनहत्तरं। पण्णवीसं[11], पणवीसं।

पणाल्लोपः ॥१।४।६४॥

पणशब्दात्परस्य सट्ठिशब्दस्यादेर्लोपः स्यात्। पण्णट्ठिं[12] ॥

छाहयोश्च ॥१।३।५५॥

अनयोर्दीर्घोऽन्तादेशः स्यात्प्रायेण ॥

---

१ चतुर्दशी। २ चतुर्दश। ३ चतुर्विंशतिः। ४ चतुस्त्रिंशत्। ५ चतुश्चत्वारिंशत्। ६ चतुःषष्टिः। ७ चतुःसप्ततिः। ८ चतुरशीतिः। ९ पञ्चदश। १० पञ्चसप्ततम्। ११ पञ्चविंशतिः। १२ पञ्चषष्टिः ॥

Aho ! Shrutgyanam

सट्ठेर्वः ॥१।४।६३॥

उत्तरपदस्य सट्ठिशब्दस्यादेर्वकारो वा स्यात् । छावट्ठिं,[1] छासट्ठिं । छायालीसं[2] ।अट्ठावण्णं[3] । अट्ठावयं[4]॥

छस्य सोर्दसे ॥१।४।६७॥

छशब्दस्य सो इत्यादेशः स्याद्दसशब्दे परे । सोलस[5] । छलसीइं[6] ॥

सत्तस्य वीसादौ ॥१।४।६८॥

पूर्वपदस्य सत्तशब्दस्य दीर्घोऽन्तादेशः स्याद्वीसादौ परे। सत्तावीसं[7] । सत्तावन्नं[8] ॥

सीयाले ॥१।४।६९॥

सत्तशब्दस्य सी इत्यादेशः स्याद् यालशब्दे परे । सीयालं, सीयालीसं[9] ॥

दसस्य रलौ ॥१।४।७०॥

उत्तरपदस्य दसशब्दस्यादेर्दकारस्य रेफो लकारश्च स्यात् ॥

अट्ठात्सस्य ॥१।४।७१॥

अट्ठशब्दात्परस्य दसशब्दस्य सकारस्य लोपो वा स्यात् । अट्ठार[10] । अट्ठारस ॥

---

१ षट्षष्टिः । २ षट्चत्वारिंशत् । ३ अष्टपञ्चाशत् । ४ अष्टापदं, अर्थपदम् । ५ षोडश । ६ षडशीतिः । ७ सप्तविंशतिः । ८ सप्तपञ्चाशत् । ९ सप्तचत्वारिंशत् । १० अष्टादश ॥

अट्ठे ट्ठस्य डो यालयालीसयोः ॥१।४।७२॥

अट्ठशब्दस्य ट्ठस्य डः स्याद् याले यालीसे च परे । [1]अड-यालं । अडयालीसं ॥

एकस्योणे अउणः समुदितस्य ॥१।४।७३॥

एकशब्दस्योनशब्देन समासे समुदितस्य अउण इत्यादेशो वा स्यात् । [2]अउणावीसं, एगूणवीसं, एकूणवीसं । [3]अउ-णत्तीसं । [4]अउणपन्नं ॥

आभीक्ष्ण्यवीप्सयोर्द्विः ॥२।३।४३॥

आभीक्ष्ण्ये वीप्सायां च द्योत्ये नाम्नो द्वित्वं स्यात् । [5]उद्दिओद्दिए ॥

गच्छादीनां पूर्वस्य दीर्घो द्वितीयस्यैर्बहुलम् ॥२।३।४४॥

गच्छादीनां द्वित्वे पूर्वपदस्यान्त्यस्य दीर्घो द्वितीयपदस्ये-कारोऽन्तादेशश्च बहुलं स्तः । [6]गच्छागच्छि । [7]गुम्मागुम्मि । [8]खंडाखंडि ॥

दण्डादीनामतिशयेऽनुस्वारश्च ॥२।३।४५॥

दण्डादिशब्दानामतिशये द्योत्ये द्वित्वं पूर्वस्यानुस्वारा-न्तागमश्च प्रायेण भवति । [9]दंडंदंडेण । [10]वामंवामेणं । [11]जीवं-जीवेणं । [12]थक्कंथक्कं । [13]दवंदवं ॥

---

१ अष्टचत्वारिंशत् । २ एकोनविंशतिः। ३ एकोनत्रिंशत् । ४ एकोनपञ्चाशत् ५ उदितोदितः । ६ गच्छागच्छि । ७ गुल्मागुल्मि । ८ खण्डाखण्डि ॥ ९ दण्डदण्डेन । १० वामवामेन । ११ जीवजीवेन । १२ थक्कथक्कम् (स्थितस्थितम्) । १३ द्रुतंद्रुतम् ॥

उरसुह-मज्झानां तृतीयार्थे च ॥२।३।४६॥

उर-सुह-मज्झशब्दानां तृतीयार्थे चकारादाभीक्ष्ण्यादौ च द्योत्ये द्वित्वं स्यात्। उरंउरेणं[1]। सुहंसुहेण[2]। मज्झंमज्झेण[3]॥

मासस्य नैरन्तर्ये ॥२।३।४७॥

मासशब्दस्य नैरन्तर्ये द्योत्ये द्वित्वं स्यात्। मासंमासेणं[4]॥

दवदवात्सः ॥२।३।४८॥

अस्मात्सो वा स्यात्। दवंदवस्स[5]। दवदवं॥

दिसिपरयोरोत् ॥२।३।४९॥

अनयोर्द्विरुक्तौ आदेरोकारान्तादेशः स्यात्। दिसोदिसिं[6]। परोप्परं[7]॥

अण्णस्य वा ।२।३।५०॥

आदेरण्णशब्दस्यौकारान्तादेशो वा स्याद्विरुक्तौ। अण्णोण्णं[8]। अन्नमन्नं॥

कोडेरात् ॥२।३।५१॥

द्विरुक्तौ पूर्वस्य कोडिशब्दस्याकारान्तादेशः स्यात्। कोडाकोडी[9]॥

जीवादयो ग्गाहादिभिर्गिण्हादीनामनुप्रयोगे ॥२।३।४२॥

द्वितीयान्ता जीवादिशब्दा ग्गाहादिप्रकृतिकैर्द्वितीयान्तैः

---

१ उरउरसा। २ सुखसुखेन। ३ मध्यमध्येन। ४ मासमासेन। ५ द्रुतद्रुतम्। ६ दिग्दिग्। ७ परस्परम्। ८ अन्योऽन्यम्। ९ कोटिकोटिः॥

सह समस्यन्ते गिण्हादिधातूनामनुप्रयोगे । "विजयं तक्करं[1]··· जीवग्गाहं गिण्हन्ति" जीवन्तं गृह्णन्तीत्यर्थः । "अन्तगमणं गमिस्सामि" नाया० १-१५ । अन्तं गमिष्यामीत्यर्थः ॥

॥ इति बहुव्रीहिसमासप्रकरणम् ॥

॥ इति समासप्रकरणम् ॥

अथ तद्धितप्रकरणम् ॥

तद्धिताः ॥२।४।१॥

वक्ष्यमाणाः प्रत्ययास्तद्धितसञ्ज्ञाः स्युः ॥

अद्णिकेकणिज्जेज्जणियेयणिमेल्लकमेत्ताः ॥२।४।२॥

अत् अण् इक इकण् इज्ज इज्जण् इय इयण् इम इल्ल क मेत्त, इत्येते प्रत्यया वक्ष्यमाणेष्वर्थेषु यथाप्रयोगं स्युः ॥

तद्धितेषु स्वराद्या डितः ॥२।४।३॥

तद्धितेषु स्वराद्याः प्रत्यया डिद्वद्भवन्ति । बाहुलकात् तं-दुलेज्जं[2], तंदुलिज्जं । गंगेयो[3] । भाइणिज्जो[4], भाइणेज्जो ॥

स्वार्थे प्रथमायाः ॥२।४।४॥

प्रथमान्तसमर्थान्नाम्नः स्वार्थे उक्तप्रत्ययाः स्युः । अच्चन्तियं[5] । जायमेत्तं[6], जायमित्तं । णियडिल्लया[7] । उत्तरिल्लं[8] । "तद्धिता-

१ विजयं तस्करं ··· जीवग्राहं गृह्णन्ति । नाया० २-३६ । २ तन्दुलीयम् । ३ गाङ्गेयः । ४ भागिनेयः । ५ आत्यन्तिकम् । ६ जातमात्रम् । ७ निकृतिमत्ता । ८ औत्तरेयं ॥

Aho ! Shrutgyanam

न्तादपि तद्धितान्तरम्" आणिल्लियं । वा० (ल्लाच् चलौ वा वाच्यौ) छेच्चं, छलं ॥

महादालयल्ल-ल्लियाः ॥२।४।६॥

महशब्दात्स्वार्थे आलय-ल्ल-ल्लिय-प्रत्ययाः स्युः। महालओ[3], महल्लो, महल्लओ, महल्लगो, महल्लिओ ॥

पोत्तादुल्लः ॥२।४।१०॥

पोत्तशब्दात्स्वार्थे उल्लप्रत्ययः स्यात् । पोत्तुल्लओ[4] ॥

बद्धमुक्कयोरिल्ले ॥२।४।१२॥

अनयोरिल्लप्रत्यये टिलोपो न स्यात् । बद्धेल्लगो[5] । मुक्केल्लगो[6] ॥

लोभादिभ्यस्त्ता ॥२।४।१३॥

प्रथमान्तसमर्थेभ्यो लोभादिभ्यः स्वार्थे त्ताप्रत्ययः स्यात् । गवेसणत्ता[7] ॥

तयोर्यस्त्तः ॥२।४।१४॥

त्ताप्रत्ययस्य तकारयोर्यकारादेशो बहुलं स्यात् । लोभया[8] । सीलया[9] । लीणया[10] । अणुकंपणया[11] । गवेसणया । दुक्खणया[12] । लिंपणया[13] । पिट्टणया[14] ॥

---

१ आनीतकम् । २ षट्कम् । ३ महत्कः । ४ पौत्रकः । ५ बद्धकः । ६ मुक्तकः । ७ गवेषणिका । ८ लोभकः । ९ शीलकम् । १० लीनकम् । ११ अनुकम्पनकम् । १२ दुःखनकम् । १३ लिम्पनकम् । १४ पिट्टनकम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

मडस्येल्ले ॥१।४।११७॥

मडस्योपधाया लोपः स्यादिल्लप्रत्यये । [1]मइल्लिओ ॥

सव्वणामादावन्तिः परिमाणे च ॥२।४।१५॥

सव्वणामसञ्ज्ञकाच्छब्दात्परिमाणेऽर्थे आवन्तिप्रत्ययः स्याच्चकारात्स्वार्थेऽपि । [2]एयावन्ति ॥

पढमादिल्लुः ॥२।४।१७॥

पढमशब्दात्स्वार्थे इल्लुप्रत्ययः स्यात् । [3]पढमिल्लुए ॥

एकार्थकादागीणियेया असहाये ॥२।४।१६॥

एकार्थकात्प्रथमान्तसमर्थाद् आगि--इणिय--इय--प्रत्ययाः स्युरसहाये । [4]एगागी, एगाणिए, एकाणिए । [5]एक्किया ॥

निसीहेरुच्चारणे कः ॥२।४।१८॥

प्रथमान्तान्निसीहिशब्दादुच्चारणेऽर्थे कप्रत्ययः स्यात् । 'निसीहि'इत्युच्चारणम् । [6]निसीहिगा, निसीहिया ॥

एयः साऽस्मै दीयते साऽस्य देवता ॥२।४।१९॥

प्रथमान्तसमर्थात्साऽस्मै दीयते साऽस्य देवता इत्यनयोरर्थयोरेयः प्रत्ययः स्यात् । दक्खिणा इमस्स दिज्जइ त्ति [7]दक्खिणेओ । अग्गी देवया इमस्स त्ति [8]अग्गेओ ॥

---

१ मृतकः । २ एतावान् । ३ प्रथमकः । ४ एकाकी । ५ एकका । ६ निशीथिका, नैषेधिकी वा । ७ दाक्षिणः । ८ आग्नेयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

अल्पे च ॥२।४।५॥

प्रथमान्तसमर्थादल्पेऽर्थेऽप्युक्तप्रत्ययाः स्युः। अप्पो अंसो=अंसिया[1]। अल्पार्थकप्रत्ययान्ताः प्रायेण स्त्रियाम् ॥

इतस्तदस्य संजातं पत्तादिभ्यः ॥२।४।२०॥

प्रथमान्तसमर्थेभ्यः पत्तादिभ्योऽस्य संजातमित्यर्थे इतप्रत्ययः स्यात्। पत्तं इमस्स संजातं=पत्तियं[2]। गब्भियं[3] ॥

अतिशये तरः ॥२।४।२१॥

प्रथमान्तसमर्थादतिशयेऽर्थे तरप्रत्ययः स्यात्। अइसएण तुच्छं=तुच्छतरं ॥

तरस्य के ॥१।३।५६॥

तरप्रत्ययस्य दीर्घोऽन्तादेशः स्यात्कप्रत्यये परे। बहुतराए[4]। अप्पतराए[5] ॥

इट्ठो धम्म्यादिभ्यः ॥२।४।२३॥

धम्म्यादिशब्देभ्योऽतिशयेऽर्थे इट्ठप्रत्ययः स्यात्। अइसएण धम्मी=धम्मिट्ठो[6]। अहम्मिट्ठो[7] ॥

इज्ज स्थेरादिभ्यः ॥२।४।२४॥

थेरादिभ्योऽतिशयेऽर्थे इज्जप्रत्ययः स्यात् ॥

थेरधीरपियानामिज्जे थधपाः ॥१।४।७४॥

एषामिज्जे परे थ ध प इत्येते आदेशाः क्रमेण स्युः। थेज्जं[8]। धेज्जं[9]। पेज्जं[10] ॥

---

१ अंशिका। २ पत्रितम्। ३ गर्भितम्। ४ बहुतरकः। ५ अल्पतरकः। ६ धर्मिष्ठः। ७ अधर्मिष्ठः। ८ स्थैर्यम्। ९ धैर्यम्। १० प्रियतरम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

तदर्हति करोति ॥२।४।२५॥

द्वितीयान्तसमर्थादर्हति करोतीत्यनयोरर्थयोरियादिप्रत्ययाः स्युः। अभिसेकमर्हति=अभिसिक्को[1]। उवसादित्वाद्द्विः। अलंकारं करेइ त्ति=अलंकारिए[2] ॥

णित्यादिस्वरस्य वृद्धिः ॥१।३।२४॥

णित्प्रत्यये आदिस्वरस्य वृद्धिः स्यात्। आलंकारिए[3]। आभियोगिए[4] आभिग्गहिए[5] ॥

अत्पसिणस्येये ॥१।३।६०॥

पसिणशब्दस्येकारस्याकारः स्यादियप्रत्यये। पसिणं करेइ त्ति=पासणिए[6] ॥

तेन निर्वृत्तं क्रीतं चरति व्यवहरति जीवति गृह्यते ॥

॥२।४।२६॥

तृतीयान्तसमर्थान्नाम्न एष्वर्थेषूक्तप्रत्ययाः स्युः। अब्भोवगमेन निव्वत्ता=अब्भोवगमिया[7]। अहिगरणिया[8]। दण्डेणं निव्वत्तं=दण्डिमं[9]। सएण कीयं=सैतियं, सइयं[10] ॥

इये णायस्य णेया ॥१।४।७५॥

णायशब्दस्य णेयादेशः स्यादिये परे ॥

उदियस्य वा ॥१।४।७६॥

णायशब्दसम्बन्धिन इयप्रत्ययस्यादेरुकारो वा स्यात्। णाएणं ववहरति=णेयाउओ, णेयाइयो[11]। तेल्लेणं जीवइ=तेल्लिओ[12] ॥

---

१ आभिषिक्यः। २ अलङ्कार्यः। ३ आलङ्कारिकः। ४ आभियोगिकः। ५ आभिग्रहिकः। ६ प्राश्निकः। ७ आभ्युपगमिकी। ८ आधिकरणिकी। ९ दण्डिमम्। १० शतिकम्। ११ नैयायिकः। १२ तैलिकः ॥

Aho ! Shrutgyanam

णित्यहारयणादीनामुत्तरस्यादेर्वृद्धिः ॥२।४।२७॥

अहारयणादिशब्दानामुत्तरपदस्यादेर्वृद्धिः स्याण्णिति परे। अहारयणं ववहरइ=[1]अहारायणिअं। ते[2]ओहिअं, तेआहिअं॥

चक्खोरस्य सट् ॥४।४।८॥

चक्खुशब्दात्परस्याऽप्रत्ययस्य सडागमः स्यात्। चक्खुणा गिण्हिज्जइ=[3]चक्खुसं॥

अदणौ नक्षत्रेण युक्तः कालः ॥२।४।२६॥

नक्षत्रवाचकेभ्योऽस्सिण्यादिशब्देभ्यस्तृतीयान्तेभ्यो युक्तः काल इत्यर्थे अद्-अण्-प्रत्ययौ स्तः॥

अस्सिणया इणस्यौसाणि ॥१।४।७७॥

अस्सिणीसंबन्धिन इणस्योसादेशः स्यादणि परे। अस्सिणीए जुत्ता पुण्णमासी=[4]आसोई, अस्सोई। [5]आसाढी। [6]कत्तिया। जे[7]ट्ठामूला। फ[8]ग्गुणी। वि[9]साही॥

मिगसिरस्यादेराति ॥१।३।६१॥

अस्य पूर्वैकारस्याकारः स्यादप्रत्यये। म[10]गसिरा। [11]साविट्ठी। [12]पोट्ठवती। [13]पोसी। [14]माही। [15]चेती।

१ यथारात्निकम्। २ तैजोहितम्। ३ चाक्षुपम्। ४ आश्विनी। ५ आषाढी। ६ कार्त्तिकी। ७ ज्येष्ठामूली। ८ फाल्गुनी। ९ वैशाखी। १० मार्गशीर्षा। ११ श्राविष्ठा। १२ प्रौष्ठपदी। १३ पौषी १४ माघी। १५ चैत्री।

Aho ! Shrutgyanam

साऽस्मिन् पौर्णमासीति सञ्ज्ञायाम् ॥२।४।३०॥

अस्मिन्नर्थेऽणप्रत्ययः स्यात्सञ्ज्ञायाम् । आसोई पुण्णमासी अस्सिं मासंमि=आसोओ मासो ॥

वातात्तेनोपहतस्मिनः ॥२।४।३१॥

तृतीयान्तवातशब्दादुपहतमित्यर्थे ईनप्रत्ययः स्यात् । वातेणं उवहयं=वातीणं, वाईणं ॥

तत आगतः ॥२।४।६॥

पञ्चम्यन्तसमर्थादागत इत्यर्थे उक्तप्रत्ययाः स्युः । पसंगाओ आगयं=पासंगियं । पारितोसियं ॥

तस्येदमपत्यं समूहो वृत्तिर्व्यापारः ॥२।४।७॥

षष्ठ्यन्तसमर्थादिदं अपत्यं समूहः वृत्तिः व्यापारः इत्येतेष्वर्थेषूक्तप्रत्ययाः स्युः । कविलस्स इमं=काविलियं । उत्तरस्स इमं=उत्तरिज्जं । कोसेज्जं । वेसालीए अवच्चं=वेसालिओ । "वेसालियसावए" । सगडाणं समूहो=सागडं । कवोयस्स वित्ती=कावोया । वा० (सपतेरेयणेज्जणौ वक्तव्यौ) । सावतेयं, सावतेज्जं, सापतेयं, सापतेज्जं ॥

---

१ आश्विनो मासः । २ वातीनम् (वातोपहतम्) ॥ ३ प्रासङ्गिकम् । ४ पारितोषिकम् । ५ कापिलिकम् । ६ औत्तरेयम् । ७ कौशेयम् । ८ वैशालिकश्रावकः । भग० २-१ ॥ ९ शाकटम् । १० कापोती । ११ स्वापतेयम् ।

अदणोरुतोऽव् ॥१।३।६२॥

उकारस्यावादेशः स्यादप्रत्ययाणप्रत्यययोः । पाण्डवा । पण्डवा । पौ[1]रवो । लाघवं । अ[2]ज्जवं । म[3]द्दवं ॥

चउछाभ्यां कस्य द्विः ॥२।४।३२॥

चउछशब्दाभ्यां परस्य कप्रत्ययस्य द्वित्वं स्यात् । च[4]उक्कं । छ[5]क्कं ॥

चोरवणिजाभ्यामिज्जस्यादेः ॥४।४।७१॥

आभ्यां परस्येज्जप्रत्ययस्यादेर्लोपः स्यात् । चोरस्स वावारो=चो[6]ज्जं, चोरियं । वणियस्स वावारो=वा[7]णिज्जं ॥

अप्पणादिच्चियेज्जियौ ॥२।४।३३॥

अप्पणशब्दात्षष्ठ्यन्तात्संबन्धिन्यर्थे इच्चियेज्जियौ भवतः । अप्पणस्स इमं=अ[8]प्पणिच्चियं, अप्पणिज्जियं ॥

वातादोलः ॥२।४।३४॥

षष्ठ्यन्ताद्वातशब्दात्समूहेऽर्थे ओलप्रत्ययः स्यात् । वातोली ॥

उपमादीनामणि द्विः ॥१।४।११८॥

एषामुपधाया द्वित्वं स्यादणि परे । पयातीणं समूहो=पा[9]यत्तं ॥

---

१ पौरवः । २ आर्जवम् । ३ मार्दवम् । ४ चतुष्कम् । ५ षट्कम् । ६ चौर्यम् । ७ वाणिज्यम् । ८ आत्मीयम् । ९ पादातम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

अजिनस्येतोऽणि ॥१।३।६३॥

अजिनशब्दस्येकारस्य दीर्घः स्यादणि। आईणं[1], आजीनं।

पडिहार्या आत एः ॥१।३।६४॥

पडिहारीशब्दस्याकारस्यैकारः स्यादणि परे। पडिहारीए इमं=पाडिहेरं[2] ॥

पयडेर्यः ॥१।४।११९॥

पयडिशब्दस्योपधाया यकारः स्यादणि परे। पायय्यं[3] ॥

पयावत्यादीनां टेरलोपोऽणि ॥२।४।११॥

पयावतिप्रभृतिशब्दानां टेर्लोपो न स्यादणि। पायावच्चं[4]। सेणावच्चं[5] ॥

ममस्येदिययोः ॥१।३।६५॥

ममशब्दस्य दीर्घोऽन्तादेशः स्यादि-इय-प्रत्यययोः। ममाई[6], ममाइए[7] ॥

इये सिलेसस्य सेसः ॥१।४।७८॥

सिलेसस्य सेसादेशः स्यादियप्रत्यये। संसेसियं[8] ॥

विरोयणादीनामइः पूर्वस्य ॥२।४।२८॥

विरोयणादिशब्दानां णिति परे आदिस्वरस्य अइ इत्यादेशो वा स्यात् ॥

---

१ आजिनम्। २ प्रातिहार्यम्। ३ प्राकृतम्। ४ प्राजापत्यम्। ५ सैनापत्यम्। ६ ममत्वी,। ७ ममायितः, मामकः। ८ सांश्लेषिकम् ॥

वैइरोयणं,वेरोयणं। वइसदेवो, वेसदेवो। वैइसेसिए,वेसेसिए। वैइसाहो, वेसाहो। जइणो, जेणो। वइचित्तं, वेचित्तं। वइधम्मं, वेधम्मं। कइलासो, केलासो॥

परात्कीयः ॥२।४।३५॥

षष्ठ्यन्तात्परशब्दात्सम्बन्धिन्यर्थे कीयप्रत्ययः स्यात्। परकीयं॥

रायाण् णो यस्येत् ॥२।४।३६॥

रायशब्दात्सम्बन्धिन्यर्थे णप्रत्ययः स्याद्यस्येकारो वा स्यात्। रांइण्णं, रायण्णं॥

कम्माणणकौ ॥२।४।३७॥

कम्मशब्दात्सम्बन्धिन्यर्थे णकप्रत्ययौ स्तः। कैम्मणं, कम्मअं॥

तत्रभवोऽधिकृतः ॥२।४।३८॥

सप्तम्यन्तसमर्थादनयोरर्थयोरुक्तप्रत्ययाः स्युः। अब्भंतरे भवो=अंब्भंतरिए, अब्भंतरगो। अवरिल्लं। पुरत्था भवं =पुंरच्छिमं, पुरत्थिमं। पच्छिमं। अन्तिमं। उंवरिल्लं, उवरिमं। भण्डारे अहिगडो=भाण्डारिए॥

१ वैरोचनम्। २ वैश्वदेवः। ३ वैशेषिकः। ४ वैशाखः। ५ जैनः। ६ वैचित्र्यम्। ७ वैधर्म्यम्। ८ कैलाशः। ९ राजन्यम्। १० कार्म्मणम्। ११ आभ्यन्तरकः। १२ आपरम्। १३ पौरस्त्यम्। १४ पाश्चात्यम्। १५ उपरितनं। १६ भाण्डारिकः॥

Aho ! Shrutgyanam

उदीई-पडीईभ्यां णड् ॥२।४।३८॥

आभ्यां भवार्थे णड्प्रत्ययः स्यात्। उदीणं, उईणं। पडीणं। वा० (दीवादिभ्यो भवाद्यर्थे इच्चस्योपसंख्यानम्) दीविच्चं ॥

पाईतो णो दट् चेतः ॥२।४।३९॥

पाईशब्दाद्भवार्थे णप्रत्ययः स्यादीकारस्य दडागमो वा स्यात्। पादीणं, पाईणं ॥

अति पच्छिमस्य पच्चच्छिमपच्चत्थिमौ ॥१।४।७९॥

पच्छिमशब्दस्य पच्चच्छिम-पच्चत्थिमावादेशौ पर्यायेण भवतोऽप्रत्यये। पच्चच्छिमं,पच्चत्थिमं ॥

पहादिभ्यस्तत्र साधुरेज्जण् ॥२।४।४०॥

पहादिभ्यः सप्तम्यन्तेभ्यः साधुरित्यर्थे एज्जण्प्रत्ययः स्यात्। पहे साहू=पाहेज्जं ॥

पासादिल्लस्तत्र शेते ॥२।४।४१॥

सप्तम्यन्तात्पासशब्दाच्छेते इत्यर्थे इल्लप्रत्ययः स्यात्। पासिल्लओ ॥

उत्तरपदादहेरदीणौ ॥२।४।४२॥

उत्तरपदभूतादहेरुपसर्गादप्रत्ययेणप्रत्ययौ भवतः। परज्झो, पराहीणो ॥

---

१ उदीचीनम्। २ प्रतीचीनम्। ३ द्वैप्यम्। ४ प्राचीनम् ॥ ५ पश्चिमम्। ६ पाथेयः। ७ पार्श्विकः। ८ पराधीनः ॥

Aho ! Shrutgyanam

बहेर्मगुरकावणि ॥४।४।६॥

बहिशब्दस्याणिपरे मगुरकावागमौ पर्यायेण भवतः। बाहिमं, बाहिरं[1] ॥

मज्झान्मश्च ॥२।४।४३॥

मज्झशब्दादुक्तेऽर्थे मप्रत्ययश्चकारादुक्तप्रत्ययाश्च स्युः। मज्झमं[2], मज्झिमं, मज्झिल्लं ॥

इदिणमन्ताश्च तदस्त्यस्यास्मिन् ॥२।४।४४॥

प्रथमान्तसमर्थादस्यास्तीत्यर्थे अस्मिन्नस्तीत्यर्थे च इद्-इण्-मन्त-प्रत्ययाश्चकारादुक्तप्रत्ययाश्च यथाप्रयोगं स्युः। अगारं अत्थि जस्स सो=अगारी। कोडुम्बी[3] ॥

आन्मन्तस्य वः ॥१।४।८१॥

अकारात्परस्य मन्तप्रत्ययस्यादेर्वकारः स्यात्। वण्णवं[4], वण्णवन्तो। भगवं[5], भगवन्तो। आत्किम्, वीइमन्तो[6]। जातिमन्तो[7]। तिसूलो इमस्स अत्थि=तिसूलिओ[8]। गंठी अत्थि अस्सि=गंठिल्लो[9]। माया अत्थि इमस्स=माइल्लो[10]। कलुणा अत्थि इमस्स=कलुणो[11] ॥

आउसाद् न्तः ॥२।४।४५॥

आउसशब्दादुक्तेऽर्थे न्तप्रत्ययो वा स्यात्। आउसो[12], आउसन्तो। वा० (गोमिवक्तव्यः) गोमी[13], गोमिणी ॥

---

१ बाह्यम्। २ मध्यमम्। ३ कुटुम्बी। ४ वर्णवान्। ५ भगवान्। ६ वीचिमान्। ७ जातिमान्। ८ त्रिशूलिकः। ९ ग्रन्थिमान्। १० मायावी। ११ करुणः। १२ आयुष्मान्। १३ गोमान् ॥

Aho ! Shrutgyanam

छवेरिये दीर्घः ॥१।३।५०॥

छविशब्दस्य दीर्घोऽन्तादेशः स्यादियप्रत्यये परे। छवीइय ॥

जसादिभ्यो वा ॥१।४।८२॥

जसादिशब्देभ्यः परस्य मन्तप्रत्ययस्यादेर्वकारो वा स्यात्। जसवन्तो, जसमन्तो, जसोमन्तो। आयारवन्तो, आयारमन्तो ॥

णातेश्च ॥१।४।८३॥

णातिशब्दात्परस्य मन्तस्यादेर्वकारः स्यात्। णातिवन्तो, णाइवं ॥

इति सड्ढाया ह्रस्वः ॥१।३।६६॥

सड्ढाशब्दस्य ह्रस्वोऽन्तादेशो वा स्यादिप्रत्यये। सड्ढई। पक्षे टिलोपे-सड्ढी ॥

वससस्य वुसिर्मन्ते ॥१।४।८४॥

वससशब्दस्य वुसि इत्यादेशः स्यान्मन्ते परे। वुसिमन्तो ॥

जयादिभ्य इणः ॥२।४।४६॥

एभ्य उक्तेऽर्थे इणप्रत्ययः स्यात्। जइणो। दोसिणो। बरहिणो ॥

किमेर्णः ॥२।४।४७॥

उक्तेऽर्थे किमिशब्दाण्णप्रत्ययः स्यात्। किमिणो ॥

---

१ छविमान्। २ यशस्वान्। ३ आचारवान्। ४ ज्ञातिमान्। ५ श्रद्धावान्। ६ वशी। ७ जयी। ८ दोषी। ९ बर्ही। १० कृमिमान् ॥

Aho ! Shrutgyanam

पङ्कादीनां सञ्ज्ञायां दीर्घः ॥१।४।८५॥

पङ्कादिशब्दानां दीर्घोऽन्तादेशः स्यान्मन्तप्रत्यये सञ्ज्ञायाम्। पङ्कावती॥

इलो गन्धादिभ्यः ॥२।४।४८॥

उक्तेऽर्थे गन्धादिभ्य इलप्रत्ययः स्यात्। गन्धिलो[1]। तुन्दिलो[2]॥

जडाया जड्डुलजडियालौ ॥२।४।४९॥

उक्तेऽर्थे जडाशब्दस्य जड्डुल जडियाल इत्येतौ वा निपात्येते। जड्डुलो[3], जडियालो, जडिलो॥

रयात्स्सलः ॥२।४।५०॥

उक्तेऽर्थे रयशब्दात्स्सलप्रत्ययो वा स्यात्। रयस्सला[4], रइला॥

पम्हादिभ्यो लः ॥२।४।५१॥

उक्तेऽर्थे पम्हादिशब्देभ्यो लप्रत्ययः स्यात्। पम्हलो[5]। पत्तलो[6]। तणुलो[7]॥

आलुर्दयादिभ्यः ॥२।४।५२॥

उक्तेऽर्थे दयादिशब्देभ्य आलुप्रत्ययः स्यात्। दयालू[8]। वीसरणालू[9]॥

१ गन्धिलः। २ तुन्दिलः। ३ जटिलः। ४ रजस्वला। ५ पक्ष्मलः। ६ पत्रलः। ७ तनुलः। ८ दयालुः। ९ विशरणालुः॥

Aho ! Shrutgyanam

उर्लज्जायाः ॥२।४।५३॥

उक्तेऽर्थे लज्जाशब्दादुप्रत्ययः स्यात् । लज्जू[1] ॥

जसादिभ्योंऽसिस्सी ॥२।४।५४॥

उक्तेऽर्थे जसादिशब्देभ्योंऽसिस्सीप्रत्ययौ पर्यायेण भवतः । जसंसी[2], जसस्सी । तेयंसी[3], तेयस्सी । वंचसी[4], वचस्सी । ओयंसी[5], ओयस्सी ॥

त्तत्तणौ तस्य भावः ॥२।४।५५॥

षष्ठ्यन्तसमर्थाद्भाव इत्यर्थे त्त-त्तण-प्रत्ययौ स्तः । अप्परत्तं[6] । उस्सुगत्तं[7] । अंबत्तणं[8] । तीयत्तणं[9] । पहुत्तणं[10] । अंधत्तणं[11] ॥

अरिप्रभृतिभ्यस्त्ता ॥२।४।५६॥

एभ्यस्त्ताप्रत्ययः स्याद्भावेऽर्थे । अरित्ता[12] । उप्पलकंदत्ता[13] ॥

जहातहाददियणौ ॥२।४।५७॥

अस्माद्भावे अद्-इयण्प्रत्ययौ भवतः ॥

तस्येयणि द्विः ॥२।४।५८॥

जहातहशब्दस्य तकारस्य द्वित्वं वा स्यादियणि परे । आहत्तहियं[14], आहातहियं । जहातहं[15], अहातहं ॥

---

१ लज्जालुः । २ यशस्वी । ३ तेजस्वी । ४ वर्चस्वी । ५ ओजस्वी । ६ अपरत्वम् । ७ उत्सुकत्वम् । ८ आम्रत्वम् । ९ तृतीयत्वम् । १० प्रभुत्वम् । ११ अन्धत्वम् । १२ अरिता । १३ उत्पलकन्दता । १४ याथातथिकम् । १५ यथातथम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

इणो जडादिभ्यः ॥२।४।६०॥

जडादिशब्देभ्यो भावे इणप्रत्ययः स्यात्। जडिणो[1]। णिगिणो[2], णगिणो। अग्गि,[3]नग्गं। मुण्डिणो[4]। संघाडिणो[5]।

इय इस्सरादिभ्यः ॥२।४।६१॥

इस्सरादिशब्देभ्यो भावे इयप्रत्ययः स्यात्। ईस्सरियं[6]। अज्जवियं[7]। सामग्गियं[8] ॥

अप्पाद्बहोः कः ॥२।४।६२॥

अप्पपूर्वकाद्बहुशब्दाद्भावे कप्रत्ययश्च स्यात्। अप्पाबहुकं[9], अप्पाबहुगं, अप्पायहुयं, अप्पाबहुत्तं ॥

उवमादिभ्योऽण् ॥२।४।६३॥

एभ्यो भावेऽणप्रत्ययः स्यात्। ओवम्मं[10]। आहिक्कं[11]। दोहग्गं[12]। सोहग्गं,[13]सोभग्गं। स्वार्थेऽण्यप्यस्य प्रवृत्तेः, तेलुक्कं[14], तेलोक्कं ॥

जुवाणस्यातो वस्य द्विर्वा ॥१।३।६७॥

जुवाणशब्दस्याकारस्य ह्रस्वो वकारस्य द्वित्वं वा स्यादणि परे। जुव्वणं[15], जोव्वणं, जोबणं, जोवणगं ॥

---

१ जटत्वम्। २ नग्नत्वम्। ३ नाग्न्यम्। ४ मुण्डत्वम्। ५ संघाटत्वम्। ६ ऐश्वर्यम्। ७ आर्जवम्। ८ सामग्र्यम्। ९ अल्पबहुत्वम्। १० औपम्यम्। ११ आधिक्यम्। १२ दौर्भाग्यम्। १३ सौभाग्यम्। १४ त्रैलोक्यम्। १५ यौवनम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

दूयादीनां च्चः ॥१।४।१२०॥

एषामुपधायाश्चकारादेशः स्यादणि परे। दोच्चं[1]। अहा-तच्चं[2]। वेयावच्चं[3] ॥

वियावडाद्दियण् च ॥२।४।६४॥

अस्माद्भावे इयणप्रत्ययः स्याच्चादण्। वेयावडियं[4] ॥

थेर-धीर-सहायानामेरेरायानामेज्जः ॥१।४।८६॥

एषामेरस्येरस्यायस्य च एज्जादेशः स्यादणि परे। थेरस्स भावो=थेज्जं[5], थिज्जं। धेज्जं[6], धिज्जं। सहेज्जं[7], सहिज्जं ॥

कलुणस्यौत् ॥१।३।६९॥

कलुणशब्दस्यादिस्वरस्यौकारादेशः स्यादणि परे। कलुणस्स भावो कोलुण्णं[8] ॥

एदहिपुरयोर्वच्चे ॥१।३।६८॥

अहिपुरशब्दयोरेकारोऽन्तादेशः स्याद्वच्चशब्दे परे। आहेवच्चं[9]। पोरेवच्चं[10] ॥

सफले फस्य हः ॥१।४।८७॥

सफलशब्दे फकारस्य हकारो वा स्यादणि। साहल्लं[11], साफल्लं ॥

---

१ दौत्यम्। २ याथातथ्यम्। ३ वैयावृत्त्यम्। ४ वैयावृत्तिकम्। ५ स्थैर्यम्। ६ धैर्यम्। ७ साहाय्यम्। ८ कारुण्यम्। ९ आधिपत्यम्। १० पौरपत्यम्। ११ साफल्यम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

सुकुमारस्य सुगमलः ॥१।४।८८॥

अस्याणि परे सुगमल इत्यादेशः स्यात् । सोग्गमल्लं[1] ।

विकारप्रधानयोरणमयौ ॥२।४।६५॥

षष्ठ्यन्तात्समर्थाद्विकारे प्रधाने चार्थेऽण्-मयप्रत्ययौ स्तः । अयोमयं । फालिहमयं[2] । वओमयं[3] । वईमयं[4] ॥

अङ्गादीनां मये ॥१।३।७०॥

अङ्गादिशब्दानां दीर्घोऽन्तादेशः स्यान्मये परे । अंगामयं[5] । बाहुलकात्-रययामयं[6], रययमयं ॥

भिओश्चः शिष्ये ॥२।४।६६॥

षष्ठ्यन्ताद्भिउशब्दाच्च् चप्रत्ययः स्याच्छिष्येऽर्थे । भिउणो सिस्सो भिउचो[7] ॥

ईरत्तादिभ्योऽभूततद्भावे करभवयोर्योगे ॥२।४।६७॥

अत्तादिशब्देभ्यो द्वितीयान्तेभ्योऽतथाभूतस्य तथात्वसम्बन्धेऽर्थे करभवधातुयोगे ईप्रत्ययः स्यात् । अत्तीकरेइ[8] । ईसरीकरो[9] । एगीभूए[10] । दरिद्दीहूय[11] ॥

मोल्यादिभ्य ईतो लोपः ॥२।४।६८॥

मोल्यादिशब्देभ्यः परस्येप्रत्ययस्य लोपः स्यात् । मोलिकडो[12] ॥

---

१ सौकुमार्यम् । २ स्फटिकमयम् । ३ वचोमयम् । ४ वाङ्मयम् । ५ अङ्गमयम् । ६ रजतमयम् । ७ भृगोः शिष्यो भार्गवः । ८ आत्मीकरोति । ९ ईश्वरीकरः । १० एकीभूतः । ११ दरिद्रीभूय । १२ मौलीकृतः ॥

Aho ! Shrutgyanam

इंगालादिभ्यो भवस्यादेर्ड्डिः ॥१।४।८९॥

इंगालादिशब्देभ्यः परस्य भवधातोरादेर्ड्डित्वं स्यात् । इंगालब्भूया । छारियब्भूया[2] । तत्तकवेल्लकब्भूया[3] ।

मणादिभ्य ईतोऽसुट् ॥४।४।१०॥

मणादिभ्यः परस्येकारस्यासुडागमः स्यात् । मर्णसीकरेइ[4] ॥

अम्हादिषु दिसादः ॥२।४।६६॥

अम्हादिशब्देषूपपदेषु दिसधातोरप्रत्ययः स्यात् ॥

दिसे पूर्वस्याति ॥१।३।७१॥

अप्रत्ययान्तदिसधातौ परे पूर्वस्य दीर्घोऽन्तादेशः स्यात् ॥

दिसस्य रलावति ॥१।४।६०॥

अप्रत्यये दिसधातोरादेर्दकारस्य रेफलकारौ पर्यायेण भवतः । अम्हारिसो[5] । तुम्हारिसो[6] । जारिसो[7] ॥

ईत्तादितः ॥१।४।६१॥

तशब्दात्परस्य दिसस्येकारस्य दीर्घो वा स्यात् । तालिसो, तालीसो, तारिसो ॥

ईच्च कस्य ॥१।३।७३॥

कशब्दस्येकारश्चकारादेकारोऽन्तादेशः स्याद्दिसे परे ॥

---

१ अङ्गारभूता । २ क्षारिकभूता । ३ तप्तकवेल्लुकभूता । (भग० ३-१) । ४ मनसीकरोति । ५ अस्मादृशः । ६ युष्मादृशः । ७ यादृशः । ८ तादृशः ॥

काद्देः ॥१।३।७८॥

कशब्दात्परस्य दिसधातोर्देर्लोपो वा स्यात् । केरिसो, कीरिसो, कीसो, केसो, केसी ॥

एदिमस्य ॥१।३।७२॥

अप्रत्ययान्तदिसधातौ परे इमशब्दस्यैकारोऽन्तादेशः स्यात् ॥

इमो लोपो वा त्तो-हुणा-दिसेषु ॥१।३।७७॥

इमशब्दस्येमो लोपो वा स्यात् त्तो-हुणाप्रत्यययोर्दिसधातौ च परे । इमेरिसो[2], एरिसो, एलिसो ॥

इमात्सस्य क्खः ॥१।३।७५॥

इमशब्दात्परस्य दिसधातोः सस्य क्खो वा स्यात् । एलिक्खो[3] ॥

इदेतस्य ॥१।३।७४॥

एतशब्दस्यादेरिकारो वा स्याद्दिसे परे । इयारिसो, एयारिसो ॥

समानाच्छः ॥१।३।७६॥

समानशब्दात्परस्य दिसधातोः सस्य च्छ इत्यादेशो वा स्यात् । सरिच्छो[5], सरिसो, सलिसो ॥

---

१ कीदृशः । २ ईदृशः । ३ ईदृक्षः । ४ एतादृशः । ५ सदृक्षः ॥

एतादारूवः सदृशे ॥२।४।७०॥

एतशब्दात्सदृशेऽर्थे आरूवप्रत्ययः स्यात्। एयारूवे[1]। इमेयारूवे[2], अयमेयारूवे ॥

संख्यायां तिः कजतेभ्यः ॥२।४।७१॥

एभ्यः संख्यायामर्थे तिप्रत्ययः स्यात्। का संख्या जेसिं= कति, कइ। जति, जइ। तति, तइ॥ "जस्स जइ इंदियाइं[3] तस्स तइ भणियव्वाइं" ॥

एतजतेभ्यः परिमाणे मन्तावतियतियात्तिल्लाः॥२।४।७२॥

एभ्यः परिमाणार्थे मन्त-आवतिय-तिय-तिल्लप्रत्ययाः स्युः। एतावं[4], एयावं। एतावन्तो, एयावन्तो। जावं[5], जावन्तो। तावं[6], तावन्तो ॥

जादावन्ती च ॥२।४।७३॥

जशब्दात्परिमाणेऽर्थे आवन्तीप्रत्ययश्च स्यात्। जावन्ती[7] ॥

आवतियस्यातश्च ॥४।४।७३॥

एतसम्बन्धिन आवतियस्याकारस्य चकारादेतस्य तस्य लोपः स्यात्। एवइए[8], एवतिए। जावइए[9], जावतिए। तावइए[10], तावतिए ॥

---

१ एतद्रूपः। २ इदमेतद्रूपः। ३ यस्य यति इन्द्रियाणि तस्य तति भणितव्यानि। (भग० ८-१०)। ४ एतावान्। ५ यावान्। ६ तावान्। ७ यावान्। ८ एतावतिकः। ९ यावतिकः। १० तावतिकः ॥

Aho ! Shrutgyanam

तियस्य वा ॥१।४।६२॥

तियप्रत्ययस्यादेर्द्वित्वं वा स्यात् ॥

एतस्य तियत्तिलयोरतः ॥४।४।७२॥

एतस्याकारस्य लोपः स्यात्तिय-त्तिलप्रत्यययोः । इत्तिए,[1] एत्तिए । जत्तिए,[2] जतिए । तत्तिए,[3] ततिए । एत्तिलो[1] । जत्तिलो[2] । तत्तिलो[3] ॥

कादेवतियः ॥२।४।७४॥

कशब्दात्प्रथमान्तात्परिमाणेऽर्थे एवतियप्रत्ययः स्यात् । केवतिए,[4] केवइए ॥

अनवधारणे एयावन्ती ॥२।४।७५॥

कशब्दादनवधारणेऽर्थे एयावन्तीप्रत्ययः स्यात् । केयावन्ती ॥

पूरणे मः ॥२।४।७६॥

संख्यावाचकेभ्यः षष्ठ्यन्तेभ्यः पूरणेऽर्थे मप्रत्ययः स्यात् सत्तमं[5] । अट्ठमं[6] । नवमं । अट्ठारसमं[7] । वीसइमं[8] ॥

दुतिभ्यां डीयातियातियच्चणः ॥२।४।७७॥

आभ्यां पूरणेऽर्थे डीय-तिय-तीय-च्चणप्रत्ययाः स्युः ॥

दोर्बिर्डीय-तिय-तीयेषु ॥१।४।६३॥

दुशब्दस्य बि इत्यादेशः स्याड्डीय-तिय-तीयप्रत्ययेषु परेषु । बिइयं,[9] बीयं, बितीयं ॥

---

१ इयान्, एतावान् । २ यावान् । ३ तावान् । ४ कियान् । ५ सप्तमम् । ६ अष्टमम् । ७ अष्टादशम् । ८ विंशतितमम् । ९ द्वितीयम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

तीयस्य ज्जः ॥१।४।१२१॥

द्विशब्दात्परस्य तीयप्रत्ययस्योपधाया ज्ज इत्यादेशः स्याद्वा। बितिज्जं[1], दोच्चं ॥

तेरश्चणि च ॥१।४।९४॥

तिशब्दस्याकारान्तादेशः स्याड्डीय-तिय-तीय-च्चणूप्रत्ययेषु। तीयं[2], तइयं, तत्तीयं, तच्चं ॥

छश्छात् ॥२।४।७८॥

छशब्दात्पूरणेऽर्थे ट्ठप्रत्ययः स्यात्। छट्ठं[3] ॥

त्थश्च तोः॥२।४।७९॥

चतुशब्दात्पूरणेऽर्थे त्थप्रत्ययः स्यात्। चउत्थं[4], चउत्थं॥

संखेज्जात्तिः ॥२।४।८०॥

संखेज्जशब्दात्पूरणेऽर्थे तिप्रत्ययः स्यात्। संखेज्जई[5] ॥

कादिभ्यो निर्द्धारणे ॥२।४।२२॥

कादिशब्देभ्यो निर्द्धारणेऽर्थे तरप्रत्ययः स्यात्। कयरो[6]। एगयरो[7]। ईयरो[8]। अन्नयरो[9] ॥

आभीक्ष्ण्ये बह्वादिभ्यः सोः ॥२।४।८१॥

आभीक्ष्ण्येऽर्थे बह्वादिभ्यः सोप्रत्ययः स्यात्। बहुसो[10]। कमसो[11]। पगामसो[12]। एगन्तसो[13] ॥

कुम्भकादिभ्यः परिमाणे ॥२।४।८२॥

कुम्भकादिशब्देभ्यः परिमाणेऽर्थे सोप्रत्ययः स्यात्। कुंभगसो[14] ॥

---

१ द्वितीयम्। २ तृतीयम्। ३ षष्ठम्। ४ चतुर्थम्। ५ संख्येयतमः। ६ कतरः। ७ एकतरः। ८ इतरः। ९ अन्यतरः। १० बहुशः। ११ क्रमशः। १२ प्रकामशः। १३ एकान्तशः। १४ कुम्भकशः ॥

एक्कासिः ॥२।४।८३॥

आभीक्ष्ण्येऽर्थे एकशब्दात्सिप्रत्ययश्च स्यात् । [1]एक्कसि ॥

पञ्चमीसप्तमीभ्यां तोः ॥२।४।८४॥

पञ्चम्यन्तात्सप्तम्यन्ताच्च समर्थात्तोप्रत्ययः स्यात् । [2]एगयओ, एगयतो।[3]दव्वओ,दव्वतो । [4]पिट्ठओ,पिट्ठतो । [5]कम्मओ, कम्मतो । [6]अत्थओ, अत्थतो । [7]धम्मओ,धम्मतो ॥

तवि दुहो ह्रस्वः ॥१।३।८०॥

ह्वाप्रत्ययान्तदुशब्दस्य ह्रस्वोऽन्तादेशः स्यात्तोप्रत्यये परे। [8]दुहओ ॥

अभ्यावृत्तौ संख्यार्थेभ्यः क्खुत्तोः ॥२।४।८५॥

संख्यावाचकेभ्यो वारंवारमित्यर्थे क्खुत्तोप्रत्ययः स्यात्। [9]दुक्खुत्तो । [10]तिक्खुत्तो । [11]सहस्सक्खुत्तो ॥

अणंतादिभ्यः क्खुत्तोः कस्य ॥४।४।७४॥

अणंतादिशब्देभ्यः परस्य क्खुत्तोप्रत्ययस्य कस्य लोपो वा स्यात् । [12]अणंतखुत्तो, अणंतक्खुत्तो ॥

एक्कात्सिं ॥२।४।८६॥

एकशब्दादुक्तेऽर्थे सिंप्रत्ययः स्यात् । [13]एक्कसिं ॥

प्रकारे हा तृतीयायाः ॥२।४।८७॥

तृतीयान्तसमर्थेभ्यः प्रकारेऽर्थे हाप्रत्ययः स्यात् । [14]सव्वहा । [15]अण्णहा । [16]अट्ठहा । [17]जहा । [18]तहा ॥

१एकशः । २एकतः । ३द्रव्यतः । ४पृष्ठतः।५कर्म्मतः । ६अर्थतः । ७धर्म्मतः।८द्विधा।९द्विकृत्वः।१०त्रिकृत्वः।११सहस्रकृत्वः ।१२ अनन्तकृत्वः।१३एकशः।१४सर्वथा।१५ अन्यथा।१६अष्टधा।१७यथा। १८तथा ॥

जताभ्यां हहमौ ॥२।४।८८॥

जतशब्दाभ्यां प्रकारेऽर्थे ह-हं-प्रत्ययौ च भवतः। जह, जहं[1]। तह, तहं[2]॥

धा च ॥२।४।८९॥

प्रकारेऽर्थे धाप्रत्ययोऽपि स्यात्। तधा॥

इयरस्येहरा ॥२।४।९०॥

इयरशब्दस्य प्रकारेऽर्थे इहरा इति वा निपात्यते। इहरा[3], इयरहा॥

कादहाहमिहेण्णाः ॥२।४।९१॥

प्रकारेऽर्थे कशब्दादह-अहम्-इह-इण्णा-प्रत्ययाः स्युः। कह[4], कहं, किह, किण्णा॥

इमस्यैत्थम् ॥२।४।९२॥

इमशब्दस्य प्रकारेऽर्थे एत्थमिति निपात्यते। एत्थं[5], इत्थं॥

एकात् त्तश्च ॥२।४।९३॥

सप्तम्यन्तादेकशब्दात् त्तप्रत्ययश्च स्यात्। एगत्त[6]॥

त्थः सप्तम्या इमादिभ्यः ॥२।४।९४॥

सप्तम्यन्तसमर्थादिमादिशब्दात् त्थप्रत्ययः स्यात्॥

तोत्थयोरेस् ॥२।१।४९॥

इमशब्दस्यैसादेशः स्यात्तो-त्थप्रत्यययोः। इत्थ, एत्थ[7]। ईयरत्थ[8]॥

---

१ यथा। २ तथा। ३ इतरथा। ४ कथम्। ५ इत्थम्। ६ एकत्र। ७ अत्र। ८ इतरत्र॥

इमाद्धहमौ च ॥२।४।९५॥

सप्तम्यन्तेमशब्दाद् ह-हंप्रत्ययौ च भवतः ॥

मस्य तो ण्हिं-दाणि-ह-हं-तरेषु ॥२।१।५०॥

इमशब्दस्य मस्य लोपः स्यात्तो-ण्हिं-दाणि-ह-हं-तरप्रत्ययेषु परेषु । इह[1], इहं ॥

इमजतकेभ्यस्तोः ॥२।४।५६॥

एभ्यस्तोप्रत्ययस्यादेर्द्वित्वं वा स्यात् । इत्तो[2], एत्तो, इतो, इओ । अतो[3] । कत्तो[4], कओ ॥

अहीहण्हवः कात् ॥२।४।६७॥

सप्तम्यन्तात्कशब्दाद् अहि-इह-ण्हु-प्रत्ययाश्च स्युः । कहिं[5], किह, कण्हु, कत्थ ॥

उत्कस्य तो-त्थ-हिंसु ॥१।३।८२॥

कशब्दस्योकारान्तादेशो वा स्यात् तो-त्थ-हिंप्रत्ययेषु परेषु । कुतो[6], कुओ, कुत्थ ॥

जपगामाभ्यामाए: ॥२।४।६८॥

पञ्चम्यन्तसमर्थाभ्यामाभ्यामाएप्रत्ययश्च स्यात् । जाए[7], जत्तो, जओ, जतो । पगामाए[8], पगामतो ॥

---

१ इह । २ इतः । ३ अतः । ४ कुतः । ५ कहिं, कुत्र । ६ कुतः । ७ यतः । ८ प्रकामतः ॥

Aho ! Shrutgyanam

तादादोतयश्च ॥२।४।९९॥

पञ्चम्यन्तात्तशब्दाद् आद्-ओ-ते-प्रत्ययाश्चकारादाए-प्रत्ययः स्यात्। ता[1]। तो। तते, तए। ततो, तओ, तत्तो। ताए॥

एहं च जात् ॥२।४।१००॥

पञ्चम्यन्तजशब्दात् एहंप्रत्ययश्च स्यात्। जेहं[2]॥

अं जताभ्याम् ॥२।४।१०१॥

पञ्चम्यन्तजतशब्दाभ्यामम्प्रत्ययोऽपि स्यात्। जं[2]। तं॥

तस्मिन् काले दा सव्वादिभ्यः ॥२।४।१०२॥

सप्तम्यन्तसमर्थेभ्यः सव्वादिशब्देभ्यः काले इत्यर्थे दा-प्रत्ययः स्यात्॥

सव्वस्य सो दे ॥१।४।६५॥

दाप्रत्यये सव्वशब्दस्य स इत्यादेशो वा स्यात्। सया, सदा। सव्वया[3]। अन्नया[4], अन्नदा। दकारस्य क्वचित्तकारश्रवणात्, संता[5]। कंता[6]। जंदा[7]। तदा॥

इमाण्णिंह-हुणा-दाणिमः ॥२।४।१०३॥

सप्तम्यन्तसमर्थादिमशब्दात्काले इत्यर्थे णिंह-हुणा-दा-णिप्रत्ययाः स्युः॥

---

१ ततः। २ यतः। ३ सर्वदा। ४ अन्यदा। ५ सदा। ६ कदा। ७ यदा॥

ण्हिम्मि यः ॥२।४।१२२॥

इमस्योपधाया यकारादेशः स्यात् ण्हिप्रत्यये। इण्हिं, इयण्हिं। अहुणा[2] ॥

दाणिमि सर्वस्य लोपः ॥२।४।१०३॥

इमशब्दस्याशेषस्य लोपो वा स्याद् दाणिंप्रत्यये। दाणिं[3], इयाणिं, इदाणिं ॥

आहेहिंहिहियमः कजतेभ्यः ॥२।४।१०४॥

एभ्यः सप्तम्यन्तेभ्य आहे-हिं-हि-हियंप्रत्ययाश्च स्युः। काहे[4], कहिं,कहि,कहियं। जाहे[5], जहिं,जहि,जहियं। ताहे[6], तहिं, तहि,तहियं। वा० (तादइरिदू* च दो वक्तव्यः) तइ[7],तइया ॥

चिरार्थकेष्वेवेवचौ ॥२।४।१०५॥

कशब्दात्परिमाणेऽर्थे एव-एवच्चप्रत्ययौ भवतश्चिरार्थक-शब्देषु परेषु। केवचिरं[8], केवच्चिरं। केवच्चिरेण ॥

सुप्तद्धिताभ्यामिमिदीचिचियाः ॥२।४।१०६॥

सुबन्तात्तद्धितान्ताच्च कशब्दात् इम्-इद्-ई-चि-चिय-प्रत्यया वा स्युः। कयाइं[9]। केई[10]। केणइ[11]। कस्सइ[12]। कण्हुइ[13]। कयाई। कहिंचि[14], कुहिंचिय ॥

---

१ इदानीम्। २ अधुना। ३ इदानीम्। ४ कर्हि, कुत्र, क्व। ५ यर्हि, यत्र,यदा। ६ तर्हि, तत्र, तदा। ७ तदा। ८ कियच्चिरम्। ९कदाचित्। १० केचित्। ११केनचित्। १२ कस्यचित्। १३ कुत्रचित्। १४ क्वचित् ॥

---

*दाप्रत्ययस्य इदू वाच्य इत्यर्थः ॥

Aho ! Shrutgyanam

इमादिभ्यश्चणमम्पूर्वकः ॥२।४।१०७॥

इम-एक-जाव-तावादिशब्देभ्यश्चणं प्रत्ययो वा स्यात्स विकल्पेनाम्पूर्वकश्च । इमंचणं[1] । एकंचणं[2] । जावंचणं[3], जावचणं । तावंचणं[4], तावचणं ॥

इणमादीनामेवे दीर्घः ॥१।३।८३॥

इणमादिशब्दानामुपधाया दीर्घो वा स्यादेवशब्दे परे । इणामेव[5] । जामेव[6] । तामेव[7] । जेणामेव[8] । तेणामेव[9] । खिप्पामेव[10], खिप्पमेव । एवामेव[11], एवमेव ॥

॥इति तद्धितप्रकरणम्॥

॥ इति श्रीलोङ्कागच्छान्तर्गतलिम्बडीसम्प्रदायतिलकायमानपूज्यपादश्रीगुलाबचन्द्रजित्स्वामिचरणाम्बुजचञ्चरीक-मुनिश्रीरत्नचन्द्रविरचितायां जैनसिद्धान्तकौमुद्यां पूर्वार्द्धं समाप्तम् ॥

---

१ इदंचन । २ एकंचन । ३ यावच्चन । ४ तावच्चन । ५ इममेव । ६ यमेव । ७ तमेव । ८ येनैव । ९ तेनैव । १० क्षिप्रमेव । ११ एवमेव ॥

अथोत्तरार्द्धम् ॥

अथाऽऽख्यातप्रक्रिया ॥

क्रियायामश्वादयो धातवः ॥१।१।१४॥

क्रियावाचिनोऽश्वादिका धातुसंज्ञाः स्युः ॥

धातोः ॥३।१।१॥

आसमाप्तेरधिकारोऽयम् ॥

स्यादयः कर्तृकर्म्मणोः सकर्म्मकेभ्यो भावकर्त्रो-रकर्म्मकेभ्यः ॥३।१।२॥

त्यादयः प्रत्ययाः सकर्म्मकेभ्यो धातुभ्यः कर्त्तरि कर्म्मणि च स्युरकर्म्मकेभ्यो भावे कर्त्तरि च ॥

आज्ञाभविष्यद्वर्त्तमानेषु तिन्तिसिहमिमवः ॥३।१।३॥

ति, न्ति, सि, ह, मि, मो, एते षट् प्रत्यया आज्ञायां भविष्यद्वर्त्तमानकालयोश्च धातोर्भवन्ति ॥

द्वौ द्वौ प्रथममध्यमोत्तमाः ॥१।१।१६॥

एषु क्रमशो द्वौ द्वौ प्रत्ययौ प्रथममध्यमोत्तमसञ्ज्ञकौ स्तः ॥

अस्मदे समानाधिकरण उत्तमः ॥३।१।४॥

त्यादिप्रत्ययवाच्यकारकवाचिनि अस्मद्शब्दे प्रयुज्यमानेऽप्रयुज्यमाने चोत्तमः स्यात् ॥

Aho ! Shrutgyanam

तुम्हे मध्यमः ॥३।१।५॥

तथाभूते तुम्हशब्दे मध्यमः स्यात् ॥

शेषे प्रथमः ॥३।१।६॥

उक्तविषयादन्यत्र प्रथमः स्यात् ॥

एकवचनबहुवचने ॥३।१।७॥

उक्तास्याद्यः प्रत्ययाः प्रत्येकं प्रथमादिक्रमेणैकवचनबहु-वचनसञ्ज्ञाः स्युः। प्राकृते द्विवचनं नास्ति। परस्मैपदात्मनेपदविभागोऽपि नास्ति॥ गच्छ गतौ। गच्छइ, गच्छंति। गच्छसि, गच्छह॥

हिमिमोष्वतो दीर्घः ॥३।१।७॥

एषु परेषु धातोरन्त्याकारस्य दीर्घः स्यात्। गच्छामि, गच्छामो॥

एकवचनम्.	बहुवचनम्.
प्र० सो गच्छइ।	ते गच्छन्ति।
म० तुमं गच्छसि।	तुम्हे गच्छह।
उ० अहं गच्छामि।	अम्हे गच्छामो।

प्रवर्त्तनायामेदिज्जौ ॥३।१।८॥

प्रवर्त्तनायामर्थे धातोरिज्ज-ए-प्रत्ययौ प्रथमादिषु त्रिषु, वचनयोश्च स्तः॥

इज्जस्य वा ॥३।१।६॥

इज्जप्रत्ययस्य दीर्घोऽन्तादेशो वा स्यात्। संयुक्ते विकल्प-ह्रस्वे, गच्छिज्ज गच्छेज्ज, गच्छिज्जा गच्छेज्जा, गच्छे॥

Aho ! Shrutgyanam

इज्जात्सिहमिमवः ॥३।१।१०॥

प्रवर्त्तनार्थेकेज्जप्रत्ययान्तधातोः सिहमिमोप्रत्यया वा स्युः । गच्छेज्जासि, गच्छेज्जाह । गच्छेज्जामि, गच्छेज्जामो ॥

आज्ञायां तिन्त्योरुः सेर्हिलोपौ ॥३।१।१३॥

आज्ञायामर्थे तिन्त्योरिकारस्योकारः सिप्रत्ययस्य हि-लोपश्च पर्यायेण स्यात् । गच्छउ, गच्छन्तु । गच्छाहि, गच्छ, गच्छह, वा० (हे गच्छादीनामेर्वा वक्तव्यः) गच्छेह। गच्छामि, गच्छामो ॥

भविष्यति हिस्सौ त्यादिषु ॥३।१।१६॥

भविष्यदर्थे धातोर्हिस्सौ प्रत्ययौ स्तस्त्यादिप्रत्यये परे॥

हिस्सादीनामिट् ॥३।१।२०॥

हि - स्स- त्ता-त्तए - तु-त्था-ऊण-उं-सप्रत्ययानामिडागमः स्यात् । गच्छिहिस्सइ गच्छिहिस्सन्ति । गच्छिहिस्ससि, गच्छिहिस्सह ॥

गच्छादिभ्यः स्सान्मेः ॥४।४।७५॥

गच्छादिधातुभ्यः परस्मात्स्सात्परस्य मेरन्त्यलोपो वा-स्यात् ॥

गच्छात्सस्सस्यमेरम् ॥३।१।३१॥

गच्छधातोः परस्य स्सप्रत्ययसहितस्य मिप्रत्ययस्यामादेशो वा स्यात् । गच्छिहिस्सामि, गच्छिहिस्सं, गच्छं, गच्छिहिस्सामो॥

---

*गच्छ, पति-अभिगा, पइक्ख, चिह,उत्-सय, आ-हिड, एते गच्छादयः ॥

१ गच्छ, अहि-इ, वग, लुंच, साह, पुच्छ, खव, लज्ज, भव, अहि-वास, दाय, गाह, पज्ज, कर, निसाग, माह, एते गच्छादयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

हिप्रत्यये गच्छिहिन्ति, गच्छिहिन्ति । गच्छिहिसि, गच्छिहिह ॥

मादौ हेरात् ॥३।१।३२॥

धातोर्विहितस्य हिप्रत्ययस्याकारोऽन्तादेशः स्यान्मकारादिप्रत्यये परे । गच्छिहामि, गच्छिहामो ॥

भूते इंसुः ॥३।१।३३॥

भूतेऽर्थे धातोरिंसुप्रत्ययः स्यात् प्रथमादिषु त्रिषु वचनयोश्च । गच्छिंसु ॥

उपसर्गाः प्राक् ॥३।१।४९॥

उपसर्गा धातोः प्रागेव प्रयोक्तव्याः ॥

अतेर्गच्छस्य गस्य ॥४।४।७७॥

अतिपूर्वकस्य गच्छधातोर्गस्य लोपो वा स्यात् । अइच्छइ, अइगच्छइ ॥ अच्छ उपवेशने ॥

अच्छादेस्तेरः* ॥३।१।५०॥

अच्छादिभ्यः परस्य तिप्रत्ययस्यैकारोऽन्तादेशो वा । अच्छइ । अच्छते ॥

---

१ दीर्घविधौ साहचर्यात्त्यादेर्ग्रहणान्नात्र हौ दीर्घः ॥

---

* अच्छ, अग्घि, प-इस, सम्-ईह, उस, एस, कंख, कंडुय, पडिक्कमे, खुद, खुप्प, गरह, गस, चर, छिद, जुज्ज, तण, दल, दव, डिम, दुय, देव, देह, द्दव, द्धंस, उद्-पज्ज, पुच्छ, मुंज, पलि-मंथ, मल, मर, सम्-रक्ख, वि-रम, वि-राव, लह, उव-लिप, वंद, वड्ढ, वस्स, वुब्ब, बोल, सद, वीसम, सय, सर, अणु-सास, सम्-मूस, सेव, सेह, हा, हो, एतेऽच्छादयः ॥

अण प्राणने । अणइ ॥

आतोऽणस्य मक् त्यादौ ॥४।४।११॥

आपूर्वकाणधातोर्मगागमो भवति त्यादौ प्रत्यये । आणमइ, आणमन्ति । पाणमइ, पाणमन्ति । अप्पाह सन्देहे । अप्पाहइ । अप्पाहामो । अप्पाहे ॥ अप्पिण अर्पणे । अप्पिणामि । पचप्पिणइ ॥ अय गतौ । उदयन्ति । पलायइ ॥

*अयादिभ्यस्त्था ॥३।१।३४॥

अयादिभ्यो भूतेऽर्थे त्थाप्रत्ययो वा स्यात् । विपलाइत्था । अस सत्तायाम् ॥

असस्य तितुमिषु ॥४।४।७८॥

असधातोरन्त्याकारस्य लोपः स्यात्ति-तु-मिप्रत्ययेषु परेषु ।

सात्थः ॥१।४।७॥

सकारात्परस्य तकारस्य थकारः स्यात् अत्थि

न्तन्तियास्वादेः ॥४।४।७६॥

असधातोरादेरकारस्य नित्यं लोपः स्यादेषु परेषु । सन्ति ॥

---

*अय, वि-आ-कर, जय, दल, उद्-धर, धार, धाव, पज्ज, अणु-भव, पाउर्-भव, मन्न, याम, अभि-रम, रिय, उद्-वाह, वि-प्प-सर, सेव, सेह, हो, एतेऽयादयः ॥

सिहमोऽस्य ॥४।४।८०॥

असधातोर्लोपः स्यात्सि-ह-मोप्रत्ययेषु। असस्येत्यनुवृत्तौ पुनरसस्येत्युपादानात्समुदायस्यैव लोपो नान्त्यस्य, सि। ह।

मौ वा ॥४।४।८१॥

असधातोर्लोपो वा स्यान्मिप्रत्यये। मि। पक्षे,

सम्हेअंसिरसस्य ॥३।१।५२॥

असधातोर्मिप्रत्ययसहितस्य अंसि इति निपात्यते। अंसि, मो॥

×असादिभ्यो या ॥३।१।११॥

प्रवर्त्तनार्थेऽसादिधातुभ्यो याप्रत्ययः स्यात्। एद्ज्जयोरपवादः॥

असचयजाणणहेभ्यो यः ॥३।१।२१॥

एभ्यः परस्य याप्रत्ययस्येडागमः। सिया। अत्थु।

असादिदीतौ ॥३।१।३५॥

असधातोर्भूतेऽर्थे ईईप्रत्ययौ स्तः। ईसोरपवादः॥

आदेरिदीदिमोषु दीर्घः ॥३।१।५३॥

असधातोरादेर्दीर्घः स्यादि-ई-इमोप्रत्ययेषु परेषु। आसि, आसी। "[1]आसी विप्पो महाजसो"॥

× अस, का, चय, छुभ, जंप, हव, वृ, हण, एतेऽसादयः।

१ आसीद्विप्रो महायशाः। (उत्त० २५-१)।

मोरुत्तमबहुत्वे सेट् ॥३।१।३६॥

असधातोर्भूतेऽर्थे उत्तमबहुवचने मोप्रत्ययः स्यात् स च सेट्। आसिमो। "आसिमो भायरा दोवि"[1] आस उपवेशने। आसइ। आसे। आस॥

न्तौ गिलादीनां यक्[*] ॥४।४।१२॥

गिलादिधातूनां न्तिप्रत्यये यगागमः स्यात्। गिलायन्ति। इ गतौ। इन्ति। इन्तु। सवर्णदीर्घे संयुक्ते ह्रस्वे च, पलिन्ति। संपलिन्ति। सवर्णदीर्घे, अईति, अईइ। संपरीइ॥

पडिपतिपरिभ्यो यः ॥३।१।५५॥

एभ्यः परस्येधातोर्य आदेशः स्यात्॥

पतेर्द्विरो ॥३।१।५६॥

पतेरुपधाया द्वित्वं स्यादिधातौ परे। पत्तियइ, पत्तियन्ति। पत्तियसि। पत्तियामि। पत्तियाहि॥

पादेश्चिण् मोह्माणानामेट् ॥३।१।५४॥

पोपसर्गात्परस्येधातोश्चिडागमो मोह्माणप्रत्ययानामेडागमश्च स्यात्। पेच्चेमो। पेच्चेह॥

इति पूर्वपरयोरेः ॥३।१।५७॥

इधातोरिकारे परे पूर्वपरयोरेकार एकादेशः स्यात्।

---

१ आसिव भ्रातरौ द्वावपि। (उत्त० २३-५)।

* गिला, आ-ग्वा, चाय, जग्ग, भ्मा, भिया, इव, त्ता, दल, उव-आ-दा, परि-आ-दा, सम्-आ-दा, उद्-दा, आ-त्व, न्हा, प-न्हा, माग्ग, मिला, परि-मिला, वज्ज, वा, परि-निर्-वा, वेद, सिगा, हा, एते गिलादयः॥

Aho ! Shrutgyanam

एज्जा। पत्तिएज्जा। परिएज्जा ॥

विसमत्युद्भ्यश्च ॥३।१।५८॥

वि-सम्-अति-उत्परस्येधातोरेकार एकादेशः स्यात्। समेति, समेन्ति। अचेहि। उदेइ। वेइ ॥

न्तावेरद्वा ॥३।१।५६॥

एकारस्याकारो वा न्तिप्रत्यये परे। उवन्ति उविन्ति, उवेन्ति ॥

उदो ज्जो भविष्यति ॥३।१।६०॥

उत्पूर्वकादिधातोर्भविष्यदर्थे ज्जप्रत्ययः स्यात्। स्सादेरपवादः। उइज्जन्ति ॥

न्तौ वेः ॥३।१।६१॥

वेरुपसर्गात्परस्येधातोर्यकारादेशः स्यात् न्तिप्रत्यये परे। वियन्ति ॥

वेरदौ स्से ॥३।१।६२॥

वेरुपसर्गस्याकारोऽन्तादेशः स्यात् स्सप्रत्ययपरक इधातौ परे। वइस्सइ ॥ इ अध्ययने। अयं नित्यमहिपूर्वकः ॥

इज्जः स्वार्थेऽपि ॥३।१।४८॥

धातोरिज्जप्रत्ययः स्वार्थेऽपि बहुलं स्यात्। अहिज्जइ, अहिज्जन्ति। अहिज्जेज्जा। अहिज्जिस्सामि ॥

अहेरस्तौ ॥४।४।१३॥

अहेरुपसर्गात्परस्येधातोर्यगागमः स्यात्तिप्रत्यये परे। अहीयइ। गच्छादित्वात्, अहीस्सं। इच्छ इच्छायाम्। इच्छइ,

Aho ! Shrutgyanam

इच्छन्ति । इच्छसि । सवर्णदीर्घे सति ह्रस्वे, पडिच्छइ, प-डिच्छति । पडिच्छेज्जा । पडिच्छन्तु । ईह इच्छायाम् । ईहइ । तेरेकारान्तादेशे तकारलोपे च, समीहए ॥ उञ्च कौटिल्ये । उञ्चन्ति ॥

उंचादीनां वा न्तौ ॥४।४।२५॥

एषां यगागमो वा स्यात् न्तौ परे । पलिउञ्चन्ति, पलिउञ्चयन्ति । उंछ सेचने । पुञ्छइ । पुञ्छे ॥ उञ्ज योगे ।

उवादुंजस्य तौ ॥३।१।६५॥

उवोपसर्गात्परस्योंजधातोरुपधाया द्वित्वं स्यात्तौ परे । उवउंज्जइ ॥

न्तौ वेः ॥३।१।६६॥

वेः परस्योंजधातोरुपधाया द्वित्वं स्यात् न्तौ परे । विउंज्जन्ति । उण प्रावरणे । पाउणिस्सामि । पाउणिहिइ । ऊह वितर्के । अपोहए । एय कम्पने । एयइ एयति, एयन्ति । वि-एय=वेयइ वेयति । स्वरे परे यलोपे, एइस्सन्ति । एइंसु । एस इच्छायाम् । एसइ । एसे । एसिज्जा, एसेज्ज ॥

अनोरेसादेरिम् ॥३।१।६३॥

अनुपूर्वकादेसधातोः परस्यैमत्ययस्येमादेशः स्यात् । अन्नेसिं । कंडुय गात्रविघर्षणे । कंडुयए । कंडुइस्सामि । कंद आक्रन्दने । कन्दइ । कन्दिंसु ॥

---

* उंच, खव, जग्ग, निज्जा, झिया, इय, आ-ढा, नि-मन्त, मिल, एते उञ्चादयः ॥

धातूनां कण्णादीनाम्* ॥१।४।११॥

धातूनां मध्ये कण्णादीनामेव कस्य गकारयकारौ स्याताम्। कण्ण भेदने। प्रायेणायमापूर्वकः। आयन्नइ। कत्थ श्लाघायां व्यक्तायां वाचि च। कत्थइ॥

अतेततिन्तेषूदः कसस्यात ओत् ॥३।१।६०॥

उदः परस्य कसधातोरादेरकारस्यौकारो वा स्यादत-इत-ति-न्तेषु प्रत्ययेषु। कस आकर्षणे। उक्कोसइ, उक्कसइ। का करणे। काइ॥

कादेर्न+ ॥३।१।२८॥

कादिगणपठितेभ्यः परस्य इसादेरिट् न स्यात्। काहिइ। सवर्णदीर्घे काही। काहिन्ति। "अन्नाणी किं काही, किं वा नाही य छेयपावगं"[1] ॥

कः सीः ॥३।१।३८॥

काधातोर्भूतेऽर्थे सीप्रत्ययो वा स्यात्॥

भूते काकरदक्खुलभहोतराणामट् ॥४।४।३४॥

एषां भूतेऽर्थेऽडागमः स्यात्। अकासी॥

को यः सिट् ॥४।४।३३॥

काधातोः परस्य याप्रत्ययस्य सिडागमः स्यात्। कासिया।

---

* कण्ण, कड, कप्प, कर, कस, का, कास, कीर, कुट्ट, कुब्ब, एते कण्णादयः॥

+ का, दा, ने, न्ना, पा, पी, वा, भा, एते कादयः॥

---

१ अज्ञानी किं करिष्यति किं वा ज्ञास्यति च छेकं पापकं (वा)। (दस० ४-१०)॥

किलिस्स किलेस क्लिस्स क्लिस उपतापे । किलिस्सइ, किलिस्सन्ति, किलेसन्ति । परिकिलेसन्ति । किस्सन्ति । "कीवा जत्थ य किस्सन्ति, नाइसंगेहि मुच्छिया"[1] । कीर विक्षेपे । उक्कीरइ ॥

वेः कीरस्य क्खिरः ॥३।१।६१॥

वेः परस्य कीरधातोः क्खिरादेशो वा स्यात् । विक्खिरइ । विक्खिरेज्जा । कुण करणे । कुणइ । कुणउ ॥

कुणादिभ्यः सेरुः* ॥३।१।१४॥

आज्ञायां कुणादिधातुभ्यः परस्य सिप्रत्ययस्योकारोऽन्तादेशो वा स्यात् । कुणसु, कुण ॥

इणयोरिज्जकुणयोः ॥४।४।८२॥

कुणधातोर्णस्येज्जप्रत्ययेकारस्य च लोपः स्यात् । कुज्जा । कुव्व करणे । कुव्वइ, कुव्वन्ति । कुव्विज्जा । विउव्वइ, विकुव्वइ । क्कम पादविक्षेपे । कमइ, कमति । अभिनिक्खमाहि ॥

१ क्लीबा यत्र च क्लिश्यन्ति ज्ञातिसङ्गैः मूर्च्छिताः । (सूय० १-३-२-१२) ॥

*कुण, सम्-अप्प, प-कड, कह, क्खिव, खाम, गिण्ह, चिण, छिंद, जत, जय, जाण, जाय, इव, दल, दह, नव, पाल, प्फाल, भमाड, भास, भुंज, मन्न, मिलाव, मुंच, लुंच, वच्च, मुण, हव, एते कुणादयः ॥

अत्यप्ययवानां च ॥४।४।८५॥

एषामादेरकारस्य लोपो बहुलं स्यात् । अवक्कमइ, वक्कमइ । अक्कमेज्जा । निक्खमइ । निक्खमे । पडिक्कमए । पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमइ । परक्कमेज्जा, परक्कमिज्जा, परक्कमिज्जासि ॥

वेरितोऽतेरतीः ॥१।२।८॥

विसंबन्धिन इकारादतिसंबन्धिन्यकारे परे पूर्वपरयोरीकारादेशो बहुलं स्यात् । वीइक्कमति, वीतिक्कमति । क्कोस आक्रोशे । अक्कोसइ । पडिक्कोसइ । क्खंद पतने । पक्खन्दइ । खा अदने ॥

खादानां तौ ॥४।४।२६॥

खादीनां तौ परे यगागमो वा स्यात् । खायइ, खाइ । खिंस निन्दायाम् । खिंसइ खिंसति, खिंसन्ति । खिंसइज्जा । गम गतौ । वा० (आगमनमाभ्यामित्येकारविकल्पे) आगमेइ, आगमइ । गरह गरिह निन्दायाम् । गरहइ गरहए, गरिहन्ति, गरहन्ति । गरिहामि । गरहेज्जा । गा गाने ॥

+ आकारस्य संयुक्ते परे ह्रस्वः ॥

---

*खा, आ-घा, जग्गा, अभि-ज्जा, दल, णि-द्दा, न्हा, मिला, प-मिला, साह, एते खादयः ॥

गादीनामिज्जे ॥४।४।१४॥

गादीनामिज्जे परे यगागमः स्यात् । गाएज्जा । गिज्झ आशक्तौ । गिज्झइ । वा० (गिज्झादा च वक्तव्यः) । गिज्झा । गिज्झे । गिज्झेज्जा । गुर उद्यमने ॥

अवादपस्यादेर्लोपोऽनुस्वारश्च गुरे ॥४।४।३५॥

अवोपसर्गात्परस्यापोपसर्गस्यादेर्लोपोऽनुस्वारश्च स्तो गुरधातौ परे । अवपंगुरे । घ्रा गन्धोपादाने ॥

घ्रो जिग्घः ॥३।१।९२॥

घ्राधातोर्जिग्घादेशः स्यात्त्यादौ प्रत्यये । जिग्घइ ॥

आतो घ्र आदेः ॥४।४।८३॥

आकारोपसर्गात्परस्य घ्राधातोरादेर्लोपो वा स्यात् । त्वादित्वाद्यकारागमविकल्पे, आघायइ अग्घायइ अग्घाइ, आघायन्ति, अग्घायन्ति ॥

आग्घाङ्चियर्योर्हे॥४।४।१५॥

अनयोर्हे परे यगागमः स्यात् । आघायह । चर गतौ । चरइ । आयरन्ति । णिच्चरइ । पयरइ । पडिचरति । पडियरइ । वियरए । वियरइ । समाचरइ । समायरे । समायरिंसु । चिगिच्छ चिकित्सायाम् । चिगिच्छइ ॥

चिगिच्छस्यादेस्तः ॥३।१।६४॥

चिगिच्छधातोरादेस्तकारादेशो वा स्यात् । वितिगिच्छइ । वितिगिच्छामि । चिण चयने । चिणइ ॥

+ गा,खुभ, प-जा, पडि-निर्-जा, झिया,उव-ट्ठाव, परि-देव, निर्-द्दा, पडि-सम्-धा, मा, वा, हा, एते गादयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

वा न्तौ ॥३।१।६७॥

चिणधातोरिणस्यायादेशो वा न्तिपरे। चयन्ति, चिणन्ति। चिणसु। चिणिसु। उवचिणइ, उवचिणन्ति। उवचिणिस्सन्ति ॥

समोहेरुस् ॥३।१।९८॥

संपूर्वकस्य चिणधातोः सम्बन्धिनो हेरुसादेशो वा स्यात्। आदिस्वरलोपे, संचिणु। जंप व्यक्तायां वाचि। जंपइ। जंपए ॥

न्तौ जंपस्य ॥३।१।८५॥

जंपस्योपधाया द्वित्वं वा स्यात् न्तिप्रत्यये। जप्पन्ति, जंपन्ति। जंभ गात्रविस्तारणे। वियंभइ। जत प्रयत्ने। जयइ। जये। कृणादित्वात्, जयसु। जहा त्यागे ॥

जहास्तिमाणणिज्जेषु ॥१।३।८१॥

जहाधातोरन्त्यस्य ह्रस्वो वा स्यात् ति-माण-णिज्जप्रत्ययेषु। जहइ जहाइ, जहति जहाति। जहासि। पूर्वस्वरलोपे, विजहिज्जा। विप्पजहति, विप्पजहाति। विप्पजहामि। विप्पजहे। जा गतौ प्रादुर्भावे च। जाइ ॥

जादीनां तौ ॥४।४।१६॥

जादिगणपठितानां यगागमः स्यात्तिप्रत्यये परे। जायइ। संयोगे परे ह्रस्वे, जन्ति। जायउ। अभिजायउ ॥

---

* प्रादुर्भावे जा, अभि-जा, सम्-जा, झा, आ-दा, राह, वर, हा, आ-हा, एते जादयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

जो हेः ॥३।१।२६॥

जाधातोः परस्य हिप्रत्ययस्येट् न स्यात्। अभिजाहिति॥

उद्‌आपेभ्यो जः ॥४।४।८४॥

उद्-आ-पेभ्यः परस्य जाधातोरुपधाया लोपो वा स्यात्। उदाइ। णिज्जाति। उंचादित्वात्, णिज्जायन्ति, णिज्जन्ति। णिज्जामि। णिज्जाउ। णिज्जाहिन्ति। णिज्जाइस्सामि। निज्जाइ। निज्जन्तु। निज्जाइस्सामि। पजाणज्जासि, पयाणज्जासि। पजामि, पयामि॥

जः ससस्यैट् ॥४।४।३६॥

जाधातोः परस्य ससप्रत्ययस्यैडागमः स्यात्। इटोऽपवादः। पजाएस्सामि। पच्चायाइ, पच्चायन्ति। पच्चायाहिति, पच्चायाइस्सइ, पच्चायाइस्सन्ति। जाण अवबोधने॥

×जाणादीनां दीर्घो वा तौ ॥३।१।६६॥

जाणादिधातूनामन्त्यस्य दीर्घो वा तिप्रत्यये परे। जाणाइ, जाणइ॥

जाणस्यादेर्यः ॥४।४।६६॥

जाणस्यादेर्यकारो वा स्यात्। याणइ, जाणन्ति; याणन्ति। जाणामि, याणामि, जाणे। परियाणाइ, परियाणइ, परियाणन्ति। परियाणह। वियाणाइ॥

× जाण, किण, जूर, तिप्प, दल, धुण, रिह, पीड, एते जाणादयः॥

Aho ! Shrutgyanam

जाणहणाभ्यां वा ॥३।१।१२॥

जाणधातोर्हणधातोश्च प्रवर्त्तनायां याप्रत्ययो वा स्यात् । णिआणिया, विजाणिया, विजाणिज्जा, विजाणेज्जा । कुणादित्वात्, वियाणासु, वियाणाहि । जूह मिश्रणे । निज्जूहन्ति । जोय दर्शने । जोयइ । ज्झा झिया ध्याने । झायइ, झाअइ, झायन्ति ॥

ज्झादलयोरिज्जे ॥४।४।२७॥

अनयोरिज्जप्रत्यये यगागमो वा स्यात् । झाएज्ज, झाइज्ज । झियायइ, झियाइ, झियायन्ति ॥

झियः सौ ॥४।४।१७॥

झियाधातोः सिप्रत्यये यगागमः स्यात् । झियायसि । झियामि । झियाए, झियाएज्जा । झियाहि, झियायह । डंस दशने ॥

डंसस्य तौ ॥४।४।८७॥

डंसधातोरनुस्वारस्य लोपः स्यात्तौ परे । डसइ । विडसइ । डी विहायसागतौ ॥

उदो डियो डास्त्यावयोः ॥३।१।८६॥

उदः परस्य डीधातोर्डा इत्यादेशः स्यात्तिप्रत्ययावप्रत्ययोः । उड्डाइ । ढा विदारणे । आढाइ, आढाति, आढायन्ति, आढन्ति । आढाहि, आढाह । णुल्ल प्रेरणे ॥

पकप्पपणुल्लाभिधाराणां मवि ॥४।४।१८॥

एषां मोप्रत्यये परे यगागमः स्यात् । पणुल्लयामो । पणुल्लिज्जा । तर तरणे सामर्थ्ये च । तरइ, तरन्ति । तरसि । तरे । तरिस्सन्ति, तरिहिन्ति । अतरिंसु । उत्तरइ उत्तरेइ, उत्तरिन्ति, उत्तरन्ति । उत्तरेह, उत्तरह । तकारस्य यकारे, ओयरइ । वियरइ, वितरन्ति । वियरिज्जा, वियरेज्जा । वियरिज्जह । तिप्प दुःखदाने तर्पणे तृप्तौ च । जाणादित्वात्, तिप्पाइ, तिप्पइ, तिप्पन्ति । तिप्पामि । तुर तूर त्वरायाम् । तुरन्ति । तूरन्ति । अभितूर । तुस संतोषे । तुसइ । संतुसइ ॥

समस्तुसस्यैति ॥३।१।६८॥

समः परस्य तुसधातोरुपधाया छित्वं स्यादेप्रत्यये परे । संतुस्से । त्तस उद्वेगे । परिवित्तसिज्जा ॥

त्तसस्यैत्योः ॥३।१।६९॥

संपूर्वकस्य त्तसधातोरुपधाया छित्वं स्यादेप्रत्यये तिप्रत्यये च परे । संतस्सइ । संतस्से । त्थुण स्तुतौ । संथुणइ ॥

इज्जे च समः ॥४।२।४१॥

समः परस्य त्थुणधातोस्थवादेशः स्यादिज्जे चकारादणवेषु परेषु । संथवेज्जा । दल दाने । जाणादित्वाद्वा दीर्घे, दलाइ, दलइ, दलयन्ति ॥

Aho ! Shrutgyanam

दलपारपूजानां मौ ॥४।४।१६॥

एषां मिप्रत्यये परे यगागमः स्यात् । दलयामि ॥

दलस्य ह्मिमोः ॥४।४।२८॥

दलधातोर्यगागमो वा स्याद्ह्मिमोप्रत्यययोः। दलयामो, दलामो । दले, दलेज्जा, दलएज्जा । कुणादित्वात्, दलसु । विकल्पेन यगागमे, दलयाहि, दलाहि ॥

दलस्य हे ॥१।३।८४॥

अस्य दीर्घोऽन्तादेशो वा हप्रत्यये । दलाह, दलह । दलइस्सइ । दलइस्सामि । दह धारणे ॥

आतो दहस्य डः ॥१।४।६७॥

आतः परस्य दहधातोरादेर्डकारादेशः स्यात् । आडहइ, आडहन्ति । सद्दहइ, सद्दहाइ, सद्दहति, सद्दहन्ति । सद्दहे, सद्दहेज्ज । सद्दहसु । सद्दहिस्सइ । दिप्प दीप्तौ । पइप्पए । दिस प्रेक्षणे दाने च ॥

एमाणयोर्दिसस्य प्रेक्षणे ॥१।३।२५॥

प्रेक्षणार्थे दिसधातोरिकारस्य वृद्धिः स्यादेमाणयोः परयोः ॥

एति दिसस्य हः ॥१।४।१२३॥

दिसधातोरुपधाया हकारः स्यादेप्रत्यये । देहए ॥

Aho ! Shrutgyanam

दक्खुः सेंसोर्दिसस्य ॥३।१।१०३॥

प्रेक्षणार्थकदिसधातोरिंसुप्रत्ययसहितस्य दक्खुर्निपात्यते । अदक्खु ॥

सस्सहेर्दच्छिः ॥३।१।१०४॥

प्रेक्षणार्थकदिसधातोः स्सहिप्रत्ययसहितस्य दच्छिर्निपात्यते । दच्छिसि । दुस वैकृत्ये अप्रीतौ च ॥

न्तौ पात् ॥३।१।७१॥

पोपसर्गात्परस्य दुसधातोरुपधाया छित्वं स्यात् न्तौ परे । पउस्सन्ति । दू गतौ परितापे च । अयं गतौ स्वार्थे इज्जप्रत्ययान्तः । दूइज्जइ । देव विलापे ॥

देवादिभ्यस्तेः* ॥३।१।१००॥

देवादिधातुभ्यः परस्य तिप्रत्ययस्य दीर्घो वा स्यात् । परिदेवती । परिदेवए । परिदेवइ । परिदेवएज्जा । द्दा पलायने । उद्दाइ । गिलादित्वात्, उद्दायन्ति । णिद्दाएज्ज । निद्दाएज्ज । धाव शीघ्रगतौ । पहावइ । पहावए । परिधावन्ति । अयादित्वात्, परिधावित्था । धुण कम्पने । जाणादित्वात्, धुणाइ, धुणाइ, धुणन्ति । धुणे । निद्धुणे । नद् अव्यक्ते शब्दे । णदइ । नदइ, णादन्ति । नम नम्रीभावे ॥

* देव, थण, देह, संधा, सोय, एते देवादयः ।

Aho ! Shrutgyanam

आगमनमाभ्यां तौ ॥३।१।१०८॥

आभ्यामेप्रत्ययो वा स्यात्तिप्रत्यये परे। गामइ, गामेइ, नमन्ति ॥

नमादेरिर्मवि + ॥३।१।१११॥

नमादिधातोरन्त्यस्येकारादेशः स्यात् मोप्रत्यये। नमिमो। नमह। उरणामन्ति। उवणामन्ति। पणामइ, पणामेइ,। पणमिमो। पणमह। पच्चुण्णमन्ति। पच्चुन्नमन्ति। परिणमेइ, परिणामइ, परिणमन्ति। परिणमेज्जा, परिणमिज्जा। परिणमिस्सन्ति ॥

विप्पाभ्यां नमस्य वो न्तौ ॥१।४।१२५॥

विप्पोपसर्गपूर्वकस्य नमधातोरुपधाया वः स्यात् न्तिप्रत्यये परे। विप्पणवन्ति। नमंस नमस्कारे। णमंसइ, नमंसइ, णमंसन्ति। णमंसामि, नमंसामि, णमंसामो, नमंसामो। णमंसिज्जा, णमंसेज्जा। णमंसह। णमंसिहिन्ति। णमंसिहामि। नस्स नाशे ॥

न्तीज्जयोः पविप्पाभ्याम् ॥१।२।३०॥

आभ्यां परस्य नस्सधातोः संयुक्तस्यादेर्लोपः स्यात् न्तिइज्जपरयोः। पणासन्ति। विप्पणसेज्जा। नेः णायणे ॥

एदोद्भ्यामिज्जस्येतः ॥४।४।८६॥

एकारान्तादोकारान्ताच्च धातोः परस्येज्जप्रत्ययस्यैकारस्य

+ नम, इक्ख, लग, भण, भव, वच्च, मुण, हर, एते नमादयः।

लोपो भवति । णेज्जाहि । अवणेज्जा । अवणेह । आ-
णेमि ॥

हिन्तयोर्नेरत् ॥३।१।११२॥

हिन्तपरयोर्नेधातोरकारान्तादेशो वा स्यात् । आणाहि, आणेहि, आणेह । एकारस्य वैकल्पिक इकारादेशो, उवणिन्ति, उवणेन्ति । उवणेहि, उवणाहि, उवणेह । उवणेहिन्ति । णीणेइ, णीणेति । परिणेहि ॥

पवेस्तौ ॥३।१।११३॥

पविपूर्वकस्य नेधातोरन्त्यस्याकारो वा स्यात्तौ परे ॥

पान्नायि वेः ॥१।३।८६॥

पात्परस्य वेरुपसर्गस्य दीर्घोऽन्तादेशो वा स्यात् नेधातौ परे । पवीणेइ, पविणइ, पविणेइ ॥

अयोऽणेन्तीज्जहतारेषु ॥३।१।११४॥

नेधातोरन्त्यस्यायादेशो वा भवति अ-ए-ए-न्ति-इज्ज-ह-तारप्रत्ययेषु परेषु । विणयन्ति । विणएज्ज । विणएह । समाणेन्ति । समाणेहिइ । संपवीणेमो । न्हा स्नाने । यकारागमो वा, ण्हायइ, ण्हाइ, ण्हाति, ण्हायन्ति । पज्ज गतौ ॥

पज्जादीनां पो वः ॥१।४।१३॥

एषां धातूनामनादिभूतासंयुक्तपकारस्य वकारो वा

* पज्ज, पड, पिव, पील, पय, एते पज्जादयः ॥

स्यात् । आवज्जइ । आवज्जे । उप्पज्जइ । उप्पज्जए । उप्पज्जन्ति । उप्पज्जिस्सन्ति । उप्पज्जिस्सं । उप्पज्जिंसु । उवसंपज्जइ । णिप्फज्जइ, निप्फज्जइ, । निप्फज्जए । पडिवज्जइ । स्वार्थे इज्जः, पडिवज्जिज्जइ । पडिवज्जाहि । पडिवज्जिहिति । पडिवज्जिस्सामि । समुप्पज्जइ । अयादित्वात्, समुप्पज्जित्था । समुप्पज्जिंसु । पड पतने । पडइ, पडन्ति । अहिवडन्ति ॥

उपसर्गात्पडस्य यः ॥१।४।१२६॥

उपसर्गात्परस्य पडधातोरुपधाया यकारो बहुलं स्यात् । उप्पयइ, उप्पअइ, उप्पयन्ति । उप्पएज्जा । उप्पयाहि । उवयइ, उवयन्ति । ओवयन्ति । णिवडइ । निवडइ, निवयन्ति । निवडन्ति । पडियावयन्ति । पडियावएज्जा । पच्चोवयइ । संपडइ । संपयन्ति । पा पाने ॥

आज्ञावर्त्तमानणिज्जेषु पिबापियौ पः ॥३।१।१०१॥

आज्ञावर्त्तमानार्थकप्रत्यययोः परयोर्णिज्जे च पाधातोः पिबपियावादेशौ पर्यायेण स्याताम् । पिबइ, पियइ, पिबन्ति । पियसि । पिआमो ॥

प्रवर्त्तनायां वा ॥३।१।१०२॥

प्रवर्त्तनार्थे पाधातोरुक्तावादेशौ वा स्याताम् । पिबे, पिए । पाइज्जा । पियह । आविअइ । आविए । पुच्छ प्रश्ने । पुच्छइ । पुच्छए । पुच्छन्ति । पुच्छसि । पुच्छामो । पुच्छिज्ज, पुच्छिज्जा । पुच्छ । पुच्छिस्सामि, पुच्छिस्सं, पुच्छिस्सामो ॥

पुच्छादेर्वा ॥३।१।३६॥

पुच्छधातोरेप्रत्ययो वा भूतेऽर्थे । पुच्छिंसु । पुच्छे । आपुच्छइ ।

Aho ! Shrutgyanam

पडिपुच्छइ, पडिपुच्छन्ति । पडिपुच्छउ । पूज पूजायाम् । पूयइ, पूअन्ति । पूअयामि । फुट्ट स्फुटने । फुट्टइ ॥

फुट्टस्य टयोर्डस्त्तान्तहिप्रेरणासु ॥३।१।११५॥

फुट्टधातोष्टकारयोर्डकारादेशः स्यात् त्ता-न्त-हिप्रत्ययेषु परेषु प्रेरणार्थे च । फुडिही । फुस स्पर्शे शुद्धौ च । फुसइ, फुसन्ति । फुसिज्ज । फुसन्तु । संफुसिज्जा । बंध बन्धने । बंधइ, बंधन्ति । बंधेज्जा ॥

बंधरुंभहिंडेभ्यो हेरेट् ॥४।४।३७॥

बन्धादिधातुभ्यः परस्य हिप्रत्ययस्यैडागमः स्यात् । इटोऽप, वादः । बंधेहिंति, बंधिस्सन्ति ॥

बंधादीः ॥३।१।४०॥

बंधधातोरीप्रत्ययो वा स्याद् भूतेऽर्थे । बंधी । पक्षे इंसुः, बंधिंसु । बीह भये ॥

बीहस्य भायभीयौ तयि ॥३।१।११६॥

बीहधातोर्भाय भीय इत्येतावादेशौ स्तस्ते परे । भायए । भीयए । भय सेवायाम् । भयइ, भए, भइज्ज । विभयन्ति । विभए । भण कथने । भणइ । नमादित्वात्, भणिमो, भणिहामि । भम भ्रमणे । भमइ । भमिही । भमिहिन्ति । उब्भमन्ति । भव सत्तायाम् । भवइ, भवति, भवन्ति । भवसि, भवह । भवामि, भवामो । भवेज्जासि, भवेज्जाह, भवेज्जासि ।

Aho ! Shrutgyanam

भवे, भवेज्जा। भवउ, भवतु, भवन्तु। भव। भविस्सइ, भविस्सन्ति। भविस्सह। भविस्सामि, भविस्सं, भविस्सामो॥

भवस्य भुवीभुविंसौ ॥३।१।४१॥

भवधातोर्भूतेऽर्थे भुवी भुविं इति वा निपात्येते। भुविं, भुवी। पक्षे इंसुप्रत्यये,

भवस्येंसावट् ॥४।४।४६॥

भवधातोरिंसुप्रत्यये परेऽडागमः स्यात्। अभविंसु। पाउरपूर्वकस्य अयादित्वात्, पाउब्भवित्था। भा दीप्तौ। भाइ। भाउ। पडिहाइ। भिंद विदारणे। भिन्दइ, भिन्दन्ति। भिन्दे, भिन्दिज्जा, भिन्देज्जा। भिन्द। भिन्दिहिति॥

आतो भिंदस्यादेरेति द्विः ॥३।१।१२१॥

आकारोपसर्गात्परस्य भिन्दधातोरादेर्द्वित्वं स्यादेप्रत्यये। अब्भे। भुंज भक्षणे भोगे च। भुंजइ, भुंजए, भुंजन्ति। भुंजामो। भुंजे, भुंजिज्ज, भुंजेज्ज, भुंजेज्जा। कुणादित्वात्, भुंजसु, भुंजाहि, भुंज, भुंजह॥

भुंजात्खड् ॥३।१।१७॥

अस्माद्धातोः खड्प्रत्ययः स्याद् भविष्यदर्थे त्यादौ परे॥

खडि भुंजस्य ॥१।३।२६॥

भुंजधातोरुकारस्य वृद्धिः खडि परे। भोक्खामि। संयुक्ते परे ह्रस्वविकल्पे, भुक्खामो, भोक्खामो। उवभुंजइ। उवभुंजसि। परिभुंजइ। संभुंजेज्जा। मन्न अवबोधने। मन्नइ। मन्नए। मण्णइ, मन्नन्ति। मन्नसि॥

Aho ! Shrutgyanam

मन्नान्मेरेस् वा ॥३।१।१२३॥

मन्नधातोः परस्य मिप्रत्ययस्यैसादेशो वा स्यात्। मन्ने, मन्नामि, मण्णामि, मण्णे। मण्णेज्ज। कृणादित्वात्, अणुमन्नसु, अयादित्वात्, अणुमन्नित्था। मर प्राणत्यागे। मरइ मरए। मरन्ति। मरसि। मरिस्सन्ति। मा माने। माएज्जा। माहिइ। माद् प्रमादे। प्रवर्त्तनायामेप्रत्यये प्रकृतिभावे, पमायए। मिल संगमे॥

मिलस्य ये ॥१।३।८५॥

मिलधातोर्दीर्घोऽन्तादेशः स्याद् यकारे परे। मिलायन्ति। मिलन्ति। मुच्छ मूर्च्छायाम्। मुच्छइ। मुच्छिज्जा॥

समो मुच्छे न्तिमयोः ॥४।४।९०॥

समो मकारस्य लोपो वा स्यान्मुच्छधातौ न्तिमपरके। समुच्छन्ति, संमुच्छन्ति। रंभ आरम्भे। आरंभइ। आरंभे। समारंभइ, समारंभन्ति॥

न्तेः समारंभात् ॥ ३।१।१२४॥

सम्आपूर्वकस्य रंभधातोः परस्य न्तिप्रत्ययस्यैसादेशो वा स्यात्॥

समारंभस्यैसत्तासु ॥४।४।८८॥

रंभधातोरनुस्वारस्य लोपः स्यादेस्- ए- त्ताप्रत्ययेषु। समारभे, समारंभन्ति। "[1]माइणो कट्टु माया य, कामभोगे समारभे" ॥

---

१ मायाविनः कृत्वा मायाश्च, कामभोगान् समारभन्ते।(सूय० १-८-५)।

रंभरक्खहणहरेषु समः साः ॥३।१।१२५॥

एषु परेषु समः सादेशो वा स्यात्। सारंभइ, समारंभइ। रक्ख रक्षायाम्। रक्खेज्ज। रक्ख, रक्खाहि। सारक्खइ, संरक्खए, सारक्खन्ति, संरक्खन्ति। सारक्खामि, संरक्खामि। सारक्खाहि, संरक्खाहि। रिय गतौ ॥

रियस्येतो दीर्घः ॥३।१।१२०॥

रियधातोरिकारस्य दीर्घो वा स्यात्त्यादौ परे। रीयइ, रियइ रीएज्जा, रीइत्था। रुंभ आवरणे। रुंभइ। णिरुंभइ, णिरुंभन्ति। बन्धादित्वात्, णिरुंभेहिति ॥

रुंभस्येज्जे ॥३।१।७३॥

रुंभधातोरुपधाया द्वित्वं स्यादिज्जप्रत्यये ॥

डेज्जयोर्भस्य झो रुंभस्य ॥३।१।१२६॥

रुंभधातोर्भस्य झकारादेशः स्यादिज्जडप्रत्यययोः। विरुज्झेज्जा। रुद् अश्रुविमोचने ॥

रुदस्यान्ततिन्तिहिमाणेषु ॥१।३।२७।

रुदधातोरुकारस्य वृद्धिर्वा स्यात् अन्त-ति-न्ति-हि-माणेषु परेषु। रोयइ,रुयइ। रोयन्ति, रुयन्ति। रुय।

दो वः ॥१।३।२८॥

रुदधातोर्दकारस्य वकारो वा स्यात्त्यादौ। रुवे। रोव। लभ प्राप्तौ। लभइ, लहइ, लहए, लहन्ति। लहसि। लभामि। लहे लभिज्जा, लभेज्जा। लहन्तु। लहह। लभिहिति। लभिस्सामि ॥

Aho ! Shrutgyanam

लभाद्धस्य तड् ॥३।१।१८॥

भविष्यदर्थे लभधातोः परस्य हप्रत्ययस्य तडादेशः स्यात्। लद्दित्थ ॥

लभादिण् ॥३।१।४२॥

भूतेऽर्थे लभधातोरिण्प्रत्ययः स्यात्। अडागमः, अलाहि ॥

आदुपोवेभ्यो लभस्यानुस्वारोऽतिसित्ताणमाणेषु ॥ ४।४।३८॥

आ-उप-उवोपसर्गेभ्यः परस्य लभधातोर्लकारस्यानुस्वारागमो वा स्याद् अ-ति-सि-त्ता-ण-माणेषु परेषु। उवालंभति। उपलंभसि। आदुपोवेभ्य इति किम्, पडिलभामि। पडिलभे। लव व्यक्तायां वाचि। लविज्जा, लवे। आलवइ, उल्लवइ। लुण छेदने। लुणन्ति ॥

लुणस्येज्जे यः ॥१।४।१२७॥

लुणधातोरुपधाया यकारः स्यादिज्ज परे। लुएज्जा ॥ वच्च व्यक्तायां वाचि ॥

वच्चाच्छट्खडौ भविष्यति ॥३।१।१२७॥

भविष्यदर्थे वच्चधातोश्छट्प्रत्ययः खड्प्रत्ययश्च स्यात्यादौ परे।

ओदादेरतश्छडि ॥३।१।१२८॥

छडिपरे वच्चधातोरादेरकारस्यौकारः स्यात्। संयुक्ते ह्रस्वविकल्पे, वुच्छामि, वोच्छामि, वुच्छं, वोच्छं। वक्खति। वक्खामो ॥

पवोच्छाद्धिस्त्यादौ ॥३।१।१२९॥

पात्परस्माच्छ्प्रत्ययान्ताद्वचधातोर्हिंप्रत्ययः स्यात्त्यादौ परे । पवोच्छिहिइ । लुभ लोभे ॥

लुभस्य तित्तयोः ॥३।१।७४॥

अस्योपधाया द्वित्वं स्यात्तिक्ताप्रत्ययोः परयोः । लुब्भइ । वह प्रापणे पीडायां च ॥

वहस्येहौ झो द्विश्च ॥१।४।१२८॥

वहधातोरुपधाया झकारादेशो द्वित्वं च स्यादिहौ परे ॥

इहौ वहस्य ॥३।१।१३०॥

वहधातोरकारस्यौकारः स्यादिहौ परे । वोज्झिहिन्ति ॥ वा वायुसंचरणे ॥

वः स्सस्य ॥३।१।२३॥

वाधातोः परस्य स्सप्रत्ययस्येडागमः स्यात् । अनित्त्वा-द्यासो वचनम्, परिनिव्वाइस्सन्ति । विंध ताडने ॥

विंधस्य तिन्त्योः ॥१।४।१३१॥

विंधधातोरुपधाया झकारो द्वित्वं च वा स्यात्तिन्तिप्रत्य-ययोः परयोः । विज्झइ, विंधइ, विज्झन्ति । व्वय गतौ ॥

व्वयस्य चस्त्यादौ ॥१।४।१३२॥

व्वयधातोरुपधायाश्चकारो द्वित्वं च वा स्यात्त्यादौ परे । वच्चइ, वयइ, वइ, वच्चन्ति । इत्यादित्वात्, वच्चिमो, वयामो ।

Aho ! Shrutgyanam

वए, वएज्ज । वच्चउ । कुणादित्वात् ,वच्चसु, वच्च, वयाहि, वयह ॥

अण्वतिभ्यां व्वयस्य ॥४।४।६१॥

अणुअतिभ्यां परस्य व्वयधातोरादेर्वकारस्य लोपः स्यात् । संयुक्तस्यादित्वाभावादप्राप्ते लोपे वचनम्, अणुवयामो । अतिवयन्ति । अण्वतिभ्यामिति किम्, अणुपव्वयति, पव्वयामि । पव्वएज्जा । पव्वयह । पव्वइहिति । पव्वइहिसि, पव्वइस्ससि । पव्वइस्सामि, पव्वइस्सामो ॥

परेर्वा ॥४।४।६२॥

परिपूर्वकस्य व्वयधातोरादेर्वकारस्य लोपो वा स्यात् । अप्राप्तविभाषेयम् । परिव्वए, परिव्वएज्जासि । वीइवयइ, वीइवयति, वीतिवयति, वीइवयन्ति, वीतिवयन्ति । वीइवयामि । वीइवएज्जा, विइवयेज्जा । वीइवयह । वीइवइस्सइ, वीइवइस्सन्ति । सुपरिवएज्जा । स अवसाने । ववससि,

व्यवाभ्यां सस्यैति ॥३।१।१२२॥

आभ्यां परस्य सधातोरुपधाया द्वित्वं स्यादेकारे परे । ववस्से । सद्द आस्वादने ॥

सद्दस्यास्वादे दयोस्तौ यः ॥१।४।६८॥

अस्य धातोर्दकारयोर्यकारः स्यादास्वादेऽर्थे तौ परे । सयइ । सद्दए । सय शयने । सयइ, सयन्ति । सए । सएहि, सइस्सामो । सास अनुशासने । अणुसासए । अणुसासन्ति । अणुसाससि ॥

Aho ! Shrutgyanam

सासस्य मौ ॥४।४।४०॥

सासधातोरन्त्यस्यानुस्वारागमः स्यान्मिप्रत्यये परे । दीर्घस्यापवादः । अणुसासंमि । सिण सेवायाम् । अयं धातुः समुत्पूर्वक एव दृश्यते ॥

उत सिणस्य मौ ॥४।३।८८॥

सिणधातोरन्त्यस्योकारो वा स्यात मिप्रत्यये परे । पक्षे दीर्घः । समुस्सिणोमि, समुस्सिणामि । सिर विसर्गे । णिसिरइ, णिसिरन्ति । णिसिरामि, णिसिरामो । निसिरइ । निसिरे ॥

इज्जे सिरस्य सो विउभ्याम् ॥३।१।१३२॥

विउभ्यां परस्य सिरधातोः सादेशः स्यादिज्जप्रत्यये परे । विउसिरे, विउसेज्ज । सिव्व तन्तुसन्ताने ॥

सिव्वस्य स्से सीवः ॥३।१।१३४॥

सिव्वधातोः सीवादेशो वा स्यात् स्सप्रत्यये । सीविस्सामि, सिव्विस्सामि । सीय विशरणे । सीयइ, सीयति । अवसीयइ । णिसीयइ, णिसीयन्ति ॥

ह्रस्वो णेः सीयस्य न्ति- मो- माणेषु ॥३।१।१३५॥

णेरुपसर्गात्परस्य सीयधातोरीकारस्य ह्रस्वो वा स्यात् न्ति- मो- माणप्रत्ययेषु । णिसियन्ति । णिसीयामो, णिसियामो । णिसीयह । निसीयइ, निसीयन्ति ॥

न्तीज्जयोर्वज्जः ॥३।१।१३६॥

निपूर्वकसीयधातोर्वज्जादेशो भवति न्तिप्रत्ययेज्जप्रत्यययोः ।

Aho ! Shrutgyanam

निवज्जन्ति। निसीए, निसीइज्जा, निसीएज्ज। निवज्जेज्जा। निसीइस्सामो। विसीयइ। सुड निन्द्रायाम्। स्वार्थे इञ्, सुडिज्जउ। सुय शयने॥

सुयस्य वस्तिलयोः॥१।४।१२३॥

सुयधातोरुपधाया वो वा स्यात् तिप्रत्यये ते च। सुवइ, सुयइ। सुस्सुस सेवायाम्॥

उतः सुस्सुसस्यान्त्यस्य॥१।३।८७॥

सुस्सुसधातोरन्त्यस्योकारस्य दीर्घो वा स्यात्। सुस्सूसइ, सुस्सूसए। सुस्सुसइ, सुस्सुसए। सोय शोके। सोयइ, सोयन्ति। सोयामि। सोइज्जा। स्सम परिश्रमे। समइ। वीसमइ, वीसमन्ति। वीसमए, वीसमन्ति। वीसमेज्ज। वीसमउ, वीसमइ। स्सय सेवायाम्। दीर्घात्परत्वात्संयुक्तादिलोपे, आसयइ, आसयन्ति। उवस्सए। पलिस्सएज्जा। स्सस प्राणने। ऊससन्ति। नीससन्ति। वीससइ। वीससे। हंद ग्रहणे। हंदि। हंदह। हण हिंसायाम्। हणइ। हणसि। हणेज्जासि। हणामि। हणिया, हणे, हणेज्जा। हणाह। निहणिंसु। पहणइ। पहण, पहणाहि। पडिहणइ, पडिहणन्ति

वेहणस्य तीज्जयोः॥३।१।७५॥

वेरुपसर्गात्परस्य हणधातोरुपधाया ह्नित्वं स्यात्तिप्रत्यये इज्जप्रत्यये च परे। विहन्नइ। विहन्निज्जा। समोहणइ समोहणिहिति। साहणन्ति, साहणेज्जा। हिण्ड गतौ हिण्डन्ति।

Aho ! Shrutgyanam

आहिंडइ । आहिंडसि । आहिंडेह, आहिंडह । हो सत्तायाम् । होइ, होन्ति, हुन्ति । ओकारान्तत्वादिकारलोपः, होज्ज, होज्जा, हुज्ज, हुज्जा । हुज्जामि । होउ । होहि । अनित्यत्वात्, होहिइ, होहिन्ति ॥

होः स्सस्य क्खः ॥३।१।१३७॥

होधातोः परस्य स्सप्रत्ययस्य क्खः स्यात् । होक्खामि ॥

होर्डिसिः ॥३।१।४३॥

भूतेऽर्थे होधातोर्डिसिप्रत्ययः स्यात् । अहिसि, हुत्था, होत्था । अणुहोइ, अणुहुन्ति, अणुहोंति । अणुहोहि, अणुहोह । अणुहोहिइ ॥

पाद्धोर्हुप्पः ॥४।४।४१॥

प्रोपसर्गात्परस्य होधातोर्हुप्प इत्यादेशः स्यात्त्याद्यौ । पहुप्पइ । पहुप्पते । पहुप्पन्ति ॥

॥ इति प्रथमो गच्छादिगणः ॥

अथैकारविकरणः करादिगणो द्वितीयः ॥

कर करणे ॥

करादिभ्यः कृदाज्ञावर्त्तमानेष्वेः ॥३।१।१०५॥

करादिगणपठितेभ्यो धातुभ्य एप्रत्ययः स्यात् कृत्प्रत्ययेषु आज्ञावर्त्तमानार्थकत्यादिप्रत्ययेषु च परेषु । करेइ । एकारस्याकारादेशविकल्पे, संयुक्ते ह्रस्वविकल्पे च, करन्ति, करिन्ति, करेन्ति । करेसि । करेमि । करिज्जा, करेज्जा, करिज्जासि, करेज्जासि । करिज्जामि । करेहि, करेह । करिस्सइ, करिस्सन्ति ॥

Aho ! Shrutgyanam

भविष्यति वा ॥३।१।१०६॥

भविष्यदर्थे करादिधातोरेप्रत्ययो वा स्यात्। पक्षे इट्, करेहिन्ति, करिहिन्ति ॥

णुक्करादीनां त्यादौ ॥१।३।२६॥

णुक्करादिधातूनामादिस्वरस्य वृद्धिर्वा स्यात्त्यादौ परे। णुक्कारेन्ति। सक्कारेन्ति। करेस्ससि। करेस्सामि, करिस्सामि, करेस्सं। करिस्सामो ॥

करादिस्सम् ॥३।१।३७॥

करधातोर्भूतेऽर्थे इस्संप्रत्ययो वा स्यात्। पक्षे इंसुः। अकरिस्सं, अकरिंसु ॥

पुदवाभ्यां न ॥३।१।११०॥

पुत्-अवाभ्यां परस्मात्करधातोरेप्रत्ययो न स्यात्। अवयरइ ॥

करादापसद्भ्यः ॥३।१।१०९॥

आपसद्भ्यः परस्मात्करधातोरेप्रत्ययो वा स्यात्। वागरइ, वागरेइ, वागरेति, वियागरन्ति। विआगरे, वियागरे, वियागरेज्जा, वियागरेज्ज। वागरेहि। वागरिहिति। वागरित्था ॥

अवात्करस्य क्खडः पाके ॥३।१।१३८॥

उवोपसर्गात्परस्य करधातोः क्खडादेशः स्यात्पाकेऽर्थे। उवक्खडेइ, उवक्खडिन्ति। उवक्खडिज्ज। उवक्खडेउ।

+ णुत्-कर, आ-नव, उ-द्दव, उव-द्दव, धिक्-कार, नि-सम, प-द्दव, परि-द्दव, सत्-कर, एते णुक्करादयः।

Aho ! Shrutgyanam

पाके किम्, उवकरेउ। पकरइ, पकरेइ, पकरन्ति, पकरेन्ति, पगरन्ति। पकरेज्जा। पकरेह। पाउकरिस्सामि। पुक्करइ, पुक्करन्ति। पुराकरन्ति। सक्कारेइ, सक्कारइ। समलंकरेइ। अंज व्यक्तौ॥

अभेरंजस्य गः ॥१।४।१३४॥

अभेरुपसर्गात्परस्यांजधातोरुपधाया गकारादेशः स्यात्। अब्भंगेइ, अब्भंगन्ति, अब्भंगेन्ति। अब्भंगिज्ज, अब्भंगेज्जा।

अच्च पूजायाम्। अच्चेइ, अच्चेन्ति॥

अच्चान्मोरुर्वा ॥३।१।१५३॥

अच्चधातोः परस्य मोप्रत्ययस्योकारान्तादेशो वा स्यात्। अच्चेमु। नमादित्वात्, अच्चिमो। "अच्चेमु ते महाभाग! न ते किंचि न अच्चिमो"[1]। ओयव संसिद्धौ जये च। ओयवेइ, ओयवेहि। कास दीप्तौ। पयासेइ, पकासेइ। पयासेह। किलाम ग्लानौ। किलामेइ॥

किलामस्य वो न्तिकर्मणोः ॥१।४।१३६॥

किलामधातोरुपधाया वकारादेशः स्यात् न्तिकर्मणोः। किलावन्ति। किलामेसि। ग्गह ग्रहणे। गहेइ। निग्गहेज्जा। पडिग्गहेइ। पडिग्गहेज्जा। घात हिंसायाम्। घाएइ, घाएन्ति। घायए। उग्घाअइ। संघातइ, संघाएइ, संघायन्ति। संघाएह। चय सामर्थ्ये। चएइ, चयन्ति॥

१ अर्चयामस्ते महाभाग! न ते किंचिन्नार्चयामः।(उत्त० १२-३४)

Aho ! Shrutgyanam

चयस्य क्को ये ॥१।४।१३७॥

याप्रत्यये परे चयधातोरुपधायाः क्कादेशः स्यात् । असादित्वादिज्जादिकं बाधित्वा याप्रत्यये, चक्किया । चोय प्रेरणे। चोययन्ति । पडिचोएन्ति । पडिचोएउ । पडिचोएह । च्छंट सेचने । वा० (च्छंटस्य च्छोडो वा वक्तव्यः) अच्छोडेइ । जोय द्योतने । जोइन्ति । जोइस्सन्ति । जोइंसु ॥

जोयस्य वः ॥१।४।१३८॥

जोयधातोरुपधाया बकारादेशो वा स्यात् । उज्जोवेइ, उज्जोएइ, उज्जोवेन्ति । ज्झाम ज्वलने । झामेइ । झामेज्जा ॥

ज्झामस्य तौ वा लोपः ॥१।४।१३९॥

वेरुपसर्गात्परस्य ज्झामधातोरुपधाया लोपो वा स्यात्तौ परे । विज्झाउ । तक्क कल्पनायाम् । तक्केइ । वियक्केइ । ताड ताल ताडने । ताडिन्ति । ताडेज्जा ॥

ताडस्य पंतावे ॥३।१।४४॥

भूतेऽर्थे ताडधातोः पंतावे इति निपात्यते । पंतावे । तालेइ, तालेन्ति । तालेज्जा । दा दाने । देइ, देति, देन्ति, दिन्ति ॥

एति दो ह्रस्वः ॥१।३।८९॥

दाधातोर्ह्रस्वोऽन्तादेशः स्यादेप्रत्यये परे । दए, देज्जा, दिज्जा । दाहिइ ॥

दो हेर्हस्य त्थः ॥३।१।१६६॥

दाधातोः परस्मात् हिप्रत्ययात्परस्य हप्रत्ययस्य त्थादेशः

स्यात् । दाहित्थ । दाहं, दाहामि ॥

हेर्मोः ॥१।३।६०॥

दाधातो र्हिप्रत्ययात्परस्य मोप्रत्ययस्य ह्रस्वः स्यात् । दाहामु ॥

आत इत् ॥१।३।६१॥

आकारोपसर्गात्परस्य दाधातोरिकारोऽन्तादेशो वा स्यात् । आदियइ । आदिए ॥

पाद्यच्छः ॥१।३।६२॥

प्रोपसर्गात्परस्य दाधातोर्यच्छादेशो वा स्यात् । पयच्छइ । पयच्छामि, पयच्छामो ॥

पस्योणदेज्जागाद्दिसवणासु ॥१।३।६४॥

पोपसर्गस्य दीर्घोऽन्तादेशः स्यादुणइज्जप्रत्ययान्तदा इप्रत्ययान्तवत्तणाप्रत्ययान्तसवधातुषु परेषु । पादेज्जा । दाल उद्घाटने विदारणे च ॥

अवाद् दालस्य तावादेः ॥३।१।८८॥

अवोपसर्गात्परस्य दालधातोरादेर्द्वित्वं वा स्यात्तिप्रत्यये परे । अवद्दालेइ, अवद्दालेति, अवदालेइ । दीव दीप्तौ । दीवेइ, दीवन्ति ॥

पादिज्जे ॥१।४।१००॥

पात्परस्य दीवधातोरादेर्लकारादेशः स्यादिज्जप्रत्यये । पलीवेज्जा । धार धारणे । धारेइ, धारन्ति । धारए, धारिज्जा, धारेज्जा । धारिस्सइ । धारिस्सामि । अभिधारयामो । अभिधारए । पधारेइ, पधारेंति ॥

Aho ! Shrutgyanam

धादीनां* धभयोर्हः ॥१।४।१४॥

एषां धातूनामनादिभूतासंयुक्तावयवयोर्धकारभकारयो-र्हकारादेशो वा स्यात् । पहारेज्जा ॥

एति समुदो धारस्य ॥१।३।६६॥

समुदः परस्य धारधातोराकारस्य ह्रस्वः स्यादे प्रत्यये परे। समुद्धरे । संपहारिंसु । धुक्ख उद्दीपने ॥

धुक्खस्य कः ॥१।४।१४०॥

धुक्खधातोरुपधायाः को वा स्यात् । संधुक्केइ, संधुक्खेइ, संधुक्खेति । पार कर्मसमाप्तौ । पारेइ, पारेति, पारेन्ति । बु व्यक्तायां वाचि ॥

बोस्तिन्त्योराहः ॥३।१।१४१॥

बुधातोराहादेशो वा स्यात्तिन्तिप्रत्यययोः परयोः ॥

आहाल्लोप उदंसू ॥३।१।१४२॥

आहात्परस्य तिप्रत्ययस्य लोपो न्तिप्रत्ययस्य उद् अंसु-इत्यादेशौ स्तः । बेइ, आह, बिन्ति, बेन्ति । आहु, आहंसु ॥

न्तावोरुवः ॥३।१।१४३॥

बुधातोरुकारस्योव इत्यादेशो वा स्यात् न्तिप्रत्यये परे। बुविन्ति ॥

बोर्मौ ॥४।४।२९॥

बुधातोर्यगागमो वा स्यात् मिप्रत्यये परे । बुयामि, बेमि ॥

---

* धा, धम, धार, धोठ, भा, भास, भोग, लभ, धाव, एते धादयः ।

Aho ! Shrutgyanam

हियोर्दीर्घः ॥३।१।१४४॥

बुधातोरुकारस्य दीर्घः स्यात् हि-याप्रत्यययोः परयोः । प्रवर्त्तनायामसादित्वाद् याप्रत्यये, बूआ, बूया । बूहि ॥

बोरीः ॥३।१।१४५॥

बुधातोर्भूतेऽर्थे ईप्रत्ययः स्यात् । इंसोरपवादः ॥

आदेरीत्यवो द्विः ॥३।१।१४६॥

बुधातोरुकारस्यावादेश आदेर्द्वित्वं च स्यादीप्रत्यये परे । अडागमे, अब्बवी । भोग प्रेक्षणे । अयमापूर्वक एव दृश्यते, आभोएइ, आहोएन्ति आभोएन्ति आहोयन्ति । आहोएहिन्ति । लोल आलोठने । उल्लोलेइ ॥

लोलस्येज्जे ढः ॥१।४।१४१॥

लोलधातोरुपधाया ढकारो वा स्यादिज्जप्रत्यये । उल्लोढिज्ज, उल्लोलेज्ज ॥

लोलस्य स्से ॥१।३।९७॥

लोलधातोर्ह्रस्वः स्यात्स्सप्रत्यये परे । विलुलिस्सइ । वर वरणे । वरयते । वरेमि, वरेमो । उव्वलिज्जा । स्साद् आस्वादने, प्राशौ, सम्मतिदाने, विज्ञाने च । स्वार्थे इज्जः । साइज्जइ । साइज्जामो । सायए, साइज्जेज्जा । साइज्जह । साइज्जिस्सामि । आसाएति, आसादेइ, आसादेन्ति, आस्सादेन्ति । आसाएमि, आसाएमो । आसाएहि । आसादेस्सामो, आस्सादेस्सामो ॥

॥ इत्येकारविकरणः करादिगणो द्वितीयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ वैकल्पिकैकारविकरणाञ्चादि-स्तृतीयगणः ॥

अंच पूजायामङ्गसंकोचने च ।

अंचादिभ्यश्च ॥३।१।१०७॥

अंचादिगणपठितेभ्यो धातुभ्य एप्रत्ययो वा स्याद्भविष्यति चकारात्कृदाज्ञावर्त्तमानेषु । अंचेइ, अंचइ । अज्ज समुपार्जने । अज्जेइ, अज्जइ ॥

समोऽज्जस्यातस्त्तेंसुमाणेष्विणः ॥३।१॥१४५॥

समः परस्याज्जधातोरन्त्यस्याकारस्येणादेशः स्यात् त्ता-इंसु-माण प्रत्ययेषु । समज्जिणिंसु । आव प्राप्तौ । पावेइ, पावइ, पाविन्ति, पावन्ति । पावेमि । पाविहिति, पावेही । पाविहिसि ॥

पादावस्याउणो वा ॥३।१।१४६॥

पकारोपसर्गात्परस्यावधातोराउण इत्यादेशो वा स्यात् । पाउणति, पाउणइ, पाउणन्ति । पाउणेज्जा । पाउणिहिति । संपावेइ, संपाउणन्ति । संपाउणिज्जा, संपाउणेज्जा । संपाविहिइ । संपाउणिस्सामो । इक्ख दर्शने व्यक्तायां वाचि च । परस्वरलोपे, अणुक्खिस्सामि ॥

पोवाभ्यामिक्खस्येहः ॥३।१।१४७॥

पोवाभ्यामुपसर्गाभ्यां परस्येक्खधातोरिहादेशो वा स्यात् । अणुप्पेहन्ति । अब्भाइक्खइ, अब्भाइक्खन्ति ॥

Aho ! Shrutgyanam

अवाद्यः ॥३।१।१४८॥

अवोपसर्गात्परस्येक्खधातोरादेर्यकारादेशो वा स्यात् । अवयक्खइ । पक्षे परस्वरलोपे, अवक्खइ, अवयक्खन्ति । अवयक्खसि । अवयक्खह, अवक्खह । अवपेक्खइ । अवपेक्खह । उवेहइ । उवेहे । णिरिक्खइ ॥

पात्खस्य छः ॥३।१।१५०॥

पोपसर्गात्परस्येक्खधातोः खस्य छो वा स्यात् । ह्रस्वविकल्पे, पिच्छइ, पेच्छइ, पेहेइ, पेहेति, पेहइ, पेहति, पेच्छन्ति । पिच्छसि । पेच्छामि । नमादित्वात् । पेच्छिमो । पेहे ॥

आज्ञायां पेहे हस्य हौ ॥३।१।१५२॥

आज्ञार्थे पपूर्वकस्येहस्य हस्य लोपः स्यात् हौ परे । पेहि, पिच्छेह । पडियाइक्खेइ । पच्चुवेक्खेइ । पच्चुवेक्खइ । पच्चुवेक्खह । परिक्खेइ । परिक्खए । संपेहेइ । संपेहइ । संपेहति । संपेहेसि । संपेहेमि । ईर प्रेरणे । ईरइ । ईरन्ति । उदीरन्ति । उदीरेन्ति ॥

उदीरवेदसोभेभ्य इंसोरेदितः ॥३।१।१६७॥

एभ्यो धातुभ्यः परस्येंसुप्रत्ययस्येकारस्यैकारः स्यात् । उदीरेंसु । "उपधायाः" इत्यधिकारे—

पादीरस्य द्वित्वकणेषु ॥३।१।६४॥

पकारोपसर्गात्परस्येरधातोरुपधाया द्वित्वं स्यात्ति-क-णप्रत्ययेषु परेषु । परिपिल्लइ । उस निन्दायाम् ।

आत उसस्य तौ वा ॥३।१।८४॥

आकारोपसर्गात्परस्योसधातोरुपधाया द्वित्वं वा स्यात्तौ

Aho ! Shrutgyanam

परे । आउस्सति, आउसइ । कप्प छेदने सामर्थ्ये उत्पादने च । कप्पइ, कप्पेइ, कप्पेन्ति । पकप्पिन्ति । पकप्पयामो । कह कथने । कहेइ, कहन्ति ॥

कहस्य हौ ॥४।४।३०॥

कहधातोर्यगागमो वा स्यात् हौ परे । कहय । कुणादित्वात्, कहसु, कहाहि, । परिकहेइ, परिकहेन्ति । क्रिण क्षपणे । किणेइ । जाणादित्वात् । किणाइ । किणे ॥

वेः क्रिण इणस्य येह्योः ॥४।४।९३॥

वेरुपसर्गात्परस्मिन् क्रिणधातो विस्य समुदायस्य लोपो वा स्याद् यप्रत्यये एकारविकरणसहितहप्रत्यये च परे । विकेह । क्खा कथने । खाइ । संयुक्ते ह्रस्वः, खन्ति । अब्भक्खाइ ॥

आतः क्खो घवो वा ॥३।१।१५४॥

आकारोपसर्गात्परस्य क्खाधातोर्घवादेशो वा स्यात् । आघवेइ । आघवेज्ज ॥

आघं भूते ॥३।१।१५७॥

आपूर्वकक्खाधातोर्भूतेऽर्थे आघमिति निपात्यते । आघं । पच्चक्खाइ, पच्चक्खन्ति । पच्चक्खाएमि, पच्चक्खामि ॥

इतेज्जयोराहः ॥३।१।१५८॥

आतः परस्य क्खाधातोराहादेशः स्याद् इत-इज्जप्रत्ययोः परयोः । विआहिज्ज । क्खिव प्रेरणे ॥

उन्नेः क्खिवस्य वेः स्से ॥४।४।१००॥

उन्निपूर्वक क्खिवधातोरिकारसहितस्य वस्य लोपः स्या-

Aho ! Shrutgyanam

त्स्सप्रत्यये परे। उन्निक्खिस्सामि। निक्खिविस्सामि। खुभ संचलने ॥

खुभस्य तौ ॥३।१।७७॥

खुभधातोरुपधाया छित्वं स्यात्तौ परे। खुब्भइ। खुभ-एज्जा। गिण्ह ग्रहणे ॥

गिण्हस्य स्वार्थे ॥१।३।३०॥

गिण्हधातोरिकारस्य वृद्धिर्वा स्यात् स्वार्थे त्यादौ परे। गेण्हइ, गिण्हइ, गेण्हेइ, गिण्हेइ, गेण्हन्ति, गिण्हन्ति। गि-ण्हामि, गेण्हामो, गिण्हामो। गिण्हे, गिण्हिज्ज, गेण्हेज्ज, गेण्हेज्जा। गिण्ह, गिण्हाहि ॥

गिण्हस्य सस्सस्य केवलस्य घेच्छस्तेरिट् ॥३।१।१६१॥

स्सप्रत्ययसहितस्य गिण्हधातोः केवलस्य घेच्छादेशः स्यात्तेरिडागमः स्यात्। घेच्छिइ। केवलस्य किम्? अभिगि-ण्हिस्सामि ॥

घेच्छान्मेरीस् वा ॥३।१।१६३॥

घेच्छात्परस्य मिप्रत्ययस्येसादेशो वा स्यात्। घेच्छी, घिच्छामि, घेच्छामि ॥

घेच्छदाहवोच्छेभ्यश्च ॥४।४।७६॥

एभ्यः परस्य मेरन्त्यलोपो वा स्यात्। घेच्छं। गिल उद्गिरणे। उग्गिरेइ। अणुगिलन्ति। चल संचलने। चल-इ, चलन्ति, चलेन्ति ॥

Aho ! Shrutgyanam

पँचलजंभाभ्यामायः स्वार्थे ॥३।१।१६४॥

पकारोपसर्गपूर्वकचलधातोर्जंभधातोश्चायप्रत्ययः स्यात् स्वार्थे। पयलायंन्ति। पयलाएज्ज। चिट्ठ गतिनिवृत्तौ। चिट्ठइ, चिट्ठेइ, चिट्ठन्ति। चिट्ठामो। चिट्ठेह, चिट्ठह। अणुचिट्ठइ। उवचिट्ठइ। पडिच्चिट्ठइ॥

समाश्चिट्ठस्य खः ॥१।४।१४२॥

संपूर्वकस्य चिट्ठधातोरुपधायाः खकारो वा स्यादेतिमाणप्रत्ययेषु परेषु। संचिक्खइ। संचिट्ठेइ, संचिट्ठइ। संचिक्खे। च्छिन्द् छेदने॥

अणोणातिन्तित्तात्तुंतारेष्वेदः ॥४।४।१०३॥

च्छिन्द्भिन्दयोरिन्दस्यैद इत्यादेशो वा स्याद् अ-ण-ऊण-ति-न्ति-त्ता-त्तुं-तारप्रत्ययेषु परेषु। छेदेइ, छिन्दइ। छिन्दए। छेदिन्ति। छिन्दे, छिन्देज्जा, छिन्दिज्ज। छिन्द, छिन्दाहि॥

आतश्च्छिन्दाभिन्दयोरिन्दस्यायि ॥४।४।१०१॥

आपूर्वकयोरनयोरिन्दस्य लोपः स्यादेप्रत्यये परे। अच्छे। "अप्पेगे* पायमब्भे अप्पेगे पायमच्छे"। उच्छिन्दसु॥

समुदो हिन्तौ च ॥४।४।१०२॥

समुदः परयोरनयोरिन्दस्य लोपः स्यात् हिन्तिपरे चकारादेपरे। समुच्छे। समुच्छिहिन्ति। जम निवृत्तौ। उज्जमन्ति॥

---

* अप्येकः पादमाभिन्द्यात् अप्येकः पादमाच्छिन्द्यात् ॥ आचा० १-१-२-१६॥

नेर्जमस्य तिन्तित्तासु ॥१।३।६३॥

नेः परस्य जमधातोर्यच्छादेशः स्यात् ति-न्ति-त्ताप्रत्ययेषु परेषु । णियच्छइ, णियच्छन्ति । जय जिण जये । जयइ, जयति । जिणे । जिणेहि, जिणाहि । अयादित्वात्, जइत्था । पराइणइ । कुणादित्वात्, विजयसु । जर वयोहानौ । जरेइ ॥

नेर्जराद्वा ॥३।१।१६८॥

निपूर्वकजरधातोः परस्येंसुप्रत्ययस्यादेरेकारो वा । निज्जरिंसु, निज्जरेंसु । ट्ठा गतिनिवृत्तौ । ठाइ । अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेन्ति । अब्भुट्ठेमि, अब्भुट्ठामो ॥

ट्ठश्च ॥१।३।६८॥

ट्ठाधातोर्ह्रस्वोऽन्तादेशो वा स्यात् । अहिट्ठइ, अहिट्ठेइ ॥

एतष्ठः ॥३।१।२६॥

ट्ठाधातोः परस्यैप्रत्ययस्येडागमो वा स्यात् । अहिट्ठिए, अहिट्ठए । तव सन्तापे । तवेइ, तवइ, तवेन्ति, तवन्ति । तवइस्सन्ति । आयावयन्ति । आयाविज्जा । आयावेहि । ध्वंस नाशने । धंसइ ॥

अभेर्ध्वंसस्येज्जे ॥१।२।२६॥

अभेः परस्य ध्वंसधातोरादेर्लोपः स्यादिज्जे परे । समभिधंसेज्जा । धा धारणे पोषणे च । धकारस्य हकारे, निहे ॥

अपेरेति धि ॥१।३।६६॥

अपेरेकारोऽन्तादेशः स्यादेविकरणसहितनिप्रत्ययान्त-

Aho ! Shrutgyanam

धाधातो परे। पडिपेहेइ॥

एतिणेषु समो धो ह्रस्वः॥३।१।१६५॥

समः परस्य धाधातोराकारस्य ह्रस्वो वा स्याद् ए-ति-ण-प्रत्ययेषु परेषु। पडिसंधए। पडिसंधाएज्जा॥

परेर्धस्तेः॥३।१।२४॥

परिपूर्वकधाधातोः परस्य तिप्रत्ययस्येडागमः स्यात्। एवि-करणे, परिहेइ। विकरणाभावे इटि, परिहिइ। परिहिस्सामि, विहिस्सामो। संधेज्जा॥

समो धस्तेः॥४।४।४४॥

समः परस्माद्धाधातोर्विहितस्य तिप्रत्ययस्य आडागमो वा स्यात्। संधयाति, संधति। "हासं पि णो संधति पावधम्मे"[१]। एविकरणे ह्रस्वे, संधिस्सामि। धोव शुद्धौ॥

धोवस्य यः॥१।४।१४३॥

धोवधातोर्वकारस्य यकारो वा स्याद् अ-ति-न्त-इज्ज-ण-प्रत्ययेषु परेषु। धोयइ, धोवेइ, धोवइ, धोवंति। धोवेसि॥

एति धोवस्य॥३।१।१६६॥

धोवधातोरोकारस्य ह्रस्वः स्यादेप्रत्यये परे। धुवे, धोवेज्जा, धोएज्जा। पहोइज्ज, पधोएज्ज। ज्ञव ज्ञापने॥

आतो ज्ञवस्य नित्यम्॥१।२।२८॥

आकारात्परस्य ज्ञवधातोरादेर्लोपो नित्यम्। संयुक्ते ह्रस्वस्यापवादः। आणवेइ, आणवइ। गिलादित्वात्, आण-

१ हास्यमपि संधत्ते (संदध्यात्) पापधर्म्मान्। (सूय० १-१४-२१)

बयन्ति। पास दर्शने॥

तिहिलोपमिहमाणेषु पासस्य ॥३।१।८६॥

पासधातोरुपधाया द्वित्वं वा स्यादेषु परेषु। संयुक्ते ह्रस्वः पस्सइ, पासेइ, पासइ, पासति, पासन्ति। पस्सामि, पासामि, पासेमि, पासामो। पासए, पासेज्ज, पासेज्जा, पासेज्जासि। पासउ, पासतु। पस्स, पास, पस्सह, पासह। पासिहिति। पासिहिसि। पीड पील बाधायाम्। पीडाइ, पीडेइ, पीडइ। पीडामि। पीडे। पीलेइ। पीलिज्जा, पीलेज्जा। आवीलेइ। आवीलए, आवीलेज्जा। उवीलेति। पवीलिज्जा। भंस अधःपतने॥

भंसस्य केवलस्य तौ ॥३।१।८७

केवलस्य भंसधातोरुपधाया द्वित्वं वा स्यात्तौ परे। भस्सइ, भंसेइ, भंसइ। भंसेज्जा॥

परेर्भंसस्य तौ ॥३।१।८१॥

परेरुपसर्गात्परस्य भंसधातोरुपधाया द्वित्वं स्यात्तौ परे, परिभस्सइ। भास भाषणे॥

पाद्भासात्से: ॥३।१।५१॥

पकारोपसर्गकभासधातोः परस्य सिप्रत्ययस्यैकारोऽन्तादेशो वा स्यात्। पभाससे, पभाससि। मिला म्लाने। मिलायइ, मिलाएइ, मिलाइ, मिलायन्ति, पमिलायइ, पमिलाइ, पमिलायन्ति। परिमिलायन्ति। मुंच मोचने॥

Aho ! Shrutgyanam

मुंचस्य तिन्तिमिच्छिखणत्तुंतूणेषु ॥१।३।३१॥

मुंचधातोरुकारस्य वृद्धिर्वा स्यादेषु परेषु॥

मुंचस्य येऽनुस्वारस्य ॥४।४।१०५॥

अस्य धातोरनुस्वारस्य लोपः स्याद् यकारे परे। मुयइ, मोएइ, मुयंति, मोएन्ति, मोयन्ति,मुंचन्ति । मुंचामि, मोएमि। मुंच, मुत्र, कुणादित्वात्, मुंचसु मुयह ॥

मुंचसुणाभ्यां च्छिट् तौ ॥३।१।१९॥

आभ्यां भविष्यदर्थे च्छिट्प्रत्ययः स्यात् तौ परे। हि-स्सयोरपवादः। मोच्छिइ। रञ्ज रागे। रज्जइ ॥

उमिज्जयोर्जयोर्यः ॥३।२।२२॥

अस्य धातोर्जकारयोर्यकारः स्यादिज्जप्रत्यये परे उमिप्र-त्यये च। रइज्ज, रएज्ज। रुह प्रादुर्भावे ॥

आतो रुहस्य भस्तौ ॥१।४।१४४॥

आतः परस्य रुहधातोरुपधाया भकारो वा स्यात्तौपरे॥

आतो रुहस्य तित्ताकेषु ॥१।३।३२॥

आतः परस्य रुहधातोरुकारस्य वृद्धिर्वा ति-त्ता-क्तप्र-त्ययेषु। आरुभेइ, आरुभइ। आरोहइ, आरुहेइ, आरुहइ॥

दोरुहस्योतो दीर्घः ॥१।३।१००॥

दोरुपसर्गात्परस्य रुहधातोरुकारस्य दीर्घो वा स्यात्। दुरूहइ, दुरुहइ, दुरूहेइ, दुरुहेइ, दुरूहन्ति, दुरुहन्ति। दुरू-हामि, दुरुहामि। दुरूहेह, दुरुहेह ॥

Aho ! Shrutgyanam

ओतस्त्ति च ॥३।१।१६९॥

ओतः परस्य रुहधातोरुपधाया भकारः स्यात्ताप्रत्यये चात्तिप्रत्यये। पच्चोरुभइ, पच्चोरुहेइ, पच्चोरुहइ, पच्चोरुहन्ति। वृत्त वर्त्तने॥

तस्य टो वा वत्तस्य ॥३।१।१७०॥

वत्तस्य तस्य टो वा स्यात्। वट्टइ, वत्तेइ, वत्तेति, वत्तंति, वट्टन्ति। वत्तेह। वट्टिस्संति। वत्तइस्सामि, वत्तिहामि। वट्टिंसु। उव्वट्टेइ, उव्वत्तेइ। उव्वट्टेज्ज। उव्वट्टिस्सन्ति। उव्वट्टिंसु। उववट्टइ॥

उपसर्गाद्वस्य यः ॥३।१।१७१॥

उपसर्गात्परस्य वत्तधातोर्वस्य यो वा स्यात्। अणुपरियट्टइ। अणुपरियट्टिज्जा। अणुपरियट्टिस्सइ। नियट्टन्ति। तुयट्टइ, तुयट्टेइ, तुयट्टन्ति, तुअट्टन्ति। तुयट्टामो। तुयट्टेज्ज, तुअट्टेज्जा। तुयट्टेह। तुयट्टिस्सामो। पयट्टेइ। पवत्तइ। पयट्टन्ति। पयट्टिंसु। पडिणियत्तइ, पडिणियत्तन्ति॥

आतस्तेंसुणेषूस् ॥३।१।१७२॥

आकारोपसर्गात्परस्य वत्तधातोर्वस्योसादेशः स्यात् तइंसु-णप्रत्ययेषु। समाउट्टिंसु। वद् व्यक्तायां वाचि। वदइ, वदति, वयइ, वयति, वदेइ, वएइ, वयन्ति। वदसि, वयसि। वयामि, वयामो। वदे, वए, वइज्ज, वएज्जा। वयाहि, वदह, वयह। वदिहिति, वदिहिन्ति, वदेहिन्ति, वदिस्सन्ति, वइस्सन्ति। वइस्सामो॥

Aho ! Shrutgyanam

वदादासीः ॥३।१।४७॥

वद्धातोरासीप्रत्ययः स्याद्भूतेऽर्थे । वदासी, वयासी । वेद् वेदने । वेदेइ, वेदेति, वेयइ, वेएइ, वेदयन्ति, वेदेन्ति, वेयन्ति । सव निर्झरणे गर्भविमोचने च । सवइ । अभिणिस्सवइ, अभिणिस्सवेन्ति ॥

आपाभ्यां सवस्य ण्हो निर्झरणे वा ॥३।१।१७५॥

आभ्यां परस्य सवधातो ण्हादेशो वा स्यात्त्यादौ परे निर्झरणेऽर्थे । अण्हाति । ऊसवेइ । उस्सवेह । ऊसवेह । पसवइ । पसवन्ति । पसवामि । पज्जोसवेइ । साह कथने साधने सहगमने शासने च । साहेइ, साहइ, साहति, साहयति, साहयइ । साहे, साहए, साहिज्जा, साहिज्जासि । साहिस्सं ॥

साहहंदाभ्यां डिस् ॥३।१।१५॥

आज्ञायां साहहंदधात्वोः परस्य सिप्रत्ययस्य डिसादेशः स्यात् । पसाहि । सुण श्रवणे । सुणेइ, सुणेति, सुणइ, सुणन्ति । सुणेमि । नमादित्वात्, सुणिमो । सुणेहि, सुणेह, सुणाह ॥

सुणस्य सोच्छिः ॥३।१।१६२॥

सुणधातोः स्सप्रत्ययसहितस्य सोच्छि इत्यादेशो वा स्यात् । सोच्छिइ । सुणेस्सामो । हर हरणे । हराहि । हरेज्जा । अवहरइ । अवहरिंसु । आहरेइ । आहरेमि, आहारेमि । आहारिज्जा । आहारे । उद्धरेमि । नमादित्वात्, उद्धरिमो । उदाहरे, उयाहरे । उदाहरिस्सामि । णिहरइ,

Aho ! Shrutgyanam

निहरेइ, नीहरति । पडिसाहरति । पचुद्धरिस्सामि । परिहरेइ । विहरइ, विहरेइ । विहरिज्जामि ॥

॥ इति वैकल्पिकैकारविकरणाश्चादिस्तृतीयगणः ॥

अथ प्रेरणाप्रत्ययान्तप्रक्रिया ॥

प्रेरणायामावः ॥३।२।१॥

धातुभ्यः स्वार्थप्रयोजकव्यापाररूपप्रेरणार्थे आवप्रत्ययः स्यात्त्यादिप्रत्यये परे । अंछावेइ । अज्झावेइ ॥

अहेरेरावन्तावयः ॥३।२।२३॥

अहेरुपसर्गात्परस्येधातोरयादेशः स्यात् क्तिपरकावप्रत्यये । अज्झयाविन्ति ॥

पात्कडात्सर्वस्य ॥४।४।१०७॥

पपूर्वकात्कडधातोः परस्यावप्रत्ययस्य सर्वस्य लोपः स्यात् । पयडेमि । पयडसु ॥

आवश्च करादिभ्यः ॥३।२।३॥

करादिधातुभ्यः प्रेरणायामावप्रत्ययश्चकारादादिस्वरस्य वृद्धिः पर्यायेण स्यात् ॥

करगलोज्जलपज्जलविहडानामावे वा ॥३।२।४॥

एषामादिस्वरस्य वृद्धिर्वा स्यादावप्रत्यये ॥

* कर, गल, उ-ज्जल, प-ज्जल, भम, वम, परि-वस, वि-हड, एते-करादयः ॥

करादावस्यातः ॥४।४।१०६॥

करधातोः परस्यावप्रत्ययस्यादेराकारस्य लोपो वा स्यात् । प्रेरणार्थकप्रत्ययसहितस्य करादित्वादेप्रत्ययः। करावेइ, करावेइ, कारेइ, कारवेइ । कारवेमि । कारवे । करावेह, कारवेह, कारेह । उवक्खडावेइ, उवक्खडाविन्ति । उवक्खडावेहि, उवक्खडावेह । पडियारेह । पुक्कारेन्ति । सक्कारइ, सक्कारेइ, सक्कारेंति, सक्कारेन्ति । सक्कारेमि, सक्कारेमो । सक्कारए, सक्कारिज्जा । सक्कारेहि । सक्कारेहिन्ति ॥

कुप्पस्य पयोरिते च वः ॥३।२।५॥

कुप्पधातोरितिप्रत्यये चकारात्प्रेरणार्थे पद्वयस्य वः स्यात्। कोवए, कोवइज्जा। खेयावेइ ॥

पाक्खिवस्य च्छः ॥३।२।६॥

पकारोपसर्गात्परस्य क्खिवधातोः प्रेरणायां च्छादेशो वा स्यात् । पच्छावेइ । पक्खिवावेइ ॥

खमादीनामादेर्वृद्धिः ॥३।२।२॥

प्रेरणार्थे खमादीनामादिस्वरस्य वृद्धिः स्यात् । आवस्यापवादः । खामेइ । खोमेइ ॥

---

* खम, सम्-कम, किलिस्स, किलेस, कुप्प, क्खिव, खुभ, गल, आ-गास, गाह, उद्-वड, सम्-घड, चर, चल, निर्-जम, उद्-जोय, वि-ज्झाम, तर, तव, तुस, तास, दिस, नद, नम, नस्स, उद्-पज्ज, उव-पज्ज, निर्-पज्ज, सं-पडि-पज्ज, पड, फुड, बुज्झ, परि-भज, सम्-भर, भव, मर, लभ, लव, लुभ, आ-लोक, आ-लिप, अभि-वंद, वड्ढ, वद, वम, वर, वस, वह, निर्-वह, वि-वह, सम्-वह, विस, अणु-पा-विस-दीय,,

Aho ! Shrutgyanam

च्छोलादिभ्यो यः ॥३।२।१६॥

एभ्यः प्रेरणार्थे यप्रत्ययश्च स्यात् । उच्छोलयन्ति ॥

आवे जादीनामेकादेशस्य ह्रस्वः ॥३।२।७॥

जादिगणपठितानामावप्रत्यये परे एकादेशस्याकारस्य ह्रस्वो वा स्यात् । जवेन्ति, जाविन्ति, जावेन्ति ॥

उज्जोयज्झामयोर्वलोपौ ॥३।२।३२॥

अनयोरुपधाया वकारलोपौ वा स्यातां प्रेरणायाम् । उज्जोएइ, उज्जोवेइ ॥

ज्झामस्येज्जे ॥३।२।८॥

ज्झामधातोराकारस्य ह्रस्वो वा स्यादिज्जे परे । विज्झाएज्जा, विज्झवेज्ज, विज्झविज्जा । उवट्ठावेइ । उवट्ठाविन्ति । उवट्ठावएज्जा । उवट्ठावेह । पट्ठावेज्जा । तोसइ । अभितोसइज्जा । निहावए । परिहावेइ ॥

समो नद्धस्य दधयोर्हः ॥३।२।९॥

समः परस्य नद्धधातोर्दकारधकारयोर्हकारः स्यात्प्रेरणा-

व्वय, पडि-सड, आ-सद, प-सद, सह, उव-सम, ओ सम, नि-सम, वी-सम, सर, आ-सर, ओ-सर, प-सर, पडि-सर, सव, सिक्ख, सिव्व, सि-सीय, सुज्झ, वि-सुय, सेह, सोय, आ-ससस, वि-ससस, प-हण, संप-ओ-हण, आ-हर, णिर्-हर, प-हर, हा, एते, खमादयः ॥

+ च्छोल, नव, पीस, फुट्ट, रज्ज, रम, लूस, वर, विस, सर, हर, एते च्छोलादयः ॥

---

* जा, ... , न्हा, ...ड, ..., निर्‌वा, लुभ एते जादयः ॥

याम् । सन्नाहेइ, सण्णाहेइ, सण्णाहेन्ति ॥

नस्से दीर्घात् ॥१।२।२९॥

नस्सधातुसम्बन्धिनो दीर्घात्परस्य संयुक्तस्यादेर्लोपः स्यात् । नासिज्जा । पणासेइ । उवाइणावेइ, उवाइणावेति ॥

न्हो ण आवस्य ॥३।२।३३॥

न्हाधातोः परस्यावस्योपधाया णकारो वा स्यात् । ण्हावेइ, ण्हाणेन्ति, ण्हावेन्ति । ण्हाणेह ॥

पज्जस्य पयः ॥३।२।१०॥

पज्जधातोः पयादेशः प्रेरणायामर्थे । उप्पाएइ, उप्पाएन्ति । उप्पाएज्जा । विवाएमि । पाडेइ । पाडेसि ॥

उपसर्गात्पडस्य तः ॥३।२।३४॥

उपसर्गात्परस्य पडधातोरुपधायास्तकारादेशः स्यात्प्रेरणायाम् । अइवाइज्ज ॥

नेर्वा ॥३।२।३५॥

नेः परस्य पडधातोरुपधायास्तकारादेशो वा स्यात्प्रेरणायाम् । निवायए, निवायएज्जा, निवातएज्जा ॥

पान्न ॥ ३।२।३६॥

पकारोपसर्गात्परस्य पडधातोरुपधायास्तकारादेशो न स्यात् । पवाडेइ, पडिवायन्ति ॥

पो डजिः ॥३।२।१४॥

पाधातोर्डजिप्रत्ययो वा स्यात्प्रेरणायामर्थे । पज्जेइ, पज्जेन्ति पियावए, इत्यादि ॥

Aho ! Shrutgyanam

एन्ताहिष्विर्डजेः ॥३।२।१५॥

ए-न्त-हिप्रत्ययेषु परेषु डजिप्रत्ययस्यादेरिकारः स्यात्। पिज्जे। पिज्जाहि। फोडेन्ति। बीहावेइ॥

बीहस्येज्जे भेसः सावस्य ॥३।२।१६॥

प्रेरणायामावसहितस्य बीहधातोर्भेसादेशः स्यादिज्जप्रत्यये। भेसेज्जा। बोहेइ, बोहेन्ति। बोहेहि। पडिबोहेइ, पडिबोहइज्जा॥

भमाडुः ॥३।२।३७॥

भमधातोः परस्यावस्योपधाया डः स्यात्। भमाडेइ। भमाडेसु॥

भुंजस्य भोयो वा ॥३।२।१७॥

प्रेरणायामर्थे भुंजधातोर्भोयादेशो वा स्यात्। भोयावेइ। भुंजावेइ। भोयावेज्जा, भोयए॥

पान्मुंचात्ससस्य खड् ॥३।२।१८॥

पकारोपसर्गात्परस्मान्मुञ्चधातोः परस्य ससस्य खड् स्यात्प्रेरणायाम्। पमुक्खसि॥

रज्जस्येते च रंजः ॥३।२।२०॥

रज्जधातो रंजादेशः स्यादिते परे चात्प्रेरणायाम्। रंजयन्ति॥

रुहस्य वः ॥३।२।३८॥

रुहधातोरुपधाया वकारादेशः स्यात्प्रेरणायाम्। रोवावेइ। ववरोवेइ, ववरोवेति, ववरोवेन्ति। ववरोवेमो। ववरोवेज्जा। ववरोवेह। लूसयति॥

Aho ! Shrutgyanam

वड्ढस्य धो णमाणयोश्च ॥३।२।३६॥

अस्योपधाया धकारो वा स्यात् णमाणयोः परयोश्चात्प्रेरणायाम् । वद्धावेइ, वद्धावन्ति, वद्धाविन्ति, वद्धावेन्ति । वद्धावेहि । अणुप्पवेसेइ । अभिनिवेसए । णिवेसइ, णिवेसन्ति । निवेसेइ, निवेसयन्ति । उपधाया इत्यधिकृत्य,

व्वयस्य वः ॥३।२।३२॥

व्वयधातोरुपधाया वकारादेशः स्यात्प्रेरणायाम् । पव्वावेइ । पव्वावेज्ज । सारयति, सारयन्ति ॥

औ च सुज्झस्य सोहः ॥३।२।१३॥

प्रेरणार्थे इप्रत्यये च सुज्झधातोः सोहादेशः स्यात् । सोहेइ । विसोहेइ । विसोहेमि । विसोहिज्ज, विसोहेज्ज, विसोहेज्जा, विसोहए । आसासेइ, आसासन्ति ॥

आज्ञायामातः स्ससात्सेर्डिस् ॥३।२।३०॥

आज्ञायामाकारात्परस्य स्ससधातोः सिप्रत्ययस्य डिसादेशः स्यात् । अस्सासि, आसासि ॥

॥ इति प्रेरणाप्रत्ययान्तप्रक्रिया ॥

अथ क्रियासमभिहारप्रक्रिया ॥

व्यञ्जनादेर्द्विः क्रियासमभिहारे ॥३।१।१७६॥

व्यञ्जनादिकस्य धातोः क्रियायाः पौनःपुन्येऽतिशये वा द्योत्ये उपधाया द्वित्वं स्यात् ॥

आदेः सस्वरस्य ॥३।१।१७७॥

उक्तार्थे धातोः सस्वरस्यादेर्व्यञ्जनस्य द्वित्वं स्यात् ॥

Aho ! Shrutgyanam

द्विरुक्तस्यादेर्वृद्धिः ॥३।१।१७८॥

तस्मिन्नर्थे द्विरुक्तस्यादिस्वरस्य वृद्धिः स्यात् ॥

लवस्य पो बहुलम् ॥३।१।१७९॥

लवधातोर्वस्य पो बहुलं स्यात् । लालप्पमाणो। खोखुब्भमाणो । जायाई ॥

क्रमस्य चंकमः ॥३।१।१८०॥

उक्तेऽर्थे क्रमधातोश्चंकम इत्यादेशः स्यात् । चंकमन्तो । चंकम्ममाणो । चंकमिया चङ्क्रम्येत्यर्थः ॥

॥ इति क्रियासमभिहारप्रक्रिया ॥

अथ नामधातुप्रकरणम् ॥

आयस्तत्करोति ॥३।१।१८१॥

द्वितीयान्तान्नाम्नः करोतीत्यर्थे आयप्रत्ययः स्यात् ॥

आयान्ताश्च ॥१।१।१५॥

आयादिप्रत्ययान्ता धातुसंज्ञाः स्युः । अत्ताणं उस्सुयं करेति=उस्सुयायति ॥

अस्सुयान्माण आयस्य ॥४।४।१०८॥

उस्सुयशब्दात्परस्यायप्रत्ययस्य लोपः स्यान्माणप्रत्यये । उस्सुयमाणो ॥

अनुकरणधवलादिभ्यश्च* ॥४।४।१०९॥

अनुकरणशब्दाद्धवलादिभ्यश्च परस्यायप्रत्ययस्य लोपः

---

* धवल, झलहल, तंडव, तग्गु, दीह, पंसुल, पवित्त, पीण, मइल, वि-अंग, विडल, सिढिल, एते धवलादयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

स्यात् । धवलइ । झलहलइ । कहकहति, कहकहन्ति । आ-यप्रत्ययान्तानां केषाश्चित्करादित्वादेप्रत्यये, टिट्टियावेइ । तंडवेन्ति । तणुएन्ति । थक्कारेन्ति ॥

पंसुलादिभ्यष्टिमन्तार्थयोश्च ॥४।४।११०॥

एभ्यः परस्य मन्तप्रत्ययार्थकप्रत्ययस्य टेश्च लोपश्चका-रादायस्य लोपः । पंसुलं करोति=पंसेइ ॥

पवित्तस्य न्ते ॥४।४।२०॥

अस्य यगागमः स्यात् न्तप्रत्यये परे । पवित्तयन्तो ॥

ममान्न ॥४।४।११२॥

अस्मात्परस्यायप्रत्ययस्य लोपो न स्यात् । ममायए, ममा-यन्ति ॥

मिसिमिसेर्माणे दीर्घश्च ॥४।४।२१॥

अस्य माणप्रत्यये परे दीर्घोऽन्तादेशश्चकाराद् यगागमो वा स्यात् । मिसिमिसीयमाणो, मिसिमिसेमाणो, मिसिमि-सिमाणो ॥

उपमानादाचारे ॥३।१।१८२॥

उपमानवाचकान्नाम्न आचारेऽर्थे आयप्रत्ययः स्यात् । विज्झायन्ति ॥

आये विज्जोर्विज्जुयो वा ॥३।१।१८३॥

विज्जुशब्दस्यायप्रत्यये परे विज्जुय इत्यादेशो वा स्यात् । विज्जुयायन्ति ॥

Aho ! Shrutgyanam

विउसस्य द्विः सस्य ॥३।१।१८४॥

विउसशब्दस्य सकारस्य द्वित्वं स्यादायप्रत्यये परे । विउस्सन्ति ॥

धुत्तादारः ॥३।१।१८५॥

धुत्तशब्दाद्धुत्तेऽर्थे आरप्रत्ययः स्यात् । धुत्तारसि ॥

॥ इति नामधातुप्रकरणम् ॥

अथ भावकर्म्मप्रक्रिया ॥

भावकर्म्मणोरिज्जः ॥३।२।४०॥

भावकर्म्मवाचकत्यादिप्रत्यये परे धातोरिज्जप्रत्ययः स्यात् । वि+अंज=वंजिज्जइ । अच्चिज्जइ ॥

क्विणादीनामादिरहितानामिज्जे लोपः ॥३।२।४६॥

क्विणादिगणपठितानामादिवर्जितानां लोपः स्यादिज्जप्रत्यये भावकर्म्मणोः ॥

कत्तादिभ्योऽत् ॥३।२।४१॥

कत्तादिगणपठितेभ्यो धातुभ्यो भावे कर्मणि चात्प्रत्ययः स्यात् ॥

---

* क्विण, फर, प-फर, चिण, छिन्द, परा-जिण, भिंद, मर, एते क्विणादयः ॥

× कत्त, कर, क्खिव, अधि-गम, गिराह, वस, चंकम, च्छण, जिण, जुंज, डह, त्थुण, सं-दिस, दव, दह, धरिस, थुण, नस्स, पुर, बंध, भण, भज, भुंज, मुंच, रंभ, रुंभ, लिप, लुंप, लोक, वच्च, वह, सिंच, सुण, हण, हर, हस, एते कत्तादयः ॥

करस्य वा ॥३।२।५०॥

करधातोरिकारोऽन्तादेशो वा स्यादति परे ॥

करहरदिसानामीरादेः स्वरस्य ॥३।२।५१॥

एषामादेः स्वरस्येकारो वा स्यादति परे ॥

इः कत्ता-गिण्ह-डह-द्दह-वहानामति ॥३।२।४६॥

एषामिकारोऽन्तादेशः स्यादति परे। किचइ, किचन्ति ॥

कराद्वा ॥३।२।४२॥

करधातोः कर्मणि विकल्पेनाप्रत्ययः स्यात्त्यादौ। किज्जइ, कज्जइ, कज्जति। कीरइ। किज्जन्ति, कज्जन्ति, कीरन्ति। कीरए। किज्जउ। कज्जिस्सइ। धिक्कारिज्जइ। किज्जन्तु। आहिज्जइ, आहिज्जन्ति, आघविज्जन्ति ॥ उपधाया इत्यधिकृत्य,

क्खिवस्य पोऽइयोः ॥३।२।६५॥

अस्योपधायाः पकारः स्यादति प्रत्यये इप्रत्यये च। खिप्पइ। खिप्पउ॥

खान्नादुहाभ्य इज्जस्य ॥३।२।५५॥

एभ्यः परस्येज्जप्रत्ययस्यादेर्लोपः स्यात्। खज्जइ ॥

गमादीनामति द्विः ॥३।२।६६॥

एषामुपधाया द्वित्वं स्यादप्रत्यये। अधिगम्मइ ॥

---

* गम क्खिव, चंकम, छड्डण, जिण, जुंज, डह, त्थुण, दह, दिस, धम, धुण, बंध, भग, भज, भुंज, मुंच, रंभ, रुंभ, लंभ, लिप, लुंप, लोक, वह, सिच, सुण, हण, हस, एते गमादयः ॥

गादिभ्यो यः ॥३।२।४३॥

एभ्यः कर्मणि यप्रत्ययो वा स्यात् । पक्षे इज्जप्रत्ययः ॥

गाधाहां ये ॥३।२।५२॥

एषामीकारः स्याद्यप्रत्यये परे । उवगीयमाणो ॥

गिण्हस्य घेप्पः ॥३।२।५४॥

गिण्हधातोर्घेप्पादेशः स्याद्प्रत्यये। ह्रस्वविकल्पात्, घिप्पइ, घेप्पइ । घेप्पेज्ज ॥

अभिघट्टादियः ॥३।२।४४॥

अभिपूर्वकघट्टधातोरियप्रत्ययः स्यादुक्तेऽर्थे । अभिघट्टियमाणो ॥

घसादण् ॥३।२।४५॥

अस्मादुक्तेऽर्थेऽण्प्रत्ययः स्यात् । घासति, चिज्जन्ति । अवचिज्जन्ति । संचिज्जन्ति । छिज्जइ, छिज्जन्ति । छिज्जेज्ज । कादित्वात्, छिज्जिही । वोच्छिज्जिहिन्ति ॥

जिणान्मः प्रवर्त्तनायाम् ॥३।२।५६॥

प्रवर्तनार्थे जिणधातोरम्प्रत्ययः स्यात्कर्मणि। एदिज्जयोरपवादः ॥

जिणस्य चः ॥३।२।६७॥

जिणधातोरुपधायाश्चकारः स्यादप्रत्यये । जिच्चं । "कह-

+ गा, लक्ख, धा, ना, हा, एते गादयः ॥

---

* कथं नु जीयेतेदृक्षं (जीयते ईदृक्षः) जीयमानो न संविदे ॥ (उत्त० ७-२२) ॥

ण्णु जिचमेलिक्खं, जिच्चमाणो न संविदे"। डज्झइ, डज्झन्ति। डज्झेज्ज। डज्झिही॥

तरस्य वा ॥३।२।४८॥

तरधातोरादिवर्जितस्य लोपो वा स्यादिज्जे। तिज्जइ। तरिज्जइ॥

त्थुणधुणसुणानां वः ॥३।२।६८॥

त्थुणधुणसुणधातूनामुपधाया वकारादेशः स्यादकारे प्रत्यये। थुव्वइ॥

द्रवस्य दुयः ॥३।२।५७॥

अस्य धातोर्दुयादेशः स्यादप्रत्यये। दुयए॥

धरिसस्य धासः ॥३।२।५८॥

अस्य धास इत्यादेशः स्यादप्रत्यये। धासति। धुव्वए। पण्णायइ, पण्णायति, पण्णायन्ति। पक्षे, णज्जइ, नज्जइ, नज्जए॥

इज्जे दीर्घः फासस्य ॥३।२।५९॥

फासधातोर्दीर्घोऽन्तादेशः स्यादिज्जे परे। फासाइज्जमाणो॥

बंधस्य झः ॥३।२।६९॥

बन्धधातोरुपधाया झकारादेशः स्यादप्रत्यये। बज्झइ, बज्झन्ति। भन्नइ, भण्णइ, भण्णाति। भिज्जइ, भिज्जन्ति॥

उदोपडिभ्यो मो मिणः ॥३।२।६०॥

उद्-ओ-पडिभ्यो माधातोर्मिणादेशः स्यादिज्जे। उम्मिणिज्जइ। ओमिणिज्जइ। पडिमिणिज्जइ॥

Aho ! Shrutgyanam

लक्खाद्यस्येट् ॥३।२।६२॥

लक्खधातोः परस्य यप्रत्ययस्येडागमः स्यात्। लक्खिज्जइ। लक्खियसि॥

न्तेर्लभादेः ॥३।२।७०॥

लभधातोः परस्य न्तिप्रत्ययस्यैकारान्तादेशः स्यात्कर्म्मणि। उवलब्भन्ते॥

वस्योसतयोर्वच्चस्य ॥३।२।६३॥

वच्चधातोर्वस्योसादेशो वा स्यादप्रत्ययतप्रत्यययोः। पक्षे,

आदेरस्य॥३।२।६४॥

वच्चधातोरादेरस्योकारः स्यादप्रत्ययतप्रत्यययोः उच्चइ, उच्चति, उच्चए। वुच्चइ, वुच्चति, वुच्चए, वुच्चन्ति। पवुच्चइ ? सुव्वइ, सुव्वन्ति॥

हणस्य मः ॥३।२।७१॥

हणधातोरुपधाया मकारादेशः स्यादप्रत्यये। उवहम्मइ, उवहम्मन्ति। पडिहम्मति। पडिहम्मिहिति, पडिहम्मिस्सइ। विहम्मसि। विणिहम्मन्ति, अवहीरन्ति, अवहीरेन्ति। पहरिज्जइ। पहीयए। हुज्जामि॥

॥इति भावकर्मप्रक्रिया॥

इति श्रीलोङ्कागच्छान्तर्गतलिम्बडीसंप्रदायतिलकायमानपूज्यपादश्रीगुलाबचन्द्रजित्स्वामिचरणाम्बुजचञ्चरीकमुनिश्रीरत्नचन्द्रविरचितायां जैनसिद्धान्तकौमुद्यामाख्यातप्रक्रिया समाप्ता॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ कृदन्ते सम्बन्धार्थप्रक्रिया ॥

कृत् ॥३।३।१॥

धात्वधिकारे वक्ष्यमाणाः प्रत्ययाः कृत्संज्ञाः स्युः ॥

कर्त्तुरैक्ये पूर्वकाले त्तात्तूमूणेयाः ॥३।३।२॥

क्रिययोः कर्त्तुरभेदे पूर्वकाले वर्त्तमानाद्धातोस्त्ता-त्तु-उं-ऊण-इय-एते प्रत्ययाः स्युः । एकारविकरणे संयुक्ते ह्रस्वविकल्पे च, करित्ता, करेत्ता । कराविऊण, काराविऊण, करिय । गहिउं । चइत्तु ॥ उपधाया इत्यधिकृत्य,

कारवस्य यो वा त्तान्तयोः॥३।३।५७॥

प्रेरणार्थकप्रत्ययविशिष्टकरधातोरुपधाया वकारस्य यकारो वा स्यात् त्तान्तप्रत्यययोः । कारयित्ता ॥

पाउकरादेः ॥३।३।३॥

पाउपूर्वकात्करधातोस्त्तादिविषये एप्रत्ययः स्यात्। पाउकरे प्रादुष्कृत्येत्यर्थः ॥

अञ्जस्य त्ति णक् ॥४।४।४२॥

अञ्जधातोस्त्ताप्रत्यये परे णगागमः स्यात् । अञ्जणित्ता । संपूर्वकस्येणादेशे, समञ्जिणित्ता ॥

उपसर्गाड्डो वा ॥३।३।४॥

उपसर्गपूर्वकाद्धातोरुक्तेऽर्थे डप्रत्ययो वा स्यात् ॥

इप्रभृतिभ्यश्च ॥३।३।५॥

इप्रभृतिभ्यो धातुभ्योऽपि डप्रत्ययः स्यादुक्तेऽर्थे ॥

---

* इ, का, गिग्रह, चय, जय-यागे, छिद, दृा, दा, ना, चिव, भिद, भुंज, बन्ध, मु, मुण, हर, हा, एते इप्रभृतयः ।

Aho ! Shrutgyanam

इकाट्टादान्नाबुसुहाभ्यश्चिडुस्य ॥४।४।४५॥

एभ्यः परस्य डुप्रत्ययस्य चिडागमः स्यात् । इचा ॥

अतेरेयों डे ॥३।३।६॥

अतिपरस्येधातोर्यकारादेशः स्याद् डुप्रत्यये । अइयच्च । पडियच्च । अहीउं, अहिज्जिउं, अहित्ता, अहिज्जिऊण, अहिज्ज, अहिज्जित्ता ॥

पडेरेकादेशस्योत् ॥३।३।७॥

पडेरुपसर्गस्येधातोश्चैकादेशभूतेकारस्योकारः स्याड्डुप्रत्यये । पडुच्च ॥

पतेर्दीर्घस्त्त इट् ॥३।३।८॥

पतिपूर्वकस्येधातोर्दीर्घः स्यात् त्ताप्रत्ययस्येडागमश्च । पत्तियाइत्ता । पेच्च, पेच्चा । समिच्चा, समेच्च । समुविच्च ।

पेसादेरियस्यादितः ॥३।३।१०॥

पेसादिगणपठितेभ्यो धातुभ्यः परस्येयप्रत्ययावयवस्येकारस्याकारः स्यात् । प+इस=पेसाय । जहाय । विप्पजहाय । आयाय । समुदाय । पडिसंधाय । विनिधाय । गहाय । आधायाय ॥

पेहादिभ्यो यस्यैत् ॥३।३।११॥

एभ्यः परस्येयप्रत्ययस्य यस्यैकारो वा स्यात् । पेहाए,

+ प-इस, प-इक्ख, गह, घात, जहा, वि-प्प-जहा, आ-दा, सम्-उ-दा, पडि-सम-धा, वि-नि-धा, एते पेसादयः ।

* प-ईह, प-सार, णि-स्सय, एते पेहादयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

पेहाय। संपेहाए, संपेहाय। पसारिए। "पाए पसारिए वा-वि, न चिट्ठे गुरुणंतिए"॥ णिस्साए॥

इः काढ्योः ॥३।३।१२॥

काढ्धात्वोरिकारोऽन्तादेशः स्यात्तुप्रत्यये। किच्चा, किच्च। ठिच्चा, ठिच। वा० (काहराभ्यां ट्टरलोपश्च वक्तव्यः) कट्टु। हट्टु॥

किट्टादिभ्यस्तयोर्यः ॥३।३।६१॥

किट्टादिगणपठितधातुभ्यः परस्य त्ताप्रत्ययस्य द्वयोस्तकारयोर्यकारादेशो वा स्यात्। किट्टित्ता, किट्टिया। पेहिया। संपेहिया। क्खिवस्योपधायाः पादेशे, उक्खिवप्प॥

गममन्नादिसहणेभ्यस्तात्तुतव्वाडितोऽनिटो णत्त-योर्मः ॥३।३।१६॥

एभ्यः पर एते प्रत्यया डितोऽनिटश्च स्युर्णत्तयोर्मकारादेशश्च स्यात्॥

त्तात्त्वोरादितलोपः ॥३।३।१७॥

एभ्यः परयोस्तात्तुप्रत्यययोरादेर्लोपः स्यात्। गंता॥

आतो गमात्तो वेट् ॥३।३।२२॥

आतः परस्माद्गमधातोः परस्य त्ताप्रत्ययस्येडागमो वा

× पादौ प्रसार्य वापि न तिष्ठेद्गुर्वन्तिके॥ उत्त० १-१६॥

१- किट्ट, प-इह, जाण, उद्-जाल, प-गुल्ल, ओ-तार, आ-ताव, तुल, सम्-वट्ट, धुण, पज्ज, पाल, फास, बुज्झ, भुंज, लंब, लभ, ला, वार, निर्-वाव, सक्क, सव, सिंच, सेह, सोह, हण, हर, हुण, एते किट्टादयः॥

Aho ! Shrutgyanam

स्यात् । आगमित्ता, आगन्ता, इडागमे तकारस्यानादित्वान्न लोपः ॥

गमागिण्हलुभदिसबुमुंचलभेभ्यस्त्तोरनुस्वारः ॥३।३।२३॥

एभ्यो धातुभ्यः परस्य त्तुप्रत्ययस्यानुस्वारान्तागमः स्यात् । गंतुं । अब्भुवगंतुं ॥

गमगिण्हच्छिंदभिंदेभ्यो वा ॥३।३।२७॥

एभ्यः परस्योणप्रत्ययस्य तडागमो वा स्यात् ॥

ऊणस्य वा ॥३।३।२४॥

ऊणप्रत्ययस्यानुस्वारान्तागमो वा स्यात् । गन्तूणं, गमिऊण ॥

डस्येऽकंखाद्दीर्घश्च वा ॥३।३।२८॥

कंखभिन्नधातोः परस्य डप्रत्ययस्येडागमः स्याद्विकल्पेन दीर्घश्च । उववज्ज । पकत्थ । अइक्कम्म ।आगम्म । अकंखादिति किम् ? अभिकंख ॥

त्तुंतूणतव्वेषु घेत् ॥३।३।३१॥

गिण्हधातोस्त्तुंतूणतव्वप्रत्ययेषु घेदादेशः स्यात् । घेत्तुं, घित्तुं, घेत्तूण ॥

गिण्हस्य णलोपोऽडयोः ॥३।३।२६॥

गिण्हधातोर्णकारस्य लोपः स्याद्डयोः परयोः। गिज्झ। परिगिज्झ ॥

उपसर्गादिये गिज्झः ॥३।३।३२॥

उपसर्गात्परस्य गिग्रहधातोर्गिज्झादेशः स्यादियप्रत्यये। ओगिज्झिय । निगिज्झिय । परिगिज्झिय ॥

वेश्चिन्तस्येरहितस्येयत्वोः ॥३।३।३३॥

वेरुपसर्गात्परस्य चिंतधातोरिकाररहितस्य लोपः स्यादियत्तुप्रत्यययोः परयोः। अणुवीइत्तु, वीइय ॥

अणोर्यस्य च ३।३।३४॥

अणुविपूर्वकस्य चिन्तधातोरियप्रत्ययस्य यकारस्य चकारादिरहितस्य लोपः स्यात्। अणुवीइ ॥

उदस्ति ॥४।४।१७॥

उदः परस्य चिणधातोरिणस्य लोपः स्यात् त्वाप्रत्यये परे। उच्चित्ता ॥

उमूणयोर्निरः ॥४।४।१६॥

निरः परस्य चिणधातोरिणस्य लोपः स्यादुम्-ऊणयोः परयोः। निच्चिउं, निच्चिऊण ॥

च्चयछिंदपिवभिदभुजहराणां डे चः ॥३।३।५८॥

एषामुपधायाश्चकारादेशः स्यात्तुप्रत्यये।

छिक्कस्य त्ति दीर्घकलोपौ ॥३।३।१५॥

छिक्कधातोरिकारस्य दीर्घः ककारयोर्लोपश्च स्यात्त्वाप्रत्यये। छीइत्ता ॥

चयस्यादेः ॥३।३।१३॥

चयधातोरादेरकारस्येकारः स्यात्तुप्रत्यये। चिच्चा।

Aho ! Shrutgyanam

परिच्चयस्य जः ॥३।३।५६॥

परिपूर्वकच्चयधातोरुपधाया जकारादेशः स्याल्लुप्रत्यये। परिच्चज्ज। विभज्ज॥

छुभभुंजमुंचदिसलभेभ्यस्तड्डूणस्य डिच्च ॥३।३।२६॥

एभ्यः परस्योणप्रत्ययस्य तडागमः स्यात्स च डित्। इटोऽपवादः॥

त्तुत्तूणयोश्छुभस्य छोहः ॥३।३।२५॥

छुभधातोश्छोहादेशः स्यात् त्तुत्तूणयोः परयोः॥

छुभदिसमुंचपरिभुंजलभेभ्यस्तुः ॥३।३।१८॥

एभ्यः परस्तुप्रत्ययो डिदनिट् च स्यात्। छोढुं, छोढूण॥

ऊणे निरो जिणस्य ॥४।४।६८॥

निरः परस्य जिणधातोरिणस्य लोपः स्यादूणप्रत्यये। निज्जिऊण॥

यागे जयस्य जिठः ॥३।३।१४॥

जयधातोर्जिठादेशः स्याद्यागेऽर्थे डप्रत्यये परे। जिट्ठा॥

ह्वरोहयोः पः ॥३।३।६०॥

अनयोरुपधायाः पकारादेशः स्याल्लुप्रत्यये। परिह्वप्प। आरोप्प॥

तक्कादिभ्यो णङ् मपरको वा त्तः ॥४।४।४७॥

एभ्यो धातुभ्यः परस्य त्ताप्रत्ययस्य णगागमः स्यात् स च विकल्पेन मपरकः स्यात्। तक्कियाणं। णिक्कुणित्ताण।

* तक्क, धुगा, पील, लंब, वज्ज, सब, एते तक्कादयः।

१ अत्राकार उच्चारणार्थः।

आवीलियाण । परिवीलियाण । परिवज्जियाण । परिसाविपाण ॥

उमि समस्थोस्त्थुणस्य सेटः ॥३।३।३६॥

समः परस्य त्थुणधातोरिट्सहितस्य थो इत्यादेशः स्यादुमि परे । संथोउं । वा० (त्ति त्थंभस्यादेष्ठो वा वक्तव्यः) । उट्ठंभिया ॥

दिसात्तव्वतारत्तुंतूणानां तस्य ठोऽदितः ॥३।३।३७॥

दिसधातोः परेषामेषां तकारस्य ठकारो दिसस्येकारस्याकारश्च स्यात् । दट्ठुं, दट्ठूण । दिस्स । दिस्सा । पदेस्सा ॥

उदो धरात्तोः ॥३।३।२५॥

उत्पूर्वकधरधातोः परस्य त्तुप्रत्ययस्यानुस्वारान्तागमो वा स्यात् । उद्धत्तुं, उद्धत्तु ॥

धुणस्य धूयः सेयस्य ॥३।३।३८॥

इयप्रत्ययसहितस्य धुणस्य धूयादेशो वा स्यात् । निद्धूय । संविहूय । संविधुणिय ॥

वेर्नेरदिट् त्तोः[1] ॥३।३।३६॥

वेः परस्य नेधातोरकारोऽन्तादेशस्त्तोरिडागमश्च । विणइत्तु ॥

ईरिये ॥३।३।४२॥

वेः परस्मान्नेधातोरेकारादियप्रत्ययावयवेकारे परे पूर्वपरयोरीकारादेशः स्यात् । विणीय ॥

---

१ अनिट्त्वादिटोऽप्राप्तौ वचनम् ॥

न्तेययोश्चानोः ॥३।१।८०॥

अनोः परस्य पासधातोरुपधाया छित्वं स्यात् न्त-इयप्रत्यययोः परयोश्चकारादिनि परे । अणुपस्सिय ॥

बोरावस्य याट् ॥४।४।४३॥

बुधातोः परस्यावप्रत्ययस्य याडागमः स्यात् त्ताप्रत्यये । बुयावेत्ता ॥

भुंजस्य भोस्त्ति ॥३।३।४७॥

भुंजधातोर्भो इत्यादेशो वा स्यात् त्ताप्रत्यये परे । भोत्ता, भुंजित्ता, भुंजिया ॥

भुंजात्तारश्च ॥३।३।४४॥

भुंजात्तारप्रत्ययश्चकारात् त्तूणप्रत्ययो णित् स्यात् । भोत्तूण ॥

अनिटौ त्तएत्तू ॥३।३।४५॥

भुंजधातोः परावनिटावेतौ णितौ स्तः । परिभोत्तु । केवलात्तोः, सेट्त्वात्, भुंजित्तु । वा० (मन्ने न्नस्य तो वावक्तव्यस्ति) मत्ता, मंता ॥

मुंचात् त्तूणो णित् ॥३।३।४३॥

अस्मात्परस्त्तूणप्रत्ययो णित् स्यात् । मोत्तुं, मोत्तूण, मुत्तूण ॥

मुज्झस्य मोहोऽतव्वे कृति ॥३।३।४१॥

मुज्झधातोर्मोहादेशः स्यात्तव्वभिन्ने कृति परे । विमोहित्ता ॥

Aho ! Shrutgyanam

आतो रंभस्य ढत्तं सडस्य ॥३।३।४८॥

आकारात्परस्य रंभधातोर्ईप्रत्ययसहितस्य ढत्तमिति वा निपात्यते । आढत्तं । "ईतो आढत्तं"[1] । समारब्भ, समारभित्ता । संलप्प ॥

अत्तयोः केवलस्य ॥४।४।३६॥

उपसर्गरहितस्य लभधातोर्लस्यानुस्वारागमो वा स्याद् अत्ताप्रत्यययोः परयोः । लंभित्ता, लभित्ता, लद्धुं, लद्धूण ॥

अभेस्त्ते ॥४।१।३४॥

अभेः परस्य वड्ढधातोरादेरकारस्योकारः स्यात् त्ताप्रत्यये परे । अभिवुड्ढित्ता ॥

नेस्तातित्तामाणेषु ॥४।१।३५॥

नेः परस्य वड्ढधातोरादेरकारस्योकारः स्यात् त्ताप्रत्यये माणप्रत्यये तत्योश्च । णिवुड्ढित्ता ॥

अभेरूणे वन्दस्य वाः ॥३।३।५०॥

अभेरुपसर्गात्परस्य वन्दधातोर्वादेशः स्याद् ऊणप्रत्यये परे । अभिवाइऊण ॥

वरस्य वासस्त्तेतोः ॥३।३।५२॥

वरसधातोर्वासादेशः स्यात् त्ताप्रत्यये तुप्रत्यययोः परयोः । वासित्ता । विदित्ता, विइत्ता ॥

ओः समस्य वस्त्तातयोः ॥३।३।६३॥

ओकारोपसर्गात्परस्य समधातोरुपधाया वकारः स्यात् त्ताइतप्रत्यययोः परयोः । विओसवित्ता ॥

---

१ इत आरम्भ । (पन्न० १८) ॥

व्युदश्चामिये ॥३।१।१३३॥

विउद्भ्यां परस्य स्विदधातोः स इत्यादेशः स्यादियप्रत्यये । विउस्सिय ॥

समाभ्यां सीयस्य सज्जः ॥३।३।५४॥

सम् आपरस्य सीयधातोः सज्जादेशः स्यात्तुमत्यये । समासज्ज ॥

केवलात्सुणादुमूणयोः ॥३।१।३०॥

उपसर्गरहितात्सुणधातोः परयोरनयोरिडागमो न स्यात् ॥

अनिटोरुमूणयोः सोः ॥३।३।५६॥

सुणधातोः सो इत्यादेशः स्यादनिटि उमि ऊणे च । सोउं, सोऊण ॥

सुणस्य सोच्चः ॥३।३।५५॥

सुणधातोः सोच्च इत्यादेशः स्यात्तुमत्यये । सुच्चा, सोच्चा ॥

हणस्य हस्य हुरिये ॥१।३।१३॥

आकारोपसर्गात्परस्य हणधातोर्हकारस्य हुः स्यादिये परे । आहुणिय ॥

हस्त्ति च ॥४।४।२२॥

हाधातोस्त्तामत्ययेऽपि यगागमः स्यात् । हाएत्ता ॥

हए ॥३।३।९॥

हाधातोरेकारान्तादेशः स्यात्तुमत्यये । हेच्च ॥

॥ इति कृदन्ते सम्बन्धार्थप्रक्रिया ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ कृदन्ते हेत्वर्थप्राक्रिया ॥

त्तएत्तुमुमः क्रियार्थायां क्रियायाम् ।।३।३।६४ ॥

किञ्चित्क्रियाप्रयोजनिकायाः क्रियाया विवक्षायां धातोर्भविष्यदर्थे त्तए-त्तुम्-उम्-एते प्रत्ययाः स्युः। करित्तए। पकरेत्तए। वागरित्तए। वियागरित्तए। कारवेत्तए, काराविन्तए, कारावेत्तए ॥

उवादयादिटो वा त्तययि ॥४।४।४८॥

उवोपसर्गादयधातोः परस्येडागमस्य णगागमो वा स्यात् त्तएप्रत्यये। उवाइणित्तए, उवाइत्तए ॥

पलायादुमि सेटो यस्यैः ॥३।३।६५॥

पलापूर्वकादयधातोरिट्सहितस्य यस्यैकारादेशः स्यादुमि प्रत्यये परे। पलाएउं ॥

परेश्चयात् त्तएः ॥३।३।१६॥

परिपूर्वकात् चयधातोः परस्त्तएप्रत्ययो डित् अनिट् च स्यात्। परिचत्तए ॥

चरादएण् च ॥३।३।६७॥

चरधातोरुक्तेऽर्थेऽएण्प्रत्ययश्च स्यात्। चारए ॥

नेर्जुंजस्य योयः ॥३।३।६६॥

नेः परस्य जुंजधातोर्योयादेशः स्यादुमि परे। निओइउं ॥

दिसात् त्तुम् ॥३।३।४६॥

दिसधातोः परस्त्तुम्प्रत्ययो णित् स्यात्। उद्देट्ठुं।

Aho ! Shrutgyanam

धरस्य त्तुंतुमोः ॥४।४।११॥

धरधातो रस्य लोपः स्यात् त्तुंतुमोः परयोः । समुद्धत्तुं ॥

पाचसाभ्यां वा ॥३।१।२५॥

पावसधातुभ्यां परस्य त्तणप्रत्ययस्येडागमो वा स्यात् । पाइत्तण । पक्षे,

पाऽनिटस्त्तणः ॥३।३।६२॥

पाधातोः परस्यानिटस्त्तणप्रत्ययस्य तकारस्येयकारः स्यात् । पायण ॥

भुंजाऽकेवलात् ॥३।३।२०॥

उपसर्गरहिताद्भुंजधातोः परस्त्तणप्रत्ययो डिदनिट् च स्यात् । भुत्तण, भोत्तण । केवलादिति किम्?, संभुंजित्तण ॥

आदेतौ वंदात् ॥ ३।३।६८॥

वंदधातोस्त्तणविषये आप्रत्ययएप्रत्ययौ भवतः । अभिवंदए, अभिवंदआ, अभिवंदित्तण, अभिवंदिउं । "निज्जाइस्सामि महावीरं अभिवंदए"[1] "महावीरं अभिवंदआ"[2]

वच्चात् तुंतारतव्वा डितः ॥३।३।६९॥

वच्चधातोः परे तुंतारतव्वप्रत्यया डितः स्युः । वत्तुं ॥

उमि वा ॥३।३।५३॥

चरसधातोर्वासादेशो वा स्यात्तुमि परे । वासिउं । पक्षे,

चरसे सस्य णोमोरनादेशे ॥३।३।४०॥

अनादेशचरसधातुघटकस्य सस्येडागमः स्यात्तुमि परे णे

१ निर्यास्यामि महावीरमभिवन्दितुम् । (ओव० २९) ।

२ महावीरमभिवन्दितुम् । (ओव० ३०) ।

Aho ! Shrutgyanam

परे च । वरिसेउं ॥

वसाच्च ॥३।३।२१॥

वसधातोः परस्त्तएप्रत्ययो डित्स्यात् । वसित्तए, वत्थए॥

॥ इति कृदन्ते हेत्वर्थप्रक्रिया ॥

अथ कृदन्ते वर्त्तमानप्रक्रिया ॥

वर्त्तमाने न्तमाणावप्रधाने ॥३।४।१॥

ययोर्धात्वर्थयोरेक एव कर्त्ता तयोरप्रधानक्रियावाचका-द्धातोर्वर्त्तमाने न्तमाणप्रत्ययौ स्तः । करिन्तो, करेन्तो, कज्ज-माणो, किज्जमाणो, कीरन्तो, कीरमाणो । धिक्कारिज्जमाणो । पकरमाणो । पुक्करन्तो । वागरमाणो, वियागरेमाणो । "स-मोऽतः" इत्यादिनेणादेशे, समज्जिणमाणो ॥

मस्यात्थमस्य न्ते लोपः ॥३।४।३॥

अत्थमधातोर्मस्य लोपः स्यात् न्तप्रत्यये परे । अत्थन्तो॥

आसादीणड् ॥३।४।२॥

आसधातोर्वर्त्तमानेऽर्थे ईणड्प्रत्ययः स्यात् । आसीणो॥

न्तमाणयोरातो ज्जगः ॥४।४।८६॥

आकारोपसर्गात्परस्येधातोर्ज्जगागमः स्यात् न्तमाणप्र-त्यययोः परयो । एज्जन्तो, एज्जमाणो । पादेरित्यादिना चेटि, पेच्चमाणो ॥

पडेर्माणे ॥३।१।१५१॥

पडेरुपसर्गात्परस्येक्खधातोः खकारस्य च्छकारः स्या-न्माणप्रत्यये । पडिच्छमाणो ॥

Aho ! Shrutgyanam

पपलिभ्यां माणेतयोः ॥३।१।६७॥

आभ्यां परस्योंजधातोरुपधाया छित्वं स्यात् क्रमेण माणे इते च परे। पउज्झमाणो ॥

आयो माणे कर्मणि ॥४।४।९९॥

वेरुपसर्गात्परस्य क्किणाधातोरिणस्यायादेशः स्यात्कर्मणि माणप्रत्यये परे। विक्कायमाणो। पच्चक्खन्तो ॥

पच्चक्खो माणे ह्रस्वः ॥३।४।१०॥

पतिआपूर्वकस्य क्खाधातोरन्त्यस्य ह्रस्वः स्यान्माणप्रत्यये परे। पच्चक्खमाणो। एप्रत्ययेन व्यवधानान्न ह्रस्वः, पच्चक्खाएमाणो ॥

उवाद्गमस्य न्ते ॥३।२।४७॥

उवात्परस्य गमधातोरन्त्यस्य लोपः स्यात् न्तप्रत्यये परे। उवगन्तो ॥

न्तस्य खावादियद् ॥४।४।५१॥

आवप्रत्ययान्तखाधातोः परस्य न्तप्रत्ययस्येयडागमः स्यात्। खावियन्तो ॥

समो माणे ॥३।१।७८॥

समः परस्य खुभधातोरुपधाया छित्वं स्यान्माणप्रत्यये परे। संखुब्भमाणो। घिप्पमाणो ॥

परेराति माणे ॥३।३।२०॥

परेः परस्य गिण्हधातोर्णकारस्य लोपः स्यान्माणप्रत्ययपरके अप्रत्यये परे। परिगिज्झमाणो ॥

Aho ! Shrutgyanam

विगोवदलयोर्माणे ॥४।४।३१॥

अनयोर्माणप्रत्यये परे यगागमो वा स्यात्। विगोवयमाणो, विगोवेमाणो ॥

आग्घादीनां माणे ॥४।४।२३॥

एषां धातूनां यगागमः स्यान्माणे परे । अग्घायमाणो, आग्घायमाणो । गायमाणो । जायमाणो ।

वेश्छड्डस्येयक् ॥४।४।५२॥

वेश्यमुपसर्गात्परस्य छड्डधातोरियगागमो वा स्यान्माणप्रत्यये। विच्छड्डियमाणो, विच्छड्डेमाणो ॥

जणादीनां न्ते ॥४।४।२४॥

जणादिधातूनां न्ते परे यगागमः स्यात् । जणयन्तो । गायन्तो । समावयन्तो ॥

ङराढः ॥३।४।११॥

आपूर्वकस्य ढाधातोरिकारोऽन्तादेशो वा स्यान्माणप्रत्यये परे । आढियमाणो । आढायमाणो । प्रकृतिभावे, आढाइज्जमाणो । पूर्वस्वरलोपे, आढिज्जमाणो ॥

तिप्पदादरिसानां न्ते ॥४।४।३२॥

एषां धातूनां न्ते परे यगागमो वा स्यात्। तिप्पयन्तो,

---

* आ-ग्घा, गा, जा, निर्-जा, ज्झा, नि-ज्झा, झिया, ढा, आ-ढा, निर्-ढा, न्हा, वु, वा, हा, ओ-हा, परि-हा, एते आग्घादयः ॥

* जण, सम्-आव, कित्त, गा, ज्झा, तज्ज, आ-दा, आ-दाव, दीव, धा, पूर, फास, वु, नि-मज्ज, मिला, आ-यर, अणु-वट्ट, वेर, आ-यर, हा, सिक्खा, परि-हा, हील, एते जणादयः ।

तिप्पन्तो। दायन्तो, देन्तो, दिन्तो। दरिसयन्तो, दरिसन्तो॥

आतस्तुडस्येज्जे ॥१।३।३३॥

आतः परस्य तुडधातोरुकारस्य वृद्धिः स्यादिज्जे परे। आतोडिज्जमाणो॥

बुसद्दहाभ्यां माणस्यादेः ॥४।४।११५॥

बुधातोः सदुपपदकाद्दहधातोश्च विहितस्य माणप्रत्ययस्यादेर्मकारस्य लोपो वा स्यात्। सद्दहाणो, सद्दहमाणो। बुयाणो, बुयमाणो॥

माणे वा ॥१।४।१२४॥

दिसधातोरुपधाया इकारो वा स्यान्माणप्रत्यये परे। देहमाणो, देसमाणो॥

आवे दो द्वस्त्तएमाणयोः ॥३।४।८॥

आवप्रत्यये परे दाधातोर्द्वादेशः स्यात् त्तएमाणप्रत्यययोः परयोः। दवावेमाणो॥

दुसस्य माणे ॥३।१।७०॥

दुसधातोरुपधाया द्वित्वं स्यान्माणप्रत्यये परे। दुस्समाणो॥

उदः कसस्य वा ॥३।१।७२॥

उदः परस्य कसधातोरुपधाया द्वित्वं वा स्यान्माणप्रत्यये परे। उक्कस्समाणो, उक्कसमाणो। उपधाया इत्यधिकृत्य,

धावस्येतमाणयोर्यः ॥३।४।१२॥

धावधातोरुपधाया यकारादेशो वा स्यादितमाणयोः परयोः। उद्धायमाणो। परिधावमाणो॥

Aho ! Shrutgyanam

न्ते वा ॥३।१।११९॥

वीहधातोर्भयादेशो वा स्यात् न्तप्रत्यये परे। भयन्तो, वीहन्तो, भयमाणो ॥

न्ते परेः ॥३।२।६१॥

परेः परस्य माधातोर्मिणादेशः स्यात् न्तप्रत्यये परे। परिमिणन्तो। वा० (रंभस्य न्तेऽनुस्वारस्य लोपो वाच्यः)। आरमन्तो ॥

न्ते वा ॥३।२।२१॥

रञ्जधातो रंगादेशो वा स्यात् न्ते परे। रंगन्तो, रञ्जन्तो॥

पाल्लियस्यादेः ॥३।४।४॥

पकारोपसर्गात्परस्य ल्लियधातोरादेर्लोपः स्यात् ॥

इतो दीर्घश्च वा माणे ॥३।४।६॥

ल्लियधातोरिकारस्य दीर्घश्चाल्ले इत्यादेशो वा स्याम्माणे परे। पलीयमाणो पल्लेमाणो ॥

न्तेज्जयोर्ली: ॥३।४।७॥

ल्लियधातोर्ली इत्यादेशः स्यात् न्तप्रत्ययेज्जप्रत्यययोः। निलिन्तो ॥

माणे वायः प्रेरणायाम् ॥३।३।५१॥

अभेः परस्य वंदधातोर्वायादेशः स्यान्माणप्रत्यये परे प्रेरणायाम्। अभिवायमाणो ॥

वच्चाद्भविष्यति च माणश्चस्य क्खः ॥३।४।६॥

वच्चधातोर्भविष्यदर्थेऽपि माणप्रत्ययः स्यात् धातोश्चस्य क्खादेशश्च। वक्खमाणो ॥

Aho ! Shrutgyanam

न्ते वा ॥१।४।१३०॥

वहधातोरुपधाया द्वित्वं झकारादेशश्च न्ते परे वा स्यात् ॥

न्ते द्वित्वे ॥३।१।१३१॥

वहधातोरकारस्योकारः स्यात् न्तप्रत्यये परे उपधाया द्वित्वे सति । वोज्झन्तो, वहन्तो ॥

कर्मणि चाति ॥१।४।१२६॥

वहधातोरुपधाया झकारादेशो द्वित्वमकारस्योकारश्च स्यात् कर्मवाच्येऽप्रत्यये परेऽपि । उवुज्झमाणो ॥

परेर्हो न्तमाणयोर्न ॥३।२।५३॥

परेरुपसर्गात्परस्य हाधातोरीकारोऽन्तादेशो न स्यात् न्तमाणयोः परयोः। परिहायन्तो परिहायमाणो ॥

॥ इति कृदन्ते वर्त्तमानार्थप्रक्रिया ॥

अथ कृदन्ते भूतार्थप्रक्रिया ॥

भूते तेतौ ॥४।१।१॥

भूतेऽर्थे धातोस्तइतौ प्रत्ययौ यथाप्रयोगं भवतो भावे कर्मणि च। क्वचित्तः क्वचिदितः क्वचिदुभयमिति यावत् ॥

अदितयोरिवैकादेशे ॥१।४।१३५॥

अभेरुपसर्गात्परस्यांजधातोरकारस्येकारो वा स्यादेकादेशे सति अप्रत्ययइप्रत्यययोः परयोः । अहिंभगिए, अब्भंगिए । अभेरिति किम्? वियंजिओ, वंजिओ । वियत्तो ॥

अतो लोपस्तत्योः ॥४।१।२॥

धातोरन्त्यस्याकारस्य लोपः स्यात्त-तिप्रत्यययोः ।

Aho ! Shrutgyanam

पल्लेर्होऽत्थे ॥४।१।३॥

पल्लेरिकारस्य ह्कारः स्यात्तप्रत्ययान्तासधातौ परे । पल्हत्थो ॥

वेः परेरोच्चः ॥४।१।४॥

वेः परस्य परेरोच्चादेशः स्यात्तप्रत्ययान्तासधातौ परे । वोच्चत्थो ॥

उवाद्वट् ते ॥४।४।५०॥

उवात्परस्य धातोर्वडागमः स्यात्तप्रत्यये । उववेओ ॥

परेरेस्तः ॥३।१।८२॥

परिपूर्वकादिधातोः परस्य तप्रत्ययतकारस्य द्वित्वं स्यात् । परित्तो ॥

झधभेभ्यस्तस्य धः ॥१।४।६॥

एभ्यः परस्य तकारस्य धकारः स्यात् । इद्धो, समिद्धो ॥

संयुक्तेऽनुस्वारस्य ॥४।४।६४॥

संयुक्ते परेऽनुस्वारस्य लोपः स्यात् । नियुत्तो । पउत्तो ॥

पाभ्यामुणात्तस्य डः ॥४।१।६॥

आभ्यां परस्मादुणधातोः परस्य तप्रत्ययस्य डः स्यात् ॥ उपधाया इत्यधिकृत्य,

पाउँणादीनां ते लोपः ॥४।१।७५॥

पाउणादीनामुपधाया लोपः स्यात्तप्रत्यये परे । अभित्थुओ । संथुओ । नए । उण्णए । पणए । परिणतो ॥

* प-आ-उण, कर, उद्-खण, गम, अव-गुर, जिण, भिम्फ, तण, ति-त्थर त्थुण, धुण, नम, मर, रम, वर, सुण, हण, हर, हुण, एते पाउणादयः ।

आउडे पस्य वः ॥४।१।१५॥

आउडे परे पोपसर्गस्य वो वा स्यात् । वाउडो, पाउडो ॥

अनसादिभ्यः साट्ठः ॥४।१।१६॥

असगसद्धंसनियंसवसस्संसस्ससादिभिन्नधातोः सकारात्परस्य तप्रत्ययस्य ठः स्यात् । एस+त=इट्ठो । घट्ठो । अनसादीति किम् ? अत्थो ॥

उदः कत्तकसयोरादेरिर्वा ते ॥४।१।२६॥

उदः परयोरनयोरादेरकारस्येकारो वा स्यात्तप्रत्यये । उक्कित्तो, उक्कत्तो ॥

केवलाद्वा ॥४।१।१०॥

उपसर्गरहितात्करधातोः परस्य तप्रत्ययस्य डो वा स्यात् । कडो, कओ ॥

उः करादीनाम् ॥४।१।३२॥

करादीनामादेरकारस्योकारो वा स्यात्तप्रत्यये । उडो । "पंजेलिउडे"[1] । उक्कुट्ठो, उक्किट्ठो ॥

व्यापुराभ्यां करात् ॥४।१।१६॥

विआ पुराभ्यां परस्मात्करधातोः परस्य तप्रत्ययस्य डः स्यात् ॥

---

* कर, उत्-कस, जर, उद्-मज, मर, वर, वरस, प-वरस, एते, करादयः ॥

---

१ प्राञ्जलिकृतः (कृतप्राञ्जलिरित्यर्थः) । (नाया० १-५) ।

Aho ! Shrutgyanam

पुरस्ते वा ॥४।४।१३६॥

पुरोपसर्गात्परस्य करधातोः क्खडादेशो वा स्यात्तप्रत्यये ॥

कडक्खडयोः पुर एः ॥४।४।१३८॥

पुरशब्दस्याकारान्तादेशो वा स्यात् कडक्खडयोः परयोः । पुरेकडो, पुराकडो । पुरेक्खडो, पुरक्खडो ॥

वेरात ओः कडे ॥४।४।१४०॥

वेः परस्याकारोपसर्गस्योकारः स्यात्कडे । वोगडो, वोयडो ॥

इते करादीनामादिं विना लोपः ॥४।४।१४५॥

सत्करादिधातूनामादिवर्णं* परित्यज्य लोपः स्यादितप्रत्यये परे । सक्किओ । उद्धिओ, उद्धितो । संभिओ । भिओ ॥

समः कये कोऽनुस्वारस्य ॥४।४।१४१॥

समोऽनुस्वारस्य कः स्यात्कये परे । सक्कओ ॥

कसस्य रिट् ॥४।४।५३॥

उपसर्गरहितकसधातोरुपधाया रिडागमो वा स्यादितप्रत्यये । करिसितो ॥

उदः कसात्तस्य सो लोपश्च ॥४।४।४२॥

उदः परस्मात्कसधातोः परस्य तप्रत्ययस्य सकारलोपौ पर्यायेण वा स्तः । उक्कोसो, उक्कस्सो ॥

---

* सत्-कर, आ-दर, उद्-धर, सम्-भर, भर, आ सिच, स्नाय, सर, दर, एते करादयः ।

Aho ! Shrutgyanam

वेः कसस्य नित्यम् ॥४।१।३०॥

वेः परस्य कसधातोरादेरकारस्येकारो नित्यं स्यात्तप्रत्यये परे । विगिट्ठो । वेरिति किम्? विप्पकट्ठो ॥

दराभ्यां नः ॥४।१।१६॥

दकाररेफाभ्यां परस्य तप्रत्ययस्य नकारादेशः स्यात् । किण्णो । आइन्नो । उक्किण्णो । गिण्णो । उग्गिण्णो । सन्नो । निसण्णो ॥

समः कुंचस्याणितयोरनुस्वारस्य च ॥४।४।११६॥

समः परस्य कुंचधातोरनुस्वारस्य चकारादुपधाया लोपो वा स्यादणप्रत्ययेतप्रत्ययोः । संकुइओ, संकुचिओ । मोऽनुस्वारे, कंतो । अइक्कंतो । अभिक्कंतो । अभिनिक्खंतो । किलन्तो, किलान्तो । आयंतो । परितंतो । दंतो । धंतो । संतो ॥

केवलादिते दीर्घश्च वा ॥४।४।६४॥

उपसर्गरहितात्क्रिणधातोरिणस्य लोपो वा स्यादितप्रत्यये इकारस्य दीर्घश्च । कीओ, किणिओ ॥

परेः क्रोसस्यादेस्ते ॥४।१।४३॥

परेः परस्य क्रोसधातोरादेर्लोपः स्यात्तप्रत्यये । पडिक्कुट्ठे ॥

ते घाः ॥३।१।५५॥

आतः परस्य क्खाधातोर्घा इत्यादेशः स्यात्तप्रत्यये । आघाओ, आघातो ॥

क्खिज्झिझडीछियहाभ्यो णः ॥४।१।२०॥

एभ्यः परस्य तप्रत्ययस्य णः स्यात् ॥

Aho ! Shrutgyanam

घृषामीर्णे ॥४।१।२१॥

उक्तधातूनामन्त्यस्येकारादेशः स्याण्णे परे । पलिक्खीणो । उड्डीणो । लीणो । पलीणो । संलीणो । विलीणो ॥

आतोरड् गमे ॥४।४।५५॥

आकारोपसर्गस्य रडागमः स्याद्गमधातौ परे । अणुरागयं । "सुसागयं खंदया! अणुरागयं खंदया!"[1] "गतिरागतिं करेज्जा"[2]॥

गसस्य घः ॥४।१।४४॥

अस्यादेर्घकारादेशः स्यात्तप्रत्यये परे । घत्थो ॥

गश्च ॥४।१।३१॥

गाधातोरन्त्यस्येकारादेशः स्यात्तप्रत्यये । गीतो । उवगीयं ॥

हतयोरव्यवहितयोर्ढः ॥४।१।५१॥

धातुप्रत्ययावयवयोर्हकारतकारयोरव्यवहितपूर्वापरीभावे ढादेशः स्यात् । गाढो । उवगाढो । ओगाढो । उवगूढो ॥

गिज्झस्य गढः ॥४।१।४८॥

अस्य धातोर्गढादेशः स्यादितप्रत्यये । गढिओ ॥

अवस्य गुयेऽनुस्वारः ॥४।४।५८॥

अवोपसर्गस्यानुस्वारान्तागमः स्यात्तप्रत्ययान्तगुरधातौ परे । अवंगुयं ॥

---

१ सुस्वागतं स्कन्दक! अन्वागतं स्कन्दक! । (भग० २-१) ।

२ गत्यागतिं कुर्यात् । (भग० २४-१)

ग्गहादितो दीर्घो वेतस्य ॥४।१।४६॥

ग्गहधातो परस्येतप्रत्ययस्येकारस्य दीर्घो वा स्यात् । गहीयं, गहियं ॥

चरादीनामिस्ते ॥४।१।६०॥

एषामकारस्येकारः स्यात्तप्रत्यये परे । चिण्णो । आइण्णो । निज्जिण्णो । तिण्णो । विच्छिण्णो । पवित्तो ॥

वेश्चिगिच्छस्य तिकिट्ठस्तेतयोस्तलोपश्च ॥४।१।५०॥

वेः परस्य चिगिच्छधातोस्तिकिट्ठादेशः स्यात्तइतप्रत्ययोः परयोस्तप्रत्ययस्य लोपश्च । विइकिट्ठियं, वितिकिट्ठियं । विइकिट्ठं, वितिकिट्ठं ॥

चिणजिणयोश्च ॥४।४।१५॥

एतयोरिणस्य लोपः स्यादितप्रत्यये परे । चियं । अवचियं । उवचियं । णिच्छियं ॥

आसमुभ्यां चिणस्य ॥४।१।२७॥

आ सम्-उ, आभ्यां परस्य चिणधातोरादेर्लोपो वा स्यादितप्रत्यये । आइयं, आचियं । समुइयं, समुचितम् । वा० (विपरिभ्यामदितयोश्चस्य जो वा वक्तव्यः) । परिजितं, परिचितं । विजओ, विचओ ॥

निराश्चिणात् ॥४।१।२२॥

निरः परस्माच्चिणधातोः परस्य तप्रत्ययस्य णः स्यात् । निच्छिण्णं ॥

---

१ चर, क्षय, जर, तर, त्थर, वत्त, पत्त चरादयः ।

Aho ! Shrutgyanam

च्चयाद् द्विः ॥४।१।२३॥

अस्मात्परस्य तप्रत्ययस्य तकारस्य द्वित्वं स्यात् । चियत्तं ॥

च्छिन्दस्य छह: ॥४।१।५३॥

च्छिन्दधातोश्छहादेशः स्यादितप्रत्यये परे । छहियं, छिन्नं । "वेयगच्छहियं अंगच्छहियं...करेह"[1] ।

च्छुभमुज्झयोश्छूहमूहौ ॥४।१।७९॥

अनयोः क्रमेण छूह मूह इत्येतावादेशौ स्तस्तप्रत्यये । निच्छूढं । मूढो । संमूढो ॥

च्छुहस्य स्पर्शे तः ॥४।१।८२॥

च्छुहधातोरुपधायास्तकारः स्यात्तप्रत्यये स्पर्शेऽर्थे । छुत्तं ॥

जहस्ते ॥४।४।११७॥

जहाधातोरन्त्यस्य लोपः स्यात्तप्रत्यये । जढं । विप्पजढं ॥

जेमादीनां* ह्रस्वः ॥४।१।४६॥

एषां स्वरस्य ह्रस्वः स्यादितप्रत्यये । जिमियं । पम्हुइयं । अभिरुइयं । लइयं । विलुलियं । खइयं ॥

आतश्च्छादस्येते ॥१।३।१२॥

आकारात्परस्य च्छादधातोराकारस्य ह्रस्वो वा स्यादितप्रत्यये परे । आच्छदियं, आच्छादियं ॥

योजने जोयस्य डतौ ॥४।१।८३॥

जोयधातोरुपधाया डकारस्तकारश्च स्यादितप्रत्यये योजनेऽर्थे ॥ जोडियं, जोतियं ॥

---

१ वेदकच्छिन्नं अङ्गच्छिन्नं कुरुत । (सूत्र० २-२-३५) ।

---

* जेम, पम्होड, खा, फोड, मोद, रोय, ला, लोल, इति जेमादयः ।

जोसस्य वा ॥४।१।४७॥

अस्यौकारस्य ह्रस्वो वा स्यादितप्रत्यये। जुसियं, जोसियं॥

पाज्जलस्यादेरुदिते ॥४।१।८४॥

पोपसर्गात्परस्य ज्जलधातोर्ज्ज्स्योकारः स्यादितप्रत्यये परे। पउलिओ॥

झिज्झस्य णे ॥४।१।७७॥

अस्योपधाया लोपः स्याणवो परे। झीणं॥

अतेष्टस्थः ॥४।१।५४॥

अतेः परस्य ष्ठाधातोष्ठस्य थः स्यादितप्रत्यये। अइत्थियं। अतेरिति किम्? ठिलं। अणुट्ठितं॥

णुल्लस्येते ॥१।३।२४॥

अस्योकारस्य वृद्धिः स्यादितप्रत्यये परे। णोल्लियं। वा० (ते णुदो वक्तव्यः) णुन्नं। पणुन्नं॥

निर्विभ्यां तरस्थरयोश्छस्तथयोस्ते ॥४।१।५५॥

क्रमेणाभ्यां परयोरनयोस्तकारथकारयोश्छकारः स्यात्तप्रत्यये। निच्छिण्णं। विच्छिण्णं। अवइण्णं। उत्तिण्णं। वितिण्णं। विइण्णं। संतिलं॥

तिप्पादिप्पयोः पयोस्तः ॥४।१।५७॥

अनयोः पकारद्वयस्य तकारादेशः स्यात्तप्रत्यये तिप्रत्यये च। तित्तं। दित्तं॥

आतस्त्थरस्य त्थुः ॥४।१।५८॥

आकारोपसर्गात्परस्य त्थरधातोस्त्थु इत्यादेशः स्यात्तप्रत्यये। अत्थुयं। थद्धं॥

Aho ! Shrutgyanam

त्थरमरहरेभ्यश्च ॥४।१।११॥

एभ्यः परस्य तप्रत्ययस्य डो वा स्यात् । उत्थडं, उत्थयं । वित्थडं । संथडं । भुयं । मयं । मडो । साहडं, साहयं । वा० (त्थरस्यैते रेफस्योपसंख्यानम्) । संथडियं ॥

उदस्तथद्धस्य ॥४।१।५६॥

उदः परस्य थद्धस्यादेश्छकारः स्यात् । उच्छद्धं ॥

दो दिद्तौ ॥४।१।५९॥

दाधातोस्तप्रत्यये दिद् दत् इत्येतावादेशौ पर्यायेण भवतः । दिराणं, दिन्नं, दत्तं ॥

इतो दिससिरयोरद्वा ॥४।१।६१॥

दिससिरधात्वोरिकारस्याकारो वा स्यात्तप्रत्यये । दट्ठं, दिट्ठं । सट्ठं, सिट्ठं । निसट्ठं, निसिट्ठं ॥

समो दिहविहयोः ॥४।१।८१॥

समः परयोरनयोरुपधाया धकारः स्यात्तप्रत्यये । संदिद्धं । संविद्धं । आइत्तं, आदित्तं ॥

आतो दिहस्यादेर्लस्ते ॥३।४।१२॥

आतः परस्य दिहधातोरादेर्लकारो वा स्यात्तप्रत्यये परे । आलिद्धं, आइद्धं ॥

दुहनिहयोर्धः ॥४।१।८०॥

अनयोरुपधाया धकारः स्यात्तप्रत्यये । दुद्धं, निद्धं ॥

दृहस्य ढो ॥४।१।५२॥

दृहधातुसम्बन्धिनोर्हकारतकारयोर्ढयादेशः स्यात् । दूढं ॥

Aho ! Shrutgyanam

रुहव्विहयोरादेर्दीर्घः ॥४।१।६२॥

अनयोरादिस्वरस्य दीर्घः स्यात्तप्रत्यये। रूढं। दुरूढं। समभिरूढं। उव्वीढं। वा० (धुणस्य वा वक्तव्यः)। धूतं, धूयं। धुतं, धुयं।

नेरीः ४।१।६३॥

नेधातोरीकारोऽन्तादेशः स्यात्तप्रत्यये। नीयं अवणीयं॥

इरानिभ्याम् ॥४।१।६४॥

आनिभ्यां परस्य नेधातोरिकारः स्यात्तप्रत्यये परे। आणियं। णीणियं॥

पज्जव्विज्जयोर्जयोर्दः ॥४।१।७८॥

पज्जव्विज्जधात्वोर्जकारद्वयस्य दकारः स्यात्तप्रत्यये। पन्नं। अभिआपण्णं। अज्झोववण्णं। उप्पण्णं। णिप्फण्णं, णिप्पण्णं। निव्विन्नं॥

पचलुंचसुस्सेभ्यस्तस्य कः ॥४।१।६५॥

एभ्यः परस्य तप्रत्ययस्य कादेशः स्यात्। पक्कं। लुक्कं। सुक्कं। परिसुक्कं॥

पुच्छतच्छतक्खासिरेभ्यश्च ॥४।१।१७॥

एभ्यः परस्य तप्रत्ययस्य ठः स्यात्। पुट्ठं। तट्ठं। अभिणिसिट्ठो॥

निरः पुच्छस्यादुतः ॥४।१।१४॥

निरः परस्य पुच्छधातोरुकारस्याकारो वा स्यात्तप्रत्यये निप्पट्ठं॥

Aho ! Shrutgyanam

पवस्य पुः ॥४।१।१३॥

पवधातोः पु इत्यादेशः स्यात्तप्रत्यये। उपप्पुयं॥

फासस्य पुसस्ते ॥४।१।१२॥

फासधातोः पुस इत्यादेशः स्यात्तप्रत्यये परे। पुट्टं, फासियं॥

फुसस्य फुडः सतस्य ॥४।१।६७॥

तप्रत्ययसहितस्य फुसधातोः फुडादेशः स्यात्। फुडं॥

भीस्ते ॥३।१।११८॥

बीहधातोर्भी इत्यादेशः स्यात्तप्रत्यये। भीयं॥

भंजमज्जरुजाविजेभ्यो गस्तस्य ॥४।१।७३॥

एभ्यः परस्य तप्रत्ययस्य गः स्यात्। भग्गो। विग्गो। उव्विग्गो। संविग्गो। ओलुग्गो। ओरुग्गो। "उः करादीना-" मित्युकारविकल्पे, उम्मुग्गो, उम्मग्गो। निम्मग्गो॥

भरस्य हुः ॥४।१।७०॥

भरधातोर्हु इत्यादेशः स्यात्तप्रत्यये। निहुतं। परहुओ॥

भवपसवहयानामूसवस्य तत्योः ॥४।१।३६॥

एषामवस्योसादेशः स्यात्तप्रत्ययतिप्रत्यययोः। भूयं, अणुभूयं। अभिभूतं। पसूयं। अणुहूयं॥

समष्टो मज्जात् ॥४।१।७४॥

संपूर्वकमज्जधातोः परस्य तप्रत्ययस्य ठः स्यात्। संमट्ठं॥

मन्नस्य नयोः ॥४।१।७६॥

मन्नधातोर्नद्वयस्य लोपः स्यात्तप्रत्यये। अणुमतं। अभिमओ॥

Aho ! Shrutgyanam

मुंचरिचच्छिवाविचेभ्यो वा ॥४।१।६६॥

एभ्यः परस्य तप्रत्ययस्य को वा स्यात् । मुक्को, मुत्तो । परिमुक्को । विमुक्को । रिक्कं, रित्तं । पइरिक्कं, पइरित्तं । छिक्कं, छित्तं । विविक्कं, विवित्तं ॥

ते ढत् ॥३।३।४६॥

आकारात्परस्य रंभधातोर्ढत् इत्यादेशो वा स्यात्तप्रत्यये परे । आढत्तं, आरद्धं । केवलस्याकारस्य ग्रहणान्नेह,पारद्धं ॥

*चुयादिभ्यो लोपः ॥४।१।२४॥

एभ्यः परस्य तप्रत्ययस्य लोपः स्यात् । चुयं, चुक्कं । झामं । णिब्बुड्डं । लग्गो । पल्लोट्टो । विल्लियं ॥

लुंपस्य लोवः प्रेरणायाम् ॥४।१।६८॥

लुंपधातोर्लोवादेशः प्रेरणायाम् । आलोवियं ॥

वड्ढस्येततिषु ॥४।१।३३॥

अस्यादेरकारस्योकारः स्यादितत्तिप्रत्ययेषु । वुड्ढो ॥

वरहराभ्यां च ॥४।१।७॥

वरहराभ्यां परस्य तप्रत्ययस्य डः स्यात् । वावडो । हडो । अभिहडो । अवहडो । उद्धडो । उदाहडो । पीहडो ॥

वरस्याव्यापारे ॥४।१।३६॥

वरधातोरादेरकारस्योकारः स्याद् व्यापारभिन्नेऽर्थे । वुडो । अभिणिव्वुडो । परिवुडो । संवुडो ॥

---

* चुय, चुक्क, झाम, धोव, वुड्ड, लग्ग, लोट्ट, ल्लिय, वड्ढ, एते चुयादयः ॥

निरो वा ॥४।१।३७॥

निरः परस्माद्वृधातोः परस्य तप्रत्ययस्य डो वा स्यात्। निव्वुडं, निव्वुयं ॥

वरसे रस्य ॥४।१।२५॥

वरसधातौ रस्य लोपः स्यात्ते। वुट्ठो। पवुट्ठो ॥

ते वस्योस् ॥४।३।३७॥

वसधातोर्वस्योसादेशः स्यात्तप्रत्यये। पउत्थो ॥

इते वा ॥४।३।३८॥

वसधातोर्वस्योसादेशो वा स्यादितप्रत्यये। उसियं, वसियं। परिउसियं, परिवसियं। वुसियं। विवसियं ॥

दोसीणस्तान्तस्य सपरेः ॥४।३।३६॥

वसधातोस्तान्तस्य परिसहितस्य दोसीण इति निपात्यते। दोसीणं ॥

वहस्योढस्ते ॥४।१।६६॥

वह्धातोरूढ इत्यादेशः स्यात्तप्रत्यये परे। ऊढं। उ+वि+वह्=उव्वूढं। निव्वूढं ॥

अन्वातो विसस्यादेः ॥४।१।२६॥

अनुपूर्वकाकारात्परस्य विसधातोरादेर्लोपः स्यात्तप्रत्यये। अण्णाइट्ठं ॥

सरादुपसर्गाड्डुढौ ॥४।१।८॥

उपसर्गपूर्वकसरधातोः परस्य तप्रत्ययस्य डकारढकारौ पर्यायेण वा स्तः। अभिनिस्सडो। ऊसडो, ऊसढो। समासढो ॥

Aho ! Shrutgyanam

इते सिंचस्य सिक्कः ॥४।१।७२॥

सिंचस्य सिक्कादेशः स्यादिते परे । उस्सिक्किय ! निसिक्कियं ॥

सुत्ते वा ॥१।३।६५॥

पकारोपसर्गस्य दीर्घो वा स्यात्तप्रत्ययान्तसुयधातौ परे । पासुत्तो, पसुत्तो ॥

उदातो हरस्य सतस्य वा ॥४।१।७१॥

उत्पूर्वकाकारात्परस्य हरधातोस्तप्रत्ययसहितस्य हु इति वा निपात्यते ॥ उदाहु । उदाहडं, उदाहरियं ॥

समो हरस्य हो घः ॥४।१।८५॥

संपूर्वकस्य हरधातोर्हस्य घो वा स्यादितप्रत्यये परे । उवसंघियं ॥

हरिसस्यारः ॥४।१।२८॥

हरिसधातोररो लोपः स्यात्तप्रत्यये । हिट्ठो । पहिट्ठो ॥

वेरूढो वा णे ॥४।१।८६॥

वेः परस्य हाधातोरूकारान्तादेशो वा स्याण्णप्रत्यये । विहूणं, विहीणं ॥

॥ इति कृदन्ते भूतार्थप्रक्रिया ॥

अथ कृदन्ते कर्त्रर्थप्रक्रिया ॥

अणिदिण्ककणूतारा: कर्त्तरि ॥४।२।१॥

कर्त्तरि वाच्ये धातोरणू इत् इणू क कणू तार एते प्रत्यया

यथाप्रयोगं स्युः । सुवण्णगारो । मणिकारो । आउट्टी । अभिकंखी । उवगारी । परिक्खेवी । समज्जगो । अब्भंगयवए । परियरगो, पडियारगो । कारको । विक्खेवए ॥

ककणोः स्त्रियामिट् ॥४।४।५७॥

अनयोः स्त्रियामिडागमः स्यात् । उवासिया । संगाहिया संचालिया । गाहाविया । कम्मइया । विमोहिया । स्त्रियामिति किम्? उवासगो ॥

एस्तारे ॥३।२।२६॥

अहेः परस्येधातोरेकारः स्यात्तारप्रत्यये । अज्झेयारो । अहिज्जगो । अज्झावए ॥

भविष्यति ससिस्सेणितः ॥४।२।२॥

भविष्यदर्थे कर्त्तरि धातोः स सि स्स इण् इत् प्रत्ययाः स्युः ॥

सादौ च ॥३।२।२७॥

इधातोरेकारादेशः स्यात्ससिस्सप्रत्ययेषु । आएसं ।

इक्खादिभ्यो णणणौ ॥४।२।४॥

इक्खादिभ्यो धातुभ्यः कर्त्तरि णप्रत्ययो णणप्रत्ययश्च स्यात् । जणणी ॥

वेर्णे ॥३।१।१४६॥

वेः परस्येक्खधातोरिकारस्य यकारः स्याण्णप्रत्यये परे । पवियक्खणो । वियक्खणो ॥

---

* इक्ख, जण, जाय, नि-हुह, उत्तास, धाव, वीह, विज, प-वेस, एते इक्खादयः ॥

Aho ! Shrutgyanam

इरस्ताच्छील्ये ॥४।२।५॥

ताच्छील्येऽर्थे कर्त्तरि धातुभ्य इरप्रत्ययः स्यात् । आकंखिरो । णच्चिरो । उम्मीलिरो ॥

तान्मन्तो भूते॥४।२।८॥

तप्रत्ययान्ताद्भूते कर्त्तरि मन्तप्रत्ययः स्यात् । कयवं, कयवन्तो । चिरगावं.चिरगावंतो । सुयवं, सुयवन्तो ॥

करणे णः॥४।२।१४॥

करणेऽर्थे धातोर्णप्रत्ययः स्यात् । करणं । कारणं॥

अच् करादिभ्यः कर्मणि॥४।२।११॥

कर्त्तरि करादिभ्योऽच्प्रत्ययः स्यात् कर्मण्युपपदे ॥

अजन्तेऽतेऽनुस्वारः॥४।२।१२॥

अचप्रत्ययान्ते धातौ परेऽकारान्तोपपदस्यानुस्वारान्तागमो वा स्यात् । तित्थंकरो, तित्थयरो, तित्थकरो । आयंतमो, आयंदमो । परंतमो । जुगंधरो । पुरंदरो ॥

कारादिषु च ॥४।२।१३॥

कारादिशब्देषु च परेषु पूर्वस्यानुस्वारान्तागमः स्यात् । सेयंकारो । भयंतारो ॥

एस्तारे क्किणजिणयोरिणस्य ॥४।२।२४॥

क्किणजिणधात्वोरिणस्यैसादेशः स्यात्तारप्रत्यये परे । विक्केयारो । जेयारो ॥

आतो यक् के ॥३।१।१५९॥

आतः परस्य क्खाधातोर्यगागमः स्यात्कप्रत्यये । अक्खायगो ॥

Aho ! Shrutgyanam

विन्याभ्यां हिः के ॥३।१।१५६॥

विञापूर्वकस्य क्खाधातोर्हि इत्यादेशः स्यात्कप्रत्यये। वियाहियं ॥

गज्जादिभ्यस्तारस्य द्विरिटौ ॥४।२।२५॥

गज्जादिभ्यः परस्य तारप्रत्ययस्यादेर्द्वित्वं चकारादिडागमः स्यात्। गज्जित्तारो। पगब्भित्तारो ॥

गमादिभ्य एट् सादीनाम् ॥४।४।५६॥

गमादिधातुभ्यः परेषां सादिप्रत्ययानामेडागमः स्यात्। आगमेसो, आगमिस्सो, आगमेसी, आगमी, आगामी। भाविस्सो ॥

गमस्य गो वाऽचि ॥४।२।२७॥

गमधातोर्ग इत्यादेशो वा स्यादचिपरे। तुरंगो, तुरंगमो ॥

ओतो घट्टस्यादेर्हः के ॥४।२।२८॥

ओकारोपसर्गात्परस्य घट्टधातोरादेर्हकारः स्यात् कप्रत्यये। ओहट्टए ॥

घातस्य घंतुघन्नू ॥४।२।३६॥

घातधातोः कर्त्तरि घंतु घन्नु इति वा निपात्येते। घंतू, घन्नू। घाती, घाई। घातए, घायको ॥

चालादियः ॥४।२।६॥

चालधातोः कर्त्तरीयप्रत्ययः स्यात्। उच्चालइए ॥

---

* गज्ज, प-गब्भ, नि-गिण्ह, चिट्ठ, उद्-च्छोल, जग्ग, परा-जिण, नि-ज्झा, उद्-तास, उद्-दव, प-धार, ने-तिर-मव, वरस, आ-हार, एते गज्जादयः।

जणादत्पञ्चमीसप्तम्योर्जो जणस्य ॥४।२।२१॥

पञ्चम्यन्ते सप्तम्यन्ते चोपपदे जणधातोरत्प्रत्ययः स्याज्जणस्य जादेशश्च । अंगया । पंकजं ॥

जयस्य वः कणि जये ॥४।२।५१॥

जयेऽर्थे वर्त्तमानस्य जयधातोरुपधाया वकारः स्यात्कणि परे । जावए ॥

जाणपलिमंथसहेभ्यो डुः ॥४।२।२२॥

एभ्यो डुप्रत्ययः स्यात्कर्त्तरि । जाणू । पलिमंथू । सहू ॥

जावस्य यः ॥४।२।३५॥

आवप्रत्ययान्तजाधातोरादेर्यकारः स्यात् कप्रत्यये । यावए ॥

इणि जुज्झस्य जझयोः ॥४।२।२९॥

जुज्झधातोर्जकारझकारयोर्हकारः स्यादिणप्रत्यये । जोही ॥

इणणोर्जुंजस्य गश्च ॥४।४।११९॥

जुंजधातोरुपधाया गकारः स्याच्चकारादनुस्वारलोपोऽण्प्रत्ययेणप्रत्यययोः परयोः । जोगी । अनुजोगी । संजोगी ॥

ट्ठो डः ॥४।२।१७॥

अधिकरण उपपदे ट्ठाधातोर्डप्रत्ययः स्यात् । देहत्थो । अंबट्ठो ॥ उपधाया इत्यधिकृत्य,

नेहुहस्य वो णे ॥४।२।५०॥

नेः परस्य हुहधातोरुपधाया वकारः स्याणप्रत्यये । "निहुवणं"

१ निधीवनम् । (ठा०५-२)।

पञ्चम्यां त्तो रः ॥४।२।१५॥

पञ्चम्यन्त उपपदे त्ताधातो रप्रत्ययः स्यात्। भयंतारो ॥

त्थुणस्य थवोऽणकेषु ॥४।२।४०॥

त्थुणधातोस्थवादेशः स्याद् अ-ण-क-प्रत्ययेषु। थवण ॥

दश्च ॥३।१।१६०॥

दाधातोर्यगागमः स्यात्कप्रत्यये परे। दायगो, दायग ॥

दिसस्य दक्खुः ॥४।२।३७॥

दिसधातोः कर्त्तरि दक्खु इति वा निपात्यते। दक्खू। देसी। देसगो। दट्ठारो ॥

आतो दीवस्य दो लः कणतेतेषु ॥१।४।९९॥

आकारात्परस्य दीवधातोरादेर्लकारादेशो वा स्यात्क-ण-न-इत्तप्रत्ययेषु परेषु ॥

वस्य यो वा ॥१।४।१०१॥

आकारात्परस्य दीवधातोर्वस्य यो वा स्यात्कप्रत्यये। आलीयगो, आलीवगो ॥

पज्जवपज्जभुंजवच्चानां तारे ॥४।४।१२०॥

एषामन्त्यस्य लोपः स्यात्तारे परे। पज्जत्तारो। भोत्तारो ॥

उपपदाञ्ञाविदाभ्याम् ॥४।२।२३॥

उपपदपूर्वकाभ्यामाभ्यां डुप्रत्ययः स्यात्कर्त्तरि। धम्मञ्ञू। पारविऊ ॥

नस्साद्रः ॥४।२।६॥

अस्मात्ताच्छील्येऽर्थे कर्त्तरि रप्रत्ययः स्यात्। नस्सरो ॥

Aho ! Shrutgyanam

नेर्न्हवस्य ण्हः के ॥४।२।४६॥

नेः परस्य न्हवधातोर्ण्ह इत्यादेशः स्यात्के परे। निण्हगो, निण्हए ॥

पासस्येति ॥३।१।७१॥

पासधातोरुपधाया द्वित्वं स्यादिति। पस्सी ॥

इणणुकणुप्रेरणासु बुज्झस्य ॥४।२।३०॥

इणु-अणु-कणु-प्रेरणासु बुज्झधातोर्जझयोर्हकारः स्यात्। बोही, बोहए ॥

पाब्भवादिंसुः ॥४।२।७॥

पपूर्वकभवधातोस्ताच्छील्येऽर्थे इंसुप्रत्ययः स्यात्। पभविंसु ॥

संमज्जात्तलोपे ॥४।२।२६॥

अस्मात्परस्य तारप्रत्ययस्येडागमः स्यात्तकारस्य लोपे। संमज्जियारो ॥

अधिकरणेऽण् ॥४।२।१६॥

अधिकरणेऽर्थे धातोरण्प्रत्ययः स्यात्। आरमन्तेऽस्मिन्नित्यारामो ॥

लाभेच्छावति लिच्छुः ॥४।२।३९॥

लाभेच्छाकर्त्तरि लिच्छु इति निपात्यते। लिच्छु ॥

लिंपादडः केवलात् ॥४।२।३॥

उपसर्गरहिताल्लिंपधातोः कर्त्तरि अडप्रत्ययः स्यात् ॥

Aho ! Shrutgyanam

लिंपस्य लेवोऽडकाणेषु ॥४।२।४३॥

लिम्पधातोर्लेवादेशः स्यादड-क-अ-ण प्रत्ययेषु । लेव-डो । उवलेवए ॥

इति पाद्गः ॥३।१।१७२॥

पपूर्वकवत्तधातोर्वकारस्य गकारः स्यादिति । पागट्टो ॥

इतारयोर्वसस्य वासः ॥४।२।३७॥

वसधातोर्वासादेशः स्यादिप्रत्ययतारप्रत्यययोः । वासि-त्तारो । वासी ॥

वसात्तव्वः ॥४।२।१०॥

वसधातोः कर्त्तरि तव्वप्रत्ययः स्यात् । वत्थव्वो ॥

पाभ्यां के रलोपः ॥४।२।४८॥

पआपूर्वकस्य वसधातो रस्य लोपः स्यात्कप्रत्यये । पा-वसए ॥

वियस्य विः ॥४।२।३८॥

वियधातोः कर्त्तरि वि इति वा निपात्यते । वी । धम्म-वी । नाणवी । पक्षे, धम्मविऊ । नाणविऊ ॥

निसद्सयाभ्यां जाड् ॥४।२।१८॥

निपूर्वकसदधातुसयधात्वोरधिकरणेऽर्थे जाड्प्रत्ययः स्यात् ॥

इर्जाड्यतः ॥४।२।१६॥

जाडि परे धातोरादेरकारस्येकारो वा स्यात् । निसिज्जा, निसज्जा ॥

सयस्यैः ॥४।२।२०॥

सयधातोरादेरकारस्यैकारः स्यात् । सेज्जा, अभिसेज्जा ॥

Aho ! Shrutgyanam

आतः सवस्येणि ॥३।१।८३॥

आकारात्परस्य सवधातोरादेर्द्वित्वं स्यादिण्प्रत्यये । अस्सावी ॥

सुवस्येणि सः ॥४।२।४९॥

सुवधातोरिणप्रत्यये स इत्यादेशः स्यात् । साई ॥

॥ इति कृदन्ते कर्त्रर्थप्रक्रिया ॥

अथ कृदन्ते भावकर्मप्रक्रिया ॥

योग्यशक्ययोर्मणिज्जणीयतव्वाः ॥३।४।१३॥

अकर्मकेभ्यो भावे सकर्मकेभ्यः कर्मणि योग्यशक्ययोरर्थयो-र्म-णिज्ज-णीय-तव्वप्रत्ययाः स्युः । खाइमं । संघातिमं । अच्चणिज्जं । एसणीयं । पडिकम्मियव्वं । पच्चक्खाएयव्वं ॥

पावगोवच्छिवठवप्पवेभ्यः पड् ॥३।४।१४॥

एभ्यो भावकर्मणोः पड्प्रत्ययः स्यात् । पप्पं । गुप्पं । छिप्पं । ठप्पं । आणप्पं । वा० (असाल्लण् भक्ष्ये वक्तव्यः) आसलं ॥

वस्य तव्वे लोपः ॥३।२।२८॥

अहेरुपसर्गात्परस्येधातोरावस्य वस्य लोपः स्यात्तव्वप्रत्यये परे । अज्झाइयव्वं ॥

पतेरेरः ॥३।४।१५॥

पतिपूर्वकादिधातोः कर्मण्यप्रत्ययः स्यात् । पत्तियं ॥

करादियणचडौ ॥३।४।१६॥

करधातोरियणचड्प्रत्ययौ स्तः । कारियं । कच्चं ॥

Aho ! Shrutgyanam

क्रिणादिभ्य इयः ॥३।४।१७॥

क्रिणादिभ्यो धातुभ्य इयप्रत्ययः स्यात्कर्मणि। विक्किणेयं। आयरियं। आदेयं। भवियं। अक्खेयं। विन्नेयं। मेयं। पमेयं। धेयं। वा० (क्रिणस्योमियत्थेविणस्य लोपो वाच्यः) विक्कियं॥

डिच्चडित्तिमौ कः ॥३।४।१८॥

काधातोः कर्मणि डिच्चडित्तिमप्रत्ययौ भवतः। किच्चं। कित्तिमं॥

क्रिणसंखाभ्यामिज्जः ॥३।४।१९॥

आभ्यामिज्जप्रत्ययः स्यात् कर्मणि। किज्जं। संखिज्जं, संखेज्जं॥

क्खिवाद्वा सेटो वस्य लोपश्च ॥३।४।२८॥

अस्मात्परस्तव्वप्रत्ययो डिद्निद् णिच्च वा स्यादिट्सहितस्य वस्य लोपश्च। निक्खेत्तव्वं। उवक्खिक्खियव्वं॥

दिसवुज्झवहेभ्यस्तव्वो डिद्निण्णितः ॥३।४।२७॥

एभ्यः परस्तव्वप्रत्ययो डित् णिद्निद् च स्यात्। दट्ठव्वं। बोद्धव्वं। निव्वोढव्वं॥

खो डज्जः ॥३।४।२०॥

खाधातोर्डज्जप्रत्ययः स्यादुक्तेऽर्थे॥

जयोर्धौ वा ॥३।४।२१॥

खाधातोः परस्य डज्जप्रत्ययस्य जकारयोर्धकारद्वयादेशो वा स्यात्। खद्धं। खज्जं॥

Aho ! Shrutgyanam

गमादिभ्यो डः ॥३।४।२२॥

एभ्यो भावकर्मणोर्डप्रत्ययः स्यात् ॥ उपधाया इत्यधिकृत्य,

गिण्हादीनां डे छिः ॥३।४।२६॥

एषामुपधाया छित्वं स्याद् डप्रत्यये परे । गम्मं । घत्तं । भव्वं । सेव्वं ॥

गिण्हवहदुहदहारोहसाहानां झः ॥३।४।२७॥

एषामुपधाया झकारः स्याड्डप्रत्यये । गिज्झं । दुज्झं । आरुज्झं । सज्झं । डज्झं ॥

णाणिज्जयोर्जिघः ॥३।१।९३॥

घ्राधातोर्जिघादेशः स्यात् णा-णिज्जप्रत्यययोः । जिघणिज्जं ॥

एज्जो डे ॥४।४।१०४॥

छिद्भिद्धात्वोरिदागस्यैज्जादेशः स्याड्डप्रत्यये । छेज्जं । भेज्जं ॥

ज्झामाभ्यामेज्जः ॥३।४।२४॥

आभ्यामेज्जप्रत्ययः स्यादुक्तेऽर्थे । मेज्जं ॥

एज्जे झो धः ॥३।४।२६॥

ज्झाधातोर्झस्य धः स्यादेज्जप्रत्यये । धेज्जं, धिज्जं ।

---

१ गम, गरिह, गिण्ह, घात, छिद्द, छुभ, भुंज, डह, दुह, दह, पूज, पुस, वि-मम, भव, भुंज, रम, आ रोह, वच्च, मलह, साह, सेव, नि-हण, हण, एते गमादयः ॥

२ गिण्ह, गम, घात, छुभ, भुंज, दुह, डह, पास, पूज, गम, भव, भुंज, रम, आ-रोह, विद, मलह, साह, सिच, सेव, हण, एते गिण्हादयः ॥

मे तरस्य ॥१।३।२५॥

तरधातोरादेरकारस्य वृद्धिः स्यान्मप्रत्यये । तारिमं ॥

तव्वे थोः ॥४।२।४२॥

स्थुगाधातोस्थो इत्यादेशः स्यात्तव्वप्रत्यये । थोयव्वं ।

आतो दो वा ॥३।४।२५॥

आपूर्वकदाधातोरेज्जप्रत्ययो वा स्यात् । आइज्जं, आदिज्जं, आदेज्जं, आयाणिज्जं ॥

च्छुभदुहभुंजसिंचानां डे ॥१।३।३६॥

एषामिदुतोर्वृद्धिः स्याड्डे परे । छोब्भं । दोज्झं । भोज्जं ।
वा० (भुंजस्य डग्गोवक्तव्यः) । जोग्गं ।

पाद्धंसस्य डे दधयोः ॥४।२।३४॥

पात्परस्य ध्वंसधातोर्दकारधकारयोर्हकारः स्याड्डे । पुप्पहंसं ॥

इये सदो धो ढः ॥३।४।४०॥

सदः परस्य धाधातोरादेर्ढकारः स्यादियप्रत्यये परे । सद्दढियं ॥

सुदुभ्यां च ॥३।४।२३॥

आभ्यां परेभ्यो धातुभ्यो डप्रत्ययः स्याद् भावकर्मणोः ।
दुरुद्धरो । दुप्पसहो । सुलहो । दूसहो ॥

नेर्यः ॥३।४।२६॥

नेधातोर्यप्रत्ययः स्यात्कर्मणि । विणेयं ॥

विदस्य जः ॥३।४।३८॥

अस्योपधाया जः स्याद् ज्जप्रत्यये । वा० (विदाड्डो णिद्-वक्तव्यः) वेज्जं ॥

Aho ! Shrutgyanam

मे लुणस्य लाः ॥३।४।३०॥

लुणधातोर्ला इत्यादेशः स्यान्मप्रत्यये । लाइमं ॥

वसात्तव्वस्य ॥३।१।२७॥

अस्मात्परस्य तव्वप्रत्ययस्येडागमो वा स्यात्। वसित्तए, वत्थए ॥

सलहस्य सघो डे ॥३।४।३१॥

सलहधातोः सघादेशः स्याद् डप्रत्यये । सग्घं ॥

सिंचस्य को णिच्च डः ॥३।४।३६॥

अस्योपधायाः ककारः स्याद् डप्रत्यये डप्रत्ययो णिच्च । अभिसेकं ॥

नेर्हणस्य हः ॥३।४।३२॥

नेः परस्य हणधातोर्हादेशः स्याद् डप्रत्यये परे । निहो।

सणिज्जहरस्य हेज्जः ॥३।४।३३॥

हरधातोर्णिज्जप्रत्ययसहितस्य हेज्ज इत्यादेशः स्यात्। हेज्जं ॥

हुणस्य हवः ॥३।४।३४॥

अस्य धातोर्हवादेशः स्याद् डप्रत्यये । हव्वं ॥

होस्तव्वस्येव्वः ॥३।४।३५॥

होधातोः परस्य तव्वप्रत्ययस्येव्व आदेशो वा स्यात् । होइव्वं, होयव्वं ॥

॥ इति कृदन्ते भावकर्मप्रक्रिया ॥

Aho ! Shrutgyanam

अथ कृदन्ते भावार्थप्रक्रिया ॥

भावेऽणदाणणातयः ॥४।३।१॥

धात्वर्थस्वरूपे भावे वाच्ये धातुभ्योऽण्-अत्-आ-णा-णा-तिप्रत्ययाः स्युः । तत्र, आणाःतिप्रत्ययान्ता नित्यस्त्रीलिङ्गाः । अवकारो । आक्खेवो । अवगरो । अब्भिगो, अब्भंगो । अणुप्पेहा । अब्भंगणं । उवंजणं । पज्जुवासणा । पत्ती ॥

अप्पाहहाभ्यां णिः ॥४।३।२॥

आभ्यां भावे णिप्रत्ययः स्यात् । अप्पाहणी । हाणी ॥

आसे परयोर्वचौ वा ॥४।१।५॥

वेः परस्य परेरुपसर्गस्य पकाररेफयोः क्रमेण वकारचकारौ वा भवतोऽकारप्रत्ययान्तासधातौ परे। विवच्चासो, विवज्जासो, विपरियासो ॥

अत्यभिप्पाभ्यामयाति ॥३।२।२९॥

अति-अभिप्पाभ्यां परस्येधातोरयादेशः स्याद्ति परे । अच्चओ । अभिप्पाओ ॥

वा णे ॥३।२।२४॥

अहेः परस्येधातोरयादेशो वा स्याण्णप्रत्यये परे । अज्झयणं । पक्षे,

अहेज्झो दीर्घो धातोः ॥३।२।२५॥

अहेरन्त्यस्य झकार इधातोर्दीर्घः स्याण्णप्रत्यये । अज्झीणं ॥

Aho ! Shrutgyanam

इधाड्ढो वा ॥४।३।१८॥

इधात्परस्य तिप्रत्ययस्यादेर्ढो वा स्यात् । इड्ढी, इद्धी।

उट्टादिभ्यो डिः ॥४।३।३॥

एभ्यो डिप्रत्ययः स्याद्भावे। आउट्टी। अणुकड्ढी। पयडी। विसोही। सोही। उपधाया इत्यधिकृत्य,

पाउणस्य रो णे ॥४।३।५२॥

पापूर्वकस्योणधातोरुपधाया रेफः स्याण्णप्रत्यये परे। पाउरणं ॥

उसस्याति ॥३।१।७६॥

आतः परस्योसधातोरुपधाया द्वित्वं नित्यं स्यादप्रत्यये। आउस्सो ॥

खिज्जादिभ्य इयः ॥४।३।१३॥

एभ्य इयप्रत्ययः स्याद्भावे। जीवियं। तुरियं। खिज्जियं। चरिया। जागरिया॥

करस्येदिये ॥४।३।१४॥

करधातोरादेरकारस्येकारः स्यादियप्रत्यये। किरिया ॥

आनिपेभ्यो लोपो रः॥४।३।१६॥

एभ्यः परस्य करधातो रेफस्य लोपः स्यात्तौ परे ॥

---

* उट्ट, कड्ढ, कड, गिज्झ, वड्ढ, वत्त, सुज्झ, एते उट्टादयः ॥

× खिज्ज, कर, चर, जागर, जीव, तुर, एते खिज्जादयः

आतस्तौ वा ॥४।३।१५॥

आतः परस्य करधातोरादेरकारस्येकारो वा स्यात्तिप्रत्यये। आगिइ, आकिइ, आकिती, आगती ॥

निपाभ्यां डस्तेरादेः ॥४।३।१७॥

निपपूर्वककरधातोः परस्य तिप्रत्ययस्यादेर्डकारो वा स्यात्। नियडी, नियती। पगडी, पगती ॥

पाओरोः करेऽणयोः ॥४।३।२७॥

पाउशब्दस्यौकारान्तादेशः स्यादणप्रत्ययान्तकरधातौ परे। पाओकरणं। पाओअरो ॥

उत्रादुपकरणे क्खरोऽति ॥३।१।१४०॥

उत्रात्परस्य करधातोः क्खर इत्यादेशः स्यादप्रत्यये। उवक्खरो ॥

अवात्कसस्याणि को द्विः ॥४।३।२८॥

अवात्परस्य कसधातोरादेर्द्वित्वं स्यादणि। अवक्कासो ॥

तेः कसादिभ्यः* ॥४।१।१८॥

एभ्यः परस्य तिप्रत्ययस्य तकारस्य ठः स्यात् ॥

ह्वोत्कसयोस्तौ ॥४।३।१६॥

ह्वाधातोरुदः परस्य कसधातोश्चादेरकारस्येकारः स्यात्तौ। ठिती। उक्किट्ठी ॥

उदोऽति द्विरनिटः ॥४।४।५४॥

उदः परस्य कसधातोरिडागमाभावे उपधाया द्वित्वं वा स्यादप्रत्यये। उक्करिसो, उक्कस्सो, उक्कसो ॥

* कस, तुस, दिस, पोस, सास, एते कसादयः।

Aho ! Shrutgyanam

कीरस्य णमाणयोर्ह्रस्वः ॥४।३।२४॥

अस्य धातोरीकारस्य ह्रस्वः स्याण्णमाणप्रत्यययोः । किरणं । विकिरणं ॥

संकुंचादिभ्यो णाणौ णित् ×॥४।३।३२॥

एभ्यः परौ णाणप्रत्ययौ णितौ भवतः । संकोचणा । निक्खेवणं, निक्खेवणा । खोभणं, खोभणा । देसणं, देसणा । बोहणं, पबोहणा । मोयणं । अवसाणं । सोधणं । संसोधणं ॥

समः कुंचस्य णे ॥४।४।११८॥

समः परस्य कुंचधातोरनुस्वारस्य लोपः स्याण्णप्रत्यये । संकोचणं ॥

कुज्झस्याणणयोः ॥४।२।३१॥

कुज्झधातोर्झभयोर्हः स्यादणणप्रत्यययोः । कोहो, कोहणं ॥

इदिणयोः क्खिक्किणचिणानामयति ॥४।३।३४॥

एषामिकारस्येणस्य चायादेशः स्यादप्रत्यये । खओ । कओ । विक्कओ । चओ । अवचओ ॥

क्खिसाभ्यां डायः ॥४।३।९॥

आभ्यां भावे डायप्रत्ययश्च स्यात् । खाओ । साओ । ववसाओ ॥

× सम्-कुंच, कुज्झ, नि-क्खिव, खुभ, दिस, बुज्झ, अव-स, सिध, विस, सुध, एते संकुंचादयः ॥

आतः क्खिवत्रस्य कखयोर्णे ॥४।२।३२॥

आतः परस्य क्खिवधातोः कखयोर्हकारादेशो वा स्याण्णप्रत्यये ॥

आविभ्यां क्खिवत्राद्वा ॥४।३।३३॥

आविपूर्वकात्क्खिवधातोः परौ णणाप्रत्ययौ णितौ वा भवतः। आहेवणं, आक्खेवणं, अक्खिवणं। विक्खेवणं, विक्खिवणं ॥

समः खुभस्याति हः ॥४।३।६४॥

संपूर्वकस्य खुभधातोरुपधाया हकारः स्यादप्रत्यये। संखोहो ॥

तौ गमरथुणरमसरसुणहणानां लोपः ॥४।३।६५॥

एषामुपधाया लोपः स्यात्तौ परे। आगई। रती। विरती। सई। सुई। पडिसुतो। हती। उवहती। थुई ॥

गेहो गिज्झस्य ॥४।३।२३॥

गिज्झधातोर्गेहादेशः स्याड्डिप्रत्यये। गेही ॥

समो गोवस्य फः ॥४।३।५४॥

संपूर्वकस्य गोवधातोरुपधायाः फः स्यादति परे। संगोफो ॥

नेर्घातस्यादेः ॥४।२।३३॥

नेः परस्य घातधातोरादेर्हकारो वा स्यादप्रत्यये। विनिहातो, विनिघातो ॥

आति गस्य लोपः ॥३।१।६५॥

अस्य धातोर्गकारस्य लोपो वा स्यादाप्रत्यये ॥

Aho ! Shrutgyanam

आति चिगिच्छस्य ॥१।३।३७॥

आप्रत्यये परे चिगिच्छधातोरादेर्वृद्धिर्वा स्यात्। तेइच्छा, तेगिच्छा। चितिगिच्छा ॥

चिणस्याणयोरिणस्यायः ॥३।१।६६॥

चिणधातोरिणस्यायादेशः स्यादणप्रत्यययोः परयोः। चयणं। उच्चयणं ॥

च्चयादाकः ॥४।३।५॥

च्चयधातोराकप्रत्ययोऽपि स्यात्। अपिशब्दाद्यथाप्राप्तम् ॥

आदेरिराके ॥४।३।६॥

आकप्रत्यये च्चयधातोरादेरकारस्येकारः स्यात्। चियागो, चियाओ, चाओ ॥

जुज्झात्तश्च ॥४।३।१०॥

जुज्झधातोर्भावे तप्रत्ययश्च स्यात्। जुद्धं, जुज्झं ॥

जोयस्य तौ यलोपश्च ॥४।३।२५॥

जोयधातोरोकारस्य ह्रस्वो यलोपश्च तिप्रत्यये। जुई, जुती ॥

रथरथवयोर्वा योऽति ॥४।३।५३॥

अनयोरुपधाया यकारो वा स्यादप्रत्यये। उत्थओ। थओ, थवो, थवणं ॥

उदस्थंभस्य खंभः ॥४।३।४२॥

उदः परस्य थंभधातोः खंभादेशः स्यादप्रत्यये परे। उक्खंभो ॥

Aho ! Shrutgyanam

दिस-पा-भुंज-लभ-वच्चानां स्वार्थेच्छायां दिदिक्खा-पिवासा-बुभुक्खा-लिच्छा-विवक्खा: ॥४।३।३१॥

एषां धातूनां स्वस्वार्थेच्छायामर्थे एते निपात्यन्ते । दिदिक्खा । पिवासा । बुभुक्खा । लिच्छा । विवक्खा ॥

धमस्य णावयोर्मस्य ॥४।३।२९॥

धमधातोर्मस्य द्वित्वं स्यात् ण-आवप्रत्ययोः । धम्मणं ॥

उदो दीर्घो णे ॥४।३।३०॥

उदः परस्य धमधातोर्दीर्घोऽन्तादेशः स्यात् णप्रत्यये । उद्धमाणं ॥

धरस्य धिः ॥४।३।२१॥

धरधातावरस्येसादेशः स्यात्तिप्रत्यये । धिई, धिती ॥

उपसर्गाद्धः ॥४।३।४॥

उपसर्गपूर्वकाद्धाधातोर्डिप्रत्ययः स्याद्भावे । निही, निधी । विधी । विही । संधी । समाधी, समाही ॥

अहेरुवादणि ॥३।२।११॥

अहिपूर्वकोवपूर्वकस्य पज्जधातोः पयादेशः स्यादणि परे । अज्झोववाओ ॥

आतो जयोर्लोपस्तौ ॥३।२।१२॥

आतः परस्य पज्जधातोर्जकारयोर्लोपः स्यात्तिप्रत्यये परे । आवत्ती ॥

Aho ! Shrutgyanam

पयभजरुजानां गः ॥४।३।५८॥

पयाद्युपधाया गकारो वा स्यादणि परे। पागो । पलिभागो। विभागो। भागो। विभागो । रोगो ॥

फासस्य ह्रस्वश्च ॥४।४।५८॥

उपसर्गरहितस्य फासधातोः सकारस्य रिडागम आकारस्य ह्रस्वश्चाप्रत्यये परे। फरिसो ॥

भयोऽतव्वमाणेषु ॥३।१।११७॥

बीहधातोर्भय इत्यादेशः स्याद् अ-तव्व-माणप्रत्ययेषु परेषु । भयं ॥

भणात्तेः ॥३।१।२२॥

भणधातोः परस्य तिप्रत्ययस्येडागमः स्यात् । भणितो, भणिई ॥

भुंजस्यानुस्वारलोपश्च ॥४।३।५७॥

भुंजधातोरनुस्वारस्य लोपश्चकाराद्धुपधाया गकारादेशः स्यादणि परे। भोगो । उवभोगो ॥

उदो मज्जस्याऽतयोरुद्तः ॥४।३।२८॥

उत्पूर्वकस्य मज्जधातोरादेरकारस्योकारो वा स्यादाप्रत्यये तप्रत्यये च । उम्मुज्जा, उम्मज्जा ॥

आ मन्नात्करणे ॥४।३।७॥

मन्नधातोः करणेऽर्थे आप्रत्ययः स्यात् । मन्ना ॥

आऽणुपेभ्यो मिलो ळ्वा णे ॥४।३।३५॥

एभ्यः परस्य मिलाधातोर्ळ्वा इत्यादेशः स्यात् णप्रत्यये परे । अणुळ्वाणं । अळ्वाणं । पळ्वाणं ॥

मुंचात्खण् अलोपश्च ॥४।३।८॥

मुंचधातोः खणप्रत्ययः स्याद्भावे धातोरकारस्य लोपश्च। माक्खो। मोयणं॥

आतो मुसस्याणयोर्मरिसः ॥४।३।४०॥

आपूर्वकस्य मुसधातोर्मरिसादेशः स्याद् अ-णप्रत्ययोः। आमरिसो, आमरिसणं॥

वेरति वीमंसः ॥४।३।४१॥

वेः परस्य मुसधातोर्वीमंस इति निपात्यतेऽति परे। वीमंसो॥

रज्जस्य जयोः ॥४।३।५८॥

रज्जधातोर्जकारयोर्गकारः स्याद्णि। रागो॥

णे रंगः ॥४।३।५९॥

रज्जधातोर्णप्रत्यये रंगादेशः स्यात्। रंगणं॥

रुंभस्य रोहः ॥४।३।४७॥

रुंभधातो रोहादेशः स्याद्तिप्रत्यये परे। ओरोहो॥

व्यातिभ्यां रिचस्य ॥४।३।६०॥

आभ्यां परस्य रिचधातोरुपधाया गकारादेशः स्याद्ण्-प्रत्यये। वइरेगो॥

लाउः सातः ॥४।२।४५॥

अप्रत्ययसहितस्य लिपधातोर्लाउ इत्यादेशो वा स्यात्। लाऊ॥

अन्वाभ्यां वा णे ॥४।२।४४॥

आपूर्वकस्य लिपधातोर्लेवादेशो वा स्यात् णप्रत्यये।

Aho ! Shrutgyanam

अनुलेवणं, अनुलिंपणं । आलेवणं, आलिंपणं ॥

लियस्य णतयोर्लेली ॥४।३।५१॥

लियधातोः क्रमेण ले ली इत्येतावादेशौ स्तो णप्रत्यय-तप्रत्यययोः परयोः । लेणं ॥

वत्तस्य डौ ॥४।३।२२॥

अस्यादेरकारस्येकारो वा स्याड्डिप्रत्यये । वित्ती, वत्ती । आवित्ती, आवत्ती ॥

निव्वरवरसयोस्तौ ॥३।१।१७४॥

निरः परयोर्वरवरसधात्वोररस्योसादेशः स्यात्तिप्रत्यये । णिव्वुई, णिव्वुत्ती । वुट्ठी ॥

अवपरिभ्यामूसो वसस्य ॥४।३।३६॥

आभ्यां परस्य वसधातोरूस इत्यादेशः स्याण्णप्रत्यये । अवऊसणं । पज्जूसणं ॥

वेर्विचस्य कोऽणि ॥४।३।५५॥

वेः परस्य विचधातोरुपधायाः कादेशः स्यादणि परे । विवेगो, विवेको ॥

विजस्याण्णयोः ॥४।३।६१॥

विजधातोरुपधाया गकारोऽणि णे च । वेगो । उव्वेओ, उव्वेगो । संवेगो, संवेगणं ॥

आति पाद् व्वयस्य ज्जः ॥४।३।६३॥

पपूर्वकव्वयधातोरुपधाया ज्जादेशः स्यादाप्रत्यये । पव्वज्जा

सज्जस्य जयोर्गो ॥४।३।४३॥

सज्जधातोर्जकारद्वयस्य गकारद्वयादेशः स्यादप्रत्यये इप-

Aho ! Shrutgyanam

स्यये च । सग्गो । उस्सग्गो । संसग्गो ॥

आणिज्जयोः सलहस्य सिलाहसलाहौ ॥४।३।४४॥

सलहधातोः क्रमेण सिलाहसलाहावादेशौ स्त आप्र-त्यये णिज्जप्रत्यये च परे । सिलाहा, सलाहा ॥

सासस्यातः ॥४।३।२०॥

सासधातोराकारस्येकारो वा स्यात्तौ परे । सिट्ठी । अणु-सिट्ठी । अणुसट्ठी ॥

सिंचस्य सेकः ॥४।३।४५॥

सिंचधातोः सेकादेशः स्यादप्रत्यये । सेओ, अभिसेओ ॥

ईतः सिलीसस्यैत् ॥४।३।४६॥

अस्येकारस्यैकारः स्यादप्रत्यये । सिलेसो ॥

सुणस्य सवो णे ॥४।३।४६॥

सुणधातोः सवादेशः स्याण्णप्रत्यये । सवणं ॥

सोयस्य वा ॥४।३।६२॥

सोयधातोरुपधाया गकारादेशो वा स्यादप्रत्यये । सोगो, सोओ ॥

हणाच्चाड् ॥४।३।११॥

हणधातोर्भावे चाट्प्रत्ययः स्यात् । हच्चा ॥

उपसर्गाद्धणस्याऽऽनि हः ॥४।३।४८॥

उपसर्गात्परस्य हणधातोर्हादेशः स्यादानि परे । पडिहा । विनिहा ॥

हिंसाद् या च ॥४।३।१२॥

हिंसधातोर्भावे याप्रत्ययोऽपि स्यात् । हिंसया, हिंसा ॥

Aho ! Shrutgyanam

हुणस्य ह्वो वा ॥४।३।५०॥

हुणधातोर्ह्वादेशो वा स्यात् णप्रत्यये परे । ह्वणं, हुणणं ॥

॥ इति कृदन्ते भावार्थप्रक्रिया ॥

यावन्तो यौगिकाः शब्दा लब्धा जैनागमे खलु ।
ते सर्वे साधिताः प्रायः, सूत्रैरत्र सवार्त्तिकैः ॥१॥
रूढेषु विकृता वर्णैर्देशकालादिभेदतः ।
विकृतिर्दर्शिता तेषां, स्वरव्यञ्जनयोः क्रमात् ॥२॥
गवेषणीयाः स्वयं प्राज्ञैर्ज्ञायेरन् ये तथाविधाः ।
शेषा निपातसंसिद्धा द्रष्टव्याः शब्दसंग्रहे ॥३॥

प्रशस्तिः ।

वर्षे चन्द्रदिशानिधिक्षितिमिते श्रीविक्रमस्याश्विने,
मासे शुक्लदले शरद्विलसिते तिथ्यां दशम्यां कुजे ।
श्रीमत्स्वामिगुलाबचन्द्रचरणाम्भोजालिरत्नेन्दुना,
स्थित्वा श्रीवढवाणकेम्पनगरे पूर्णीकृता कौमुदी ॥१॥

॥ इति श्रीलोङ्कागच्छान्तर्गतलिम्बडीसम्प्रदायतिलकायमानपूज्यपाद-श्रीगुलाबचन्द्रजित्स्वामिचरणाम्बुजचञ्चरीक-मुनिश्री-रत्नचन्द्र-विरचितायां जैनसिद्धान्तकौमुद्यामुत्तरार्द्धं समाप्तम् ॥

॥ इति श्री जैनसिद्धान्तकौमुदी [अर्द्धमागधीव्याकरणं] समाप्तिमगात् ॥

Aho ! Shrutgyanam

ॐ

सूत्रपाठः ॥

प्रथमोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ॥

१ अआइईउऊएओ स्वराः ॥ २ कखगघङ चछजझञ-टठडढण-तथदधन-पफबभम-यरलवसहा व्यञ्जनानि ॥ ३ अइउ ह्रस्वाः ॥ ४ आईऊ दीर्घाः ॥ ५ वर्णोपरि बिन्दुरनुस्वारः ॥ ६ स्वराणामन्त्यष्टिः ॥ ७ अन्त्यात्पूर्व उपधा ॥ ८ अप्रयुज्यमानः सफल इत् ॥ ९ ङः प्रत्ययादिः ॥ १० स्वरानन्तराणि व्यञ्जनानि संयुक्तम् ॥ ११ अधातुप्रत्ययोऽर्थवन्नाम ॥ १२ कृत्तद्धितौ च ॥ १३ उदन्मिदिणेह्य एदतोदिहिंतो स्साणम्मीसवः सुप् ॥ १४ क्रियायामश्वादयो धातवः ॥ १५ आयान्ताश्च ॥ १६ द्वौ द्वौ प्रथममध्यमोत्तमाः ॥ १७ एकवचनबहुवचने ॥ १८ सुपश्च ॥ १९ अव्ययम् ॥ २० अहादयः ॥ २१ अत्यादयश्च ॥ २२ अमादितद्धितान्ताः ॥ २३ हेतुसम्बन्धकृदन्ताश्च ॥ २४ समासेऽमन्ताः ॥ २५ इकारान्ता दिस्यादयः ॥ २६ करणप्रयोजकः कर्त्ता ॥ २७ क्रियया कर्त्तुरिष्टं कर्म ॥ २८ अभेदान्वयि च ॥ २९ कर्मयुगविवक्षितं चापादानादिभिः ॥ ३० व्यापारवत्करणम् ॥ ३१ कर्मान्वयेनेष्टं सम्प्रदानम् ॥ ३२ विभागेऽवधिरपादानम् ॥ ३३ आश्रयोऽधिकरणम् ॥ ३४ अनेकं नामैकार्थे समासः ॥ ३५-आदेदोतामदिदुतो ह्रस्वाः ॥ ३६ अदिदुतामादेदोतो वृद्धिः ॥ ३७ अदाताविदीतावुदूतौ सवर्णौ ॥ ३८ व्यञ्जनेषु प्रथमद्वि-

तीययोस्तृतीयचतुर्थयोश्च प्रथमतृतीयौ ॥ ३९ समानयोर्विरोधे परम् ॥ ४० षष्ठ्या अन्त्यस्य ॥ ४१ विशेषणं तदन्तस्य ॥ ४२ अनेकवर्गसित्सर्वस्य ॥ ४३ टकितावाद्यन्तयोः ॥ ४४ एकस्मिन्नेकवचनम् ॥ ४५ तदन्यस्मिन् बहुवचनम् ॥ ४६ चतुर्थ्या न बहुवचनम् ॥

द्वितीयः पादः ॥

१ बहुलम् ॥ २ स्वरयोरव्यवधाने प्रकृतिभावो लोपो वैकस्य ॥ ३ तदभावे सन्धिः ॥ ४ एकः पूर्वपरयोः ॥ ५ समानयोः पूर्वस्य सवर्णः ॥ ६ वृद्धिरतः स्वरे परस्य ॥ ७ सवर्णे दीर्घः ॥ ८ वेरितोऽतेरतीः ॥ ९ इदीदुदूतामसवर्णे पूर्वः ॥ १० तरहेभ्यश्च जझाः ॥ ११ उहुर्निर्वीनां संयुक्ते ॥ १२ संयुक्ते ह्रस्वः ॥ १३ पत्तादिषु नित्यम् ॥ १४ आदिदुद्भ्यः स्वरे सुपि पूर्वसवर्णः ॥ १५ पितुप्रभृतीनामोरुत्यात् ॥ १६ अत्परोः ॥ १७ अरोमि ॥ १८ अतोऽस्त्रियां हिस्तोतः क्वचित् ॥ १९ स्सस्य वा ॥ २० अहे व्यञ्जनस्य परसवर्णः ॥ २१ त्रयाणामव्यवधाने पूर्वस्य लोपः ॥ २२ समश्च ॥ २३ अपूर्वस्य संयुक्तस्य ॥ २४ उपसर्गस्य दीर्घात् ॥ २५ निरः क्रमस्य ॥ २६ अभेर्द्रुसस्येज्जे ॥ २७ कमचिणतरपज्ञानां द्वितीयः ॥ २८ आतो ज्ञवस्य नित्यम् ॥ २९ नस्से दीर्घात् ॥ ३० न्तीज्ञयोः पविप्पाभ्याम् ॥ ३१ उतः पितुप्रभृतिभ्यो डडरमावामन्त्रणे ॥ ३२ ताराद्वा डो लोपश्चारस्य ॥

तृतीयः पादः ॥

१ खुड्डस्य के दीर्घः ॥ २ इः किरणाभुजंगयोः ॥ ३ रमे रस्य ॥ ४ नगिणस्यादेः स्वरस्य ॥ ५ उर्मत्थुलिंगस्य ॥

Aho ! Shrutgyanam

६ उपधायाः ॥ ७ अग्निक्विखल्लादीनाम् ॥ ८ ओस्तंमूलस्य ॥ ९ पुरुषे द्वितीयस्योत इः ॥ १० वेंटालिमिंदयोरत् ॥ ११-दुकूलस्य द्विईस्वश्च ॥ १२ आनम्च्छादस्येते ॥ १३ हृणस्य हस्य हुरिये ॥ १४ उकृतोरोदुनो लस्य द्विः कुतूहले ॥ १५-वईन ऊदोतौ ॥ १६ विच्छिये चोऽनुस्वारः ॥ १७ उस्त्रियस्य ॥ १८ इश्विहीहिंनयां दुप्रभृतिभ्यः ॥ १९ पडेरेकेन समासे दीर्घः ॥ २० एयः कात्पूर्वः परो वा ॥ २१ खण्डादीनामुत्तरपदे ॥ २२ जादयो व्यञ्जनान्ताः ॥ २३ कोरादोतौ ॥ २४-णित्यादिइरस्य वृद्धिः ॥ २५ एमाणयोर्दिसस्य प्रेक्षणे ॥ २६-खडि भुंजस्य ॥ २७ रुदस्यान्ततिन्नितिहिमाणेषु ॥ २८ दो वः ॥ २९ णुकारादीनां त्यादौ ॥ ३० गिण्हस्य स्वार्थे ॥ ३१-मुंचस्य तिन्तिमिचिऊखणत्तुंनूणेषु ॥ ३२ आनो रुहस्य तित्ताकेषु ॥ ३३ आतस्तुडस्येज्जे ॥ ३४ गुहस्येते ॥ ३५ मे तरस्य ॥ ३६ च्छुमदुहभुंजसिंचानां डे ॥ ३७ आति चिगिच्छस्य ॥ ३८ निरोऽभ्यवानूद्रागाम् ॥ ३९ एत्पोरस्य कचे ॥ ४० पितुप्रभृतीनामिः ॥ ४१ सात्पकस्य ॥ ४२ पुष्वस्य पो ॥ ४३ जतक्कयामनन्तरस्य ॥ ४४ ओजंसादीनामुत्तरपदे ॥ ४५ चरेऽहेराः ॥ ४६ दियानिस्योरन्त्रोत्तरपदयोः ॥ ४७ आणात्पाणस्योत् ॥ ४८ ओदणादारस्य ॥ ४९ अवदग्गस्य वा ॥ ५० छवेरिये दीर्घः ॥ ५१ उउंबरस्योतो लोपः ॥ ५२ ईरुद्धस्य मुहे ॥ ५३ अच्छेरः ॥ ५४ एकार्थकानां दसपण्णरउइषु दीर्घः ॥ ५५ द्वाद्वयोश्च ॥ ५६ तेरः ॥ ५७ चतोरतः पूर्वस्य ॥ ५८ चोः संख्यावाचके ॥ ५९ तरस्य के ॥ ६०-अत्पसिणास्येये ॥ ६१ मिगसिरस्यादेरति ॥ ६२ अदणोरुतोन् ॥ ६३ अजिनस्येतोऽपि ॥ ६४ पडिहार्यो आत एः ॥

Aho ! Shrutgyanam

६५ ममस्येदियोः ॥ ६६ इति सङ्ढाया ह्रस्वः ॥ ६७ जुवाणस्यातो वस्य द्विर्वा ॥ ६८ एदहिपुरयोर्वचे ॥ ६९ कलुणस्यौत् ॥ ७० अङ्गादीनां मये ॥ ७१ दिसे पूर्वस्याति ॥ ७२ एदिमस्य ॥ ७३ ईच कस्थ ॥ ७४ इदेतस्य ॥ ७५ इमारसस्य कखः ७६ समानाच्छः ॥ ७७ इमो लोपो वा त्तोहुणादिसेषु ॥ ७८ कादेः ॥ ७९ आमोसादोसहे रोसस्य ॥ ८० तवि दुहो ह्रस्वः ॥ ८१ जहस्तिमाणणिज्जेषु ॥ ८२ उत्कस्य तोत्थहिंसु ॥ ८३ इणमादीनामेवे दीर्घः ॥ ८४ दलस्य हे ॥ ८५ मिलस्य ये ॥ ८६ पान्नयि वेः ॥ ८७ उतः सुस्सुरस्यान्त्यस्य ॥ ८८ उत्सिणस्य मो ॥ ८९ एति दो ह्रस्वः ॥ ९० ह्रेर्मोः ॥ ९१ आत इत् ॥ ९२ पाद्यच्छः ॥ ९३ नेर्जमस्य तिन्तित्तासु ॥ ९४ पस्योणदेज्ञागट्टिसवणासु ॥ ९५ सुत्ते वा ॥ ९६ एति समुदो धारस्य ॥ ९७ लोलस्य स्से ॥ ९८ ट्ठश्च ॥ ९९ अपेरेरेति धि ॥ १०० दो रुहस्योतो दीर्घः ॥

चतुर्थः पादः ॥

१ दोहो धः ॥ २ मोऽनुस्वारोऽवसानव्यञ्जनयोः ॥ ३ स्वरे वा ॥ ४ तस्य सवर्गीयपञ्चमः स्पर्शेषु ॥ ५ उदः सम्छः ॥ ६ झाधभेभ्यस्तस्य धः ॥ ७ सात्थः ॥ ८ अस्सादिषु संयुक्तस्यादिपूर्वयोर्लोपदीर्घौ ॥ ९ एतः कारेल्लस्येयः ॥ १० अनादेरसंयुक्तस्य को गयो ॥ ११ धातूनां कणादीनाम् ॥ १२ वज्जादीनां वस्योस् ॥ १३ पज्ञादीनां पो वः ॥ १४ धादीनां धभयोर्हः ॥ १५ मिलेच्छे च्छस्य क्खुः ॥ १६ एतोऽदुताविलयोर्लोपः ॥ १७ पज्ञाये ज्ञायस्य रियागः ॥ १८ मत्तिये त्तयोष्टो ॥ १९ तत्थस्य तहः ॥ २० गचजतदां यः ॥ २१ बुधादीनां

Aho ! Shrutgyanam

घस्य ह: ॥ २२ नो णः सर्वत्र ॥ २३ परिहे परयोः फलौ ॥
२४ आतपादीनां पस्य वः ॥ २५ पिपीलिकाया अनादेः ॥ २६
पुडपुरयोरुत्तरपदयोरादेः ॥ २७ पउमस्य पोम्मः ॥ २८ य-
जोजः ॥ २९ रिओरुउः ॥ ३० जुहिट्ठिले च ॥ ३१ आविले
वस्य ॥ ३२ जुवलनावधयोर्वस्य ॥ ३३ उर्वसभस्य सानः ॥
३४ परिवारे वरयोर्यलौ ॥ ३५ दिवसे वसयोर्घहौ ॥ ३६ उ-
क्खिणपक्खिणयोः क्खिणस्य ण्हः ॥ ३७ अस्सिलेसे सस्य क्खिरश्चे-
तः ॥ ३८ इलोलोपश्च ॥ ३९ महरट्ठे हरयोर्व्यत्ययः ॥ ४०-
मणियमक्खरस्य च्छरो यमो लोपः ॥ ४१ यस्य चरे ॥ ४२-
दुकस्य दः ॥ ४३ सहसमानयोः सः ४४ णरवपदस्य णप्फयः
सात् ॥ ४५ अहस्य ण्हः ॥ ४६ तिपदे दस्य तलोपौ ॥ ४७
खंधादावारस्यावस्य लोपः ॥ ४८ पायवस्योवगमणे यस्य वस्य
यवयोश्च ॥ ४९ अघोरवधेर्वस्य ॥ ५० आगंतारस्यागार
स्यारस्य ॥ ५१ इयोरगन्तारः ॥ ५२ इज्जाया एमस्येसः ॥
५३ विहवणाभ्यां पतेः फसौ ॥ ५४ उत्तेयस्य ॥ ५५ पाय-
स्य मूले यस्य ॥ ५६ दिवड्ढाड्ढाइज्जाद्धुट्ठाः सार्द्धैकद्व्यत्रयेषु ॥
५७ असो पस्य फः ॥ ५८ इगे गस्य ॥ ५९ चत्तालीसस्य
याजतालीसा ॥ ६० दोद्धेवी ॥ ६१ वा संख्यार्थके ॥ ६२-
दुवादसे ॥ ६३ सद्धैः ॥ ६४ पणाल्लोपः ॥ ६५ सत्तरेर्हश्च ॥
६६ चतुरचुलावसीतौ ॥ ६७ छस्य सोर्दसे ॥ ६८ सत्तस्य
दोसादौ ॥ ६९ सीयाले ॥ ७० दसस्य रलौ ॥ ७१ अट्ठात्स-
स्य ॥ ७२ अट्ठे ट्ठस्य डो बालयालीसयोः ॥ ७३ एकस्योणे
अउणः समुदितस्य ॥ ७४ थेरधीरपियानामिज्ज धधपाः ॥
७५ इये जायस्य जेया ॥ ७६ उदियस्य वा ॥ ७७ अस्सिण्या
ईणरयोर्सणि ॥ ७८ इये सिलेसस्य सेसः ॥ ७९ अति पच्छिम

स्य पच्छिमपच्छिमौ ॥ ८० रातेरुत्तरपदस्यात् ॥ ८१ आ-
त्मनस्य घः ॥ ८२ जसादिभ्यो वा ॥ ८३ णातेश्च ॥ ८४-
वस्सस्य वुसिमन्ते ॥ ८५ पङ्कादीनां संज्ञायां दीर्घः ॥ ८६-
थेरधीरसहायानामेरे रायानामेञः ॥ ८७ सफले फस्य हः ॥
८८ सुकुमारस्य सुगमलः ॥ ८९ इंगालादिभ्यो भवस्या-
देर्छिः ॥ ९० दिसस्य रलावति ॥ ९१ ईत्तादितः ॥ ९२ ति-
यस्य वा ॥ ९३ दोर्विडीयतिर्यक्तीयेषु ॥ ९४ तेरञ्चणि च ॥
९५ सव्वस्य सो दे ॥ ९६ जाणस्यादेर्यः ॥ ९७ आतो दह-
स्य डः ॥ ९८ सहस्सास्वादे दयोस्तौ यः ॥ ९९ आतो दीव-
स्य दो लः कणतेतेषु ॥ १०० पादिज्जे ॥ १०१ वस्य यो वा ॥
१०२ नेः कसस्यादेर्घः ॥ १०३ खेतस्य च्छः ॥ १०४ गिल्ह-
स्य घिसुः १०५ णिच्चे चयोस्तियः ॥ १०६ गिहस्य गहघरह-
राः ॥ १०७ भेसजस्य हः ॥ १०८ परिवाढ्यो डः ॥ १०९-
अहेरत्तस्य ठश्चौ ॥ ११० वीभत्थस्य छश्च ॥ १११ डरयोर्लो
लस्य रः ॥ ११२ अलाबुरिव्वोर्लोपः ॥ ११३ लुक्खादीनां
हः ॥ ११४ आसो स्ट्ठस्य तः ॥ ११५ मणादावस्य मः ॥
११६ पणस्य ह्निः ॥ ११७ मडस्येल्लेः ॥ ११८ उपमादीनाम-
णि ह्निः ॥ ११९ पयडेर्यः ॥ १२० दूयादीनां चः ॥ १२१-
तोयस्य ज्जः ॥ १२२ णिह्नमि यः ॥ १२३ एति दिसस्य हः ॥
१२४ माणे वा ॥ १२५ विपणाभ्यां नमस्य वो न्तौ ॥ १२६-
उपसर्गात्पडस्य यः ॥ १२७ लुणस्येज्जे यः ॥ १२८ वहस्येहो
भ्मो ह्निश्च ॥ १२९ कर्मणि चाति ॥ १३० न्ते वा ॥ १३१-
चिंतस्य तिन्त्योः ॥ १३२ व्ययस्य चस्त्यादौ ॥ १३३ सुयस्य
वस्सिनयोः ॥ १३४ अभे रंजस्य गः ॥ १३५ अदितयोरिवैं-
कादेशो ॥ १३६ किलामस्य वो न्तिकर्मणोः ॥ १३७ चयस्य क्को

Aho ! Shrutgyanam

ये ॥ १३८ जोयस्य वः ॥ १३९ ज्झामस्य तौ वा लोपः ॥ १४० घुक्खस्य कः ॥ १४१ लोलस्येज्जे ढः ॥ १४२ समञ्चिद्वस्य खः १४३ धोवस्य यः ॥ १४४ आतो स्हस्य भस्तौ ॥ १४५ ओतस्त्ति च ॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः ।

प्रथमः पादः ॥

१ नाम्नः सुपः ॥ २ इदुतः पुंस्यतः ॥ ३ आमन्त्रणोतो लोपः क्लीबे नित्यं पुंसि वा लोपोऽतो वा दीर्घः ॥ ४ युभ्यां च ॥ ५ अतोऽत्यन्त्यस्य ॥ ६ न्तमन्तयोरीदुतोर्न्तस्य ॥ ७ लोपेऽनुस्वार उतः ॥ ८ रायादिभ्य आत् ॥ ९ मोऽणड् वा ॥ १० अदितोरणोः ॥ ११ राये सेणस्य यस्य ञा ॥ १२ सस्सस्य न्नो ॥ १३ न्तमन्ताभ्यामुः ॥ १४ इणास्सयोर्डास् डोसौ नलोपश्च ॥ १५ सेदणमो भवन्तस्स मे ॥ १६ तारादोः ॥ १७ तारस्य त्तुस्तृतीयादौ वा ॥ १८ रायस्याणमिद्योरियस्य ॥ १९ इदुद्भ्यामिणस्य णा ॥ २० अत्ताण्पाभ्यां च ॥ २१ स्सस्य णोः ॥ २२ जसादिभ्यः सोः ॥ २३ सुट् चेणस्य ॥ २४ कम्मधम्मयोरुरिणे ॥ २५ अदितोर्णो वा ॥ २६ अएतः स्सणावावस्त्रियाम् ॥ २७ अतोत्स्सयोर्णोत् ॥ २८ क्वचिदात्स्सः ॥ २९ अतोऽवो डुतः ॥ ३० बहोरवेरतः ॥ ३१ णस्य स्त्रियामेः ॥ ३२ आतश्चादितोरोक् ॥ ३३ आदीदूतां ह्रस्वो मि ॥ ३४ स्सस्याएः ॥ ३५ मेरादीदूद्भ्यः ॥ ३६ आतो डेरीदूद्भ्यां डिङ् वाऽऽमन्त्रणे ॥ ३७ सव्वादयः सव्वणामाः ॥ ३८ सव्वणामादत्येः ॥ ३९ अनुस्वारस्येस्सिमः ॥ ४० इस्सिमणामः ॥ ४१ कजतेभ्यो-

ऽन्तोतो म्हा ॥ ४२ उत्येततयोरक्लीबे सः ॥ ४३ तस्य लोपो वा ॥ ४४ तस्य सस्सस्य सेर्वा ॥ ४५ कादिहिंतोरितो डओः ॥ ४६ इमकाभ्यां सेः स्सिं वा ॥ ४७ इमस्य सोतोऽयम् ॥ ४८ स्त्रिया-मियम् ॥ ४९ तोत्थयोरेस् ॥ ५० मस्य तो ण्हि-दाणिं-ह-हं-तरेषु ॥ ५१ मोण्ड् वा ॥ ५२ मस्य णो मि ॥ ५३ इणेऽणः ॥ ५४ स्सिंस्सयोरो वा ॥ ५५ आतः स्सिं स्सवणामात् ॥ ५६ जातयोरीर्वेणे ॥ ५७ अणस्ससीनामिमाकाजाताभ्यो डी से ॥ ५८ डेश्चेमाददितोः ॥ ५९ स्सस्य डी ए ॥ ६० उतः क्ली-बान्मः ॥ ६१ अदितोरेकैकस्य णिती दीर्घश्च प्रकृतेः ॥ ६२ तेरनुस्वारो वा ॥ ६३ दोरदितोर्डोः ॥ ६४ डुवे डोण्णी क्वचित् ॥ ६५ इहीहिंतोऽणामिसुष्वोत् ॥ ६६ तेर्डओः ॥ ६७ णिश्च ॥ ६८ सादितश्चत्तारि चतुरः ॥ ६९ रोश्च ओः ॥ ७० पञ्चादिभ्यो लोपः ॥ ७१ संख्यायां तेः ॥ ७२ संख्यावाचकादणमो ण्ह-म् ॥ ७३ वीसादीनामानउईनां क्लीबत्वं प्रथमाद्वितीययोः ॥ ७४ नाम्नो नपुंसके ह्रस्वः ॥ ७५ अम्हस्य हमहमौ सोतः ॥ ७६ सातो वयम् ॥७७ समो मेमंममममममः ॥ ७८ सेतो णोः ॥ ७९ सेणस्य मएमयौ ॥ ८० सातोतो ममाओममाहिंता-वौ ॥ ८१ सस्सस्य ममममज्झंमज्झाश्च ॥ ८२ मौ ममं ॥ ८३ अणमोऽणो लोपः ॥ ८४ साणमोणेऽस्साकमौ ॥ ८५ मम्हि वा ससेः ॥ ८६ सोतस्तुम्हस्य तंतुमेतुममः ॥ ८७ बहुव-चनेषु तुब्भतुज्झौ ॥ ८८ मिमौ च हो लोपः ॥ ८९ सेणस्य तु-मे ॥ ९० सातोतस्तुमाहिंतो ॥ ९१ सस्सस्य ते-तव-तुज्झं-तुमं-तुहं-तुज्झाः ॥ ९२ अणमोऽमः ॥ ९३ गोडवम् ॥ ९४ ह्वावोरतः ॥

Aho ! Shrutgyanam

द्वितीयः पादः ॥

१ अतः स्त्रियां डाः ॥ २ अधिकरणादिभ्यो डीः ॥ ३ अणश्च ॥ ४ इतोऽभावे णीः ॥ ५ भिक्खुप्रभृतिभ्यश्च ॥ ६ इंदादाणी पुंयोगे ॥ ७ दिसाद्भिश्च ॥ ८ महात्तीः ॥ ९- के पूर्वस्य ह्रस्वोऽन्त इर्वा ॥ १० सिस्समासयोर्णीति सलोपे ॥ ११ उतो डीति प्रकृत्या ॥ १२ कर्त्तरि प्रथमा ॥ १३ आमन्त्रणे च ॥ १४ अनुक्ते ॥ १५ कर्मणि द्वितीया ॥ १६ समयमार्गयोरभिव्याप्तौ ॥ १७ कर्त्तृकरणयोस्तृतीया ॥ १८- सहार्थयोगे गुणीभूते ॥ १९ आधारेऽपि ॥ २० गोत्तादिभ्योऽभेदे ॥ २१ विनादियोगे ॥ २२ प्रकारमुपेताल्लक्षणे ॥ २३ सम्प्रदाने चतुर्थी ॥ २४ तुमर्थे णाद्यन्तेभ्यः ॥ २५ कर्त्तरि च ॥ २६ तादर्थ्ये षष्ठी च ॥ २७ अपादाने पञ्चमी ॥ २८ मर्यादायामाप्ति ॥ २९ हेतौ ॥ ३० प्रभृत्यर्थयोगे ॥ ३१ शेषे षष्ठी ॥ ३२ समुदायादेकस्य पृथक्करणे सप्तमी च ॥ ३३ अन्तरायोगे च ॥ ३४ दूरान्तिकाद्यर्थैर्द्वितीयासप्तम्यौ च ॥ ३५ दिगर्थैः पञ्चमी च ॥ ३६ कर्त्रादौ कृति कर्मणि ॥ ३७- णमोयोगे ॥ ३८ सप्तम्यधिकरणे ॥ ३९ क्रियालक्षकक्रियायाम् ॥ ४० हेत्वर्थयोगे सर्वाः प्रायेण ॥

तृतीयः पादः ॥

१ पदसामर्थ्ये समासतद्धितौ ॥ २ समासे प्रथमानिर्दिष्टं पूर्वम् ॥ ३ सुप् सुपा वा ॥ ४ अव्ययीभावः ॥ ५ स नपुंसकमेकं च ॥ ६ विभक्त्यर्थादिष्वव्ययम् ॥ ७ अतिरतिक्रान्ते द्वितीयया ॥ ८ अनुपद्वौ वीप्सादिषु ॥ ९ असादृश्ये यथार्थकानि ॥ १० चेन जादयः समुच्चये ॥ ११ आ

Aho ! Shrutgyanam

यावदर्थका मर्यादादौ ॥ १२ आभिमुख्यादावभिः ॥ १३ प्रभृतिना पञ्चमी ॥ १४ उवः सामीप्ये षष्ठ्या ॥ १५ कुत्सादुष्टादौ कुदू प्रथमया ॥ १६ निष्क्रान्तादौ पञ्चम्या निः ॥ १७ तत्पुरुषः ॥ १८ भेदकं भेद्येन कर्मधारयः ॥ १९ तत्र पूर्वं पुंवत् ॥ २० पत्तामोडादिषु परम् ॥ २१ द्वितीया पत्तादिभिः ॥ २२ दयादीनां पत्तादौ ॥ २३ तृतीयापञ्चमीरुसप्तम्यश्च ॥ २४ सहस्तृतीयया ॥ २५ चतुर्थी तादर्थ्ये ॥ २६ षष्ठी च शेषे ॥ २७ कारादिभिश्च ॥ २८ पुल्लादयोऽहेन षष्ठ्या ॥ २९ सप्तम्या अलोपः ॥ ३० इमःतसन्तोप्रथमायाः ॥ ३१ एयादास्वे वा ॥ ३२ संख्यार्थकाः समानाधिकरणैः समाहारे ॥ ३३ अनेकं समूहे ॥ ३४ अप्रथमाऽन्यपदार्थे प्रथमा ॥ ३५ अत्र लिङ्गमन्यपदार्थस्य ॥ ३६ क्वचिद्व्यधिकरणेनापि ॥ ३७ अस्मात्को वा ॥ ३८ इल्के पूर्वस्य ॥ ३९ निषेधार्थकेभ्योऽस्त्यर्थस्य लोपः ॥ ४० दिग्वाचका मध्ये ॥ ४१ एक्कादयः संख्यायां दसादिभिरधिकान्ताः ॥ ४२ जीवादयो गाहादिभिर्गिण्हादीनामनुप्रयोगे ॥ ४३ आभीक्ष्ण्यवीप्सयोर्द्विः ॥ ४४ गच्छादीनां पूर्वस्य दीर्घो द्वितीयस्यैर्बहुलम् ॥ ४५ दण्डादीनामतिशयेऽनुस्वारश्च ॥ ४६ उरसुहमज्झाणं तृतीयार्थे च ॥ ४७ मासस्य नैरन्तर्ये ॥ ४८ दद्दवात्स्सः ॥ ४९ दिसिपरयोरोत् ॥ ५० अण्णस्य वा ॥ ५१ कोडेरात् ॥

चतुर्थः पादः ॥

१ तद्धिताः ॥ २ अदणिकेकणिज्जेज्जणियेयणिमेल्लकमेत्ताः ॥ ३ तद्धितेषु स्वराद्या ङितः ॥ ४ स्वार्थे प्रथमायाः ॥

Aho ! Shrutgyanam

५ अल्पे च ॥ ६ तत आगतः ॥ ७ तस्येदमपत्यं समूहो वृत्तिर्व्यापारः ॥ ८ तत्रभवोऽधिकृतः ॥ ९ महादालयल्ल-ल्लियाः ॥ १० पोत्तादुल्लः ॥ ११ पयावत्यादीनां टेरलोपोऽणिः ॥ १२ बद्धमुक्कयोरिल्ले ॥ १३ लोभादिभ्यस्ता ॥ १४ तयोर्यस्तः ॥ १५ सव्वगामादावन्तिः परिमाणे च ॥ १६ एकार्थकादागी-णियेया असहाये ॥ १७ पढमादिल्लुः ॥ १८ निसीहेरुच्चारणे कः ॥ १९ एयः साऽस्मै दीयते साऽस्य देवता ॥ २० इत-स्तदस्य संजातं पत्तादिभ्यः ॥ २१ अतिशये तरः ॥ २२ कादिभ्यो निर्द्धारणे ॥ २३ इट्ठो धम्म्यादिभ्यः ॥ २४ इज्जस्थे-रादिभ्यः ॥ २५ तदर्हति करोति ॥ २६ तेन निर्वृत्तं क्रीतं च-रति व्यवहरति जीवति गृह्यते ॥ २७ णित्यहारयणादीना-मुत्तरस्यादेर्वृद्धिः ॥ २८ विरोयणादीनामइः पूर्वस्य ॥ २९ अदणो नक्षत्रेण युक्तः कालः ॥ ३० साऽस्मिन् पौर्णमासीति संज्ञायाम् ॥ ३१ वातात्तेनोपहतमीनः ॥ ३२ चउछाभ्यां कस्य छिः ॥ ३३ अप्पणादिचियेज्जियौ ॥ ३४ वातादोलः ॥ ३५ परात्कीयः ॥ ३६ रायाणणो यस्येत् ॥ ३७ कम्माण्णको ॥ ३८ उदीईपडीईभ्यां णड् ॥ ३९ पाईतोणो दट् चेतः ॥ ४० पहादिभ्यस्तत्र साधुरेज्जण् ॥ ४१ पासादिल्लस्तत्र शेते ॥ ४२ उत्तरपदादहेरदीणौ ॥ ४३ मज्झान्मश्च ॥ ४४ इदिणूमन्ताश्च तदस्त्यस्यास्मिन् ॥ ४५ आउसाद न्तः ॥ ४६ जयादिभ्य इणः ॥ ४७ किसेर्णः ॥ ४८ इलो गन्धादिभ्यः ॥ ४९ जडाया जडुल-जडियालौ ॥ ५० रयात्सलः ॥ ५१ पम्हादिभ्यो लः ॥ ५२ आलुर्दयादिभ्यः ॥ ५३ उलेज्जायाः ॥ ५४ जसादिभ्योऽसिस्सी ॥ ५५ त्तणौ तस्य भावः ॥ ५६ अरिप्रभृतिभ्यस्ता ॥ ५७ जहातहादद्दियणौ ॥ ५८ तस्येयणि छिः ॥ ५९ इमजतके-

Aho ! Shrutgyanam

भ्यस्तो: ॥ ६० इणो जडादिभ्यः ॥ ६१ इय इस्सरादिभ्यः॥ ६२ अप्पाहहो: कः ॥ ६३ उवमादिभ्योऽण् ॥ ६४ वियाव-डादिपण् च ॥ ६५ विकारप्रधानयोरणमयौ॥ ६६ भिओभ्च्चः शिष्ये ॥ ६७ ईरत्तादिभ्योऽभूततद्भावे करभवयोर्योगे ॥ ६८ मोल्यादिभ्य ईनो लोपः ॥ ६९ अम्हादिषु दिसादः ॥ ७० एतादारूवः सदृशे ॥ ७१ संख्यायां तिः कजतेभ्यः ॥ ७२ एतजतेभ्यः परिमाणे मन्तावत्तियत्तियत्तिलाः ॥ ७३ जादा-वन्तौ च ॥ ७४ कादेवतियः ॥ ७५ अनवधारणे एयावन्तौ॥ ७६ पूरणे मः ॥ ७७ दुतिभ्यां डीयतीयतीयच्चणः ॥ ७८ दु-म्छात् ॥ ७९ त्यश्च तोः ॥ ८० संखेज्जात्तिः ॥ ८१ आभी-क्ष्ण्ये बहादिभ्यः सोः ॥ ८२ कुंभकादिभ्यः परिमाणे ॥ ८३ एकात्सिः ॥ ८४ पञ्चमीसप्तमीभ्यां तौ ॥ ८५ अभ्यावृत्तौ संख्यार्थेभ्यः क्खुत्तो: ॥ ८६ एकात्सि ॥ ८७ प्रकारे हा तृ-तीयायाः ॥ ८८ जताभ्यां हहमो ॥ ८९ धा च ॥ ९० इय-स्येहरा ॥ ९१ कादहाहमिहेणाः ॥ ९२ इमस्यैत्थम् ॥ ९३ दाणिमि सर्वस्य लोपः ॥ ९४ त्थः सप्तम्या इमादिभ्यः॥ ९५ इमाद्धहमौ च ॥ ९६ एकात्तश्च ॥ ९७ अहीहप्हवः कात् ॥ ९८ जपगामाभ्यामाए ॥ ९९ तादादोत्तयश्च ॥ १०० एहं च जात् ॥ १०१ अं जताभ्याम्॥ १०२ तस्मिन् काले दा सब्बादि-भ्यः ॥ १०३ इमाणिंहहुणादाणिमः ॥ १०४ आहेहिंहिहियमः कजतेभ्यः ॥ १०५ चिरार्थकेष्वेवैवचौ ॥ १०६ सुप्तद्विताभ्या-मिमिदीचिचियाः ॥ १०७ इमादिभ्यश्चणामस्पूर्वकः ॥

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥

Aho ! Shrutgyanam

तृतीयोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ॥

१ धातोः ॥ २ त्यादयः कर्त्तृकर्मणोः सकर्मकेभ्यो भावकर्त्रोरकर्मकेभ्यः ॥ ३ आज्ञाभविष्यद्वर्त्तमानेषु तिन्तिसिहमिमवः ॥ ४ अम्हे समानाधिकरण उत्तमः ॥ ५ तुम्हे मध्यमः ॥ ६ शेषे प्रथमः ॥ ७ हिमिमोष्वतो दीर्घः ॥ ८ प्रवर्त्तनायामेदिज्जौ ॥ ९ इज्जस्य वा ॥ १० इज्जात्सिहमिमवः ॥ ११ असादिभ्यो या ॥ १२ ज्ञाणहणाभ्यां वा ॥ १३ आज्ञायां तिन्त्योरुः सेर्हिलोपौ ॥ १४ कुणादिभ्यः सेरुः ॥ १५ साहहंदाभ्यां डिस् ॥ १६ भविष्यति हिस्सौ त्यादिषु ॥ १७ भुंजात्खड् ॥ १८ लभाद्धस्य तड् ॥ १९ मुंचसुणाभ्यां च्छिट् तौ ॥ २० हिस्सादीनामिट् ॥ २१ असचयजाणाहेभ्यो यः ॥ २२ भणात्तेः ॥ २३ वः रसस्य ॥ २४ परेर्धरतेः ॥ २५ पावसाभ्यां वा ॥ २६ एतष्ठः ॥ २७ वसात्तव्वस्य ॥ २८ कादेर्न ॥ २९ जो हेः ॥ ३० केवलात्सुणादुमूणयोः ॥ ३१ गच्छात्ससस्य मेरम् ॥ ३२ मादौ हेरात् ॥ ३३ भूते इंसुः ॥ ३४ अयादिभ्यस्त्था ॥ ३५ असादिदीतौ ॥ ३६ मोरुत्तमबहुत्वे सेट् ॥ ३७ करादिस्सम् ॥ ३८ कः सीः ॥ ३९ पुच्छादेर्वा ॥ ४० यंधादीः ॥ ४१ भवस्य भुवीभुविमौ ॥ ४२ लभादिण् ॥ ४३ होर्डिसिः ॥ ४४ ताडस्य पंतावे ॥ ४५ बोरीः ॥ ४६ आदेरीत्यवो ह्विः ॥ ४७ वदादासीः ॥ ४८ इज्जः स्वार्थेऽपि ॥ ४९ उपसर्गाः प्राक् ॥ ५० अच्छादेरत्तेरेः ॥ ५१ पाद्वासात्सेः ॥ ५२ समेरंसि रसस्य ॥ ५३ आदेरिदीदिमोषु दीर्घः ॥ ५४ पादेश्चिण् मोहमाणानामेट् ॥ ५५ पडिपतिपरिभ्यो यः ॥

५६ पतेर्ब्रिरौ ॥ ५७ इति पूर्वपरयोरेः ॥ ५८ विसमत्युद्भ्य-श्च ॥ ५९ न्तावेरद्धा ॥ ६० उदोज्जो भविष्यति ॥ ६१ न्तौ वेः ॥ ६२ वेरदौ स्से ॥ ६३ अनोरेसादेरिम् ॥ ६४ पादीरस्य द्विस्तिकणेषु ॥ ६५ उवादुंजस्य तौ ॥ ६६ न्तौ वेः ॥ ६७ षप-ल्लिभ्यां माणे तयोः ॥ ६८ समस्तुसस्यैति ॥ ६९ त्तसस्यै-त्योः ॥ ७० दुसस्य माणे ॥ ७१ न्तौ पात् ॥ ७२ उदः कस-स्य वा ॥ ७३ रुंभस्येज्जे ॥ ७४ लुभस्य तित्तयोः ॥ ७५ वे-हुणस्य तीज्जयोः ॥ ७६ उसस्याति ॥ ७७ खुभस्य तौ ॥ ७८ समो माणे ॥ ७९ पासस्येति ॥ ८० न्ते ययोश्चानोः ॥ ८१ परेर्भंसस्य तौ ॥ ८२ परेरेस्तः ॥ ८३ आतः सवस्येणि ॥ ८४ आत उसस्य तौ वा ॥ ८५ न्तौ जंपस्य च ॥ ८६ ति-ह्लिोपमिह्माणेषु पासस्य ॥ ८७ भंसस्य केवलस्य तौ ॥ ८८ अवाद्दालस्य तावादेः ॥ ८९ उदो डियो डास्त्यादयोः ॥ ९० अतेततिन्तेषूदः कसस्यात ओत् ॥ ९१ वेः कीरस्य क्खिरः ॥ ९२ ग्घो जिग्घः ॥ ९३ णाणिज्जयोर्जिघः ॥ ९४ चिगिच्छस्यादेस्तः ॥ ९५ आति गस्य लोपः ॥ ९६ चिण-स्याणयोरिणस्यायः ॥ ९७ वा न्तौ ॥ ९८ समो हेरुस् ॥ ९९ जाणादीनां दीर्घो वा तौ ॥ १०० देवादिभ्यस्तेः ॥ १०१ आज्ञावर्त्तमानणिज्जेषु पिबपियोः पः ॥ १०२ प्रवर्त्तनायां वा ॥ १०३ दक्खुः संसोर्दिसस्य ॥ १०४ सस्सहेर्दच्छिः ॥ १०५ करादिभ्यः कृदाज्ञावर्त्तमानेष्वेः ॥ १०६ भविष्यति वा ॥ १०७ अश्वादिभ्यश्च ॥ १०८ आगमनमाभ्यां तौ ॥ १०९-करादापसङ्ख्यः ॥ ११० पुदवाभ्यां न ॥ १११ नमादेरिमं-वि ॥ ११२ हिन्तयोर्नेरत् ॥ ११३ पवेस्तौ ॥ ११४ अयोऽणौ न्तीज्जहतारेषु ॥ ११५ फुट्टस्य टयोर्डस्त्तान्तह्मिरगासु ॥

Aho ! Shrutgyanam

११६ वीहस्य भायभीयौ तयि ॥ ११७ भयोऽलक्ष्यमाणेषु ॥
११८ भीस्ते ॥ ११९ न्ते वा ॥ १२० रियास्येतो दीर्घः ॥
१२१ आतो भिदस्यादेरेति छिः ॥ १२२ स्यथाभ्यां सस्यैति ॥
१२३ मन्त्रान्मेरेस् वा ॥ १२४ न्तेः समारंभात् ॥ १२५-
रंभरक्खहणहरेपुः समासाः ॥ १२६ डेज्जयोर्भस्य भ्भां रुंभ-
स्य ॥ १२७ वच्चाच्छुद्रखडौ भविष्यति ॥ १२८ ओदादेर-
तश्छडि ॥ १२९ पचोच्छाद्धिस्यादौ ॥ १३० इहो वहस्य ॥
१३१ न्ते द्वित्वे ॥ १३२ इज्जे सिरस्य सो विउभ्याम् ॥
१३३ व्युद्भ्यामिये ॥ १३४ सिव्वस्य स्से सीवः ॥ १३५-
हस्वो णेः सीवस्य न्तिमोमाणेषु ॥ १३६ न्तीज्जयोर्वज्जः ॥
१३७ होः स्सस्य क्खः ॥ १३८ उदात्करस्य क्खडः पाके ॥
१३९ पुरस्ते वा ॥ १४० उवाडुपकरणे कखरोऽति ॥ १४१
बोरितन्त्योराहः ॥ १४२ आहाल्लोप उवंस्तु ॥ १४३ न्तावो-
रूवः ॥ १४४ हियोर्दीर्घः ॥ १४५ समोऽज्जस्यातस्तेसुमाणे-
ष्विणः ॥ १४६ पादावस्याउणो वा ॥ १४७ पोवाभ्यामिक्ख-
स्येहः ॥ १४८ अवाद्यः ॥ १४९ वेर्णे ॥ १५० पात्खस्य ञ्छः ॥
१५१ पडेर्माणे ॥ १५२ आज्ञायां पेहे हस्य हो ॥ १५३ अ-
ज्ञान्मोरुर्वा ॥ १५४ आतः कखो घवो वा ॥ १५५ ते घाः ॥
१५६ चियाभ्यां हिः के ॥ १५७ आघं भूते ॥ १५८ इतेज्ज-
योराहः ॥ १५९ आतो घक् के ॥ १६० दक्ष ॥ १६१ गिण्ह-
स्य हस्य केवलस्य वेच्छस्तेरिद् ॥ १६२ सुगास्य सोच्चिः
॥ १६३ देच्छान्मेरीम् वा ॥ १६४ पचलजंभाभ्यामायः स्वा-
र्थे ॥ १६५ एतिणेषु समो घो हस्वः ॥ १६६ एति घोवस्य ॥
१६७ उदीरवेदसोभेभ्य ईमोरेदिनः ॥ १६८ नेजराद्वा ॥ १६९
दोहेर्हस्य त्यः ॥ १७० मस्य टो वा वत्तम्य ॥ १७१ उपसर्गो-

ह्रस्य यः ॥ १७२ इति पाङ्कः ॥ १७३ आतङ्कंसुणोपूस् ॥ १७४ निव्वरवरसयोस्तौ ॥ १७५ आपाभ्यां स्वस्य ण्हो नि- ङ्कोरणो वा ॥ १७६ व्यञ्जनादेर्द्विः क्रियासमभिहारे ॥ १७७ आदेः सस्वरस्य द्विः ॥ १७८ द्विरुक्तस्यादेर्वृद्धिः ॥ १७९ लव- स्य पो बहुलम् ॥ १८० क्रमस्य चंकमः ॥ १८१ आयस्तत्क- रोति ॥ १८२ उपमानादाचारे ॥ १८३ आये विज्ञोर्विजुयो वा ॥ १८४ विउसस्य द्विः सस्य ॥ १८५ धुत्तादारः ॥

द्वितीयः पादः ॥

१ प्रेरणायामावः ॥ २ खमादीनामादेर्वृद्धिः ॥ ३ आवश्च करादिभ्यः ॥ ४ करगजोज्जलपज्जलविहडानामावे वा ५ ॥ कुप्पस्य पयोरिते च वः ॥ ६ पात्विखवस्य च्छः ॥ ७ आवे जादीनामेकादेशस्य ह्रस्वः ॥ ८ उम्भामस्येज्जे ॥ ९ समो न- ड्डस्य दधयोर्हः ॥ १० पज्जस्य पयः ११ अहेरुवादणि ॥ १२ आतो जयोर्लोपस्तौ ॥ १३ औ च सुज्भस्य सोहः ॥ १४ पो डजिः ॥ १५ एन्तहिब्बिर्डजेः ॥ १६ बीहस्येज्जे भेसः सावस्य ॥ १७ मुंजस्य भोयो वा ॥ १८ पान्मुश्चात्ससस्य खड्ड् ॥ १९ च्छोलादिभ्यो यः ॥ २० रज्जस्येते च रंजः ॥ २१ न्ते वा ॥ २२ उम्मिज्जयोर्जयोर्यः ॥ २३ अहेरेरावन्तावयः ॥ २४ वा णे ॥ २५ अहेर्ज्ञो दीर्घो धातोः ॥ २६ एस्तारे ॥ २७ सादौ च ॥ २८ वस्य तव्वे लोपः ॥ २९ अत्यभिप्पाभ्यामयति ॥ ३० आज्ञायामातः ह्ससात्सेर्डिस् ॥ ३१ ववयस्य वः ॥ ३२ उज्जोयउम्भामयोर्वलोपौ ॥ ३३ न्हो ण आवस्य ॥ ३४ उप- सर्गात्पडस्य नः ॥ ३५ नेर्वा ॥ ३६ पाल ॥ ३७ भमाड्डः ॥ ३८ म्हास्य नः ॥ ३९ वड्ढस्य धो णमाणयोश्च ॥ ४० भा-

वकर्मणोरिज्जः ॥ ४१ कत्तादिभ्योऽत् ॥ ४२ कराद्वा ॥ ४३ गादिभ्यो यः ॥ ४४ अभिघट्टादियः ॥ ४५ घसादण् ॥ ४६ क्किणादीनामादिरहितानामिज्जे लोपः ॥ ४७ उवाद्गमस्य न्ते ॥ ४८ तरस्य वा ॥ ४९ इः कत्तगिरहडहद्दहवहानामति ॥ ५० करस्य वा ॥ ५१ करहरदिसानामीरादेः स्वरस्य ॥ ५२ गाधाहां ये ॥ ५३ परेर्हो न्तमाणयोर्न ॥ ५४ गिण्हस्य घेप्पः ॥ ५५ खान्नाद्दुहोभ्य इज्जस्य ॥ ५६ जिणान्मः प्रवर्त्तनायाम् ॥ ५७ हवस्य हुयः ॥ ५८ धरिसस्य धासः ॥ ५९ इज्जे दीर्घः फासस्य ॥ ६० उदोपडिभ्यो मो मिणः ॥ ६१ न्ते परेः ॥ ६२ लक्खाद्यस्येट् ॥ ६३ वस्योसतयोर्वेचस्य ॥ ६४ आदेरस्य ॥ ६५ क्खिवस्य पोऽडयोः ॥ ६६ गमादीनामति द्विः ॥ ६७ जिणस्य चः ॥ ६८ त्थुणधुणसुणानां वः ॥ ६९ बन्धस्य म्भः ॥ ७० न्तेर्लभादेः ॥ ७१ हणस्य मः ॥

तृतीयः पादः ॥

१ कृत् ॥ २ कर्त्तुरैक्ये पूर्वकाले त्तात्तूमूणेयाः ॥ ३ पाउककरादेः ॥ ४ उपसर्गाड्डो वा ॥ ५ इप्रभृतिभ्यश्च ॥ ६ अतेरेर्यो डे ॥ ७ पडेरेकादेशस्योत् ॥ ८ पतेर्दीर्घस्त्त इट् ॥ ९ हए ॥ १० पेसादेरियस्यादितः ॥ ११ पेहादिभ्यो यस्यैत् ॥ १२ इः काट्टयोः ॥ १३ चयस्यादेः ॥ १४ यागे जयस्य जिठः ॥ १५ छिक्कस्य त्तिदीर्घकलोपौ ॥ १६ गममन्नदिसहणेभ्यस्त्तात्तुतव्वा डितोऽनिटो णन्नयोर्मः ॥ १७ तात्त्वोरादितलोपः ॥ १८ छुभदिसमुंचपरिभुंजलभेभ्यस्त्तुः ॥ १९ परेश्चयात् त्तए ॥ २० भुंजात्केवलात् ॥ २१ वसाच्च ॥ २२ आतो गमात्तो वेट् ॥ २३ गमगिण्हछुभदिसवुमुंचलभेभ्यस्त्तोरनुस्वारः ॥ २४ ऊणस्य वा ॥ २५ उदो धरात्तोः ॥ २६ छुभभुंजमुंचदिसलभेभ्य-

Aho ! Shrutgyanam

स्तहूणस्य डिच्च ॥ २७ गमगिण्हच्छिदभिदेभ्यो वा ॥ २८ ड-स्येडकंखादीर्घश्च वा ॥ २९ गिण्हस्य णलोपोऽडयोः ॥ ३० परेरति माणे ॥ ३१ त्तुंतूणतव्वेषु घेत् ॥ ३२ उपसर्गादिये गिज्झः॥ ३३ वेश्चिन्तस्येरहितस्येयत्त्वोः॥ ३४ अणोर्यस्य च॥ ३५ त्तुत्तूणयोश्छुभस्य छोहः ॥ ३६ उमि समस्थोरत्थुणस्य सेटः ॥ ३७ दिसात्तव्वतारत्तुंतूणानां तस्य ठोऽदितः ॥ ३८ थुणस्य थूयः सेयस्य ॥ ३९ वेर्नेरदिट्ट त्तोः ॥ ४० वरसे सस्य णोमोरनादेशे ॥ ४१ मुज्झस्य मोहोऽतव्वे कृति ॥ ४२ ईरिये ॥ ४३ मुंचात् त्तुणो णित् ॥ ४४ भुंजात्तारश्च ॥ ४५ अनिटौ त्तएत्तू ॥ ४६ दिसात् त्तुम् ॥ ४७ भुंजस्य भोत्ति ॥ ४८ आतो रंभस्य ढत्तं सडस्य ॥ ४९ ते ढत् ॥ ५० अभेरुणो वंदस्य वाः ॥५१ माणे वायः प्रेरणायाम् ॥ ५२ वरसस्य वा-सरत्तेतोः ॥ ५३ उमि वा ॥५४ समाभ्यां सीयस्य सजः ॥ ५५ सुणस्य सोचः ॥ ५६ अनिटोरुमूणयोः सोः॥ ५७ का-रवस्य यो वा त्तान्तयोः ॥ ५८ चयछिदपिवभिदभुजहराणां डे चः ॥ ५९ परिचयस्य जः ॥ ६० ट्ठवरोहयोः पः ॥ ६१ क्रिट्टादिभ्यस्तयोर्यः ॥ ६२ पोऽनिटस्त्तएः ॥ ६३ ओः समस्य वरेतयोः ॥ ६४ त्तएत्तुमुमः क्रियार्थायां क्रियायाम् ॥ ६५ पलायादुमि सेटो यस्यैः ॥ ६६ नेर्जुंजस्य योयः ॥ ६७ चरा-दणण् च ॥ ६८ आदेतौ वंदात् ॥ ६९ वचासुंतारतव्वा डितः॥

चतुर्थः पादः ॥

१ वर्तमाने न्तमाणावप्रधा ने ॥ २ आसादीणड् ॥ ३ मस्यात्थमस्य न्ते लोपः ॥ ४ पाल्लियस्यादेः ॥ ५ इतो दीर्घश्च वा माणे ॥ ६ न्तेज्जयोर्लाः ॥ ७ आवे दो दवस्त्तएमाणयोः॥ ८ वचाद्धविष्यति च माणश्चास्य कवः ॥ ९ पच्चक्खो माणे

ह्रस्वः ॥ १० इराहः ॥ ११ धावस्येतमाणयोर्यः ॥ १२ आतो दिहस्यादेर्लस्ते ॥ १३ योग्यशक्ययोर्मणिज्जगीयतव्वाः ॥ १४ पावगोवच्छिब्वठवन्नवेभ्यः ॥ १५ पतेरेरः ॥ १६ करादियणत्वडौ ॥ १७ क्रिणादिभ्य इयः ॥ १८ डिच्चडित्तिमौ कः ॥ १९ क्रिणासंखाभ्यामिज्जः ॥ २० खो डज्जः ॥ २१ जयोर्यौ वा ॥ २२ गमादिभ्यो डः ॥ २३ सुदुर्भ्यां च ॥ २४ उज्झामाभ्यामेज्जः ॥ २५ आतो दो वा ॥ २६ नेर्यः ॥ २७ दिसवुजकवहेभ्यस्तन्वो डिदनिण्णितः ॥ २८ क्खिवाद्वा सेटो वस्य लोपश्च ॥ २९ एज्जे झो धः ॥ ३० मे लुगास्य लः ॥ ३१ सलहस्य सघो डे ॥ ३२ नेहगस्य हः ॥ ३३ सगिज्जहरस्य हेज्जः ॥ ३४ हुगस्य हवः ॥ ३५ होस्तव्वस्येव्वः ॥ ३६ गिण्हादीनां डे ह्नः ॥ ३७ गिण्हडहहुहहहारहसाहानां झः ॥ ३८ विदस्य जः ॥ ३९ सिचस्य क्खो णिच डः ॥ ४० इये सद्दो घो ढः ॥

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

चतुर्थोऽध्यायः ॥

प्रथमः पादः ॥

१ भूते सेतौ ॥ २ अतो लोपस्तत्योः ॥ ३ पलेर्होऽस्थे ॥ ४ वेः परेरोच्चः ॥ ५ आसे परयोर्वचौ वा ॥ ६ पाभ्यामुगात्तस्य डः ॥ ७ वरहराभ्यां च ॥ ८ सराडुपसर्गाड्डौ ॥ ९ व्वापुराभ्यां करात् ॥ १० केवलाद्वा ॥ ११ त्थरमरहरेभ्यश्च ॥ १२ फासस्य पुलस्ते ॥ १३ पवस्य पुः ॥ १४ निरः पुच्छस्याडुतः ॥ १५ आउडे पस्य वः ॥ १६ अनसादिभ्यः साद्दः ॥ १७ पुच्छतच्छतक्खसिरेभ्यश्च ॥ १८ ते : कसादिभ्य : ॥

१६ दराभ्यां नः ॥ २० खिखझिझडीह्लिपहाभ्यो णः ॥ २१ एषा-मीर्णे ॥ २२ निरञ्चिणात् ॥ २३ चयाद्धिः ॥ २४ च्युयादिभ्यो लोपः ॥ २५ वरसे रस्य ॥ २६ अन्वानो विसस्यादेः ॥ २७ आसमुभ्यां चिणस्य ॥ २८ हरिम्सस्यारः ॥ २९ उदः कत्त-कसयोरादेरिर्वा ते ॥ ३० वेः कसस्य नित्यम् ॥ ३१ गश्च ॥ ३२ उः करादीनाम् ॥ ३३ वड्ढस्येतन्तिषु ॥ ३४ अभेस्ति ॥ ३५ नेम्नतित्तामाणेषु ॥ ३६ वरस्याव्यापारे ॥ ३७ निरो वा ॥ ३८ कडक्खडयोः पुर ए ॥ ३९ भवपसवहबानाम् सवस्य त त्योः ॥ ४० वेरात ओः कडे ॥ ४१ समः कये कोऽनुस्वारस्य ॥ ४२ उदः कसात्तस्य सो लोपश्च ॥ ४३ परेः कोसस्यादेस्ते ॥ ४४ गसस्य घः ॥ ४५ इते करादीनामादिं बिना लोपः ॥ ४६ जेमादीनां ह्रस्वः ॥ ४७ जोसस्य वा ॥ ४८ गिज्झस्य गहः ॥ ४९ग्गहादितो दीर्घो वेतस्य ॥ ५० वेञ्चिगिच्छस्य तिकि-ट्ठस्तेतयोस्तलोपश्च ॥ ५१ हनयोरव्यवहितयोर्दः ॥ ५२ दहस्य ढौ ॥ ५३ छिंदस्य छहः ॥ ५४ अतेष्ठठस्थः ॥ ५५ निर्विभ्यां तरत्थरयोश्छस्तथयोस्ते ॥ ५६ उदस्थद्धस्य ॥ ५७ तिप्पदिप्प-योः पयोस्तः ॥ ५८ आनस्थरस्य त्थुः ॥ ५९ दोदिद्दतौ ॥ ६० चरादीनामिस्ते ॥ ६१ इमो दिसम्पिरयोरद्धा ॥ ६२ रुहव्वि-ह्योरादेर्दीर्घः ॥ ६३ नेरीः ॥ ६४ इरानिभ्याम् ॥ ६५ पयमुं-चसुस्सेभ्यस्तस्य कः ॥ ६६ मुंचरिचच्छिवविचेभ्यो वा ॥ ६७ फुसस्य फुडः मतस्य ॥ ६८ लुंपस्य लावः प्रेरणायाम् ॥ ६९ वहस्योहस्ते ॥ ७० भरस्य हुः ॥ ७१ उदानो हरस्य मतस्य वा ॥ ७२ इते सिंचस्य सिक्कः ॥ ७३ भंजमज्जरुजविजेभ्यो गस्तस्य ॥ ७४ समष्ठो मज्जात् ॥ ७५ पाउणादीनां ते लोपः ॥ ७६ मन्नस्य नयोः ॥ ७७ भिभ्भस्य णे ॥ ७८ पज्जविज्जयोर्जं-

Aho ! Shrutgyanam

योर्दः ॥ ७९ च्छुभमुज्झयोश्च्छुहमूहौ ॥ ८० दुहनिहयोर्घः ॥ ८१ समो दिहक्विहयोः ॥ ८२ च्छुहस्य स्पर्शो तः ॥ ८३ योजने जोयस्य डतौ ॥ ८४ पाज्जलस्यादेरुदिते ॥ ८५ समो हरस्य हो घः ॥ ८६ वेरूढ्ढो वा णे ॥

॥ द्वितीयः पादः ॥

१ अणिदिणकण तारा: कर्त्तरि ॥ २ भविष्यति ससिस्सेणितः॥ ३ लिपादडः केवलात्॥ ४ इक्खादिभ्यो णणणौ॥ ५ इरस्ताच्छील्ये॥ ६ नस्साद्रः ॥ ७ पाढ्ढवादिसुः ॥ ८ तान्मन्तो भूते ॥ ९ चालादियः ॥ १० वसात्तव्वः ॥ ११ अचकरादिभ्यः कर्मणि ॥ १२ अजन्तेऽणोऽनुस्वारः ॥ १३ कारादिषु च ॥ १४ करणे णः ॥ १५ पञ्चम्यां णोरः ॥ १६ अधिकरणेऽणु ॥ १७ द्रो डः ॥ १८ निसदसपाभ्यां जाइ ॥ १९ इर्जोब्वतः ॥ २० मयस्यैः ॥ २१ जणादत्पञ्चमीसप्तम्योर्जो जणस्य ॥ २२ जाणपलिमंथसहेभ्यो डुः ॥ २३ उपपदान्नावियाभ्याम् ॥ २४ एस्तारे क्किणजिणयोरिणस्य ॥ २५ गज्जादिभ्यस्तारस्य छिरिटौ ॥ २६ संमज्जात्तलोपे ॥ २७ गमस्य गो वाऽचि ॥ २८ ओतो घट्टस्यादेहः के॥ २९ इणि जुज्झस्य जझयोः ॥ ३० इणणकणप्रणासु बुज्झस्य ॥ ३१ कुज्झस्याणयोः ॥ ३२ आतः क्खिववस्य कखयोर्णे ॥ ३३ नेर्घातस्यादेः ॥ ३४ पाद्धंससस्य डे दघयोः ॥ ३५ जावस्य यः ॥ ३६ घातस्य घन्तुघन्नू ॥ ३७ दिसस्य दक्खुः ॥ ३८ वियस्य विः॥ ३९ लाभेच्छावति लिच्छुः ॥ ४० त्थुणस्य थवोऽणकेषु ॥ ४१ इज्जे च समः ॥ ४२ तव्वे थोः ॥ ४३ लिपस्य लेवोऽडकाणेषु ॥ ४४ अन्वाभ्यां वा णे ॥ ४५ लाउः सातः ॥ ४६ नेन्हस्य ण्हः के ॥ ४७ इतारयोर्वरसस्य वासः॥ ४८ पाभ्यां

Aho ! Shrutgyanam

के रलोपः ॥ ४९ सुवस्येणि सः ॥ ५० नेष्टुहस्य वोणे ॥ ५१ जयस्य कणि जये ॥

तृतीयः पादः ॥

१ भावेऽणदाणणातयः ॥ २ अप्पाहहाभ्यां णिः ॥ ३ उद्वादिभ्यो डिः ॥ ४ उपसर्गाद्धः ॥ ५ चयादाकः ॥ ६ आदेरिराके ॥ ७ आमन्नात्करणे ॥ ८ मुंचात्खणालोपश्च ॥ ९ क्खिवसाभ्यां डायः ॥ १० जुज्भात्तश्च ॥ ११ हणाचाड् ॥ १२ हिंसाद्या च ॥ १३ खिज्जादिभ्य इयः ॥ १४ करस्येदिये ॥ १५ आतस्तौ वा ॥ १६ आनिपेभ्यो लोपो रः ॥ १७ निपाभ्यां डस्तेरादेः ॥ १८ इभाहुणो वा ॥ १९ ट्टोत्कसयोस्तौ ॥ २० सासस्यातः ॥ २१ घरस्य घिः ॥ २२ वत्तस्य डौ ॥ २३ गेहो गिज्झस्य ॥ २४ कीरस्य णमाणयोर्ह्रस्वः ॥ २५ जोयस्य तौ यलोपश्च ॥ २६ उदो मज्जस्यातयोरुद्तः ॥ २७ पाओरोःकरेऽणयोः ॥ २८ अवात्कसस्याणि को ह्निः ॥ २९ धमस्य णावयोर्मस्य ॥ ३० उदो दीर्घो णे ॥ ३१ दिसपाभुंजलभवञ्चानां स्वार्थेच्छायां दिदिक्खा-पिवासा-बुभुक्खा-लिच्छा-बिवक्खाः ॥ ३२ सकुंचादिभ्यो णाणौ णित् ॥ ३३ आविभ्यां क्खिववाढा ॥ ३४ इदिणयोः क्खिवक्किणच्चिणानामयति ॥ ३५ आऽणुपेभ्यो मिलो च्चाणे ॥ ३६ अवपरिभ्यामुसो वसस्य ॥ ३७ ते वस्योसु ॥ ३८ इते वा ॥ ३९ दोमीणास्तान्तस्य सपरेः ॥ ४० आतो सुसस्याणयोर्मरिसः ॥ ४१ वेरति वीमंसः ॥ ४२ उदस्थंभस्य खंभः ॥ ४३ सज्जस्य जणोणौ ॥ ४४ आणिज्जयोः सलहस्य सिलाहसलाहौ ॥ ४५ सिचस्य सेकः ॥ ४६ ईतः सिलीसस्यैत् ॥ ४७ रुंभस्य रोहः ॥ ४८ उपसर्गाद्धणस्याति

Aho ! Shrutgyanam

हः ॥ ४९ सुगास्य सघो णो ॥ ५० हुणस्य हवो वा ॥ ५१ ह्लियस्य णतयोर्लेली ॥ ५२ पाउगास्य रो णो ॥ ५३ त्थरथवयोर्वा घोऽति ॥ ५४ समो गोवस्य फः ॥ ५५ वेविंचस्य कोऽणि ॥ ५६ पयभजरुजानां गः ॥ ५७ भुंजस्यानुस्वारलोपश्च ॥ ५८ रज्जस्य जयोः ॥ ५९ णो रंगः ॥ ६० व्यनिभ्यां रिचस्य ॥ ६१ विजस्याणगायोः ॥ ६२ णायस्य वा ॥ ६३ आनि पाद्व्वयस्य ज्जः ॥ ६४ समः खुभस्यानि हः ॥ ६५ णौ गमत्थुणरमसरसुणहणानां लोपः ॥

चतुर्थः पादः

१ स्वराद्दातोर्यिट् ॥ २ चणार्हिकूक्खकौ ॥ ३ उओडिट्दटौ यश्च ॥ ४ इणेद्योरनुस्वारो वा ॥ ५ णौ व्यञ्जनादौ पूर्वस्य ॥ ६ मगास्य वा ॥ ७ जहरमादीनामगुक्कोसादिषु मक् ॥ ८ चक्खोरस्य मट् ॥ ९ वहेमगुरकावणि ॥ १० मगादिभ्य ईतोऽमुट् ॥ ११ आनोऽआस्य मक् त्यादौ ॥ १२ न्तौ गिलादीनां यक् ॥ १३ अहेरेस्नौ ॥ १४ गादीनामिज्जे ॥ १५ आग्घाञ्जिययोर्हे ॥ १६ जादीनां णौ ॥ १७ भियः सौ ॥ १८ पकप्पपणुल्लाभिधाराणां मवि ॥ १९ दरपालपूजानां मौ ॥ २० पवित्तस्य न्ते ॥ २१ मिमिमिसेर्माणे दीर्घश्च ॥ २२ हस्ति च ॥ २३ आग्घादीनां माणे ॥ २४ जणादीनां न्ते ॥ २५ उंचादीनां वा न्तौ ॥ २६ खादीनां णौ ॥ २७ उज्भादलयोरिज्जे ॥ २८ दलस्य ह्निमवाः ॥ २९ बोमौ ॥ ३० कहस्य हौ ॥ ३१ विणायदलयोर्माणे ३२ निप्पदादरिसानां न्ते ॥ ३३ कायः सिट् ॥ ३४ भूते काकरदकलुलभहोतराणामट् ॥ ३५ अवादपस्वादेर्लोपोऽनुस्वारश्च गुरे ॥ ३६ जः ससैट् ॥ ३७ बंधरुंभहिं-

डेभ्यो हेरेट् ॥ ३८ आदुपोवेभ्यो लभस्यानुस्वारोऽतिसित्ताणमाणेषु ॥ ३९ अत्तयोः केवलस्य ॥ ४० सासस्य मौ ॥ ४१ पाद्रोर्लुप्पः ॥ ४२ अज्ञस्य त्ति णक् ॥ ४३ बारावस्य याट् ॥ ४४ समो धस्तेः ॥ ४५ इकाट्टादाज्ञावुसुहाभ्यश्चिङ्गस्य ॥ ४६ भवस्येंसावट् ॥ ४७ नक्कादिभ्यो णङ्मपरको वा त्तः ॥ ४८ उवादयादिटो वा त्तयधि ॥ ४९ न्तमाणयोरातो ज्ञगेः ॥ ५० उवाहट् ते ॥ ५१ न्तस्य खावादियट् ॥ ५२ वेभ्कड्डस्येयक् ॥ ५३ कमस्य रिट् ॥ ५४ उदोऽति छिरमिटः ॥ ५५ आतोरङ् गमे ॥ ५६ फासस्य ह्रस्वश्च ॥ ५७ ककणाः स्त्रियामिट् ॥ ५८ अबस्य गुयेऽनुस्वारः ॥ ५९ गमादिभ्य एट् सादीनाम् ॥ ६० इतो लोपः ॥ ६१ डिति टेः ॥ ६२ स्वराद्यस्य ॥ ६३ सुरभिदुरभ्योरस्य ॥ ६४ संयुक्तेऽनुस्वारस्य ६५ सुपः समासतद्धितयोः ॥ ६६ अव्ययाच्च ॥ ६७ सरिसस्य तयाबययोः ॥ ६८ तये सस्य तः ॥ ६९ त्तुमुमोः काममणयोः ॥ ७० एतकाभ्यां वतियस्योत्तरपदे ॥ ७१ चोरवणिजाभ्यामिज्जस्यादेः ॥ ७२ एतस्य तियत्तिलयोरतः ॥ ७३ आवतियस्यातश्च ॥ ७४ अणंतादिभ्यः क्खुत्तोः कस्य ॥ ७५ गच्छादिभ्यः स्सान्मेः ॥ ७६ वेच्छदाहवोच्छेभ्यश्च ॥ ७७ अतेर्गच्छस्य गस्य ॥ ७८ असस्य तितुमिषु ॥ ७९ न्तन्तियास्वादेः ॥ ८० सिहमोष्वसस्य ॥ ८१ मौ वा ॥ ८२ इणयोरिज्जकुणयोः ॥ ८३ आतो ग्घ आदेः ॥ ८४ उदापेभ्यो जः ॥ ८५ अत्यप्पवानां च ॥ ८६ णम्यनुस्वारस्य ॥ ८७ डंसस्य तौ ॥ ८८ समारंभस्यैसेत्तासु ॥ ८९ एदोद्भ्यामिज्जस्येतः ॥ ९० समो मुच्छे न्तिमयोः ॥ ९१ अणवतिभ्यां व्वयस्य ॥ ९२ परेर्वा ॥ ९३ वेः क्किण इणस्य गैह्योः ॥ ९४ केवलादिते दीर्घश्च वा ॥ ९५ चिणजिणयोश्च ॥

Aho ! Shrutgyanam

९६ उम्भृणयोर्निरः ॥ ९७ उद्भ्लि ॥ ९८ ऊणो निरो जिणस्य ॥ ९९ आयो माणे कर्मणि ॥ १०० उभ्रेः क्विववस्य वेः स्से ॥ १०१ आतञ्छिदभिदयोरिन्दस्यापि ॥ १०२ समुदो हि न्तौ च ॥ १०३ अणोणतिन्तित्वात्तुतारेष्वेदः ॥ १०४ एज्जो डे ॥ १०५ मुंचस्य येऽनुस्वारस्य ॥ १०६ करादावस्यातः ॥ १०७ पात्कडात्सर्वस्य ॥ १०८ उस्सुयान्माण आयस्य ॥ १०९ अनुकरणधवलादिभ्यश्च ॥ ११० पंसुलादिभ्यष्टिमंतार्थयोश्च ॥ १११ घरस्य त्तुतुमोः ॥ ११२ ममान्न ॥ ११३ मेरादेः सलोपौ ॥ ११४ बुसहहाभ्यां माणस्यादेः ॥ ११५ समः कुंचस्याणितयोरनुस्वारस्य च ॥ ११६ जहस्ते ॥ ११७ समः कुंचस्य णे ॥ ११८ इणणोर्जुंजस्य गश्च ॥ ११९ पन्नवपज्जभुंजवच्चानां तारे ॥

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

इति सूत्रपाठः ॥

वार्त्तिकपाठः ॥

पृष्ठाङ्क	वार्त्तिक	सूत्राङ्क
२१३	असाल्लण भक्ष्ये वक्तव्यः	॥३।४।१४॥
२४	आमन्त्रणे डम् वक्तव्यः	॥२।१।८॥
३८	इमात्सेर्डी साए: क्वचिद्वक्तव्यः	॥२।१।५७॥
१४	उडजे वस्य चोपसंख्यानम्	॥१।४।२०॥
१७६	काहराभ्यां ट्ट रलोपश्च वक्तव्यः	॥३।३।१२॥
२१५	क्विणभ्योमियतव्वेष्विणस्य लोपो वाच्यः	॥३।४।१७॥

Aho ! Shrutgyanam

३७ गरुडासनादीनां सिद्धये मध्यपदस्य नित्यं वक्तव्यः
॥१।४।५५॥

१२४ गिज्झादा च वक्तव्यः ॥४।४।१४॥

४८ गोर्गावो डीति वक्तव्यः ॥२।२।२॥

९४ गोर्मिर्वक्तव्यः ॥२।४।४४॥

१४६ च्छंटस्य च्छोडो वा वक्तव्यः ॥१।४।१३७॥

८४ छाचु श्वलौ वा वाच्यौ ॥२।४।४॥

२१६ जुंजस्य डाणोर्वक्तव्यः ॥४।३।५७॥

२९ डावोर्वस्य लोपो वा वक्तव्यः ॥२।१।९४॥

११० तादइरिट् च दो वक्तव्यः ॥२।४।१०४॥

१९९ तेणुदो वक्तव्यः ॥१।३।३४॥

१८० त्तिथंभस्यादेशो वा वक्तव्यः ॥३।३।३६॥

२०० त्थरस्येते रेफस्योपसंख्यानम् ॥४।१।११॥

९२ दीवादिभ्यो भवाद्यर्थे इचस्योपसंख्यानम् ॥२।४।८॥

२०१ धुणस्य वा वक्तव्यः ॥४।१।६२॥

१८१ मन्ने न्नस्य लो वा वक्तव्यस्ति ॥३।३।४५॥

१९० रंभस्य न्तेऽनुस्वारस्य लोपो वाच्यः ॥३।२।६१॥

२१६ विदाड्डो णिद्वक्तव्यः ॥३।४।३८॥

१९७ विपरिभ्यामदितघोश्वस्य जो वा वक्तव्यः॥४।१।२७॥

८९ सपतेरेयणेज्जणौ वक्तव्यौ ॥२।४।७॥

११४ हे गच्छादीनामेवा वक्तव्यः ॥६।१।१३॥

॥ इति वार्त्तिकपाठः ॥

Aho ! Shrutgyanam

॥ श्री ॥

धातुपाठः ॥

१ अच्छ उपवेशने ।
२ अड भ्रमणे ।
३ अण प्राणधारणे ।
४ अप्पाह सन्देशकथने ।
५ अप्पिण अर्पणे ।
६ अय गतौ ।
७ अरह } योग्यतायाम् ।
८ अरिह }
९ अस सत्तायाम् ।
१० अस भक्षणाक्षेपणयोः ।
११ अंछ आकर्षणे ।
१२ इ गतौ ।
१३ इ अध्ययने ।
१४ इच्छ इच्छायाम् ।
१५ इध वृद्धौ ।
१६ इंग चेष्टायाम् ।
१७ ईह इच्छायाम् ।
१८ उज्झ उत्सर्गे ।
१९ उण प्रावरणे ।
२० उंच कौटिल्ये ।
२१ उंछ सेचने ।
२२ उंज योगसेवनयोः ।
२३ उंट संकोचने ।
२४ ऊह वितर्के ।
२५ एग कम्पने ।
२६ एस इच्छायाम् ।
२७ कज्जल बुडने ।
२८ कड आवरणे ।
२९ कड्ढ व्यक्तायां वाचि ।
३० कड्ढ आकर्षणे ।
३१ कण्ण भेदने ।
३२ कत्त छेदनतन्तुसन्तानयोः ।
३३ कत्थ श्लाघायां व्यक्तायां वाचिच ।
३४ कस प्राप्तौ ।
३५ कस तनूकरणे ।
३६ कस आकर्षणे
३७ कंडुय } गात्रविघर्षणे ।
३८ कंडूय }
३९ कंत छेदने ।
४० कंद आक्रन्दने
४१ कंप कम्पने
४२ का करणे ।
४३ काय बन्धने ।
४४ कास शब्दकुत्सायाम् ।

Aho ! Shrutgyanam

४५ **कास** प्रकाशनायाम्
४६ **किड्ड** क्रीडायाम्
४७ **किलिद** आर्द्रीभावे
४८ **किलिम्म** } उपतापे
४९ **किलेम्म** }
५० **किम्म** तनूकरणे
५१ **कुंच** संकोचने
५२ **कुच्छ** निन्दायाम्
५३ **कुच्छ** सेचने
५४ **कुज्झ** क्रोधे
५५ **कुट्ट** कुट्टने
५६ **कुड** दाहे
५७ **कुण** करणे
५८ **कुत्थ** दौर्गन्ध्ये कुत्सायां च।
५९ **कुद्द** कूर्दने
६० **कुप्प** क्रोधे
६१ **कुव्व** करणे
६२ **कुह** दौर्गन्ध्ये
६३ **कूड** प्रत्याघाते
६४ **कूव** अव्यक्ते
६५ **क्लिस्स** } क्लेशे
६६ **क्लिस** }
६७ **क्रोस** रोदने
६८ **क्खंद** गतौ
६९ **क्खल** पतने

७० **खिव** क्षेपे
७१ **क्खोड** प्रस्फोटने
७२ **खण** खनने
७३ **खम** सहने
७४ **खर** क्षरणे
७५ **खल** संचलने
७६ **खा** अदने
७७ **खिंस** निन्दायाम्
७८ **खिज्ज** दैन्ये
७९ **खुड्ड** तोडने
८० **खुद्द** आयुर्हानौ
८१ **खुध** बुभुक्षायाम्
८२ **खुभ** क्षोभने
८३ **खेल** क्रीडायाम्
८४ **गच्छ** गतौ
८५ **गज्ज** गर्जने
८६ **गण** गणनायाम्
८७ **गब्भ** प्रागल्भ्ये
८८ **गम** गतौ
८९ **गरह** } निन्दायाम्
९० **गरिह** }
९१ **गल** स्रवणे
९२ **गलच्छ** चेष्टायाम्
९३ **गवच्छ** आच्छादने
९४ **गवेस** अन्वेषणे

Aho ! Shrutgyanam

९५ गम भक्षणे
९६ गा गाने
९७ गिज्झ आसक्तौ
९८ गिल अदने
९९ गिला ग्लानौ
१०० गीर निगरणे
१०१ गुंज अव्यक्ते शब्दे
१०२ गुंड रज:संसर्गे
१०३ गुर उद्यमने
१०४ गुव व्याकुलत्वे
१०५ गुह संवरणे
१०६ गूह आलिङ्गने
१०७ ग्घा गन्धोपादाने
१०८ घत्त गवेषणे प्रयत्ने च
१०९ घस संघर्षे
११० घस अदने
१११ घंस संघर्षे
११२ घुट्ट पाने
११३ घुम्म भ्रमणे
११४ घुस शब्दे
११५ घूण भ्रमणे
११६ घोल संघर्षे
११७ चच्च विलेपने
११८ चम आर्द्रीकरणे
११९ चमढ मर्दने
१२० चय पतनचयनयो:
१२१ चर गतौ
१२२ चिगिच्छ चिकित्सायाम्
१२३ चिण चयने
१२४ चिल्ल दीप्तौ
१२५ चुंब चुम्बने
१२६ चुक्क भ्रंशने
१२७ चुण्ण दलने
१२८ चेट्ठ चेष्टायाम्
१२९ चव मरणे
१३० चुय पतने
१३१ च्छंड त्यागे
१३२ च्छंद निमन्त्रणे
१३३ च्छज्ज दीप्तौ
१३४ च्छड वितुषीकरणे
१३५ च्छण हिंसायाम्
१३६ च्छिक्क छिक्कायाम्
१३७ च्छिव स्पर्शे
१३८ च्छुभ प्रक्षेपणे
१३९ च्छुह प्रक्षेपे
१४० च्छुह स्पर्शे
१४१ च्छोल छेदने.
१४२ जग्ग निद्राक्षये.
१४३ जत प्रयत्ने.
१४४ जय जये.

Aho ! Shrutgyanam

१४५ जय यागकरणे
१४६ जहा त्यागे
१४७ जंप व्यक्तायां वाचि
१४८ जंभ गात्रविस्तारणे
१४९ जा गतौ
१५० जा प्रादुर्भावे
१५१ जागर निद्राक्षये
१५२ जाण अवबोधने
१५३ जिण जये
१५४ जीव प्राणधारणे
१५५ जु मिश्रणे
१५६ जुंज भोजनेच्छायाम्
१५७ जुंज योगे
१५८ जुज्झ संप्रहारे
१५९ जूर रोगे
१६० जूर वयोहानौ
१६१ जूह मिश्रणे
१६२ जोय दर्शने
१६३ जोस नाशे सेवायां च
१६४ ज्जल ज्वलने
१६५ ज्झा ध्याने
१६६ झर क्षरणे
१६७ झव क्षपणायाम्
१६८ झिज्झ क्षये
१६९ झिया ध्याने
१७० झुर अश्रुविमोचने
१७१ झुंभ अदनेच्छायाम्
१७२ टुह निरसने
१७३ डंभ दंभने
१७४ डंस दशने
१७५ डी विहायसागतौ
१७६ डु द्रवे
१७७ ढा विदारणे
१७८ ढोय गतौ
१७९ णाम अर्पणे
१८० णुम आवरणे
१८१ तक्ख तनूकरणे
१८२ तच्छ तनूकरणे
१८३ तण विस्तारे
१८४ तप्प तर्पणे
१८५ तम ग्लानौ
१८६ तल भर्जने
१८७ तंच संकोचने
१८८ तिउट्ट त्रोटने
१८९ तितिक्ख सहने
१९० तिप्प { दुःखदाने तर्पणे तृप्तौ च
१९१ तुट्ट त्रोटने
१९२ तुद व्यथने
१९३ तुर त्वरायाम्

१९४ तुस सन्तोषे
१९५ तूर त्वरायाम्
१९६ त्रस उद्वेगे
१९७ त्रा पालने
१९८ त्थग शब्दे
१९९ त्थुव स्तुतौ
२०० थंभ स्तम्भने
२०१ थोभ भ्रमणे
२०२ दद दाने
२०३ दम उपशमे
२०४ दय दयादानेच्छासु
२०५ दर विदारणे
२०६ दरस } दर्शनायाम्
२०७ दरिस्ख }
२०८ दल दाने
२०९ दस दशने
२१० दह धारणे
२११ दिक्ख दीक्षायाम्
२१२ दिप्प दीप्तौ
२१३ दिस प्रेक्षणे दाने च
२१४ दिह वृद्धौ
२१५ दुगुंछ निन्दायाम्
२१६ दुम धवलीकरणे
२१७ दुस वैकृत्ये प्रीतौ च
२१८ दुह द्रोहे
२१९ दुह प्रपूरणे
२२० दू गतौ परितापे च
२२१ दूस वैकृत्ये
२२२ देव विलापे
२२३ दोज्ज दोहने
२२४ द्दा पलायने
२२५ द्दु उपतापे
२२६ धम शब्दे
२२७ धय पाने
२२८ धस पतने
२२९ धाड भ्रमणे
२३० धुण कम्पने
२३१ धूव संतापे
२३२ नंद नन्दने
२३३ नच्च गात्रविक्षेपे
२३४ नड नृतौ
२३५ नद अव्यक्त शब्दे
२३६ नम नम्रीभावे
२३७ नमंस नमस्कारे
२३८ नस्स नाशे
२३९ निंद निन्दायाम्
२४० निह प्रीतौ
२४१ ने प्रापणे
२४२ न्ना अवबोधने
२४३ न्हव गोपने

Aho ! Shrutgyanam

२४४ न्हा स्नाने
२४५ पक्क मिश्रणे
२४६ पज्ज गतौ
२४७ पड पतने
२४८ पढ पठने
२४९ पय पाके
२५० पव पतनप्लावनयोः
२५१ पा पाने
२५२ पिट्ट पीडने
२५३ पिल पतनप्लवनयोः
२५४ पी पाने.
२५५ पी प्रीतौ.
२५६ पीण तर्पणे
२५७ पीस संचूर्णने
२५८ पुच्छ प्रश्ने
२५९ पूज पूजायाम्
२६० पेयाल समालोचने
२६१ फण गतौ
२६२ फंस कलङ्कारोपणे
२६३ फिड विकसने
२६४ फुट्ट विकसने
२६५ फुम फुत्कारे
२६६ फुस स्पर्शे शुद्धौ च
२६७ फेड गतौ
२६८ बंध बन्धने
२६९ बाह पीडायाम्
२७० बीह भये
२७१ बुज्झ अवगमने
२७२ बुड्ड निमज्जने
२७३ भक्ख अदने
२७४ भज सेवायाम्
२७५ भज्ज भर्जने
२७६ भण कथने
२७७ भम भ्रमणे
२७८ भव सत्तायाम्
२७९ भस श्वरवे
२८० भा दीप्तौ
२८१ भिस दीप्तौ
२८२ भिंद विदारणे
२८३ भुंज भक्षणे भोगे च
२८४ भूस अलङ्करणे
२८५ मंथ विलोडने
२८६ मक्ख म्रक्षणे
२८७ मग्ग अन्वेषणे
२८८ मज्ज शुद्धौ
२८९ मत्थ मन्थने
२९० मद ग्लेपने
२९१ मद्द मर्दने
२९२ मर प्राणत्यागे
२९३ मल मर्दने

Aho ! Shrutgyanam

२९४ **मह** इच्छायाम्
२९५ **मा** माने
२९६ **माद** प्रमादे
२९७ **मिल** सङ्गमे
२९८ **मिल्ल** त्यागे
२९९ **मिस** स्पर्द्धायाम्
३०० **मील** संकोचे
३०१ **मुंड** मुण्डने
३०२ **मुच्छ** मूर्छायाम्
३०३ **मुज्झ** मोहे
३०४ **मुण** ज्ञाने
३०५ **मुस** स्पर्शे
३०६ **मेल** सङ्गमे
३०७ **मोद** हर्षे
३०८ **म्हि** ईषद्धसने
३०९ **यंत** संकोचे
३१० **रक्ख** रक्षायाम्
३११ **रज्ज** रागे
३१२ **रज्झ** पाके
३१३ **रड** परिभाषणे
३१४ **रण** अव्यक्तशब्दे
३१५ **रम** क्रीडायाम्
३१६ **रव** शब्दे
३१७ **रंच** पृथक्त्वे
३१८ **रंध** पाके
३१९ **रंभ** आरम्भे
३२० **राज** दीप्तौ
३२१ **रिच** पृथक्करणे
३२२ **रिध** वृद्धौ
३२३ **रिय** गतौ
३२४ **रुट्ठ** रोषे
३२५ **रुद** अश्रुविमोचने
३२६ **रुस** रोषे
३२७ **रुंट** गुञ्जितध्वनौ
३२८ **रुंभ** आवरणे
३२९ **रेह** दीप्तौ
३३० **लक्ख** अङ्कने
३३१ **लग्ग** सङ्गे
३३२ **लभ** प्राप्तौ
३३३ **लल** क्रीडायाम्
३३४ **लस** इच्छाक्रीडनयोः
३३५ **लंघ** लङ्घने
३३६ **लंछ** लाञ्छने
३३७ **लिह** लेखने
३३८ **लिंग** आलिङ्गने
३३९ **लिंच** निस्सारणे
३४० **लुक्क** दर्शने
३४१ **लुट्ट** लुंटने
३४२ **लुण** छेदने
३४३ **लुभ** लोभे

Aho ! Shrutgyanam

३४४ **लुंच** लुंचने
३४५ **लुंप** नाशने
३४६ **लूस** स्तेयभञ्जनदशनखंडनेषु
३४७ **लोट्ट** परिवर्त्तने
३४८ **ल्लिय** भजने
३४९ **ल्हाय** हर्षे
३५० **वच्च** व्यक्तायां वाचि
३५१ **वम** उद्गिरणे
३५२ **वर** व्यायामे
३५३ **वल** संचरणे
३५४ **वव** बीजवपने
३५५ **वस** निवासे
३५६ **वंफ** इच्छायाम्
३५७ **वा** वायुसञ्चरणे
३५८ **विगिंच** पृथक्करणे
३५९ **विच** पृथक्करणे
३६० **विज** भये
३६१ **विज्ज** सत्तायाम्
३६२ **विद** ज्ञाने
३६३ **विरल्ल** विस्तारे
३६४ **विस** प्रवेशने
३६५ **विसट्ट** विकाशचूर्णनयोः
३६६ **विहेड** विनाशे
३६७ **विंज** व्यजने
३६८ **वीज** व्यजने
३६९ **वेव** कम्पने
३७० **वोलट्ट** } जलोद्रेके
३७१ **वोसट्ट** }
३७२ **व्वय** गतौ
३७३ **व्विह** ताडने
३७४ **स** अवसाने
३७५ **सड** दौर्गन्ध्ये
३७६ **सद** गमनविशरणयोः
३७७ **सप्प** गतौ
३७८ **सय** शयने
३७९ **सर** स्मरणे
३८० **सर** गतौ
३८१ **सलह** श्लाघायाम्
३८२ **सल्ल** गतौ
३८३ **सह** सहने
३८४ **संक** शङ्कायाम्
३८५ **संद** किञ्चिच्चलनस्यन्दनयोः
३८६ **संभर** स्मरणे
३८७ **संस** कथनहिंसनयोः
३८८ **सिक्ख** शिक्षायाम्
३८९ **सिज्झ** निष्पत्तौ
३९० **सिण** सेवायाम्
३९१ **सिणा** स्नाने
३९२ **सिर** विसर्गे
३९३ **सिलीस** आलिङ्गने

Aho ! Shrutgyanam

३९४ **सिव्व** तन्तु सन्ताने
३९५ **सिंच** सेचने
३९६ **सीद** विशरणे
३९७ **सु** प्राणिप्रसवे
३९८ **सुज्झ** नैर्मल्ये
३९९ **सुड** निन्दायाम्
४०० **सुमर** स्मरणे
४०१ **सुय** शयने
४०२ **सुय** दौर्गन्ध्ये
४०३ **सुस्स** शोषणे
४०४ **सुस्सुस** सेवायाम्
४०५ **सुंभ** हिंसने
४०६ **सूर** नाशने
४०७ **सेय** घर्मस्रुतौ
४०८ **सेव** सेवायाम्
४०९ **सेह** शिक्षायाम्
४१० **सोय** शोके
४११ **स्सद** स्वादने
४१२ **स्सम** परिश्रमे
४१३ **स्सय** सेवायाम्
४१४ **स्सस** प्राणने
४१५ **स्संभ** विश्वासे
४१६ **हक** निषेधे
४१७ **हड** चेष्टायाम्
४१८ **हण** हिंसायाम्
४१९ **हस** हसने
४२० **हंद** ग्रहणे
४२१ **हा** ह्रासे विसूचिकायाञ्च
४२२ **हिंड** भ्रमणे शब्दे च
४२३ **हिंस** हिंसायाम्
४२४ **हुण** होमे
४२५ **हो** सत्तायाम्

अथ द्वितीयगणः ॥

१ **अच्च** पूजायाम्
२ **अत्थम** अस्तमयने
३ **अप्प** अर्पणे
४ **अंज** प्रकटने
५ **इर** गतौ
६ **उक्ख** सेचने
७ **उड** बन्धने
८ **एड** उत्सर्गे
९ **ओयव** संसिद्धिजययोः
१० **कह** वाक्यप्रबन्धे
११ **काम** इच्छायाम्
१२ **किलाम** दैन्यापादने
१३ **कूल** आवरणे
१४ **कोट्ट** कूर्दने
१५ **कोर** विलेखनचित्रीकरणयोः
१६ **क्खाल** शौचकर्मणि

Aho ! Shrutgyanam

१७ **खंड** खण्डने
१८ **गंठ** ग्रन्थने
१९ **गगह** ग्रहणे
२० **चाव** चर्वणे
२१ **चित्त** चित्रीकरणे
२२ **चूर** चूर्णने
२३ **चेत** करणावबोधनयोः
२४ **चेय** दाने
२५ **चेय** स्मृत्याम्
२६ **जेम** भोजने
२७ **झूस** अर्पणासेवनप्रीतिषु
२८ **झोस** अर्पणासेवनप्रीतिषु
२९ **डेव** उल्लङ्घने
३० **डाव** विस्तारे
३१ **तक्क** तर्के
३२ **ताड** ताडने
३३ **ताल** ताडने
३४ **तीर** तरणे
३५ **तुड** संधाने तोडने च
३६ **तुल** तोलने
३७ **तोल** तोलने
३८ **दंस** दर्शनायाम्
३९ **दा** दाने
४० **दाय** दर्शनायाम्
४१ **दाल** विदारणोद्घाटनयोः
४२ **दीव** दीपनाक्रीडनयोः
४३ **धरिस** पराभवे
४४ **धार** धारणे
४५ **धुक्ख** सन्दीपने
४६ **पामिच्च** उच्छिन्नग्रहणे
४७ **पार** अन्तगमने
४८ **पाल** पालने
४९ **पीह** इच्छायाम्
५० **पूर** पालनपूरणयोः
५१ **पोस** पोषणे
५२ **प्फाल** विदारणे
५३ **फास** स्पर्शे
५४ **वु** व्यक्तायां वाचि
५५ **भच्छ** तिरस्कारे
५६ **भत्थ** भर्त्सने
५७ **भोग** दर्शने
५८ **मह** मन्थने
५९ **मंड** भूषायाम्
६० **मंत** गुप्तपरिभाषणे
६१ **मूल** रोहणे
६२ **मोड** मोडने
६३ **यंस** आच्छादने
६४ **याम** परिवेषणे
६५ **यास** आलिङ्गने
६६ **राह** राधने

Aho ! Shrutgyanam

६७ **लंड** गतौ
६८ **लूह** पारुष्ये
६९ **लेस** संश्लेषणे
७० **वण्ण** वर्णने
७१ **वरस** वर्षणे
७२ **वंच** प्रतारणे
७३ **वार** वारणे
७४ **वेढ** वेष्टने
७५ **वेल्ल** कंपने
७६ **वेस** व्यापने
७७ **व्वह** दुःखे
७८ **सक्क** सामर्थ्ये
७९ **सव** छेदने
८० **संगाम** युद्धे
८१ **साह** सहगमने
८२ **सूय** सूचने
८३ **सेस** भेदने
८४ **हरिस** हर्षे
८५ **हूण** कम्पने
८६ **हेरुयाल** निन्दायाम्

अथ तृतीयगणः

१ **अग्घ** योग्यतायाम्
२ **अज्ज** उपार्जने
३ **अत्थ** याचने
४ **अंच** पूजासंकोचनसंचयेषु
५ **आव** प्राप्तौ
६ **आस** उपवेशने
७ **इक्ख** व्यक्तायां वाचि दर्शनेच
८ **इस** गतौ
९ **ईर** प्रेरणायाम्
१० **उट्ट** छेदने
११ **उम** निन्दोपालम्भनतिर-स्कारेषु
१२ **एस** अन्वेषणे
१३ **ओस** निन्दोपालम्भनतिरस्कारेषु
१४ **कप्प** छेदने सामर्थ्ये करणे च
१५ **कर** करणे
१६ **कंख** वाञ्छायाम्
१७ **किट्ट** कीर्त्तने
१८ **कीड** } क्रीडायाम्
१९ **कील** }
२० **कीर** विक्षेपे
२१ **कम** पादविक्षेपे
२२ **किण** क्रयणे
२३ **कील** क्रीडायाम्
२४ **कखा** प्रकथने
२५ **खिखव** क्षेपणे
२६ **खव** क्षयकरणे
२७ **गाह** स्थापनाग्रहणप्रवेशेषु
२८ **गिण्ह** ग्रहणे

Aho ! Shrutgyanam

२९ **गुण** आवर्त्तनायाम्
३० **गोव** गोपने
३१ **घट्ट** स्पर्शकिञ्चिच्चलनयोः
३२ **घड** चेष्टायाम्
३३ **घात** हिंसायाम्
३४ **घोस** व्यक्तायां वाचि
३५ **चय** सामर्थ्ये
३६ **चल** गतौ
३७ **चिन्त** चिन्तने
३८ **चिट्ठ** गतिनिवृत्तौ
३९ **चोय** प्रेरणायाम्
४० **चय** त्यागे
४१ **च्छड्डु** त्यागे
४२ **च्छल** वञ्चने प्रक्षालने च
४३ **च्छाद** संवरणे
४४ **च्छिद** छेदने
४५ **च्छोड** त्यागे
४६ **च्छोल** प्रक्षालने
४७ **छंट** सेचने
४८ **जण** उत्पादने
४९ **जम** निवृत्तौ
५० **जर** वयोहानौ क्षरणे च
५१ **जाय** याचने
५२ **जोय** प्रकाशने
५३ **जोय** योजनायाम्
५४ **ज्झाम** शब्दे
५५ **ट्ठव** स्थापनायाम्
५६ **ट्ठा** गतिनिवृत्तौ
५७ **डह** भस्मीकरणे
५८ **णुल्ल** प्रेरणायाम्
५९ **तज्ज** भर्त्सने
६० **तर** तरणे सामर्थ्ये च
६१ **तव** तपने
६२ **त्थर** आच्छादने
६३ **दुक्ख** दुःखने
६४ **दूम** खेदे
६५ **द्दव** प्राप्तौ
६६ **द्दह** दहने
६७ **द्धंस** नाशने
६८ **धर** धारणे
६९ **धा** धारणे
७० **धाव** शीघ्रगतौ
७१ **धोव** शौचकर्मणि
७२ **नद्ध** बन्धने
७३ **न्नव** आज्ञापनायाम्
७४ **पाड** उन्मूलने पातने च
७५ **पास** दर्शने
७६ **पिह** इच्छायाम्
७७ **पीड** पीडने
७८ **पील** पीडने

Aho ! Shrutgyanam

७९ **फोड** भेदने
८० **फंद** किञ्चिच्चलने
८१ **फुर** सञ्चलने
८२ **बुह**
८३ **बूह** } शब्दे
८४ **भर** भरणे
८५ **भंज** भञ्जने
८६ **भंस** अधःपतने
८७ **भास** दीप्तौ
८८ **भाम** व्यक्तायां वाचि
८९ **मज्ज** शुद्धौ
९० **मज्ज** गर्वे
९१ **मन्न** अवबोधने
९२ **माण** पूजायाम्
९३ **मिला** म्लानौ
९४ **मुंच** त्यागे
९५ **रच** रचनायाम्
९६ **रस** आस्वादनाक्रन्दनयोः
९७ **रुह** प्रादुर्भावे
९८ **रूव** घटनायाम्
९९ **राय** अभिलाषे श्रद्धायां च
१०० **लज्ज** लज्जायाम्
१०१ **लव** व्यक्तायां वाचि
१०२ **लंब** लम्बनायाम्
१०३ **ला** ग्रहणादानयोः
१०४ **लास** नर्त्तने
१०५ **लिंप** लेपने
१०६ **लेह** स्खलनायाम्
१०७ **लोक** दर्शने
१०८ **लोल** उपघाते
१०९ **वग्गा** वल्गने
११० **वज्ज** वर्जने
१११ **वड्ढ** वृद्धौ
११२ **वत्त** वर्त्तने
११३ **वद** व्यक्तायां वाचि
११४ **वर** स्वीकाराच्छादनयोः
११५ **वह** प्रापणपीडनयोः
११६ **वंद** स्तुतौ
११७ **वाय** वाचने
११८ **विंध** ताडने
११९ **विडंब** अनुकरणे
१२० **वेद** वेदने
१२१ **वोल** कम्पने
१२२ **सक्क** गतौ
१२३ **सज्ज** सज्जीभवनासक्ति-विसर्जनेषु
१२४ **सद्द** आह्वाने
१२५ **सद्द** आस्वादने
१२६ **सम** शान्तौ
१२७ **सव** क्षरणे श्रवणे च

Aho ! Shrutgyanam

१२८ **सव** प्राणिप्रसवे गतौच
१२९ **सास** शासने
१३० **साह** कथने
१३१ **साह्** साधने
१३२ **सुण** श्रवणे
१३३ **सेह** गत्याम्
१३४ **सोभ** दीप्तौ
१३५ **स्साद** इच्छायामास्वादने च
१३६ **हर** हरणे
१३७ **हव** सत्तायाम्
१३८ **हाल** दर्शने
१३९ **हील** अनादरे

॥ इति धातुपाठः ॥

Aho ! Shrutgyanam

जैनसिद्धान्तकौमुदीसूत्राणामकाराद्यनुक्रमः ॥

पृष्ठ.	सूत्र.
१	अ आ इ ई उ ऊ ए० १।१।१
१	अइउ ह्रस्वाः १।१।३
२६	अएतः स्सणावा० २।१।२६
३७	अएस्ससीनामि० २।१।५७
२०७	अच् करादिभ्यः० ४।२।११
१४५	अच्चान्मोर्वा ३।१।१५३
११५	अच्छादेस्तेरेः ३।१।५०
७७	अच्छेरः १।३।५३
२०७	अजन्तेऽतेऽनुस्वारः ४।२।१२
९१	अजिनस्येतोऽणि १।३।६३
१७४	अज्ञस्य त्तिणक् ४।४।४२
८०	अट्टात्सस्य १।४।७१
८१	अट्ठे ट्ठस्य डो याल० १।४।७२
३३	अणमोऽणो लोपः २।१।८३
३५	अणमोऽमः २।१।९२
४९	अणश्च २।२।३
१०६	अणंतादिभ्यः क्खु० ४।४।७४
२०५	अणिदिणक्कण० ४।२।१
१५४	अणोणतिन्तित्ता० ४।४।१०३
१७८	अणोर्यस्य च ३।३।३४
८२	अण्णस्य वा २।३।५०
१४०	अण्वातिभ्यां व्व० ४।४।९१
४८	अतः स्त्रियां डाः २।२।१
९३	अति पच्छिमस्य० १।४।७९
६२	अतिरतिक्रान्ते० २।३।७
८६	अतिशये तरः २।४।२१
१२१	अतेततिन्तेषूदः० ३।१।९०
१७५	अतेर्यो डे ३।३।६
११५	अते गच्छस्य गस्य ४।४।७७
१९९	अतेष्ठुस्थः ४।१।५४
२२	अतोऽत्यन्त्यस्य २।१।५
२७	अतोऽवोऽुतः २।१।२९
२२	अतोऽस्त्रियां हि० १।२।१८
२७	अतोत्स्सयोर्णोत् २।१।२७
१९१	अतो लोपस्तत्योः ४।१।२
१८२	अत्तयोः केवलस्य ४।४।३९
२५	अत्ता पाभ्यांच २।१।२०
८७	अत्पसिणस्येये १।३।६०
१२३	अत्यथरानां च ४।४।८५
२१८	अत्यभि पाभ्या० ३।२।२९
२८	अत्यरोः १।२।१६
४५	अत्यादयश्च १।१।२१
७४	अत्र लिङ्गमन्य० २।३।३५
८३	अदणिकेकणिओ० २।४।२
९०	अदणोरुतोऽव् १।३।६२
८८	अदणौ नक्षत्रेण० २।४।२९
३	अदाताविदीता० १।१।३७
१९१	अदितयोरि० १।४।१३५
२४	अदितोरणोः २।१।१०
३८	अदितोरेकैकस्य० २।१।६१
२६	अदितोर्णो वा २।१।२५
३	अदिदुतामादे० १।१।३६॥
२०	अधातुप्रत्ययो० १।१।११
२११	अधिकरणेऽण् ४।२।१६
४८	अधिगरणादिभ्यो० २।२।२
७१	अधोरवधेर्वस्य १।४।४९

पृष्ठ.	सूत्र.
१०४	अनवधारणए० २।४।७५
१९३	अनसादिभ्यः साङ्कः ४।१।१६
१३	अनादेरसंयुक्तस्य० १।४।१०
१८३	अनिटारुमूणयोः० ३।३।५६
१८१	अनिटौ त्तण्त्तू ३।३।४५
१६७	अनुकरणध्वला० ४।४।१०९
५१	अनुक्ते २।२।१४
६२	अनुपडी वीप्सादिषु २।३।८
३१	अनुस्वारस्येसिमः २।१।३९
४	अनेकवर्णसित्सर्वस्य १।१।४२
६१	अनेकं नामैकार्थे० १।१।३४
७३	अनेकं समूहे २।३।३३
१२०	अनोरसादेरिम् ३।१।६३
५८	अन्तरायोगे च २।२।३३
२	अन्त्यात्पूर्व उपधा १।१।७
२०४	अन्वातो विस० ४।१।२६
२२६	अन्वाभ्यां वा णे ४।२।४४
५७	अपादाने पञ्चमी २।२।२७
८	अपूर्वस्य संयुक्तस्य १।२।२३
१५५	अपेरेरेति धि १।३।९९
९०	अप्पणादिभ्विये० २।४।३३
९८	अप्पाद्दहोः कः २।४।६२
२१८	अप्पाहहाभ्यां णिः ४।३।२
७४	अप्रथमाऽन्यपदार्थे० २।३।३४
२	अप्रयुज्यमानः स० १।१।८
१७१	अभिघट्टादियः ३।२।४४
५१	अभेदान्वयि च १।१।२८
१८२	अभेरूणे वन्दस्य वाः ३।३।५०
१४५	अभेरंजस्य गः १।४।१३४
१५५	अभेर्द्धसस्येज्ञे १।२।२६
१८२	अभेस्त्ति ४।१।३४
१०६	अभ्यावृतौ संख्या० २।४।८५
४६	अमादितद्धितान्ताः १।१।२२
३२	अम्हस्य हमहमौ० २।१।७५
१०१	अम्हादिषु दिसादः २।४।६९
११२	अम्हे समानाधिक० ३।१।४
११६	अयादिभ्यस्त्था ३।१।३४
१३२	अयोऽणैन्तीज्ञ० ३।१।११४
९७	अरिप्रभृतिभ्यस्त्ता २।४।५६
२८	अरोमि १।२।१७
१८	अलाबुरिव्वो० १।४।११२
८६	अल्पे च २।४।५
७५	अवद्गास्य १।३।४९
२२७	अवपरिभ्यामूसो० ४।३।३६
१९६	अवस्य गुयेनुस्वारः ४।४।५८
१४८	अवात्करस्य क्ख० ३।१।१३८
२२०	अवात्कसस्याणि० ४।३।२८
१२४	अवादपस्यादेर्लोपो ४।४।३५
१४७	अवाद्दालस्य० ३।१।८८
१५१	अवाद्यः ३।१।१४८
४२	अव्ययम् १।१।१९
४८	अव्ययाच्च ४।४।६६
६१	अव्ययीभावः २।३।४
११७	असच्चयजाण० ३।१।२१
११६	असस्य तितुमिषु ।४।७८
११७	असादिदीतौ ३।१।३५

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
११७	अस्मादिभ्यो या ३।१।११
६२	अस्मादृश्ये यथा० २।३।९
१९	अस्सिलेसे सस्य० १।४।३७
७७	असौ पस्य फः १।४।५७
१०	अश्विक्खिल्लादीनाम् १।३।७
७५	अस्मात्को वा २।३।३७
१२	अस्सादिषु संयुक्त० १।४।८
८८	अस्सिणया इण० १।४।७
१६७	अस्सुयान्माण० ४।४।१०८
६९	अहस्याण्हः १।४।४५
४२	अहादयः १।१।२०
१०८	अहीहण्हवः कात् २।४।९७
१५	अहेरत्तस्य ठथौ १।४।१०९
२२४	अहेरुवादणि ३।२।११
१६१	अहेरेरावन्तावयः ३।२।२३
११९	अहेरेस्तौ ४।४।१३
२१८	अहेझौ दीर्घो धातोः ३।२।२५
८	अह व्यञ्जनस्य० १।२।२०
१०	अङ्कादीनां मये १।३।७०
१५०	अश्वादिभ्यश्च ३।१।१०७
१०९	अं जताभ्याम् २।४।१०१
	(आ)
२	आ ई ऊ दीर्घाः १।१।४
१९३	आउडे पस्य वः ४।१।१५
९४	आउसाद् न्तः २।४।४५
१३१	आगमनमाभ्यां तौ ३।१।१०८
७१	आगंतारस्यागार० १।४।५०
१२४	आग्घाझियर्योर्हे ४।४।१५
१८८	आग्घादीनां माणे ४।४।२३
१५२	आघं भूते ३।१।५७
११२	आज्ञाभविष्यद्वृत्त० ३।१।३
१६६	आज्ञायामातः० ३।२।३०
११४	आज्ञायां तिन्त्योरुः ३।१।१३
१५१	आज्ञायां पेहे० ३।१।१५२
१३३	आज्ञावर्त्तमानणि० ३।१।१०१
७४	आणात्पाणस्योत् १।३।४७
२२८	आणिज्जयोः सल० ४।३।४४
२२५	आऽणुपेभ्यो मिलो० ४।३।३५
१४७	आत इत् ३।१।९१
१५१	आत उसस्य तौवा ३।१।८४
१६	आतपादीनां पस्य० १।४।२४
३५	आतश्चादितोरोक् २।१।३२
१९८	आतश्च्छादस्येते १।३।१२
१५४	आतश्छिन्दभि० ४।४।१०१
१८९	आतस्तुडस्येज्झे १।३।३३
१५९	आतस्तेंसुणेषूस् ३।१।१७३
२२०	आतस्तौ वा ४।३।१५
१९९	आतस्थरस्य त्थुः ४।१।५८
३७	आतस्सिम् सव्व० २।१।५५
२२२	आतः क्खिवस्य० ४।२।३२
१५२	आतः क्खो घवो० ३।१।१४५
२१३	आतः सवस्येणि ३।१।८३
२२२	आति गस्य लोपः ३।१।९५
२२३	आति च्चिगिच्छस्य १।३।३७
२२७	आति पाद् व्वयस्य० ४।३।६३
११६	आतोणस्य मक्त्या० ४।४।११
१७६	आतो गमात्तो वट् ३।३।२२
१२४	आतो ग्घ आदेः ४।४।८३

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
२२४	आतो जयोर्लोप० ३।२।१२
३६	आतो ङेरीदूङ्भ्यां० २।१।३६
१२९	आतो दहस्य ङः १।४।९७
२००	आतो दिहस्यादे० ३।४।१२
२१०	आतो दीवस्य दोलः १।४।९९
२१६	आतो दो वा ३।४।२५
१५६	आतो ग्नवस्य० १।२।२८
१३५	आतो भिंदस्यादे० ३।१।१२१
२२६	आतो मुसस्याण० ४।३।४०
२०७	आतो यक् के ३।१।१५९
१९६	आतोरड् गमे ४।४।५५
१८२	आतो रंभस्य ढत्तं० ३।३।४८
१५८	आतो रुहस्य तित्ता० १।३।३२
१५८	आतो रुहस्य भस्तौ १।४।१३४
२६	आदि ङूङ्भ्यः स्वरे० १।२।१४
३५	आदीदूतां ह्रस्वो मि २।१।३३
१३८	आदुपोवेभ्यो० ४।४।३८
१८५	आदतौ वंदात् ३।३।६८
३	आदेदोतामदिदु० १।१।३५
१७३	आदेरस्य ३।२।६४
११७	आदेरिदीदिमोषु० ३।१।५३
२२३	आदेरिराके ४।३।६
१४९	आदेरीत्यवो द्विः ३।१।४६
१६६	आदेः सस्वरस्य ३।१।१७७
५८	आधारेपि २।२।१९
२१९	आनिपेभ्यो लोपो० ४।३।१६
९४	आन्मन्तस्य वः १।४।८१
१६०	आपाभ्यां सघस्य० ३।१।१७५

पृष्ठ.	सूत्र.
६३	आभिमुख्याद्याभिः २।३।१२
८१	आभक्ष्यवीप्स० २।३।४३
१०५	आभीक्ष्ण्ये बह्वादि० २।४।८१
५०	आमन्त्रणे च २।२।१३
२२	आमन्त्रणोतो लोपः २।१।३
२२५	आमप्रात्करणे ४।३।७
७६	आमोसादोसहे० १।३।७९
१६७	आयस्तत्करोति ३।१।१८१
१६७	आयान्ताश्च १।१।१५
१८७	आयो माणे कर्मणि ४।४।९९
६३	आयावदर्थका० २।३।११
१६८	आये विश्वोर्बिंदु० ३।१।१८३
९६	आलुर्द्रयादिभ्यः २।४।५२
१०३	आवातियस्यातश्च ४।४।७३
१६१	आवश्च करादिभ्यः ३।२।३
२२२	आविभ्यां क्लिवाश्चा ४।३।३३
१८	आविले वस्य १।४।३१
१६३	आवे जादीनामेका० ३।२।७
१८९	आवे दो दवस्तप० ३।४।८
१८६	आसादीणड् ३।४।२
१९७	आसमुभ्यां चिणस्य ४।१।२७
२१८	आसेपरयोर्वसौ वा ४।१।५
६६	आसो रुहस्य तः १।४।११४
६०	आश्रयोधिकरणम् १।१।३३
१४८	आहाल्लोप उवंसु ३।१।१४२
११०	आहेहिंहिहियमः० २।४।१०४

(इ)

पृष्ठ.	सूत्र.
१७५	इफाहादाजादुसु० ४।४।४५

पृष्ठ.	सूत्र.
४८	इकारान्ता दिस्या० १।१।२५
२०६	इक्खादिभ्यां णणणौ ४।२।४
७७	इगेगस्य १।४।५८
८६	इज्जस्थेरादिभ्यः २।४।२४
११३	इज्जस्य वा ३।१।९
११९	इज्जः स्वार्थेऽपि ३।१।४८
११४	इज्जात्सिहमिमवः ३।१।१०
७१	इज्जाया एसस्येसः १।४।५५
१२८	इज्जे च समः ४।२।४१
१७२	इज्जे दीर्घः फासस्य ३।२।५९
१४१	इज्जे सिरस्य सो० ३।१।१३२
८६	इट्ठो धम्म्यादिभ्यः २।४।२३
२०९	इणणोर्जुजस्य० ४।४।११९
२११	इणकण् प्रेरणासु० ४।२।३०
१११	इणमादीनामेव दीर्घः १।३।८३
१२२	इणयोरिज्जकुणयोः ४।४।८२
२३	इणस्सयोर्डोस्डो० २।१।१४
२०९	इणि जुज्झस्य जझ० ४।२।२९
३१	इणेऽणः २।१।५३
२१	इणेहन्धोरनुस्वारो वा ४।४।४
९८	इणो जडादिभ्यः २।४।६०
८६	इतस्तदस्य संजातं २।४।२०
२१२	इतारयोर्वरसस्य० ४।२।३७
२१२	इति पाङ्गः ३।१।१ २
११८	इतिपूर्वपरयोरः ३।१।५७
९५	इति सड्ढाया ह्रस्वः १।३।६६
१९४	इते करादीनामादिं० ४।१।४५
१५२	इतेज्जयोराहः ३।१।१५८
२०४	इते वा ४।३।३८
२०५	इते सिंचस्य सिक्कः ४।१।७२
२००	इतो दिससिरयोरछा ४।१।६१
१९०	इतो दीर्घश्च वा माणे ३।४।६
४९	इतोऽभावे णीः २।२।४
२	इतो लोपः ४।४।६०
७५	इत्के पूर्वस्य २।३।२८
२२१	अदिणयोः क्खि० ४।३।३४
९४	अदिणमन्ताश्च० २।४।४४
५	इदीदुदूतामसवर्णे० १।२।९
२१	इदुतः पुंस्यतः २।१।२
२६	इदुद्भ्यामिणस्य णा २।१।११
१०२	इदेतस्य १।३।७४
२१९	इधाड्ढो वा ४।३।१८
१७४	इप्रभृतिभ्यश्च ३।३।५
३०	इमकाभ्यां सेः० २।१।४६
१०८	इमजतकेभ्यस्तोः २।४।५५
३०	इमस्य सोतोयम् २।१।४७
१०७	इमस्यैत्थम् २।४।९२
१०९	इमाए ण्हिहुणा० २।१।१०३
१०२	इमात्सस्य क्खः १।३।७५
७२	इमात्सन्धौ प्रथमा० २।३।३०
१११	इमादिभ्यश्चणम० २।४।१०७
१०७	इमाद्धहमौ च २।४।९५
१०२	इमो लोपो वा तो हु० १।३।७७
९८	इय इस्सरादिभ्यः २।४।६१
१०७	इयरस्येहरा २।४।९०
८७	इये णायस्य णेया १।४।७५

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
२१६	इये सदां धां ढः ३।४।४०
९१	इये सिलेसस्य सेसः १।४।७८
२०७	इरस्ताच्छील्ये ४।२।५
१८८	इराढः ३।४।११
२०१	इरानिभ्यांम् ४।१।६४
२१२	इर्जोड्यतः ४।२।१९
९६	इलो गन्धादिभ्यः २।४।४८
१९	इलो लोपश्च १।४।३८
२९	इसिमणमः २।१।४०
३९	इस्विहाहितवां १।३।१८
४०	इहाहिताणमिसु० २।१।६५
१३९	इहौ वहस्य ३।१।१३०
१०१	इंगालादिभ्यां भव० १।४।८९
४९	इंदादाणी पुंयोगे २।२।६
१७०	इः कत्तगिण्ह० ३।२।४९
१७६	इः काहुयोः ३।३।१२
१०	इः किवणसुजङ्गयोः १।३।२
१०१	इच्च कस्य १।३।७३
२२८	ईतः सिलीसस्यैत् ४।३।४६
१०१	ईत्तादितः १।४।९१
१००	ईरत्तादिभ्यांभूत० २।४।६७
१८०	ईरिये ३।३।४२
७६	ईरुद्वस्य मुहे १।३।५२

(उ)

पृष्ठ.	सूत्र.
१२	उउम्बरस्योतो लोपः १।३।५१
१७	उओईदूदटौ यश्च ४।४।३
१६३	उज्जोयज्झामयो० ३।२।३२
२१९	उट्ठादिभ्यां डिः ४।३।२
१०८	उत्कस्य तोत्थहिंसु १।३।८२
९३	उत्तरपदाद्देहेर० २।४।४२
७३	उत्ते यस्य १।४।५४
३०	उत्येततयोरक्लीबे० २।१।४२
१४१	उत् सिणस्य मौ १।३।८८
३८	उतः क्लीबान्मः २।१।६०
२९	उतः पितुप्रभृति० १।२।३१
१४२	उतः सुस्सुसस्या० १।३।८७
४९	उतो डीति प्र० २।२।११
१२०	उंचादीनां वा न्तौ ४।४।२५
२०	उदन्मिदिणहा० १।१।१३
१२६	उदापेभ्यो जः ४।४।८४
१७८	उदास्ति ४।४।९७
२००	उदस्थद्धस्य ४।१।५६
२२३	उदस्थंभस्य खंभः ४।३।४२
१९३	उदः कत्तकसयो० ४।१।२९
१८९	उदः कसस्य वा ३।१।७२
१९४	उदः कसाशस्य० ४।१।४२
९	उदः सश्छः १।४।५
२०५	उदातो हरस्य० ४।१।७१
८७	उदियस्य वा १।४।५६
९३	उदीऽपडीऽभ्यां० २।४।३८
१५१	उदीरवदसोभे० ३।१।१६७
११	उदूतारोदुतौ० १।३।१४
११९	उदोज्जो भविष्यति ३।१।६०
१२७	उदो डियो डास्त्या० ३।१।८९
२२०	उदोऽति छिरनिटः ४।४।५४
२२४	उदो दीर्घो णे ४।३।३०
१८०	उदो धराहो: ३।३।२५
१७२	उदोपाडिभ्यो मो० ३।२।६०
२२५	उदो मज्जस्याऽऽत० ४।३।२६
६	उद्दुर्निर्वीनां संयुक्त १।२।११

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
१५२	उत्ते: निवस्य वे:० ४।४।१००
१०	उपथाया: १।३।६
२१०	उपपदाविया० ४।२।२३
९०	उपमादीनामणि० १।४।११८
१६८	उपमानादाचारे ३।१।१८२
७	उपसर्गस्य दीर्घात् १।२।२४
१७४	उपसर्गाद्वा वा ३।३।४
१६४	उपसर्गात्यडस्य० ३।२।३४
१७८	उपसर्गाद्विये गिज्झः ३।३।३२
२२८	उपसर्गाद्गुणस्या० ४।३।४८
२२४	उपसर्गाद्: ४।३।४
१३३	उपसर्गात्पडस्य य: १।४।१२६
१५९	उपसर्गाद्यस्य० ३।१।१७१
११५	उपसर्गा: प्राक् ३।१।४९
१५८	उमिज्जयोर्जयोर्ये: ३।२।२२
१८५	उमि वा ३।३।५३
१८०	उमि समस्यो० ३।३।३६
१७८	उमूणयोर्निर: ४।४।९६
८२	उरसुहमज्झानां० २।३।४६
११	उर्मत्थुलिङ्गस्य १।३।५
९७	उर्लज्जाया: २।४।५३
१८	उर्वसभस्य सात: १।४।३३
९८	उवमादिभ्योऽण् २।४।६३
६४	उव: सामीप्ये० २।३।१४
१८४	उवाद्याद्विटो वा० ४।४।४८
२२०	उवाकुंपकरणे ३।१।१४०
१२०	उवादुजस्य तौ ३।१।६५
१८७	उवाद्गमस्य न्ते ३।२।४७
१९२	उवाद्रुद् ते ४।४।५०
२१९	उवस्याति ३।१।७६
१९	उसिणपसिणयो:० १।४।३६
११	उसियस्य १।३।१७
१९३	उ: करादीनाम् ४।१।३२
१७७	ऊणस्य वा ३।३।२४
१७९	ऊणो निरो जिणस्य ४।४।९८

(ए)

पृष्ठ.	सूत्र.
११३	एकवचनबहुवचने १।१।१७
२१	एकस्मिन्नेकवचनम् १।१।४४
८१	एकस्योणे अउण:० १।४।७३
४	एक: पूर्वपरयो: १।२।४
१०७	एकात् त्तश्च २।४।९६
८५	एकार्थकादागो० २।४।१६
१७७	एकार्थकानां द्स० १।३।२४
१०६	एक्कात्तिः २।४।८३
१०६	एक्कात्स्सिं २।४।८६
७७	एक्कादय: संख्या० २।३।४१
२१५	एज्जे झो घ: ३।४।२९
२१५	एज्जो डे ४।४।१०४
६६	एतकाभ्यां वतिय० ४।४।७०
१०३	एतजतेभ्य: परि० २।४।७२
१०४	एतस्य तियत्तिल०४।४।७२
१५५	एतष्ठ: ३।१।२६
१२	एत: कोल्हुस्येय: १।४।९
१०३	एतादारूव: सदृशे २।४।७०
१५६	एतिणेषु सम० ३।१।१६५
१२९	एति दिसस्य ह: १।४।१२३
१४६	एति दो ह्रस्व: १।३।८९
१५६	एतिधावस्य ३।१।१६६
१४८	एति समुद्दो घारस्य १।३।९६
१४	एतोद्गुतावित्त ओ० १।४।१६

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
६७	एत्पोरस्य कत्थे १।३।३९
९९	एदहिपुरयोर्बज्झे १।३।६८
१३१	एदोङ्क्ष्याभिज्झस्येतः ४।४।८९
१६५	एन्तहिप्विडजेः ३।२।१५
१२९	एमाणयोर्दिसस्य० १।३।२४
८५	एयः सास्मै दीयते० २।४।१९
७२	एयारूवे वा २।३।३१
६३	एर्यः कात्पूर्वः परो वा १।३।२०
१९६	एषामीर्णे ४।१।२१
२०६	एस्तारे ३।२।२६
२०७	एस्तारे क्किणजिण० ४।२।२४
१५९	ओतस्सि च १।४।१४५
२०८	ओतां घट्टस्यादेर्हः के ४।२।२८
७५	ओदणादारस्य १।३।४८
१३८	ओदादेरतश्छडि ३।१।१२८
७२	ओर्जसादीनामु० १।३।४४
१२	ओस्तम्बूलस्य १।३।८
१८२	ओः समस्य वस्तो० ३।३।६३
१६६	औ च सुज्झस्य सोहः ३।२।१३
	(क)
२०६	ककणोः स्त्रियामिट् ४।४।५७
१	कखगघङ च० १।१।२
३०	कजतेभ्योतोतो म्हा २।१।४१
१९४	कडक्खडयोः पुरएः ४।१।३८
१६९	कत्तादिभ्यात् ३।२।४१
८	कमचिणतरपज्ञा० १।२।२७
२६	कम्मधम्मयोर्हारिणे २।१।२४
९२	कम्माण्णको २।४।३७
१६१	करगलोज्झलपज्झल० ३।२।४
५०	करणप्रयोजकः० १।१।२६
२०७	करणे णः ४।२।१४
१७०	करस्य वा ३।२।५०
२१९	करस्योदिये ४।३।१४
१७०	करहरादिसानामी० ३।२।५१
१४४	करादापसङ्ख्यः ३।१।१०९
१६२	करादावस्यातः ४।४।१०६
१४३	करादिभ्यः कृदा० ३।१।१०५
२१३	करादियणचडौ ३।४।१६९
१४४	करादिरसम् ३।१।३७
१७०	कराद्वा ३।२।४२
५६	कर्त्तरि च २।२।२५
५०	कर्त्तरि प्रथमा २।२।१२
१७४	कर्तुरैक्ये पूर्वकाले० ३।३।२
५२	कर्तृकरणयोस्तृ० २।२।१७
५९	कर्त्रादौ क्तात० २।२।३६
११६	कर्मणि चाति १।४।१२९
५१	कर्मणि द्वितीया २।२।१५
५२	कर्मयुगविवक्षित० १।१।२६
५५	कर्मान्वयेनेष्टं सम्प्र० १।१।३१
९९	कलुणस्यौत् १।३।६९
१९४	कसस्य रिङ् ४।४।५३
१५२	कहस्य हौ ४।४।३०
१२१	कः सीः ३।१।३८
१०७	कादहाहमिहेण्णाः २।४।९१
१०५	कादिभ्यो निर्द्धारणे २।४।२२
३०	कादिहिंतोरितो० २।१।४५
१२१	कादेर्न ३।१।२८
१०४	कादेवातियः २।४।७४
१०२	कादेः १।३।७८
१७४	कारवस्य यो वा० ३।३।५३

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ. सूत्र.
६९ कारादिभिश्च २।३।२७
२०७ कारादिषु च ४।२।१३
१७६ किट्टादिभ्य० ३।३।६१
९५ किमेर्णः २।४।४७
१४५ किलामस्य वा० १।४।१३६
२२१ कीरस्य णमाणयो० ४।३।२४
२२१ कुज्झस्याण्णयोः ४।२।३१
१२२ कुणादिभ्यः सरुः ३।१।१४
६४ कुत्सादुष्टादौ० २।३।१५
१६२ कुप्पस्य पर्यारिते० ३।२।५
१०५ कुम्भकादिभ्यः० २।४।८२
१७४ कृत् ३।३।१
२० कृत्तद्धितौ च १।१।१२
४९ के पूर्वस्य ह्रस्वो० २।२।९
१८३ केवलात्सुणादुमू० ३।१।३०
१९४ केवलादिते दो० ४।४।९४
१९३ केवलाद्वा ४।१।१०
८२ कोडरात् २।३।५१
१२१ को यः सिद् ४।४।३३
६४ कारादौतौ १।३।२३
१६७ क्रमस्य चंकमः ३।१।१८०
२१४ क्षिणसंखाभ्या० ३।४।१९
२१४ क्षिणादिभ्य इयः ३।४।१७
१६९ क्षिणादीनामादि० ३।२।४६
१९५ क्षिवाङ्गिङडोल्लि० ४।१।२०
१७० क्षिववस्य पाडयोः ३।२।६५
२१४ क्षिववाद्वा सेटा० ३।४।२८
२२१ क्षिवसाभ्यां डायः ४।३।९
५० क्रियया कर्तुरिष्टं० १।१।२७
११२ क्रियायामश्वादयो० १।१।१४
६० क्रियालक्षकक्रिया० २।२।३९
२७ क्वचिदात स्सः २।१।२८
७५ क्वचिद्व्यधिकरणे० २।३।३६

(ख)

१३५ खडि मुंजस्य १।३।२६
१६२ खमादीनामादेर्वृद्धिः ३।२।२
६७ खंडादीनामुत्तरपदे १।३।२१
६० खंधादावारस्या० १।४।४७
१७० खान्ना मुहा[illegible]य० ३।२।५५
१२३ खादीनां तौ ४।४।२६
२१९ खिज्जादिभ्य इयः ४।३।१३
१० खुड्डस्य के दीर्घः १।३।१
१५३ खुभस्य तौ ३।१।७७
१३ खेत्तस्य छः १।४।१०३
२१४ खो डज्जः ३।४।२०

(ग)

१३ गन्त्वजतदां यः १।४।२०
११४ गच्छात्सस्सस्य० ३।१।३१
११४ गच्छादिभ्यः स्सा० ४।४।७१
८१ गच्छादीनां पूर्वस्य० २।३।४४
२०८ ग[illegible]ादिभ्यस्तारस्य० ४।२।२५
१७७ गमगिण्हलुभदिस० ३।३।२३
१७७ गमगिण्हच्छिद० ३।३।२७
२०८ गमस्य गो वाऽचि ४।२।२७
१७६ गममन्नदिसलुणभ्य० ३।३।१६
२०८ गमादिभ्य पट्ट० ४।४।५९
२१५ गमादिभ्यो ड्डः ३।४।२२
१७० गमादीनामन्ति ड्ढिः ३।२।६६
१९६ गश्च ४।१।३१
१९६ गसस्य घः ४।१।४४

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
१९७	ग्गहादितो दीर्घो० ४।१।४९
१७१	गादिभ्यो यः ३।२।४३
१२४	गादीनामिञ्जे ४।४।१४
१७०	गाधाहां ये ३।२।४२
१४	गिहस्य गहघर० १।४।१०६
१९६	गिज्झस्य गढः ४।१।४८
२१५	गिण्हडहदुहदहा० ३।४।३७
१७१	गिण्हस्य घेप्पः ३।२।५४
१७७	गिण्हस्य णलापा० ३।३।२९
१५३	गिण्हस्य सस्सस्य० ३।१।१६१
१५३	गिण्हस्य स्वार्थे १।३।३०
२१५	गिण्हादीनां डे द्विः ३।४।३६
१३	गिम्हस्य घिसुः १।४।१०४
२२२	गेहो गिज्झस्य ४।३।२३
५४	गत्तादिभ्योऽभेदे २।२।२०
२९	गर्डवम् २।१।९३
१२४	घ्रो जिग्घः ३।१।९२
१७१	घसादण् ३।२।४५
२०८	घातस्य घंतुघन्तू ४।२।३६
१५३	घेच्छदाहवोच्छेभ्यश्च४।२।७६
१५३	घच्छान्मेरोस् वा ३।१।१६३
९०	चउक्काभ्यां कस्य द्विः २।४।३२
८८	चक्खारस्य सट् ४।४।८
७९	चतुरचुलावसीतौ १।४।६६
६९	चतुर्थी तादर्थ्ये २।३।२५
२१	चतुर्थ्या न बहुव० १।१।४६
७८	चतोरतः पूर्वस्य १।३।५७
७८	चत्तालीसस्य याल० १।४।५९
१४६	चयस्य क्को ये १।४।१३७
१०	चरमे रस्य १।३।३
१८४	चरादण् च ३।३।६७
१९७	चरादीनामिस्ते ४।१।६०
७३	चरेऽहेराः १।३।४५
२०८	चालादियः ४।२।९
१२४	चिगिच्छस्यादेस्तः ३।१।९४
१९७	चिणजिणयोश्च ४।४।९५
२२३	चिणस्याणयोरि० ३।१।९६
११०	चिरार्थकेष्वेवं० २।४।१०५
९०	चोरवणिजाभ्या० ४।४।७१
७९	चोः सङ्ख्यावाचके १।३।५८
१७८	च्चयछिंदापिबभिद० ३।३।५८
१७८	च्चयस्यादेः ३।३।१३
२२३	च्चयादाकः ४।३।५
१९८	च्चयाद् द्विः ४।१।२३
२०३	च्चुयादिभ्यो लोपः ४।१।२४
६३	च्चेन जादयः समुच्चये २।३।१०
१९८	च्छिन्दस्य छहः ४।१।५३
२१६	च्छुभदुहभुंजसिं० १।३।३६
१९८	च्छुभमुज्झयोश्छु० ४।१।७९
१९८	च्छुहस्य स्पर्शो तः ४।१।८२
१६३	च्छोलादिभ्यो यः ३।२।१९
९५	छ्वोरिये दीर्घः १।३।५०
८०	छस्य सोर्दसे १।४।६७
७९	छाठयोश्च १।३।५५
१७८	छिकस्य त्ति दीर्घ० ३।३।१५
१७९	छुभभुंजमुंचादिस० ३।३।२६
१७९	छुभदिसमुंच० ३।३।१८
९६	जडाया जडुल० २।४।४९
२०९	जणादत्पञ्चमी० ४।२।२१
१८८	जणादीनां न्ते ४।४।२४

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
१०७	जताभ्यां हहमौ २।४।८८
७१	जत्तद्धयामनन्त० १।३।४३
१०८	जपगामाभ्या० २।४।९८
२०९	जसस्य वः काणि० ४।२।५१
९५	जयादिभ्य इणः २।४।४६
२१४	जयोर्ध्वौ वा ३।४।२१
९५	जसादिभ्यो वा १।४।८२
९७	जसादिभ्योंसिस्सी २।४।५४
२५	जसादिभ्यः सोः २।१।२२
७०	जहण्णादीनामणु० ४।४।७
१२५	जहास्तिमाणाणि० १।३।८१
१९८	जहस्ते ४।४।११७
९७	जहातहाद्दियणौ २।४।५७
१२६	जः स्सस्यैट् ४।४।३६
२०९	जाणपालिमन्थसहे० ४।२।२२
१२६	जाणस्यादेर्यः १।४।९६
१२७	जाणहणाभ्यां वा ३।१।१२
१२६	जाणादीनां दीर्घो० ३।१।९९
३७	जातयोरीर्वेणे २।१।५६
६४	जादयो व्यञ्जना० १।३।२२
१०३	जादावन्तौ च २।४।७३
१२५	जादीनां तौ ४।४।१६
२०९	जावस्य यः ४।२।३५
१७१	जिणस्य त्रः ३।२।६७
१७१	जिणान्मः प्रवर्त्त० ३।२।५६
८२	जीवादयो गाहा २।३।४२
२२३	जुज्झात्तश्च ४।३।१०
१८	जुवललावन्न० १।४।३२
९८	जुवाणस्याता० १।३।६७
१८	जुहिट्ठिले च १।४।३०
१९८	जेमादीनां ह्रस्वः ४।१।४६
२२३	जोयस्य तौ यलोपश्च ४।३।२५
१४६	जोयस्य वः १।४।१३८
१९९	जोसस्य वा ४।१।४७
१२६	जो हेः ३।१।२९
१२७	ज्झादलयोरिज्जे ४।४।२७
१४६	ज्झामस्य तौ वा० १।४।१३९
२१५	ज्झामाभ्यामेज्जः ३।४।२४
१९२	झघभेभ्यस्तस्य धः १।४।६
१६३	झामस्येज्जे ३।२।८
१९९	झिझस्य णे ४।१।७७
१२७	झियः सौ ४।४।१७
	(ट)
४	टकितावाद्यन्तयोः १।१।४३
१७९	ठुवरोहयोः पः ३।३।६०
१५५	ठुश्च १।३।९८
१०५	ठुस्छात् २।४।७८
२०९	ठ्ठो डः ४।२।१७
२२०	ठ्ठोत्कसयोस्तौ ४।३।१९
	(ड)
१७	डरयोर्लो लस्य रः १।४।१११
१७७	डस्येडकंखाद्दीर्घश्च० ३।३।२८
२	डः प्रत्ययादिः १।१।९
१२७	डंसस्य तौ ४।४।८७
२९	डावोरतः २।१।९४
२१४	डिच्चडित्तिमौ कः ३।४।१८
२	डिति टेः ४।४।६१
३९	डुवे डोण्णा क्वचित् २।१।६४
१३७	डेञयोर्भस्य झो० ३।१।१२६
३८	डेञ्मादद्दितोः २।१।५८

पृष्ठ.	सूत्र.
	(ण)
६८	णखपदस्य णष्फ० १।४।४४
६०	णमोयोगे २।२।३७
९	णम्यनुस्वारस्य ४।४।८६
३५	णस्य स्त्रियामेः २।१।३१
२१५	णाणिज्ञयोर्जिघः ३।१।९३
९५	णातेश्च १।४।८३
१४	णिञ्चे चयोस्तियः १।४।१०५
८८	णित्यहारयणा० २।४।२७
८७	णित्यादिस्वरस्य० १।३।२४
१४४	णुक्करादीनां त्यादौ १।३।२९
१९९	णुल्लस्येते १।३।३४
२२६	णे रंगः ४।३।५९
४०	ण्णिश्च २।१।६७
१०९	ण्हं च जात् २।४।१००
११०	ण्हिमि यः १।४।१२२
१७९	तक्कादिभ्यो णङ्० ४।४।४७
८९	तत आगतः २।४।६
१५	तत्थस्य तहः १।४।१९
६५	तत्पुरुषः २।३।१७
६५	तत्र पूर्वे पुंवत् २।३।१९
९२	तत्रभवोऽधिकृतः २।४।८
२१	तदन्यस्मिन् बहु० १।१।४५
५	तद्भावे सन्धिः १।२।३
८७	तदर्हति करोति २।४।२५
८३	तद्धिताः २।४।१
८३	तद्धितेषु स्वराद्या० २।४।३
७६	तये सस्य तहः ४।४।६८
८४	तयोर्यस्तः २।४।१४
८६	तरस्य के १।३।५९
१७२	तरस्य वा ३।२।४८
६	तरहेभ्यश्च जह्वाः १।२।१०
१०६	तवि दुहो ह्रस्वः १।३।८०
२१६	तव्वे थोः ४।२।४२
१०९	तस्मिन् काले० २।४।१०२
३०	तस्य लोपो वा २।१।४३
९	तस्य सवर्गीय० १।४।४
३०	तस्य सस्सस्य० २।१।४४
१५९	तस्य टो वा० ३।१।१७०
८९	तस्येदमपत्यं० २।४।७
९७	तस्येयणि द्विः २।४।५८
१४७	ताडस्य पंतावे ३।१।४४
५६	तादर्थ्ये षष्ठी च २।२।२६
१०९	तादादोतयश्च २।४।९९
२०७	तान्मन्तो भूते ४।२।८
२४	तारस्य तुस्तृतौ० २।१।१७
२३	तारादोः २।१।१६
२४	ताराद्वा डो लोप० १।२।३२
७०	तिपदे दस्य तलोपौ १।४।४६
१८८	तिप्पदादरिसानां० ४।४।३२
१९९	तिप्पादिप्पयोः० ४।१।५७
१०७	तियस्य वा १।४।९२
१५७	तिहिलोपमिहमा० ३।१।८६
१०५	तीयस्य ज्ञः १।४।१२१
११३	तुम्हे मध्यमः ३।१।५
६७	तृतीयापञ्चमी० २।३।२३
१९५	ते घाः ३।१।१५५
२०३	ते ढत् ३।३।४९
८७	तेन निर्वृत्तं क्रीतं० २।४।२६
३९	तेरनुस्वारो वा २।१।६२

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
१०५	तेरश्चाणि च १।४।९४
७८	तेरेः १।३।५६
४०	तेडेओः २।१।६६
२०४	तेवस्योस् ४।३।६७
२२०	तेः कसादिभ्यः ४।१।१८
१०७	तोत्थयोरेस् २।१।४६
२२२	तौ गमत्थुणरम० ४।३।६५
१८४	त्तपत्तुममः क्रिया० ३।३।६४
९७	त्तत्तणौ तस्य भावः २।४।५४
१२८	त्तसस्यैत्याः ३।१।६९
१५६	त्तास्त्वोरादितलोपः ३।३।१७
१७९	त्तुत्तूणयोश्छुभस्य० ३।३।३५
५५	त्तुमर्थे णाद्यन्तेभ्यः २।२।२४
७६	त्तुमुमोःकाममणयोः ४।४।६९
१७७	त्तुंत्तूणतव्येषु घेत् ३।३।३१
२२३	त्थरथवयोर्वा याऽति ४।३।५३
२००	त्थरमरहरेभ्यश्च ४।१।११
१०५	त्थश्च ताः २।४।७९
१०७	त्थः सप्तम्या इमा० २।४।९४
१७२	त्थुणधुणसुणानां वः ३।२।६८
२१०	त्थुणस्य थवोऽणकेषु ४।२।४०
११२	त्यादयःकर्तृकम्मणोः० ३।१।२
७	त्रयाणामव्यवधाने० १।२।२१
८६	थेरधोरपियाना० १।४।७४
९९	थेर-धोर-सहाया० १।४।८६
	(द)
६७	दकस्य दः १।४।४२
१३०	दक्खुः संसोर्दि० ३।१।१०३
८१	दण्डादीनामतिश० २।३।४५
६६	दयादीनां पच्चादौ २।३।२२
१९५	दराभ्यां नः ४।१।१९
१२९	दलपारपूजानां मौ ४।४।१९
१२९	दलस्य हिमवोः ४।४।२८
१२९	दलस्य हे १।३।८४
८२	दवद्वात्स्सः २।३।४८
८०	दसस्य रलौ १।४।७०
२१०	दृश्च ३।१।६०
११०	दाणिमि सर्वस्य० २।४।९३
५९	दिगर्थैः पंचमी च २।२।३५
७५	दिग्वाचका मध्ये २।३।४०
७४	दियानिस्योरम्० १।३।४६
७७	दिवड्ढाऽड्ढाइ० १।४।५६
१९	दिवसे वसयोर्यहौ १।४।२५
२२४	दिसपाभुंजलभ० ४।३।३१
२१४	दिसबुज्झवहेभ्य० ३।४।२७
२१०	दिसस्य दक्खुः ४।२।३७
१०१	दिसस्य रलावति १।४।९०
४९	दिसाड्डिश्च २।२।७
१८०	दिसात्त्वतार० ३।३।३७
१८४	दिसात् त्तुम् ३।३।४६
१०१	दिसे पूर्वस्याति १।३।७१
८२	दिसिपरयोरोत् २।३।४९
१२	दुकुलस्य द्विर्हस्वश्च १।३।११
१०४	दुतिभ्यां डीयतिय० २।४।७७
७८	दुवादसे १।४।६२
१८९	दुसस्य माणे ३।१।७०
२००	दुहनिहयोर्धः ४।१।८०
९९	दूयादीनां त्रः १।४।१२०
५८	दूरान्तिकाद्यर्थैः० २।२।३४
१३०	देवादिभ्यस्तेः ३।१।१००

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
२००	दो दिहतौ ४।१।५९
३९	दोरदितोर्डोः २।१।६३
१५८	दो रुहस्योतो दीर्घः १।३।१००
१०४	दोर्बिडीयतिय० १।४।९३
७८	दोर्बेबी १।४।६०
१३७	दो वः १।३।२८
२०४	दोसीणस्तान्तस्य० ४।३।३९
१४६	दो हेर्हस्य त्थः ३।१।१६९
८	दो हो धः १।४।१
१७२	द्रवस्य दुयः ३।२।५७
२००	द्रहस्य ढौ ४।१।५२
७१	द्वयोर्गतारः १।४।५१
६६	द्वितीया पत्तादिभिः२।३।२१
१६७	द्विरुक्तस्यादेर्वृद्धिः ३।१।१७८
११२	द्वौ द्वौ प्रथममध्य० १।१।१६
	(ध)
१६	धणोर्हक्क्खकौ ४।४।२
२२४	धमस्य णावयो० ४।३।२९
१८४	धरस्य तुत्तुमोः ४।४।१११
२२४	धरस्य धिः ४।३।२१
१७२	धरिसस्य धासः ३।२।५८
१०७	धा च २।४।८९
१२१	धातूनां कण्णादौ० १।४।११
११२	धातोः ३।१।१
१४८	धादीनां धमयोर्हः १।४।१४
१८९	धावस्येतमाण० ३।४।१२
१४८	धुक्खस्य कः १।४।१४०
१८०	धुणस्य धूयः संयस्य ३।३।३८
१६९	धुत्तादारः ३।१।१८५
१५६	धांवस्य यः १।४।१४३
	(न)
१०	नगिणस्यादेः स्वरस्य १।३।४
१३१	नमादेर्मिवि ३।१।११
२१०	नस्साद्रः ४।२।६
१६४	नस्से दीर्घात् १।२।२९
२१	नाम्नः सुपः २।१।१
४१	नाम्नो नपुंसके० २।१।७४
२२०	निपाभ्यां डस्तेरादेः ४।३।१७
१९७	निराश्चिणात् ४।१।२२
८	निरः क्रमस्य १।२।२५
२०१	निरः पुच्छस्यादुतः ४।१।१४
६५	निराऽभ्यवानू० १।३।३८
२०४	निरो वा ४।१।३७
१९९	निर्विभ्यां तरस्थ० ४।१।५५
२२७	निव्वरवरसयो० ३।१।१७४
७५	निषेधार्थकेभ्यो० २।३।३९
६५	निष्कान्तादौ पञ्च० २।३।१६
२१२	निसदसयाभ्यां जाड् ४।२।१८
८५	नीसीहिरुच्चारणे कः २।४।१८
२०१	नेराः ४।१।६३
२२२	नेर्घातस्यादेः ४।२।३३
१५५	नेर्जमस्य तिन्ति० १।३।९३
१५५	नेर्जराद्वा ३।१।१६८
१८४	नेर्जुजस्य योयः ३।३।६६
२११	नेर्न्हवस्य ण्हः के ४।२।४६
२१६	नेर्यः ३।४।२६
१६४	नेर्वा ३।२।३५
२१७	नेर्हणस्य हः ३।४।३२
२०९	नेष्ठुहस्य वा णे ४।२।५०
१८२	नेस्तलिसामाणेषु ४।४।३५

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
१३	नेः कसस्यादेर्घः १।४।१०२
१६	नो णः सर्वत्र १।४।२२
११६	न्तान्तियास्वादेः ४।४।७९
२३	न्तमन्तयोरीदुतो० २।१।६
२३	न्तमन्ताभ्यामुः २।१।१३
१८६	न्तमाणयोराता० ४।४।४९
१८७	न्तस्य खावादियट् ४।४।५१
११६	न्तावेरद्धा ३।१।५९
१४८	न्तावोरूवः ३।१।४३
१३१	न्तीज्जयोःपविप्पा० १।२।३०
१४१	न्तीज्जयोर्वज्जः ३।१।१३६
१९०	न्तेज्जयोर्ली ३।४।७
१९१	न्ते द्वित्वे ३।१।१३१
१९०	न्ते परेः ३।२।६१
१८१	न्तेययोश्चानोः ३।१।८०
१३६	न्तेः समारंभात् ३।१।१२४
१७३	न्तेर्लभादेः ३।२।७०
१६०	न्ते वा ३।२।२१
१९०	न्ते वा ३।१।११९
१९१	न्ते वा १।४।१३०
११८	न्तौ गिलादीनां० ४।४।१२
१२५	न्तौ जंपस्य ३।१।८५
१३०	न्तौ पात् ३।१।७१
११९	न्तौ वेः ३।१।६१
१२०	न्तौ वेः ३।१।६६
१६४	न्हो ण आवस्य ३।२।३३

(प)

पृष्ठ.	सूत्र.
१७	पउमस्य पोम्मः १।४।२७
१२८	पकम्पपणुल्लाभि० ४।४।१८
९६	पक्कादीनां सञ्ज्ञा० १।४।८५
१५४	पचलजंभाभ्या० ३।१।१६४
१८७	पच्चक्खो माणे० ३।४।१०
१४	पज्जाये ज्ञायस्य० १।४।१७
२०१	पज्जव्विज्जयोर्ज० ४।१।७८
१६४	पज्जस्य पयः ३।२।१०
१३२	पज्जादीनां पोवः १।४।१३
१०३	पञ्चमीसत्तमीभ्यां० २।४।८४
२१०	पञ्चम्यां त्तो रः४।२।१५
४०	पञ्चादिभ्यो लोपः २।१।७०
११८	पडिपातिपरिभ्यो यः ३।१।५५
९१	पडिहार्या आत एः १।३।६४
१७५	पडेरेकादेशस्योत् ३।३।७
६३	पडेरेकेन समासे० १।३।१९
१८६	पडेर्माणे ३।१।१५१
८५	पढमादिल्लुः २।४।१७
७९	पणस्य ड्डिः १।४।११६
७९	पणाल्लोपः १।४।६४
२१३	पतेरेरः ३।४।१५
१७५	पतेर्दीर्घस्त इट् ३।३।८
११८	पतेर्ड्डिरौ ३।१।५६
७	पत्तादिषु नित्यम् १।२।१३
६६	पत्तामोडादिषु० २।३।२०
६१	पदसामर्थ्ये समास० २।३।१
२१०	पद्मवपज्जभुंज० ४।४।१२०
१८७	पपलिभ्यां माणेतयोः३।१।६७
९६	पम्हादिभ्यो लः २।४।५१
९१	पयडेर्यः १।४।११९
२२५	पयभजरुजानां गः ४।३।५६
२०१	पयलुंचसुस्से० ४।१।६५
९१	पयावत्यादीनांटे० २।४।११

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
९२	परात्कीयः २।४।३५
१७९	परिच्चयस्य जः ३।३।५९
१५	परिवाटथो डः १।४।१०८
१९	परिवारे वरयोर्येलौ १।४।३४
१६	परिहे परयोः फलौ १।४।२३
१८७	परेराति माणे ३।३।३०
१९२	परेरेस्तः ३।१।८२
१५६	परेर्ध्रस्तेः ३।१।२४
१५७	परेर्भसस्य तौ ३।१।८१
१४०	परेर्वा ४।४।९२
१९१	परेर्हो न्तमाण० ३।२।५३
१८४	परेश्चयात् त्तपः ३।३।१९
१९५	परेः कोसमादेस्ते ४।१।४३
१८४	पलायादुम्मि से० ३।३।६५
१९२	पलेर्होत्थः ४।१।३
२०२	पवस्स पुः ४।१।१३
१६८	पवित्तस्य न्ते ४।४।२०
१३२	पवेस्तौ ३।१।११३
१३९	पवोच्छाद्धिस्त्यादौ ३।१।१२९
१४७	पस्योणदेज्ञा० १।३।९४
९३	पहादिभ्यस्तत्र० २।४।४०
१६८	पंसुलादिभ्योष्ठि० ४।४।११०
९३	पांतो णो दट्चेतः २।४।३९
१७४	पाउकरादेः ३।३।३
२१९	पाउणस्य गो णे ४।३।९२
१९२	पाउणादीनां ते० ४।१।७५
२२०	पाओरोः करेऽणयोः ४।३।२७
१६१	पात्कडात्सर्वस्य ४।४।१०७
१५१	पात्खस्य छः ३।१।१५०
१६२	पात्खिवस्य च्छः ३।२।६
१९९	पाञ्जलस्यादेरुदिते ४।१।८४
१५०	पादावस्याउणो वा ३।१।१४६
१४७	पादिज्ञे १।४।१००
१५१	पादोरस्य छिस्ति० ३।१।६४
११८	पादेश्चिण मोहमा० ३।१।७४
२१६	पाद्द्वंसस्य ड० ४।२।३४
१४३	पाद्धो हुप्पः ४।४।४१
२११	पाद्धवादिसुः ४।२।७
१५७	पाद् भासात्सेः ३।१।५१
१४७	पाद्यच्छः १।३।९२
१६४	पान्न ३।२।३६
१३२	पान्नाय वेः १।३।८६
१६५	पान्मुंचात्ससस्य खड् ३।२।१८
१९२	पाभ्यामुणात्तस्य डः ४।१।६
२१२	पाभ्यां के रलोपः ४।२।४८
७०	पायवस्योवगमणे० १।४।४८
७३	पायस्य मूले यस्य १।४।५५
१९०	पालियस्यादेः ३।४।४
२१३	पावगोवच्छिव० ३।४।१४
१८५	पावसाभ्यां वा ३।१।२५
२११	पासस्येति ३।१।७९
९३	पासादिलस्तत्रशेते २।४।४१
६८	पितुप्रभृतीनामिः १।३।४०
२८	पितुप्रभृतीनामो० १।२।१५
१७	पिपीलिकाया० १।४।२५
२०१	पुच्छतच्छतक्खव० ४।१।१७
१३३	पुच्छादेर्वा ३।१।३९
१७	पुडपुरयोरुत्तर० १।४।२६
१६४	पुदवाभ्यां न ३।१।११०
१९४	पुरस्ते वा ३।१।१३९

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
११	पुरुसे द्वितीयस्यांत इः १।३।९
७१	पुव्वस्य पौ १।३।४२
६९	पुव्वादयोऽहेन० २।३।२८
१०४	पूरणे मः २।४।७६
१७५	पेसादेरियस्यादितः ३।३।१०
१७५	पेहादिभ्यो यस्यैत् ३।३।११
१६४	पो ङजिः ३।२।१४
८४	पोत्तादुल्लः २।४।१०
१८५	पोऽनिटस्तापः ३।३।६२
१५०	पोवाभ्यामि० ३।१।१४७
५५	प्रकारमुपेता० २।२।२२
१०६	प्रकारे हा तृतीयायाः २।४।८७
६३	प्रभृतिना पञ्च २।३।१३
५७	प्रभृत्यर्थयोगे २।२।३०
१६१	प्रेरणायामावः ३।२।१
११३	प्रवर्त्तनायामेदिज्जौ ३।१।८
१३३	प्रवर्त्तनायां वा ३।१।१०२
	(फ)
२०२	फासस्य पुसस्ते ४।१।१२
२२५	फासस्य ह्रस्वश्च ४।४।५६
१३४	फुट्टस्य टयोर्डे० ३।१।११५
२१५	फुसस्य फुडः सतस्य ४।१।६७
	(ब)
८४	बद्धमुक्कयोरिल्ले २।४।१२
३४	बहुवचनेषु तुब्भ० २।१।८७
४	बहुलम् १।२।१
९४	बहेर्मगरकावणि ४।४।९
२८	बहोरवेरतः २।१।३०
१३४	बंधरुंभहिंडे० ४।४।३७
१७२	बंधस्य झः ३।३।६९
१३४	बंधादीः ३।१।४०
७८	बा संख्यार्थके १।४।६१
७२	बिहवणाभ्यां पतेः० १।४।५३
१५	बीभत्थस्य छश्च १।४।११०
१३४	बीहस्य भाय० ३।१।११६
१६५	बीहस्येज्जे मेसः० ३।२।१६
१५	बुधादीनां धस्य हः १।४।२१
१८९	बुसद्दहाभ्यां० ४।४।११५
१८१	बोरावस्य याट् ४।४।४३
१४९	बोरीः ३।१।४५
१४८	बोर्मो ४।४।२९
१४८	बोम्तिन्तोराहः ३।१।१४१
	(भ)
२२५	भणान्तेः ३।१।२२
१६५	भमाडुः ३।२।३७
२२५	भयोऽतव्वमाणेषु ३।१।११७
२०२	भरस्य हुः ४।१।७०
२०२	भवपसवहवाना० ४।१।३९
१३५	भवस्य भुवीभुविमौ ३।१।४१
१३५	भवस्यैसावट् ४।४।४६
२०६	भविष्यति सासि० ४।२।२
११४	भविष्यति हिस्सौ० ३।१।१६
२०२	भंजमञ्जरुजाविजे ४।१।७३
१५७	भंसस्य केवलस्य तौ ३।१।८७
१६९	भावकर्म्मणोरिज्जः ३।२।४०
२१८	भावेऽणद्दाणणातयः ४।३।१
१००	भिओइच्चः शिष्ये २।४।६६
५०	भिक्खुप्रभृतिभ्यश्च २।२।५
२०२	भीस्ते ३।१।११८
१६५	भुंजस्य मोयो वा ३।२।१७

पृष्ठ.	सूत्र.
१८१	भुंजस्य भोस्ति ३।३।४७
२२५	भुंजस्यानुस्वार० ४।३।५७
१८५	भुंजात्केवलात् ३।३।२०
१३५	भुंजात्खड् ३।१।१७
१८१	भुंजात्तारश्च ३।३।४४
११५	भूते इंसुः ३।१।३३
१२१	भूते काकरदक्खु० ४।४।३४
१९१	भूते तेतौ ४।१।१
६५	भेदकं भेद्येन कर्म० २।२।१८
१५	भेसजस्य हः १।४।१०७

(म)

पृष्ठ.	सूत्र.
९४	मज्झान्मश्च २।४।४३
८५	मडस्येल्ले १।४।११७
२६	मणस्य वा ४।४।६
६८	मणादावस्येमः १।४।११५
१०१	मणादिभ्य इतो० ४।४।१०
१५	मत्तिये तयोष्टौ १।४।१८
२०२	मन्नस्य नयोः ४।१।७६
१३६	मन्नान्मेरस्वा ३।१।१२३
९१	ममस्योदियंयोः १।३।६५
१६८	ममाञ्च ४।४।११२
३३	मम्हि वा ससेः २।१।८५
५७	मर्यादायामाति २।२।२८
३१	मस्य णोऽमि २।१।५२
१०८	मस्य तो ण्हि दा० २।१।५०
१८६	मस्यात्थमस्य न्ते० ३।४।३
१९	महरद्वे हरयो० १।४।३९
४९	महारीः २।२।८
८४	महादालयल्लल्लियाः २।४।९
१८९	माणे वा १।४।१२४
१९०	माणे वायः प्रेरणा० ३।३।५१
११५	मादौ हेरात् ३।१।३२
८२	मासस्य नैरन्तर्ये २।३।४७
८८	मिगसिरस्यादेरति० १।३।६१
३४	मिमौ च हो लोपः २।१।८८
१३६	मिलस्य ये १।३।८५
१४	मिलेच्छे च्छस्य० १।४।१५
१६८	मिसिमिसेर्माणे० ४।४।२१
१८१	मुज्झस्य मोहो० ३।३।४१
२०३	मुंचरिचाच्छिव० ४।१।६६
१५८	मुंचसुणाभ्यांच्छिरू० ३।१।१९
१५८	मुंचस्य तिन्ति० १।३।३१
१५८	मुंचस्य येऽनुस्वा० ४।४।१०५
२२६	मुंचात्खग् अलोपश्च ४।३।८
१८१	मुंचात् चूणो ०३।३।४३०
२१६	मे तरस्य १।३।३५
३६	मेरादादूद्धयः २।१।३५
२२	मेरादेः सलोपौ ४।४।११४
२१७	मे लुणस्य लाः ३।४।३०
२४	मोऽणड् वा २।१।९
९	मोऽनुस्वारो० १।४।२०
११८	मोरुत्तमबहुत्वे० ३।१।३६
३१	मोर्णड् वा २।१।५१
१००	मोलादिभ्य० २।४।६८
३३	मौ ममं २।१।८२
११७	मौ वा ४।४।८१
२२	मौ व्यञ्जनादौ० ४।४।५

(य)

पृष्ठ.	सूत्र.
१७	यजोर्जः १।४।२८
२०	यस्य वरे १।४।४१

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
१७९	यागे जयस्य जिठः ३।३।१४
२७	युष्भ्यां च २।१।४
२१३	योग्यशक्ययोर्मि० ३।४।१३
१९८	योजने जायस्य० ४।१।८३

(र)

पृष्ठ.	सूत्र.
२२६	रज्जस्य जयोः ४।३।५८
१६५	रञ्जस्येते च० ३।२।२०
९६	रयात्स्सलः २।४।५०
१३७	रंभरक्खहणहरे० ३।१।१२५
७०	रात्तोरुत्तरपद० १।४।८०
२५	रायस्याणमिहस्रो० २।१।१८
९२	रायाण् णो० २।४।३६
२४	रायादिभ्य आत् २।१।८
२४	राये सेणस्य २।१।११
१७	रिओरुडः १।४।२९
१३७	रियस्येता दीर्घः ३।१।१२०
१३७	रुद्दस्यान्त० १।३।२७
२०१	रुहव्विहयोरा० ४।१।६२
१६५	रुहस्य वः ३।२।३८
२२६	रुंभस्य राहः ४।३।४७
१३७	रुंभस्येज्झे ३।१।७३
४०	रोश्च ओः २।१।६६

(ल)

पृष्ठ.	सूत्र.
१७३	लक्खाद्यस्येट् ३।२।६२
१३८	लभादिण् ३।१।४२
१३८	लभाद्धस्य तड् ३।१।१८
१६७	लवस्य पो बहुलम् ३।१।१७९
२२६	लाउः सातः ४।२।४५
२११	लाभेच्छावति लिच्छुः ४।२।३९
२१२	लिंपस्य लेवाऽड० ४।२।४३
२११	लिंपादडः केवलात् ४।२।३
१८	लुक्खादीनां हः १।४।११३
१३८	लुणस्येज्झे यः १।४।१२७
१३९	लुभस्य तित्तयोः ३।१।७४
२०३	लुंपस्य लोवः प्रेर० ४।१।६८
२३	लोपेऽनुस्वार उतः २।१।७
८४	लोभादिभ्यस्तता २।४।१३
१४३	लोलस्य स्से १।३।९७
१४९	लोलस्येज्झे ढः १।४।१४१
२२७	ल्लियस्य णतयो ४।३।५१

(व)

पृष्ठ.	सूत्र.
११	वईत ऊदोतौ १।३।१५
१३८	वच्चाच्छट्खडौ० ३।१।१२७
१८५	वच्चात् तुतार० ३।३।६९
१९०	वच्चाद्भविष्यति ३।४।६
१६	वज्जादीनां वस्योम् १।४।१२
१६६	वड्ढस्य घो णमा० ३।२।३९
२०३	वड्ढस्येततिषु ४।१।३३
२	वर्णोपरि बिंदुरनु० १।१।५
२२७	वत्तस्य डौ ४।३।२२
१६०	वदादासीः ३।१।४७
१८२	वरसस्य वासस्तोताः ३।३।५२
२०४	वरसे रस्य ४।१।२५
१८५	वरसे सस्य णोमो० ३।३।४०
२०३	वरस्याव्यापारे ४।१।३६
२०३	वरहराभ्यां च ४।१।७
१८६	वर्तमाने न्तमाणा० ३।४।१
१८६	वसाच्च ३।३।२१
२१२	वसात्ताव्वः ४।२।१०
२१७	वसात्ताव्वस्य ३।१।२७

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
२१३	वस्य तव्ये लोपः ३।२।२८
२१०	वस्य यो वा १।४।१०१
१७३	वस्ये सतये वेत्तस्य ३।२।६३
९५	वस्सस्य वु सर्मन्ते १।४।८४
१६९	वहस्येहोज्झा ढ्वश्च १।४।१२८
२०४	वहस्योहस्ते ४।१।६९
१३९	वः स्सस्य ३।१।२३
२१८	वा णे ३।२।२४
८९	वातात्तो ० २।४।२१
९०	वातादोलः २।४।२४
१२५	वा न्तौ ३।१।९७
१६१	विउसस्य द्धः सस्य ३।१।१८८
१००	विकारप्रधानयो ० २।४।६५
१८८	विगवदलयोर्माणे ४।४।३१
११	विच्छिये चोऽनुस्वारः १।३।१६
२२७	विजस्याण्णयोः ४।३।६१
२१६	विदस्य जः ३।४।३८
५४	विनादियोगे २।२।२१
१३१	विप्पाभ्यां नमस्य ० १।४।१२५
६१	विभक्त्यर्थादिष्व ० २।३।६
५६	विभागेऽवधिरपा ० १।१।३२
२१२	वियस्य विः ४।२।३८
२०८	वियाभ्यां हिः के ३।१।१५६
९९	वियावड्डादियण् च २।४।६४
९१	विरोयणादीनामइः ० २।४।२८
३	विशेषणं तदन्तस्य १।१।४१
११९	विसमत्युद्धथश्च ३।१।५८
१३९	विधस्य तिन्त्योः १।४।१३१
४१	वीसादीनामानउर्ज्ञा २।१।७३
५	वृद्धिरसः स्वरे परस्य १।२।६
१२	वेण्टालिसिन्दयोरत् १।३।१०
२२६	वेर्तते वीमंसः ४।३।४१
११९	वेरदौ स्से ३।१।६२
१९४	वेरात ओः कडे ४।१।४०
१२३	वोरतोऽतेरती: १।२।८
२०५	वेरुद्धा वा णो ४।१।८६
२०६	वेर्णे ३।१।१३९
१८०	वेर्नेरदिट् त्तोः ३।३।३९
२२७	वेविचस्य कार्ज्ञाण ४।३।५५
१४२	वेहणस्य तीज्जयोः ३।१।७५
१९७	वेश्विगिच्छस्य ० ४।१।५०
१७८	वेश्वितस्येराहितस्ये० ३।३।३३
१८८	वेह्वडुस्येयक् ४।४।५२
१९५	वेः कसस्य नियम् ४।१।३०
१२२	वेः कीरस्य किखरः ३।१।९१
१५२	वेः क्कण इणस्य ० ४।४।९३
१९२	वेः परेरोक्षः ४।२।४
१६६	व्यञ्जनादेर्द्धिः ० ३।१।१७६
३	व्यञ्जनेषु प्रथम ० १।१।३८
१९३	व्यापुराभ्यां करात् ४।१।९
२२६	व्युतिभ्यां रिचस्य ४।३।६०
५२	व्यापारवत्करणम् १।१।३०
१४०	व्यवाभ्यां सस्यैति ३।१।१२२
१८३	व्युद्ध्यामिये ३।१।१३३
१३९	व्ययस्य चस्यादौ १।४।१३२
१६६	वयस्य वः ३।२।३२

(श)

पृष्ठ.	सूत्र.
११३	शेषे प्रथमः ३।१।६
५८	शेषे षष्ठी २।२।३१

(ष)

पृष्ट.	सूत्र.	पृष्ट.	सूत्र.
६९	षष्ठी च शेषे २।३।२६	५८	समुदायादेकस्य २।२।२२
३	षष्ठ्या अन्त्यस्य १।१।४०	१९३	समुद्गादि ती च ४।४।१०२
	(स)	११७	स र सरमस्य ३।१।९२
२२७	सज्ञस्य जगोर्गौ ४।३।४३	२२२	स ग व्रस्य फः ४।३।१४
८०	सद्दैर्वः १।४।६३	१५०	स ऽज्ञस्यात से० ३।१।१४५
२१७	सणिज्ञहस्य हेज्ञः ३।४।३२	२००	सम द्दि व्हय : ४। ।८१
२०	सणियमश्चस्य० १।४।४०	१५६	सम घ तेः ४। ।४४
७९	सत्तरेहेश्च १।४।६५	१६३	समो नद्धस्य ० ३।२।९
८०	सत्तस्य वसादौ १।४।६८	१८७	सम मागे ३।१।७८
१४०	सह्स्याव्या रेदयो० १।४।९८	१३६	समो मुच्छे न्तिमयोः ४।४।९०
६२	स नपुंसकमेकं च २।३।५	३२	समो मंममममममः २।१।७७
६०	सप्तम्या धकरणे २।२।३८	२०५	समा हरस्य ह ग्रः ४।१।८५
६९	सप्तम्या अलोपः २।३।२९	१२५	समा हेरुस् ३।१।९८
९९	सफले फस्य हः १।४।८७	५५	सम्प्रदाने चतुर्थी २।२।२३
५१	समयमार्गय र भि० २।२।१६	२१२	सय यैः ४।२।२०
८	समश्च १।२।२२	२०४	सरादुपसर्गाड्ढौ ४।१।८
१५४	समश्चिट्ठस्य खः १।४।१४२	७६	स रिसस्य तया० ४।४।६७
२०२	समच्छो मज्ञात् ४।१।७४	२१७	सलङ्स्य सघो डे ३।४।२१
१२८	समस्तुसस्येति ३।१।६८	५	सवर्णे दीर्घः १।२।७
१९४	समः कपे कोऽनु० ४।१।४१	२९	सव्वणामाद्न्येः २।१।३८
२२१	समः कुंचस्य गो ४।४।११८	८५	सव्वणामादावति० २।४।१५
२९५	समः कुच्च णि० ४।४।११५	१ ९	सव्वस्य सं डे १।४।९५
२२५	समःखुभस्याति हः ४।३।६४	२९	सव्वादयः सव्वणा० २।१।३७
३	समानय विरोधे० १।१।३९	३४	सस्सस्स तेतवतुज्झं० २।१।९१
५	समानयः पूर्वस्य० १।२।५	२५	सस्सस्य ज्झो २।१।१२
१०२	समानाच्छः १।३।७६	३३	सस्सस्य ममज्झं० २।१।८१
१८३	समाभ्यां सोय ० ३। ।५४	१३०	स सं द्दि च्छिः ३।१।१०४
१३६	समारंभ ये सासु ४।४।८८	६८	सह समानयःस १।४।४३
६१	समासे प्रथमा निर्दिष्टं० २।३।२	६८	सहम्तृतीयया २।३।२४
४७	समासेऽन ताः १।१।२४	५३	सहार्थयोगे गुणीभूते २।२।१८

Aho ! Shrutgyanam

पृष्ठ.	सूत्र.
२२१	संकुंचादिभ्यो णाणौ० ४।३।३२
१०५	संज्ञाजा[illegible]स्तः २।४।८०
१०३	संख्यायां [illegible]तिः ० २।[illegible]।७१
४१	संख्यायां सेः २।१।७१
४०	संख्यावाचका ० २।१।९२
२११	संमज्जात्तलोपे ४।२।२६
१९[illegible]	संयुक्तेऽनुस्वारस्य ४।४।६४
६	संयुक्ते ह्रस्वः १।२।१२
३३	साणमोणोऽस्साकमो २।१।८८
३४	सातो[illegible] माहितो २।१।९०
३२	सात[illegible] ममाअ[illegible] ० २।१।८०
३२	सात[illegible] वयम् २।१।७६
१[illegible]६	सास्थः १।४।७
६८	सात्पवरहस्य १।३।४१
४०	सा[illegible]दितश्चत्ता र ० २।१।६८
२०६	सादो च ३।२।२७
१४१	सासस्य मो ४।४।४०
२२८	सास[illegible]तः ४।३।२०
८९	साऽस्मिन्[illegible] ० २।४।२०
१६[illegible]	साहंदाभ्यां [illegible]हिस् ३।१।१५
१४१	सिच्चस्य स्सं स[illegible]वः [illegible]।१।१[illegible]४
[illegible]०	सिस्समासयो[illegible]र्णीति २।२।१०
१२७	सि[illegible]मो[illegible]स्य ४।४।८०
२२७	सिचस्य क[illegible] [illegible] ३।[illegible]।१९
२२८	सिन्नस्य सेकः [illegible]
८०	सीर्या[illegible] १।४।६९
१००	सुकुमार[illegible] सुगअलः १।४।८८
२५	सुट्वेणस्य २।१।२३
२२८	सुण[illegible] स[illegible]वो णो ४।३।४१
१८३	सुणस्य सं[illegible]चः ३।३।५५
१६०	सुण[illegible] [illegible]ह्नः ३।१।६२
२०५	सुले वा १।३।९५
२१६	[illegible]भ्यां च ३।४।२३
२१	सुपश्च १।१।१८
६२	सुपः समासतद्धि० ४।४।६५
११०	सुप् त[illegible] [illegible]० २।४।१०६
६१	सुप् सुपा वा २।३।३
१६२	[illegible]स्तस्य [illegible] २।४।१३३
१०	सुर[illegible]महुरभ्ये[illegible]रस्य ४।४।६३
२१३	सुवर्[illegible]ण सः ४।२।४९
३४	सेण[illegible] तुमे २।१।८९
३२	सेणस्य मममयो २।१।७९
३२	सेतो णोः २।१।७८
[illegible]	सेदणमे भव तस्य से २।१।१५
३४	स[illegible]तस्तुम्हस्य ० २।१।८६
[illegible]८	स[illegible]स्य वा ४।३।६२
३[illegible]	[illegible]क्रया [illegible]यम् २।१।४८
४	स्वरस्य र [illegible]व्यवधाने ० १।२।२
२	स्वरा[illegible]ण[illegible]न्त्याष्टिः १।१।६
६	स्वराद्दातो[illegible] [illegible]।४।१
६	स्वराद्यस्य ४।४।६२
२	स्वरानन्तरा ण ० १।१।१०
९	स्वरे वा १।४।३
८[illegible]	स्वार्थे प्रथमायाः २।४।४
३८	स्सस्य ङीप् २।१।५९
२५	स्सस्य णोः २।१।२१
२८	स्सस्य वा १।२।१९
३६	स्सस्साप्ः २।१।३४
३१	स्सिस्सयो[illegible]रो वा २।१।५४

पृष्ठ.	सूत्र.
१८३	हपः ३।३।९
१७३	हणस्य मः ३।२।७१
१८३	हणस्य हस्य हुरिये १।३।१३
२२८	हणाच्चाड् ४।२।११
१९६	हतय.रव्यव.हतय.०४।१।५१
२०५	हारसस्यारः ०।१।२८
१८३	हस्ति च ४।४।२२
१३२	हि·तयोर्नैरत् ३।१।११२
११३	हिमिभोष्वता दीर्घः ३।१।७
१४९	हियोर्दीर्घः ३।१।१४४
११४	हिस्सादीना.मिड् ३।१।२०
२२८	हिंसाद् या च ४।३।१२
२१७	हुणस्य हवः ३।४।३४
२२९	हुणस्य हवा वा ४।३।५०
४७	हेतुसम्बन्ध० १।१।२३
५७	हेतौ २।२।२९
५३	हेत्वर्थय.ग सर्वाः २।२।४०
१४७	हेमः १।३।९०
१४३	होडिसः ३।१।४३
२१७	हस्तव्यस्वः ३।४।३५
१४३	होः ससस्य क्खः ३।१।१३७
१४१	ह्स्वोगोः सीयस्य० ३।१।१३५

इति श्रीजैनसिद्धान्तकौमुदीसूत्राणामकाराद्यनुक्रमः ।

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्—

श्री अगरचन्द भैरोंदान—

सेठियाजैनशास्त्रभण्डार

मोहल्ला मरोंटियों का

बीकानेर—(राजपूताना)

Aho ! Shrutgyanam

श्रीमान् अगरचंद भैरोंदान सेठिया की
जैनपारमार्थिक संस्थाएँ
बीकानेर

निम्न लिखित संस्थाएँ मूल धन (Capital ध्रौव्य फण्ड) रु० ३३५०००) तीन लाख पैंतीस हजार का जो २१०००) इक्कीस हज़ार रुपये वार्षिक व्याज तथा मकान भाड़ा आता है उससे चल रही हैं । मूल धन के सिवा संस्थाओं के लिये ७००००) सत्तर हजार रुपये की कीमत के दो विशाल भवन (बिल्डिंग) भी दिये गये हैं । इस समय कार्यक्षेत्र विस्तृत करदेने से खर्च भी बढ़ गया है, श्रीमान् सेठ साहब ने उसकी पूर्ति करने की उत्साह पूर्वक उदारता दिखाई है । मूल धन (ध्रौव्य फण्ड) और बिल्डिंग के ट्रस्टी आपके सुविनीत उत्साही ज्येष्ठपुत्र श्रीयुत् जेठमलजी कर दिये गये हैं ।

निम्न लिखित संस्थाओं में पण्डित अध्यापक (मास्टर) अध्यापिका लेखक तथा अन्य कर्मचारी सब मिल कर वर्तमान में ३७ जैन और २३ अजैन कुल ६० व्यक्ति कार्य कर रहे हैं ।

विद्यालय (स्थापित विक्रम सं० १९७०)

इस विद्यालय में छात्रों को हिंदी, अंग्रेजी महाजनी (वाणिका धर्मशास्त्र संस्कृत-व्याकरण न्याय साहित्य अलङ्कार छन्दशास्त्र प्राकृत आदि का अध्ययन

Aho ! Shrutgyanam

कराया जाताहै, तथा कलकत्ता गवर्नमेन्ट संस्कृत कालेज आदि की परीक्षा भी दिलाई जाती है। प्रिंटिंगप्रेस (छापखाना) का तथा व्यापार लाइन का काम और शास्त्रीय लिपि में सूत्र सिद्धांत लिखने का काम भी सीखने की इच्छा रखने वाले को सिखाया जाता है।

इस विद्यालय में मेट्रिक या इससे अधिक अंग्रेजीकी योग्यतावाले जैन विद्यार्थी यदि धार्मिक संस्कृत प्राकृत का अध्ययन करना चाहें तो उनके लिये, और अनाथ निराधार जैन बालकों के लिये रहने को स्थान, भोजन वस्त्र आदि का इन्तजाम किया जाता है। इस विद्यालय के आश्रित एक व्यायाम (कसरत) शाला है, जिसमें विद्यार्थियों को व्यायाम कराया जाता है।

इस विद्यालय के आश्रित एक जैन तत्वप्रचारिणी सभा है जिसमें छात्रों को जैनतत्व सम्बन्धी व्याख्यान देना सिखाया जाता है।

श्राविका–पाठशाला

इस पाठशाला में श्राविकाओं को हिन्दी धार्मिक नैतिक व्यावहारिक शिक्षा तथा सीना पिरोना कसीदा करना गोटा किनारी बनाना आदि सिखाया जाता है।

जैन शास्त्रभण्डार–ग्रन्थालय (स्थापित विक्रम सं० १९७८)

इसमें हस्तलिखित-जैनशास्त्र, संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी पुस्तकों का संग्रह बड़ी खोज

Aho ! Shrutgyanam

से किया जाता है। कई मासिक साप्ताहिक तथा दैनिक समाचार पत्र मंगाये जाते हैं, जो वाचकों को विना फीस वांचने को मिलते हैं।

इस ग्रन्थालय में विद्वान जैनसूत्र सिद्धान्तों का संशोधन तथा हिन्दी अनुवाद करते हैं। लेखकों से सूत्र सिद्धान्तों की प्रतियां लिखाई जाती हैं, तथा प्राचीन प्रतियों से मिलान कराया जाता है।

इस ग्रन्थालय से जैनधर्म सम्बन्धी ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं, जिनका मूल्य लागत से भी कम रक्खा जाता है, तथा कुछ पुस्तकें अमूल्य भी वितरण की जाती हैं।

इस शास्त्रभण्डार से एक सेठिया जैन ग्रन्थमाला प्रकाशित होती है। जिसके ७१ पुष्प निकल चुके हैं।

इस ग्रन्थालय से दीक्षाभिलाषियोंको स्वाध्याय तथा कण्ठस्थ करनेके लिए दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नमिपव्वज्जा, महावीरजिनस्तुति (पुच्छिसुणं) आदि ग्रन्थालय से प्रकाशित हुई पुस्तकें मंगाने से नाम पता पूरा स्पष्ट अक्षरों में आनेपर एक एक प्रति भेंट भेजी जाती है।

इस स्थान में दीक्षाभिलाषी (वैरागी भाई और वैरागिन बाई) को दीक्षा का समय निश्चित होने पर वस्त्र पात्र रजोहरण आदि दीक्षा के उपकरण और हस्तलिखित मूलपाठ-दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नंदी, सुखविपाक आदि संशोधन की गई प्रतियाँ, तथा कई एक ग्रन्थालय से छपी हुई पुस्तकें विना मूल्य मिलती हैं।

Aho ! Shrutgyanam

इस संस्थाद्वारा—जैन लायब्रेरी (जैन पुस्तकालय) सभा, मण्डल, ज्ञानभण्डार, पौषधशाला, उपाश्रय आदि ऐसे स्थानों में जहां जैनधर्म की पुस्तकों का संग्रह होता हो, वहां पर इस ग्रन्थालय से निकली हुई पुस्तकें मंगवाने से जो बिना मूल्यकी उपलब्ध पुस्तकें हैं उनमें से एक एक प्रति अमूल्य और मूल्यवाली पुस्तकें आधे मूल्य से वी. पी. द्वारा भेजी जाती हैं ।

इस संस्था से जहां पर जैनधर्म की पढ़ाई होती है ऐसे विद्यालय, अनाथालय, पाठशाला, श्राविकाश्रम आदि संस्थाओं को ग्रन्थालय से प्रसिद्ध हुई सामायिक तथा प्रतिक्रमणसूत्र की पुस्तकें मंगाने पर आधी कीमत से वी. पी. द्वारा भेजी जाती हैं ।

सेठिया जैन प्रिन्टिंग प्रेस (स्थापित वि. सं. १९८१)

इस संस्था द्वारा जैनधर्म सम्बन्धी सूत्र सिद्धान्त आदि ग्रन्थ संस्कृत प्राकृत और हिन्दी भाषा में मुद्रित होते हैं ।

सेठिया होमियोपैथिक चिकित्सालय—

इस में रोगियों की चिकित्सा की जाती है तथा विना मूल्य औषधि भी वितरण की जाती है ॥

निवेदक—

विक्रम सं० १९८२ }
कार्तिक शुक्ला ९ }

व्याकरणाचार्य न्यायतीर्थ—

पं० रमानाथ जैन शास्त्री.

सेठिया जैनग्रन्थालय

बीकानेर (राजपूताना)

Aho ! Shrutgyanam